हिन्दी

TEACHERS' Manual

1 to 5

हिन्दी 1

आओ, दोहराएँ–1

वर्णमाला

1. अ आ इ ई उ ऊ ऋ
   ए ऐ ओ औ अं अ:

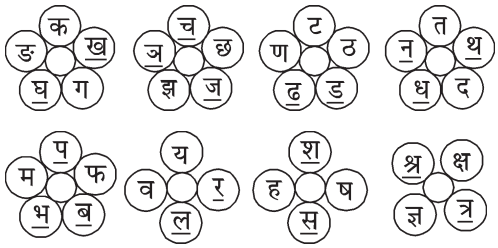

2. क ख ग घ ङ   च छ ज झ ञ   ट ठ ड ढ ण   त थ द ध न
   प फ ब भ म   य र ल व   श ष स ह   क्ष त्र ज्ञ श्र

आओ, दोहराएँ–2

बिना मात्रा वाले शब्द

1. कमल, घर, बरगद,
   मगर, फल, सड़क,
   थरमस, बस।
2. जल, जग, घर, यज्ञ,
   रथ, नहर, कलश, कलम,
   अकबर, महल, दशरथ, नमन,
   तरकश कसरत, अदरक, झटपट,
   अचरज।

आओ, दोहराएँ–3

मात्रा वाले शब्द

1. सेठ, ताला, फल, कृषक,
   ढोल, आग, घंटा, दर्पण।
2. छात्र स्वयं करें
3. ऊँट घोड़ा हाथी भालू
   किसान खिलाड़ी नृप आँख
4. 'र्' पदेन (्र) 'र' पदेन (्र) रेफ (र्)

'र्' पदेन (्र)	'र' पदेन (्र)	रेफ (र्)
प्रकाश	ट्रक	सूर्य
प्रथम	ड्रम	पर्स
ग्रह	ट्रेन	दर्पण
चक्र	ड्रामा	वर्णन

5. अनुस्वार (ं) अनुनासिक (ँ)

अनुस्वार (ं)	अनुनासिक (ँ)
हंस	ऊँट
झंडा	आँख
पतंग	अँगूठी
रंग	मूँगा

पाठ–1

विनती

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।
2. **(क)** बालक भगवान से विनती कर रहे हैं।
   (ख) बालक पढ़-लिखकर महान बनना चाहते हैं।
   (ग) बालक भारत माता की सेवा करना चाहते हैं।

लिखित (Written)

1. **(क) (ब)** नादान
   (ख) (ब) भगवान का
   (ग) (ब) पढ़-लिखकर
2. विनती सुन लो हे भगवान!
   हम सब बालक हैं नादान।
   हाथ जोड़कर हम सब करते,
   रोज तुम्हारा ही गुणगान।
3. **(क)** ✓ **(ख)** ✗ **(ग)** ✗ **(घ)** ✓
4. **(क)** बालक ईश्वर से वीर, धीर और महान बनने की प्रार्थना कर रहे हैं।
   (ख) बालक वीर बनने का वरदान भगवान से माँग रहे हैं।
   (ग) धीर बनने का आशय, हर काम में धीरज रखकर निर्णय लेने से है।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** नादान → **(iii)** नासमझ
   (ख) भगवान → **(i)** ईश्वर
   (ग) रोज → **(ii)** प्रतिदिन
2. भगवान, नादान, बालक, गुणगान।
3. अच्छा-बुरा नया-पुराना
   सुबह-शाम दिन-रात

क्रियाकलाप (Activity)

हम ईश्वर से पढ़-लिखकर वीर, धीर और महान बनने की प्रार्थना करते हैं। जिससे हम अपने-अपने माता-पिता और देश की सेवा कर सकें।

पाठ–2

बाँसुरीवाला

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।

2. **(क)** गाँव का नाम चाँदीपुर था।
(ख) चूहों की पूँछें लंबी-लंबी थीं।
(ग) बाँसुरीवाले का रंग साँवला था।

लिखित (Oral)

1. **(क) (स)** तीखे **(ख) (ब)** बाँसुरीवाला
(ग) (स) आँगन में **(घ) (अ)** गुफा में

2. **(क)** चूहे, **(ख)** दाँत, **(ग)** तंग, **(घ)** महल।

3. **(क)** ✓ **(ख)** × **(ग)** × **(घ)** ×

4. **(क)** चूहों ने सबको तंग कर रखा है।
(ख) बाँसुरीवाला चूहों को जंगल की गुफा में ले गया।

व्याकरण (Grammar)

1. एक-अनेक गाँव-गाँवों
चूहा-चूहे महल-महलों

2. **(क)** एक गाँव था।
(ख) राजा खुश हो गया।
(ग) चूहे महल में घुस गए।

क्रियाकलाप (Activity)

1. **(क)** चूहे हमारे कपड़े व किताबों को कुतर देते हैं।
(ख) घर में जगह-जगह बिल बनाते हैं।
(ग) घर में रखे अनाज को नुकसान पहुँचाते हैं।
(घ) खाने-पीने की चीजें को खींचकर ले जाते हैं।

2. **शेर और चूहा**

एक बार जब जंगल का राजा शेर सो रहा था, तभी एक छोटा-सा चूहा उसके ऊपर चलने लगा। उसकी इस हरकत ने शेर को जगा दिया। शेर को चूहे पर बहुत गुस्सा आया। उसने चूहे को अपने पंजे के नीचे दबाकर कहा, " तेरी इतनी हिम्मत, मैं अभी तुझे खाता हूँ। तब चूहा डरकर शेर से बोला," महाराज, क्षमा करें, गलती हो गई। यदि आप मुझे छोड़ देंगे तो मैं भविष्य में आवश्यकता पड़ने पर आपकी सहायता करूँगा। चूहे की बात सुनकर शेर हँसने लगा और बोला, " तुम इतने छोटे हो, तुम मेरी क्या मदद करोगे, फिर भी मैं तुम्हें छोड़ता हूँ जाओ।" चूहे ने शेर को धन्यवाद दिया और वहाँ से चला गया।

कुछ दिनों बाद, चूहे ने शेर की जोर-जोर से दहाड़ने की दु:ख भरी आवाज सुनी। दहाड़ सुनकर चूहा उसी दिशा में चल दिया और शेर के पास पहुँच गया। उसने देखा कि शेर शिकारी के जाल में फँसा हुआ है। यह देखकर चूहे ने जल्दी-जल्दी अपने नुकीले दाँतों से जाल कुतर दिया और शेर जाल से आजाद हो गया।

पाठ–3

कछुआ और खरगोश

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।

2. **(क)** वन में एक खरगोश और एक कछुआ रहते थे।
(ख) दौड़ लगाने के लिए खरगोश ने कहा।
(ग) पेड़ के नीचे खरगोश आराम कर रहा था।

लिखित (Written)

1. **(क) (स)** वन में
(ख) (अ) खरगोश को
(ग) (ब) कछुए ने

2. **(क)** खरगोश, कछुआ,**(ख)** हाल-चाल, **(ग)** पेड़।

3. **(क)** खरगोश को अपने तेज दौड़ने पर घमंड था।
(ख) निरन्तर चलते रहने से कछुआ दौड़ जीत गया।
(ग) अपने घमंड से भरे होने पर बेपरवाह होकर सो जाने के कारण खरगोश हार गया।

व्याकरण (Grammar)

1. इसलिए, कछुए, मुझसे, विजयी।

2. विजयी – कछुआ विजयी हुआ।
वन – वन में खरगोश और कछुआ रहते थे।
दौड़ – खरगोश ने कछुए से दौड़ लगाने को कहा।

3. डर-हिम्मत बड़ा-छोटा
दिन-रात सोना-जागना
जीत-हार पास-दूर

क्रियाकलाप (Activity)

1. इस कहानी में मुझे सबसे अच्छा कछुए का निरभिमानी होना लगा। अपने इस गुण और निरन्तर प्रयास के कारण कछुए ने खरगोश से पहले ही रेखा पार कर ली और दौड़ जीत गया।

2. घमंड करने से व्यक्ति की छवि धूमिल हो जाती है। घमंडी व्यक्ति को कोई पसंद नहीं करता। घमंड व्यक्ति की हार का कारण बनता है, जैसे खरगोश को अपनी तेज चाल पर बहुत घमंड था और अपने इसी घमंड के कारण बेपरवाह होकर सो जाने पर वह दौड़ हार गया।

पाठ–4

ठीक समय पर ...

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।
2. **(क)** हम उठना, नहाना, खाना-खाना, पढ़ना, खेल-कूद करना आदि सभी कार्य समय पर कर हैं।
   (ख) ठीक समय पर काम करने से सभी काम समय पर हो जाते हैं। इस तरह हम जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

लिखित (Written)

1. **(क) (स)** हाँ **(ख) (अ)** हाँ
   (ग) (ब) हाँ **(घ) (स)** हाँ
2. ठीक समय पर खाना खाओ,
   ठीक समय पर पढ़ने जाओ।
   ठीक समय पर मौज उड़ाओ,
   ठीक समय पर गाना गाओ।
3. **(क)** खाना → **(द)** खाओ
   (ख) पढ़ने → **(स)** जाओ
   (ग) गाना → **(अ)** गाओ
   (घ) बड़े → **(ब)** कहलाओ
4. **(क)** ठीक समय पर उठने पर ही हम अपने सभी काम समय पर कर पाएँगे।
   (ख) हमें अपने सभी काम ठीक समय पर करने चाहिए; जैसे– सोना, उठना, पढ़ना, खेलना, नहाना, खाना, घूमना, गाना आदि।
   (ग) ठीक समय पर काम करने से सफलता प्राप्त करके हम बड़े कहला सकते हैं।

व्याकरण (Grammar

1. पढ़ना, ठीक, मौज, गाना, कहलाऊँ।
2. बड़ा–छोटा ठीक–गलत खाना–पीना
   जगना–सोना जाना–आना कहना–सुनना

क्रियाकलाप (Activity)

1. छात्र स्वयं करें।
2. जब हम अपने सारे काम समय से पूरा कर लेते हैं, तो हम तनाव से मुक्त हो जाते हैं। समय किसी का इंतजार नहीं करता, अत: हमें समय से अपने सभी काम पूरे करने चाहिए। समय पर कार्य करने से सफलता हमारे कदम चूमती है।
3. छात्र स्वयं करें।

पाठ–5

चूँ–चूँ की टोपी

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।
2. **(क)** चूँ-चूँ को एक दिन लाल रंग की कतरन मिल गई।
   (ख) चूँ-चूँ दरजी के पास टोपी सिलवाने गया।
   (ग) चूँ-चूँ ने चमचम वाले को उसका गोटा और चमचम कुतरने की धमकी दी।
   (घ) सिपाहियों ने चूँ-चूँ से कहा कि उसे राजा जी बुला रहे हैं।

लिखित (Written)

1. **(क)** चूँ-चूँ को लाल कपड़े की कतरन मिली।
   (ख) दरजी ने उसकी टोपी सिलने से मना कर दिया इसलिए चूँ-चूँ को दरजी पर गुस्सा आया।
   (ग) चूँ-चूँ टोपी पर चमचम लगवाना चाहता था।
   (घ) चूँ-चूँ ने राजा को उसकी टोपी कुतरने की धमकी दी।
2. **(क)** ✗ **(ख)** ✓ **(ग)** ✗ **(घ)** ✓ **(ङ)** ✗
3. **(क)** चमचम, **(ख)** टोपी, **(ग)** महल, **(घ)** हँसी।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** अहा! कितना मीठा आम है।
   (ख) दरजी ने चूँ-चूँ की टोपी सिली।
   (ग) चमचम वाले ने उसकी टोपी में गोटा लगाया।
   (घ) राजा महल में रहता है।
   (ङ) चूहा बहुत शैतान था।
2. चुहा–चूहा कूतरना–कुतरना
   दरजि–दरजी तमाश–तमाशा
   टोपि–टोपी फूरसत–फुरसत
   सीपाही–सिपाही अच्छि–अच्छी
3. चूहा–चूहे टोपी–टोपियाँ
   रात–रातें सेना–सेनाएँ

राजा–राजाओं रानी–रानियाँ
कपड़ा–कपड़े कतरन–करतनें

4. दरजी – दरजिन चूहा – चुहिया
राजा – रानी टोपी – टोपा
चाचा – चाची ताऊ – ताई
माता – पिता नाना – नानी

क्रियाकलाप (Activity)

1. राजा बहुत समझदार था। वह अपने से छोटों की शरारतों का बुरा नहीं मानता था। वह जानता था कि चूँ-चूँ एक जिद्दी चूहा है, यदि वह उसकी बात से सहमत नहीं होगा तो चूँ-चूँ उसके महल में घुसकर नुकसान करेगा। इसलिए राजा ने चूहे की टोपी को अच्छा मान लिया।
2. चूहे हमारे घरों में जहाँ-तहाँ बिल बनाकर छेद कर देते हैं। अखबार, किताबें, जरूरी कागज आदि कुतर देते हैं। कपड़े कुतर डालते हैं। खाने का समान कुतरते रहते हैं। डिब्बों में कुतर कर छेद कर देते हैं। अनाज की बोरियाँ काट देते हैं। घर में बीमारी फैलाते हैं। पालतू जनवरों के भोजन को दूषित कर देते हैं। घर की कच्ची छतों को खोखला कर देते हैं। घर फर्नीचर को कुतर डालते हैं। घर में तारों की वायरिंग को काट देते हैं जिससे करेंट लगने का खतरा बन जाता है।

पाठ–6

आपसी सहयोग

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।
2. **(क)** दोनों मित्रों के नाम श्याम और मोहन थे।
   (ख) आग गाँव में लग गई थी।
   (ग) श्याम ने मोहन को अपने कंधे पर बिठाया।

लिखित (Written)

1. **(क) (स)** गाँव में
   (ख) (अ) आग लग गई
   (ग) (ब) आग में
2. **(क)** मित्र, **(ख)** अपाहिज, **(ग)** तरकीब, **(घ)** सहयोग।
3. **(क)** ✗ **(ख)** ✗ **(ग)** ✓ **(घ)** ✗
4. **(क)** मोहन और श्याम अत्यन्त निर्धन थे।
   (ख) आग में फँस जाने के कारण मोहन व श्याम परेशान थे।
   (ग) मोहन को यह तरकीब सूझी कि वह श्याम के कंधे पर बैठकर श्याम को रास्ता बताएगा तो इस प्रकार वे दोनों आग से बचकर निकल जाएँगे।
   (घ) श्याम ने मोहन को अपने कंधे पर बैठाया और मोहन ने श्याम को बाहर निकलने का रास्ता बताया। इस प्रकार उन दोनों की जान बच गई।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** मोहन अपाहिज था।
   (ख) श्याम को एक विचार सूझा।
   (ग) श्याम बहुत बहादुर था।
   (घ) सोहन एक निर्धन लड़का है।
2. सहयोग गुजार
   अचानक अपाहिज
3. रात अनेक
   धनी पानी

क्रियाकलाप (Activity)

1. छात्र स्वयं करें।
2. हम दिव्यांग लोगों की सहायता निम्न प्रकार से कर सकते हैं–
   (क) उन्हें सड़क पार करवाकर।
   (ख) बस या ट्रेन में बैठने के लिए स्थान देकर।
   (ग) लाइन में उन्हें आगे बढ़ाकर।
   (घ) उन्हें भोजन, वस्त्र आदि का सहयोग देकर।
3. छात्र स्वयं करें।

पाठ–7

चिड़िया यह सिखलाती है

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।
2. **(क)** चिड़िया पेड़ की डाल पर बैठी है।
   (ख) पक्षी साँझ के समय घर लौटते हैं।
   (ग) पक्षी दिनभर दाना-तिनका चुगते हैं।
   (घ) पक्षी दाना-तिनका अपने बच्चों के लिए लाते हैं।

लिखित (Written)

1. **(क) (ब)** गा रही है।
   (ख) (स) आपस में मिल-जुलकर रहना
   (ग) (अ) दाना-तिनका चुनते हैं
   (घ) (स) मेहनत और लगन से
2. मेहनत और लगन से वे, जितना हो सके जुटाते हैं।, अपने प्रिय बच्चों की खातिर, दाना-तिनका लाते हैं।
3. **(क)** पेड़, **(ख)** मिन-जुलकर, **(ग)** बच्चों, **(घ)** घोंसला, **(ङ)** सीख।

4. **(क)** पेड़ पर गाती हुई चिड़िया हमें आपस में मिल-जुलकर रहना सिखाती है।

(ख) पक्षी सुबह से शाम तक दाना और तिनका चुनने का काम करते हैं।

(ग) हम सबको अपना काम मेहनत और लगन से करना चाहिए।

(घ) पक्षी मनुष्यों को परिश्रमी बनने तथा परस्पर प्रेमपूर्वक जीवन जीने का संदेश देते हैं।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** पेड़ → (स) डाल

(ख) मिल-जुलकर → (द) रहना

(ग) नई → (ब) दुनिया

(घ) चिड़िया → (अ) सिखाना

2. चीड़िया - चिड़िया, बन - वन,

पक्खी - पक्षी, साझ - साँझ,

महनत - मेहनत, खातीर - खातिर,

तीनका - तिनका, संदेस - संदेश

3. दूर - पास नई - पुरानी

मानव - दानव साँझा - सवेरा

क्रियाकलाप (Activity)

* मुझे मोर पक्षी सबसे प्यारा लगता है क्योंकि इसके पंख बड़े सुंदर होते हैं। इसका नृत्य करना मेरे मन को प्रसन्नता से भर देता है।

पाठ–8

स्वामिभक्त पन्ना धाय

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।

2. **(क)** बनवीर उदयसिंह को मारना चाहता था।

(ख) विक्रमाजीत बड़ा ही क्रूर और अयोग्य शासक था।

लिखित (Written)

1. **(क)** **(ब)** चित्तौड़ के

(ख) **(अ)** क्रूर और अयोग्य

(ग) **(स)** चन्दन

2. **(क)** बनवीर, **(ख)** उदयसिंह, **(ग)** हत्या।

3. **(क)** महाराणा संग्रामसिंह के स्वर्गवास हो जाने के कारण विक्रमाजीत को चित्तौड़ का राजा बनाया गया।

(ख) बनवीर बड़ा ही क्रूर शासक था। वह निष्कंटक राज्य करने के लिए उदयसिंह को मारना चाहता था।

(ग) पन्ना ने अपने पुत्र चन्दन को उदयसिंह के बिस्तर पर सुला दिया। क्रोध में अंधे बनवीर ने उदयसिंह के बदले चंदन की हत्या कर दी। इस प्रकार पन्ना ने अपने पुत्र का बलिदान देकर उदयसिंह को बचाया।

4. **(क)** ✗ **(ख)** ✓ **(ग)** ✗

व्याकरण (Grammar)

1. वह - वे, तलवार - तलवारें

टोकरी - टोकरियाँ निकम्मे - निकम्मा

2. पुत्र - सुत देहान्त - मृत्यु

माता - माँ नौकर - सेवक

3. **(क)** महाराणा संग्राम सिंह चित्तौड़ के शासक थे।

(ख) पन्ना धाय ने अपने पुत्र का बलिदान देकर राजकुमार उदयसिंह को बचाया।

(ग) पन्ना ने उदयसिंह को टोकरी में छिपाकर महल के बाहर भेज दिया।

क्रियाकलाप (Activity)

1. महाराणा संग्रामसिंह राजस्थान के इतिहास में इसलिए प्रसिद्ध हैं क्योंकि वे मेवाड़ के सबसे महत्वपूर्ण शासक थे। इन्होंने अपनी शक्ति के बल पर मेवाड़ राज्य का विस्तार किया और राजपूत शासकों को संगठित किया।

2. जयपुर में जलमहल, जंतर-मंतर, आमेर महल, नाहरगढ़ का किला, हवामहल तथा आमेर का किला राजस्थान की राजधानी के ऐतिहासिक भवन हैं।

पाठ–9

दीपावली

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।

2. **(क)** दीपावली का त्योहार कार्तिक महीने में आता है।

(ख) दीपावली के दिन बच्चे नए कपड़े पहनते हैं।

(ग) दीपावली के दिन गणेश और लक्ष्मी की पूजा होती है।

लिखित (Written)

1. **(क)** **(ब)** दीपकों की पंक्ति

(ख) **(अ)** हिंदुओं का

(ग) **(ब)** नए बर्तन

2. **(क)** टूट-फूट, **(ख)** पकवान, **(ग)** धनतेरस, **(घ)** पटाखे।

3. **(क)** वर्षा-ऋतु में वर्षा से कच्चे घरों में टूट-फूट हो जाती है। चारोंओर कीचड़ और गंदगी हो जाती है। कई प्रकार के कीड़े-मकोड़े पैदा हो जाते हैं। अत: घरों में साफ-सफाई करना जरूरी हो जाता है।

(ख) दीपावली के दिन घरो में पकवान और मिठाइयाँ बनती हैं।

(ग) धनतेरस के दिन नए बर्तन लक्ष्मी जी की पूजा में प्रयोग करने के लिए खरीदे जाते हैं।

(घ) दीपावली की रात दीये और मोमबत्तियों के प्रकाश से जगमगा उठती है। बच्चे पटाखे और फुलझड़ियाँ चलाने लगते हैं। चारों ओर हर्ष और उल्लास का वातावरण हो जाता है।

व्याकरण (Grammar)

1. प्रकाश - अंधकार, खरीदना - बेचना
कच्चा - पक्का, गन्दगी - सफाई

2. पर्व - त्योहार, कपड़ा - वस्त्र
गणेश - गणपति, दिन - दिवस

3. **(क)** नये → **(अ)** कपड़े
(ख) कच्चे → **(स)** घर
(ग) छोटे → **(द)** बच्चे
(घ) ताजा → **(ब)** फल

4. दिपावलि - दीपावली,
वर्शा-रितु - वर्षा-ऋतु,
मीठाईया - मिठाइयाँ,
लक्ष्यमी - लक्ष्मी,
बाताबरण - वातावरण।

क्रियाकलाप (Activity)

1. भारत में मनाए जाने वाले अन्य प्रमुख त्योहार निम्नलिखित हैं–

मकर संक्रांति–यह त्योहार प्रतिवर्ष 14 या 15 जनवरी को मनाया जाता है। इस दिन सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में जाता है।

बसंत-पंचमी-यह त्योहार जनवरी और फरवरी में मनाया जाता है।

महाशिवरात्रि-यह त्योहार फाल्गुन महीने के कृष्ण-पक्ष की त्रयोदशी को मनाया जाता है।

होली-ये त्योहार रंगों का ही नहीं बल्कि भाईचारे का भी है। इसे फाल्गुन (मार्च) के महीने में मनाया जाता है।

ईद-यह त्योहार मुस्लिम समुदाय द्वारा रमजान के महीने में मनाया जाता है।

रक्षाबंधन-यह भाई-बहन का त्योहार है। इसे अगस्त की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है।

दशहरा-यह पर्व आश्विन मास के शुक्ल-पक्ष की दशमी को मनाया जाता है।

करवाचौथ-इस पर्व को कार्तिक माह के कृष्ण-पक्ष की चतुर्थी को मनाया जाता है।

2. हमने दीपावली बड़े हषोल्लास से मनाई। घर में माँ ने खूब तरह-तरह की मिठाइयाँ बनाईं। सब लोगों ने मिल-बाँटकर खाईं। अपने मित्रों को आमंत्रित किया। सब लोगों ने मिलकर खूब मजे किए।

पाठ–10

वर्षा रानी

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।

2. **(क)** मन वर्षा रानी को देखकर प्रसन्न होता है?

(ख) स्वागत-गान कोयल सुनाती है।

(ग) रेनी-डे की छुट्टी पाठशाला में पानी भर जाने के कारण हो गई।

लिखित (Written)

1. **(क)** **(स)** कोयल
(ख) **(अ)** मेढकों की
(ग) **(ब)** बरसात होने के कारण

2. धरती का श्रृंगार तुम्हीं हो। फूलों की मनुहार तुम्हीं हो।
भौंरों की गुंजार तुम्हीं हो। सब लोगों का प्यार तुम्हीं हो।

3. **(क)** जीवनदायिनी
(ख) रेनी-डे
(ग) मेढ़क

4. **(क)** वर्षा को जीवनदायिनी इसलिए कहा जाता है क्योंकि जल ही जीवन है जो सभी के लिए महत्वपूर्ण है।

(ख) वर्षा को देखकर जीव-जन्तु प्रसन्न इसलिए होते हैं क्योंकि उन्हें जल-जीवन मिल जाता है।

(ग) वर्षा होने से धरती की तपन मिट जाती है। उसमें पुन: हरियाली लहराने लगती है। सभी जीव-जन्तुओं को जीने का सहारा मिल जाता है। इस प्रकार, वर्षा धरती का श्रृंगार करती है।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** शृंगार, **(ख)** जीवनदायिनी
   (ग) हरषाया, **(घ)** मनुहार
2. **(क)** वर्षा सबको नया जीवन देती है।
   (ख) जीव-जन्तु वर्षा के आने का स्वागत करते हैं।
   (ग) वर्षा-ऋतु में चारों ओर मेढक टर्र-टर्र करते दिखते हैं।
3. रानी – राजा देवी – देवता
   मेढक – मेढकी ऊँट – ऊँटनी

क्रियाकलाप (Activity)

1. वर्षा-ऋतु में चारों ओर का वातावरण जलमग्न दिखाई देने लगता है। नदी, तालाब नाले सभी पानी से भर जाते हैं और वातावरण में ठंडी-ठंडी हवाएँ चलने लगती हैं। पक्षी सुहाने मौसम में बेहद खुश होकर चहचहाने लगते हैं। मोर पंख फैलाकर नाचने लगते हैं।
2. छात्र स्वयं करें।

पाठ–11

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।
2. **(क)** रानी लक्ष्मीबाई के पिता का नाम मोरोपंत था।
   (ख) लक्ष्मीबाई के मुँह बोले भाई का नाम नाना साहब था।
   (ग) महाराजा गंगाधर राव ने दामोदर राव को गोद ले लिया।

लिखित (Written)

1. **(क) (स)** भागीरथीबाई
   (ख) (ब) घुड़सवारी का
   (ग) (अ) चौदह वर्ष
2. **(क)** साहसी, **(ख)** विवाह, **(ग)** दामोदर।
3. **(क)** रानी लक्ष्मीबाई का नाम इसलिए प्रसिद्ध है क्योंकि वे अपने देश की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अंग्रेजों का बड़ी बहादुरी से मुकाबला किया और बलिदान हो गईं।
   (ख) घुड़सवारी के दौरान लक्ष्मीबाई ने नाना साहब की जान बचाई।
   (ग) रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेजों से बड़ी बहादुरी से लड़ीं, लेकिन अंग्रेजों की विशाल सेना के आगे उनकी छोटी-सी सेना टिक न सकी।
4. **(क)** ✓ **(ख)** × **(ग)** ✓

व्याकरण (Grammar)

1. घोड़ासवारी – घुड़सवारी
   बहादूरी – बहादुरी
   उतपन्न – उत्पन्न
   साशन – शासन
2. **(क)** कानपुर के नाना साहब का नाम आज भी स्वर्ण अक्षरों में अंकित है।
   (ख) रानी के विवाह के कुछ समय पश्चात् उनके पति का देहान्त हो गया।
   (ग) इन वाहनों को सम्पूर्ण भारत में चलाने की मान्यता नहीं है।
4. शादी – विवाह उम्र – अवस्था
   पुत्र – सुत बहादुरी – साहस
   आजादी – स्वतंत्रता निडर – निर्भीक

क्रियाकलाप (Activity)

1. सन् 1857 का स्वतंत्रता संग्राम प्रथम भारतीय विद्रोह था। इसे सिपाही विद्रोह के नाम से भी जाना जाता है। यह ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह था, जो दो वर्षों तक चला। इस विद्रोह का आरंभ छावनी क्षेत्रों की छोटी-छोटी झड़पों से शुरू हुआ। इस युद्ध का अंत इस्ट इंडिया कंपनी की समाप्ति के साथ हुआ जो पूरे भारत पर ब्रिटिश ताज के रूप में 90 वर्षों तक चला।
2. सन् 1857 की क्रान्ति में अनेक स्वतंत्रतासेनानियों ने हिस्सा लिया जिसमें नाना साहब भी उनमें से एक थे। नाना साहब प्रथम स्वतंत्रता-संग्राम के शिल्पकार थे। स्वतंत्रता-संग्राम में नाना साहब ने कानपुर में अंग्रेजों के विरुद्ध हिस्सा लिया। जब मेरठ में क्रांति का श्रीगणेश हुआ तब नाना साहब ने बड़ी दक्षता से क्रांति की सेनाओं का गठन किया और कल्याणपुर (कानपुर) से ही उन्होंने अंग्रेजों से युद्ध की घोषणा की। अंग्रेजों से बराबर लड़ाई लड़ने के बाद उन्होंने अंग्रेजों को युद्ध हारने के लिए मजबूर कर दिया। नाना साहब के अदम्य साहस और त्याग को कभी भुलाया नहीं जा सकेगा।

पाठ–12

शेर और चूहा

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।
2. **(क)** शेर वन में रहता था।
   (ख) शेर पेड़ की छाया में सो रहा था।
   (ग) चूहे ने यह शरारत की कि वह शेर की पीठ पर चढ़कर इधर-उधर फुदकने लगा।

(घ) चूहे की शरारत से नींद खुल जाने के कारण शेर को क्रोध आया।

लिखित (Written)

1. **(क)** (अ) शेर से **(ख)** (ब) पेड़ की छाया में
   (ग) (अ) क्योंकि चूहे ने उसे जाल से निकाला
2. **(क)** जंगल के जीव-जन्तु शेर से इसलिए डरते थे क्योंकि वह बलवान और हिंसक था।
   (ख) चूहा भोजन की खोज में बिल से बाहर निकला था।
   (ग) चूहे ने शेर से प्रार्थना की कि हे! जंगल के राजा, आप मुझे छोड़ दें। किसी दिन मैं भी आपके काम आऊँगा।
   (घ) चूहे ने अपनी चुहिया और बच्चों के साथ मिलकर शिकारी के जाल को कुतर डाला और शेर को बाहर निकाल लिया।
2. **(क)** छाया, **(ख)** जीव-जन्तु, **(ग)** दया, **(घ)** शिकारी।

व्याकरण (Grammar)

1. सोना – जागना दिन – रात
   राजा – रंक मित्र – शत्रु
2. एक – अनेक, चुहियाँ – चुहिया
   बिल्ली – बिल्लियाँ नदी – नदियाँ
3. जीव-जंतू – जीव-जन्तु, सरारत – शरारत
   धनबाद – धन्यवाद, सिकारी – शिकारी
   कोसिश – कोशिश

क्रियाकलाप (Activity)

* छात्र स्वयं करें।

पाठ–13

सुखद सवेरा

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।
2. **(क)** सूर्य पूरब दिशा में उगता है।
   (ख) सूर्य के उदय होने पर आसमान में लाली छाती है।
   (ग) सवेरा होने पर पक्षी चहकने लगते हैं।
   (घ) प्रात:काल के समय शीतल और सुख देने वाली हवा चलती है।

लिखित (Written)

1. **(क) (अ)** लाला
   (ख) (ब) अँधेरा
   (ग) (स) सवेरा होने पर
2. **(क)** पूर्व, **(ख)** अँधेरा, **(ग)** चहक, **(घ)** सुन्दर।
3. **(क)** सूर्य के उदय होने पर रात, अँधेरा और चन्दा की उजियाली नहीं रहतीं।
   (ख) सवेरा होते ही फूल खिल जाते हैं, कलियाँ मुसकाने लगती हैं और सारा बगीचा महक जाता है।
   (ग) सुबह के समय खेत और बगीचे जाग जाते हैं और पेड़ अँगड़ाई लेने लगते हैं।
   (घ) यहाँ मोतियों से आशय ओस की बूँदों से है।
4. **(क)** चन्दा → (य) उजियाली
   (ख) रात → (स) अँधेरा
   (ग) फूल → (द) मुसकाना
   (घ) हवा → (ब) शीतल
   (ङ) कलियाँ → (अ) खिलना

व्याकरण (Grammar)

1. उदइ – उदय, उजयाली – उजियाली,
   पक्खी – पक्षी, मुसुकाई – मुसकाई,
   कलीयाँ – कलियाँ, उपबन – उपवन,
   सीतल – शीतल, अगडाई – अँगड़ाई।
2. **(क)** लाली → (द) छाना
   (ख) उपवन → (स) महकना
   (ग) खेत → (अ) जागना
   (घ) पक्षी → (ब) चहकना
4. **(क)** सूर्य का उदय पूर्व दिशा में होता है।
   (ख) रात में चन्द्रमा निकलता है।
   (ग) फूल उपवन को महकाते हैं।
   (घ) सूर्य के निकलने पर ओस की बूँदें मोती जैसी चमकने लगती हैं।

क्रियाकलाप (Activity)

* छात्र स्वयं करें।

पाठ–14

मेरी माँ

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।
2. **(क)** विनम्र और परिश्रमी लेखक की माँ है।
   (ख) बच्चे की प्रथम गुरु माँ होती है।
   (ग) माँ रात को रोचक और शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनाती हैं।

लिखित (Written)

1. **(क) (अ)** पढ़ी-लिखी **(ख) (स)** प्यार-भरा
2. **(क)** गुरु, **(ख)** रोचक, **(ग)** आज्ञा।

3. **(क)** ✓ **(ख)** ✓ **(ग)** ✗

4. **(क)** माँ ने लेखक को सर्वप्रथम हिन्दी, अंग्रेजी और गणित विषयों का ज्ञान कराया।

(ख) घर के सब कामों पर लेखक की माताजी ध्यान देती हैं।

(ग) हम सबको अपने प्यार भरे व्यवहार से खुश रख सकते हैं।

व्याकरण (Grammar)

1. सर्वपृथम – सर्वप्रथम, अन्ग्रेजि – अंग्रेजी,
गुरू – गुरु, ग्रहकार्य – गृहकार्य

2. माता – माँ, प्रसन्न – खुश
घर – गृह, आज्ञा – आदेश

क्रियाकलाप (Activity)

1. छात्र स्वयं करें।

2. छात्र स्वयं करें।

पाठ–15

महाराणा प्रताप

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।

2. **(क)** महाराणा प्रताप मेवाड़ के शासक थे।

(ख) महाराणा प्रताप के पिता का नाम उदयसिंह था।

(ग) महाराणा प्रताप के प्रिय घोड़े का नाम चेतक था।

(घ) भामाशाह ने महाराणा प्रताप को अपनी पूरी संपत्ति सौंप दी।

लिखित (Written)

1. **(क)** **(स)** पौत्र

(ख) **(अ)** अकबर की

(ग) **(अ)** हल्दीघाटी के

(घ) **(अ)** अरावली पर्वतमाला में

2. **(क)** महाराणा प्रताप के समय मुगल बादशाह अकबर का शासन था।

(ख) अकबर नहीं चाहता था कि मेवाड़ एक स्वतंत्र राज्य बना रहे, इसलिए उसने एक विशाल सेना महाराणा प्रताप के विरुद्ध लड़ने के लिए भेजी।

(ग) हल्दीघाटी का नाम मुगल सम्राट अकबर की सेना और महाराणा प्रताप एवं उनके सैनिकों के बीच हुए ऐतिहासिक युद्ध के लिए प्रसिद्ध है।

(घ) भामाशाह ने अपनी सम्पत्ति महाराणा प्रताप को इसलिए सौंप दी ताकि वे अपनी सेना को पुनः संगठित कर सकें।

2. **(क)** मेवाड़, **(ख)** नाम, **(ग)** मंत्री, **(घ)** पराजय।

3. **(क)** ✓ **(ख)** ✓ **(ग)** ✓ **(घ)** ✓

व्याकरण (Grammar)

1. सर्वोपरी – सर्वोपरि साशन – शासन
म्रत्यू – मृत्यु देसीभक्त – देशभक्त

2. जीवन – मरण युद्ध – शांति
स्वतंत्र – परतंत्र पराजय – विजय

3. **(क)** आजादी की गाथाएँ लोगों को आज भी याद हैं।

(ख) भामाशाह देशभक्त के रूप में इतिहास में अमर रहेंगे।

(ग) भामाशाह ने अपनी सम्पत्ति देशहित में सौंप दी।

(घ) राणा प्रताप की सेना ने मुगलों के छक्के छुड़ा दिए।

क्रियाकलाप (Activity)

* दुर्गादास राठौर एक राजपूत योद्धा थे, जिन्होंने मुगल शासक औरंगजेब को युद्ध में पराजित किया था। उन्होंने जीवन भर संघर्ष किया तथा मारवाड़ को मुगलों की बुरी नजर से बचाए रखा और मारवाड़ के भावी राजा अजीतसिंह की सुरक्षा करके उन्हें मारवाड़ का शासक बनाया। दुर्गादास राठौर की कर्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी के किस्से केवल मारवाड़ में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण राजस्थान में गाए जाते हैं।

पाठ–16

पावन है मेरे देश की धरती

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।

2. **(क)** हमारे देश की धरती पावन है।

(ख) हमारे देश के गाँव तपस्थली के समान हैं।

(ग) भारत की मिट्टी के कण-कण में भगवान रमते हैं।

लिखित (Written)

1. **(क)** **(अ)** तीरथ धाम के **(ख)** **(स)** दोनों में

(ग) **(अ)** सावन

2. **(क)** अभिषेक, **(ख)** पावन।

3. कदम-कदम पर मन्दिर-मस्जिद, डगर-डगर गुरुद्वारे हैं।
जहाँ मुरादें पूरी होतीं, जो भी हाथ पसारे हैं।
हर नारी देवी की मूरत, बच्चे राम और श्याम हैं।
पावन है मेरे देश की धरती, तपस्थली हर ग्राम है।

4. **(क)** भारत के गाँवों को तीरथ-धाम इसलिए कहा गया है क्योंकि यहाँ के कण-कण में भगवान निवास करते हैं।

(ख) कवि ने शत्-शत् बार भारत-भूमि को नमन किया है।

व्याकरण (Grammar)

1. तपस्थलि – तपस्थली, गुरूद्वारा – गुरुद्वारा
मस्जीद – मस्जिद अभीशेक – अभिषेक

2. बच्चे – बच्चा, मुरादें – मुराद
नारी – नारियाँ, मूर्ति – मूर्तियाँ

3. नर – नारी, बच्चा – बच्ची
देवी – देवता, लड़का – लड़की

क्रियाकलाप (Activity)

1. छात्र स्वयं करें।

2. भारत-भूमि की विलक्षण विशेषता है जो इसे महान बनाती है। यहाँ कई विदेशी आक्रांता आए और इस पवित्र भूमि में समा गए। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध आदि सभी धर्म यहाँ पाए जाते हैं। हमारा देश अनेकता में एकता के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ हर धर्म, जाति, वर्ग और संप्रदाय के लोग मिल-जुलकर रहते हैं और एक-दूसरे की संस्कृति का सम्मान करते हैं।

आदर्श प्रश्न–पत्र–1

उत्तरमाला

1. कमल शहद गरम नरम नमक

2. **(क)** तोता, **(ख)** गुलाब, **(ग)** सैनिक,
(घ) आम , **(ङ)** गुच्छा,

3. क्ष-क्षत्रिय, क्षमा श्र-श्रमिक, श्रवण
ध-धनुष, धन ड्र-ड्रम, ड्रामा

4. छात्र स्वयं करें।

5. ट्रक, ड्रामा, पर्वत, मार्च, ट्रेन, क्रोध, प्रश्न, दर्पण, हर्ष, प्रिय

6. **(क)** नादान [✓]
(ख) गुफा में [✓]
(ग) चन्दन [✓]
(घ) हिन्दुओं का [✓]

7. **(क)** चूँ-चूँ ने राजा को उसकी टोपी कुतरने की धमकी दी।
(ख) पक्षी मनुष्यों को परिश्रमी बनने तथा परस्पर प्रेमपूर्वक जीवन जीने का संदेश देते हैं।
(ग) बनवीर बड़ा ही क्रूर शासक था। वह निष्कंटक राज्य करने के लिए उदयसिंह को मारना चाहता था।
(घ) दीपावली की रात में गणेश और लक्ष्मी जी की पूजा होती है।

8. (क) – [✗] (ख) – [✓]
(ग) – [✓] (ङ) – [✗]

9. पक्खी – पक्षी वर्शा – वर्षा
बाताबरण – वातावरण म्रत्यु – मृत्यु
द्रढ़ – दृढ़

10. छात्र स्वयं करें।

आदर्श प्रश्न–पत्र–2

उत्तरमाला

1. **(क)** भामाशाह ने अपनी सम्पत्ति महाराणा प्रताप को इसलिए सौंप दी ताकि वे अपनी सेना को पुनः संगठित कर सकें।
(ख) रानी लक्ष्मीबाई का नाम इसलिए प्रसिद्ध है क्योंकि वे अपने देश की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अंग्रेजों का बड़ी बहादुरी से मुकाबला किया और बलिदान हो गईं।
(ग) चूहे ने शेर से प्रार्थना की कि हे जंगल के राजा! आप मुझे छोड़ दें किसी दिन मैं भी आपके काम आऊँगा।
(घ) यहाँ मोतियों से आशय ओस की बूँदों से है।
(ङ) हमारे देश के गाँव तपस्थली के समान हैं।

2. **(क)** गुरु **(ख)** विवाह **(ग)** छाया
(घ) अँधेरा **(ङ)** पराजय

3. **(क)** – [✗] **(ख)** – [✗]
(ग) – [✓] **(घ)** – [✗]
(ङ) – [✓]

4. पक्खी – पक्षी गुरू – गुरु
सीतल – शीतल म्रत्यू – मृत्यु
पृथम – प्रथम पृकास – प्रकाश
ग्रहकार्य – गृहकार्य ब्यबहार – व्यवहार

5. खिलौना – खिलौने पुस्तकें – पुस्तक
टोकरी – टोकरियाँ चिड़ियाँ – चिड़िया
महिला – महिलाएँ नदियाँ – नदी

6. शेर – शेरनी बकरी – बकरा
बालक – बालिका हथिनी – हाथी
चौधरी – चौधराइन ठकुराइन – ठाकुर

7. फूल – पुष्प घोड़ा – तुरंग
चन्द्रमा – चाँद साँप – सर्प
आकाश – नभ बादल – मेघ

8.

रात	–	दिन	अच्छा	–	बुरा
ऊँचा	–	नीचा	सोना	–	जागना
गर्म	–	ठंडा	रोना	–	हँसना

9.

(क) मेरा विद्यालय

1. मेरे स्कूल का नाम बाल विद्या मंदिर है।
2. मेरा विद्यालय उदयपुर में स्थित है।
3. मेरे विद्यालय में प्रथम वर्ष से बारहवीं कक्षा तक पढ़ाई होती है।
4. हमारे विद्यालय में छात्र और छात्राएँ साथ में पढ़ते हैं।
5. मेरे विद्यालय के छात्रों की पोषाक का रंग आसमानी है।
6. मेरे विद्यालय का समय सुबह 8 बजे से लेकर 2 बजे तक का है।
7. हमारे विद्यालय में सुन्दर गार्डन है जिसमें सुन्दर पेड़ पौधे लगे हुए हैं।
8. इस विद्यालय में 40 कमरे हैं।
9. हमारे विद्यालय के अध्यापक और अध्यापिकाओं की संख्या 35 है।
10. मुझे मेरा विद्यालय बहुत अच्छा लगता है।

(ख) मेरा मित्र

1. वैसे तो स्कूल में मेरे कई सारे मित्र हैं लेकिन दिव्यांश मेरा प्रिय मित्र है।
2. दिव्यांश एक होशियार छात्र के साथ-साथ कक्षा का मॉनिटर भी है।
3. हम दोनों एक ही स्कूल की एक ही क्लास में पढ़ते हैं।
4. दिव्यांश बहुत ही होशियार छात्र है वह कक्षा में ज्यादातर प्रथम स्थान प्राप्त करता है।
5. दिव्यांश मेरी पढ़ाई संबंधी हर प्रकार से सहायता करता है।
6. मेरे प्रिय मित्र का घर मेरे घर से कुछ ही दूरी पर है।
7. मेरा प्रिय मित्र सभी की मदद करने के लिए हमेशा तत्पर रहता है।
8. हम दोनों पढ़ाई के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों में भी भाग लेते हैं।
9. मेरा एक सच्चा मित्र है जिस पर मैं सबसे ज्यादा भरोसा करता हूँ।
10. मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि हमारी दोस्ती को किसी की नजर न लगे।

(ग) मोर

1. मोर भारत का राष्ट्रीय पक्षी है।
2. 26 जनवरी 1963 को मोर को राष्ट्रीय पक्षी का दर्जा मिला था।
3. मोर के सर पे कलगी होती है।
4. मोर पूरे भारतवर्ष में पाए जाते हैं।
5. मोर वर्षाऋतु में अपने पंख खोलकर नृत्य करता है।
6. मोर अनाज, फल और कीड़े-मकोड़े आदि खाता है।
7. मोर की आयु औसतन 25 से 30 साल होती है।
8. भारतीय मोर लगभग 1 से 1.5 मीटर तक लम्बा होता है।
9. मोर के पंखों से पंखे और मुकुट आदि बनाये जाते हैं।
10. हमें मोर पक्षी का संरक्षण करना चाहिए।

(घ) हाथी

1. हाथी विशालकाय जानवर है।
2. इसके चार पैर दो आँख, दो बड़े दाँत, दो बड़े कान, एक लम्बी सूँड़ और एक छोटी पूँछ होती है।
3. हाथी के खाने के दाँत अलग होते हैं जो बाहर मौजूद दो दाँतों के मुकाबले बहुत छोटे होते हैं।
4. हाथी के दाँत बेशकीमती होते हैं, इनके दाँतों की तस्करी करना दंडनीय अपराध की श्रेणी में आता है।
5. हाथी को कीचड़ में नहाना बहुत पसंद होता है।
6. हाथी की सूँड़ बहुत मजबूत होती है जिसकी मदद से हाथी भारी भरकम सामान को भी बड़ी आसानी से उठा लेता है।
7. हाथी का मनपसंद भोजन केला और गन्ना है।
8. वैसे तो हाथी जंगल में रहने वाला जीव है लेकिन कुछ लोग कमर्शियल कारणों से इसे पालते भी हैं।
9. सामान्यत: हाथी इंसानों के पर हमला नहीं करते लेकिन यदि इन्हें खतरा महसूस हुआ तो यह आपकी पल भर में जान भी ले सकते हैं।
10. हाथी को भगवान गणेश का रूप भी माना जाता है।

10. उदय हुआ सूरज पूरब में, आसमान में छाई लाली।
रही न रात, न रहा अँधेरा, रही न चन्दा की उजियाली।।
डाल-डाल पर बैठे पक्षी, चह-चह, चह-चह चहक रहे हैं।
खिले फूल मुसकाईं कलियाँ, सारे उपवन महक रहे हैं।।

या

छात्र स्वयं करें।

●●

हिन्दी 2

पाठ–1

मेरा परिचय

छात्र स्वयं करें।

पाठ–2

ऐसे सूरज आता है

मौखिक (Oral)

(क) सूरज पूरब दिशा में उगता है।

(ख) सूर्योदय के समय चिड़ियाँ गाती हैं।

(ग) सूरज उगने पर सब लोग अपने-अपने कार्यों में लग जाते हैं।

(घ) सूरज ढलने पर धूप थकी-सी लगती है।

(ङ) सूरज के तेज चमकने पर गगन दमकता है।

लिखित (Written)

1. गाती हैं चिड़ियाँ सारी,
खिलती हैं कलियाँ प्यारी।
दिन सीढ़ी पर चढ़ता है,
ऐसे सूरज बढ़ता है।
गरमी कम हो जाती है,
धूप थकी-सी आती है।
सूरज आगे चलता है,
ऐसे सूरज ढलता है।

2. **(क)** सुबह सूरज लाल रंग बिखराता है।
(ख) सूरज उगने पर कलियाँ खिल जाती हैं।
(ग) अपने कामों में लग जाने पर सुस्ती भाग जाती है।
(घ) सूरज के बढ़ने पर दिन चढ़ने लगता है।

3. **(क)** पूरब → **(iii)** दरवाजा
(ख) गगन → **(v)** दमकता
(ग) रंग → **(i)** लाल
(घ) कलियाँ → **(ii)** खिलती
(ङ) धूप → **(iv)** थकी-सी

व्याकरण (Grammar)

(क) पुरब **(ख)** कलीयाँ
(ग) चिड़ियाँ **(घ)** सुस्ती
(ङ) प्यारी **(च)** पयारी
(छ) सीढ़ि **(ज)** धूप
(झ) सूरज **(ञ)** धरति
(ट) धिरती **(ठ)** धरती

2. **(क)** धीरे – तेज **(ख)** दिन – रात
(ग) सुस्ती – फुर्ती **(घ)** गरमी – सरदी
(ङ) आगे – पीछे **(च)** धूप – छाँव
(छ) पूर्व – पश्चिम **(ज)** चढ़ना – उतरना

क्रियाकलाप (Activity)

क्रियाकलाप 1 व 2 छात्र स्वयं करें।

3. **(क)** मैं सुबह सूर्योदय से पहले उठकर नित्यकर्मों से निवृत्त होता हूँ।
(ख) उसके बाद अपने दाँत साफ करके नहाने जाता हूँ।
(ग) नहाकर अपने विद्यालय के लिए तैयार होता हूँ।
(घ) तैयार होने के बाद नाश्ता करता हूँ।
(ङ) नाश्ता करके विद्यालय पढ़ने जाता हूँ।

पाठ–3

बचत का महत्त्व

मौखिक (Oral)

(क) फसल कम पैदा होने के कारण किसान परेशान था।

(ख) घर में केवल ग्यारह ही महीने का अनाज था।

(ग) किसान की पत्नी ने किसान से उसकी परेशानी का कारण पूछा।

(घ) किसान ने अपनी पत्नी को अपनी चिंता का कारण बताया।

(ङ) किसान की पत्नी ने उसे भरोसा दिलाया कि एक महीने के लिए भी अनाज का इंतजाम हो जाएगा।

लिखित (Written)

1. **(क)** अनाज, **(ख)** ध्यान,
(ग) आश्वासन, **(घ)** वर्ष, **(ङ)** बोरी।

2. **(क)** किसान की फसल बहुत कम हुई थी।
(ख) किसान के पास ग्यारह महने का अनाज था। बाकी के एक महीने का अनाज कहाँ से आएगा? इस बात की चिन्ता थी।

(ग) किसान की अपनी पत्नी के इस आश्वासन से राहत मिली कि अंतिम महीने के लिए भी अनाज का प्रबंध हो जाएगा।

(घ) किसान की पत्नी थोड़ा-सा अनाज एक अलग बोरी में इसलिए डालती थी, जिससे वह बचा हुआ अनाज वर्ष के अंतिम महीने में उपयोग में आ सके।

(ङ) बचत करने पर यह लाभ होता है कि बचत की हुई वस्तु बुरे वक्त में काम आ सकती है।

3. (क) ✗ **(ख)** ✗ **(ग)** ✓ **(घ)** ✓ **(ङ)** ✗

व्याकरण (Grammar)

1. (क) किसान गाँव में रहते हैं।

(ख) चिंता चिता के समान होती है।

(ग) किसान की पत्नी थोड़ा-सा अनाज अलग बोरी में निकाल देती थी।

(घ) वर्ष के अंत में अनाज कम नहीं पड़ा।

(ङ) हम सभी को सदैव प्रसन्न रहना चाहिए।

2. (क) किसान – कृषक, हरिहर

(ख) वर्ष – साल, बरस

(ग) इंतजाम – प्रबंध, व्यवस्था

(घ) प्रसन्न – खुश, हर्षित

(ङ) पत्नी – दारा, भार्या

3. (क) किसान – किसान लोग

(ख) पत्नी – पत्नियाँ

(ग) महीना – महीने

(घ) बोरी – बोरियाँ

(ङ) वर्ष – कई वर्ष

क्रियाकलाप (Activity)

1. बचत परिवार के जीवन स्तर में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। परिवार को आर्थिक रूप से आत्मविश्वासी बनाती है। बचत धन की असमानताओं में सहायता करती है। बचत समाज में परिवार को मान मूल्य प्रदान करती है। बचत घर तथा वाहन अथवा परिवार के लिए अन्य संपत्ति खरीदकर जीवन-स्तर में सुधार लाने में सहायक होती है। बचत आय तथा व्यय के बीच संतुलन बनाती है।

2. जीवन में बचत का उतना ही महत्त्व है जितना आमदनी का। मनुष्य की आमदनी कितनी ही अधिक क्यों न हो, परंतु यदि उसमें बचत करने की आदत नहीं है तो उसे अपने जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। बचत हमारे जीवन के स्तर को ऊँचा उठाने व विशेष असमय आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक होती है। धन की बचत के साथ-साथ समय की बचत भी उतनी आवश्यक है। जो व्यक्ति समय पर अपने काम पूरे नहीं करता। समय का दुरुपयोग करता है। वह जीवन में कभी सफल नहीं हो सकता। अत: हमें समय व धन दोनों की ही बचत करनी चाहिए।

3. छात्र स्वयं करें।

पाठ–4

लालची कुत्ता

मौखिक (Oral)

(क) कुत्ते को घर के बाहर एक रोटी पड़ी मिली।

(ख) कुत्ते ने पानी में अपनी परछाईं देखी।

(ग) नहीं, हमें लालच नहीं करना चाहिए।

लिखित (Written)

1. (क) (द) गली से

(ख) (ब) रोटी

(ग) (अ) आराम से

(घ) (अ) पुल से

2. (क) कुत्ते ने रोटी पाकर सोचा कि मैं इस पूरी रोटी को दूर जाकर आराम से अकेले खाऊँगा।

(ख) कुत्ते ने अपनी परछाईं देखकर सोचा कि वह कोई दूसरा कुत्ता है, जिसके पास रोटी है। मैं इसकी भी रोटी छीन लेता हूँ।

(ग) कुत्ता इसलिए उदास था कि उसे दूसरी रोटी तो मिली नहीं और लालच के कारण उसने अपनी रोटी भी खो दी।

(घ) लालच का परिणाम सदैव बुरा होता है।

3. (क) आराम से, **(ख)** परछाईं, **(ग)** भौंकने, **(घ)** रोटी, **(ङ)** उदास।

व्याकरण (Grammar)

1. (क) कुत्ता एक वफादार जानवर है।

(ख) हम अनाज से रोटी बनाते हैं।

(ग) कुत्ते ने पानी में अपनी परछाईं देखी।

(घ) पुल पार करते हुए कुत्ता अचानक रुक गया।

2. (क) एक – अनेक (ख) गली – गलियाँ
(ग) कुत्ता – कुत्ते (घ) वह – वे
(ङ) रोटी – रोटियाँ (च) उसका – उसके

3.

कुत्ता	– भूखा	बहुत	– पूरी
गुजर	– दूर	हुई	– दूसरी
पुल	– धूल	मुँह	– लूँ
मुझे	– हूँ	बुरी	– दूरी

क्रियाकलाप (Activity)

1. एक बार एक कुत्ते को बहुत जोर से भूख लग रही थी। वह भोजन की तलाश में भटक रहा था। तभी उसे एक गली में रोटी पड़ी हुई मिल गई। वह उस रोटी का पूरा आनंद लेना चाहता था। वह शांति से अकेले बैठकर उस रोटी को खाना चाहता था इसलिए उसने सोचा कि वह नदी के दूसरी ओर जाकर आराम से उस रोटी को खाएगा। जब वह कुत्ता उस नदी को पुल से पार कर रहा था, तभी उसने नदी के पानी में अपनी परछाईं देखी। अपनी परछाईं को देखकर उसने सोचा यह नदी में दूसरा कुत्ता है, जिसके पास भी एक रोटी है, क्यों न मैं इससे रोटी छीन लूँ फिर मैं दोनों रोटियाँ नदी के उस ओर जाकर आराम से खाऊँगा। यह सोचकर वह कुत्ता अपनी ही परछाईं पर जोर से भौंका। भौंकते ही उसके मुँह से रोटी निकलकर नदी में गिर गई और वह लालची कुत्ता भूखा ही रह गया। वह अपने लालच पर पछता रहा था।

2. छात्र स्वयं करें।

3.
1. मेरे पालतू कुत्ते का नाम टॉमी है।
2. उसका रंग काला है।
3. टॉमी को खाने में ब्रेड, रोटी, दूध और अण्डा बहुत पसंद हैं।
4. टॉमी बहुत समझदार और वफादार है।
5. वह रात को मेरे घर की देखभाल करता है।

पाठ–5

मेरा जन्मदिन

मौखिक (Oral)

(क) कल अक्षरा का जन्मदिन था।
(ख) अक्षरा सात साल की है।
(ग) अक्षरा को सबसे पहले उसकी माँ ने बधाई दी।
(घ) अक्षरा ने शाम को नए कपड़े पहने।
(ङ) कमरा गुब्बारों और बाकी सामान से सजा हुआ था।

लिखित (Written)

1. **(क)** अक्षरा अपने मम्मी-पापा के साथ मंदिर में पूजा करने के लिए गई।
(ख) शाम को अक्षरा के सभी मित्र अक्षरा के घर आए।
(ग) पापा बाजार से केक, गुब्बारे, सजावट और खाने का सामान लाए।
(घ) केक पर आठ मोमबत्तियाँ लगी थीं।
(ङ) रोहन ने गीत गाया।

2. **(क)** खुशी, **(ख)** कपड़े,
(ग) सात, **(घ)** अंत्याक्षरी।

3. **(क)** ✗ **(ख)** ✓ **(ग)** ✓ **(घ)** ✗ **(ङ)** ✓

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** कल अक्षरा का जन्मदिन था।
(ख) अक्षरा मंदिर पूजा करने गई।
(ग) हम सभी बाजार खरीदारी करने गए।
(घ) जन्मदिन पर अक्षरा को ढेर सारे उपहार मिले।
(ङ) अक्षरा ने सभी को धन्यवाद दिया।

2. **(क)** खुश – दु:खी **(ख)** मित्र – शत्रु
(ग) सोना – जागना **(घ)** जलाना – बुझाना
(ङ) नया – पुराना **(च)** मम्मी – पापा

क्रियाकलाप

1. पिछले माह मैंने अपना जन्मदिन मनाया। मैंने अपने सभी दोस्तों को जन्मदिन की पार्टी में आमंत्रित किया व माता-पिता ने हमारे कुछ रिश्तेदारों को आमंत्रित किया। सुबह मैं अपने माता-पिता के साथ मंदिर पूजा करने गया। घर पर शाम की पार्टी की तैयारियाँ होने लगीं। मिठाइयों व पकवानों की महक से घर भरा हुआ था। दोपहर से मेहमानों का आना शुरू हो गया। मेरी माँ और बहन ने मिलकर घर को सुंदर तरीके से सजाया। शाम को मैंने अपने जन्मदिन के लिए विशेष रूप से लाए हुए कपड़े पहने। अब तक मेरे सभी मित्र व रिश्तेदार आ चुके थे। मैंने अपना जन्मदिन का केक काटा। मेरे दोस्त और परिवार के सदस्यों ने मेरे लिए जन्मदिन का गीत गाया। सभी ने मुझे ढेर सारे उपहार दिए। हम सबने खूब मजे किए। उसके बाद सभी ने खाना खाया और अपने घर चले गए। उन सभी के जाने के बाद मैंने अपने उपहार खोले। सभी बहुत सुंदर थे। जन्मदिन के इतने सुंदर आयोजन के लिए मैंने अपने माता-पिता को धन्यवाद दिया।

2. छात्र स्वयं करें।

पाठ–6

तितली

मौखिक (Oral)

(क) कविता में सात रंगों की तितलियों का वर्णन है।
(ख) तितलियाँ सभी को अच्छी लगती हैं।
(ग) तितलियाँ कहीं दूर से आती हैं।

लिखित (Written)

1. दूर कहीं से आती है,
फूलों पर मँडराती है।
हम जब जाएँ उसको छूने,
झट से वह उड़ जाती है।

2. **(क)** तितलियाँ हरी-सुनहरी, काली, पीली, लाल, नीली, अनेक रंगों की होती हैं।
(ख) तितलियाँ सबको अच्छी लगती हैं।
(ग) तितलियाँ फूलों पर मँडराती हैं।
(घ) जब हम उनको छूने जाते हैं, तो वे उड़ जाती हैं।
(ङ) तितलियाँ फूलों के पास उनका रस पीने के लिए आती हैं।

3. **(क)** **(अ)** सुंदर
(ख) **(ब)** रंग-बिरंगे
(ग) **(स)** फूलों का रस

4. सुहानी—रानी रानी—गुड़धानी
आती—जाती पीली—नीली

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** तितली के पंख रंग-बिरंगे होते हैं।
(ख) सुबह-सुबह सुहानी हवा चलती है।
(ग) तितली फूल का रस पीती है।
(घ) गुड़ और भुने गेहूँ मिलाकर गुड़धानी बनाते हैं।

2. बड़ा — छोटा दूर — पास
आना — जाना काला — गोरा

3. तरह , हम, जब, वह
झट, रस कल, पर।

क्रियाकलाप (Activity)

1. मधुमक्खी, भौंरा, हॉक पतिंगा।

2. छात्र स्वयं करें।

पाठ–7

बुद्धिमान चूजे

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।

2. **(क)** जिसमें खतरा हो, वह खतरनाक होता है।
(ख) काली बिल्ली खतरनाक इसलिए है क्योंकि वह छोटे बच्चों को खा जाती है।
(ग) बिल्ली कुत्ते को खतरनाक मानती है।
(घ) जो सोच-समझकर कार्य करे उसे बुद्धिमान कहते हैं।

लिखित (Written)

1. **(क)** **(ब)** काली **(ख)** **(ब)** मुर्गी
(ग) **(स)** मुर्गी

2. **(क)** दरवाजा **(ख)** खतरनाक
(ग) मुर्गी **(घ)** मौसी

3. **(क)** ✗ **(ख)** ✓ **(ग)** ✓ **(घ)** ✗

4. **(क)** मुर्गी को सब्जी लेने के लिए बाजार जाना था।
(ख) मुर्गी के जाते ही वहाँ बिल्ली आयी।
(ग) बिल्ली कुत्ते के आने की बात सुनकर भाग गई।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** दूर **(ख)** अन्दर **(ग)** सफेद
(घ) बड़ा **(ङ)** दिन **(च)** रोना

क्रियाकलाप (Activity)

1. **(क)** बंदर **(घ)** घोड़ा **(छ)** लोमड़ी
(ख) हाथी **(ङ)** बिल्ली **(ज)** कुत्ता
(ग) चीता **(च)** शेर

2. **मुर्गी**
1. मुर्गी भारत में पाया जाने वाला एक पक्षी है।
2. इसके दो पैर होते हैं।
3. मुर्गी के सिर के ऊपर एक कलगी लगी होती है।
4. यह दड़बे में रहती है।
5. यह अनाज के दाने, कीड़े-मकोड़े आदि खाती है।
6. मुर्गी अंडा देती है, इसके बच्चों को चूजा कहते हैं।

पाठ–8

हमारा राष्ट्रीय पक्षी–मोर

मौखिक (Oral)

(क) हमारे राष्ट्रीय पक्षी का नाम मोर है।
(ख) इसका शरीर चमकीले रंग का होता है।
(ग) मोर के सिर पर सुंदर कलगी होती है।
(घ) जब आसमान में काले-काले बादल घिरते हैं, तब मोर नाचता है।
(ङ) मोर साँप को मार सकता है।

लिखित (Written)

1. **(क)** मोर के सिर की कलगी को उसका मुकुट कहते हैं।
   (ख) मोर की पूँछ रंग-बिरंगे पंखों वाली होती है।
   (ग) बादलों को देखकर मोर नाचने लगता है।
   (घ) मोर अनाज के दाने, नरम फल, कीड़े-मकोड़े आदि खाता है।
   (ङ) मोर को 26 जनवरी, 1963 को राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया गया।
   (च) मोर बाग-बगीचों, खेतों और वनों में रहता है।
2. **(क)** देश, **(ख)** अद्‌भुत, **(ग)** रंग-बिरंगे, **(घ)** पैर, **(ङ)** साँप।
3. **(क)** रंग-बिरंगे → (iii) पंख
   (ख) कलगी → (iii) मुकुट
   (ग) सौंदर्य → (iv) अद्‌भुत
   (घ) काले → (i) बादल
   (ङ) खाना → (v) अनाज

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** अद्‌भुत **(ख)** सौंदर्य
   (ग) राष्ट्रीय **(घ)** कीड़े-मकोड़े
   (ङ) साँप **(च)** जानकारी
2. **(क)** मोर एक सुंदर पक्षी है।
   (ख) शेर हमारा राष्ट्रीय पशु है।
   (ग) गीता एक सुंदर बालिका है।
   (घ) मोर की पूँछ रंग-बिरंगी होती है।
   (ङ) मुझे फल बहुत पसंद हैं।
   (च) रोहन अच्छा लड़का है।
3. (क) सही – गलत (ख) आसान – कठिन
   (ग) आम – विशेष (घ) ऊँचा – नीचा
   (ङ) भारी – हलका (च) बहुत – थोड़ा
   (छ) मोटा – पतला (ज) नरम – गरम

क्रियाकलाप (Activity)

1. **(क)** मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी है।
   (ख) मोर की पूँछ रंग-बिरंगी और सुंदर होती है।
   (ग) मोर के सिर पर सुंदर कलगी होती है।
   (घ) मोर बादलों को देखकर नाचता है।
   (ङ) मोर को पक्षियों का राजा भी कहा जाता है।
2. छात्र स्वयं करें।

पाठ–9

मुर्गा और कुत्ता

मौखिक (Oral)

(क) कुत्ता गाँव के रास्ते से जा रहा था।
(ख) कुत्ते की नजर पेड़ पर बैठे एक मुर्गे पर पड़ी।
(ग) कुत्ता मुर्गे के मालिक के आने का समाचार सुनकर वहाँ से भाग गया।

लिखित (Written)

1. **(क) (ब)** मुर्गे को
   (ख) (स) कुत्ते के
   (ग) (स) मालिक के
2. **(क)** कुत्ते ने मुर्गे को पेड़ पर देखकर, उससे पेड़ से नीचे उतरकर आने को कहा।
   (ख) कुत्ता मुर्गे को खाना चाहता था, इसलिए वह उसे नीचे बुला रहा था।
   (ग) मुसीबत आने पर घबराना नहीं चाहिए, बल्कि सूझ-बूझ से काम लेना चाहिए।
3. **(क)** कुत्ते ने मुर्गे से
   (ख) कुत्ते ने मुर्गे से
   (ग) मुर्गे ने कुत्ते से
   (घ) कुत्ते ने मुर्गे से
4. **(क)** पेड़, **(ख)** समाचार, **(ग)** आक्रमण।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** मुर्गा सुबह-सुबह बाँग देता है।
   (ख) मेरा घर बहुत सुंदर है।
   (ग) आज का सबसे बड़ा समाचार सुना।
   (घ) अब कोई किसी पर आक्रमण नहीं करेगा।
2. (क) मुर्गा – मुर्गे (ख) बिल्ली – बिल्लियाँ
   (ग) कुत्ता – कुत्ते (घ) तितली – तितलियाँ
   (ङ) घोड़ा – घोड़े (च) डाली – डालियाँ
   (छ) गधा – गधे (ज) लोमड़ी – लोमड़ियाँ
3. उसकी, पड़ी, नीचे, सभी, किसी, अच्छी, मुसीबत, अपनी, करनी।

क्रियाकलाप (Activity)

1. चूहा → बिल्ली से
   बिल्ली → कुत्ते से
2. छात्र स्वयं करें।

पाठ–10

जग–जीवन के आधार पेड़

मौखिक (Oral)

(क) हमारे जीवन के आधार पेड़ हैं।

(ख) पेड़ों से हमें प्राणवायु मिलती है।

(ग) पंछी पेड़ों पर रहते हैं।

लिखित (Written)

1. ईश्वर के हैं वरदान पेड़,
इस सृष्टि की पहचान पेड़।
सबको प्राणवायु ये देते,
बदले में कुछ भी नहीं लेते।
फल-फूल और औषधियों के संग,
देते शीतल छाँव पेड़।

2. **(क)** पेड़ धरती का शृंगार हैं।

(ख) पेड़ हमसे प्राणवायु के बदले कुछ भी नहीं लेते हैं।

(ग) लाखों पक्षी पेड़ों पर रहते हैं।

(घ) हमें पेड़ इसलिए बचाने चाहिए, क्योंकि ये शुद्ध हवा, फल-फूल, औषधियाँ, छाया आदि सब-कुछ देते हैं।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** कली – कलियाँ **(ख)** तितली – तितलियाँ
(ग) नदी – नदियाँ **(घ)** कविता – कविताएँ
(ङ) औषधि – औषधियाँ **(च)** लता – लताएँ

2. **(क)** वृक्ष हमें जीवन देते हैं।

(ख) जीवन ईश्वर का उपहार है।

(ग) पेड़ धरती के शृंगार हैं।

(घ) तितली फूल पर मँडराती है।

क्रियाकलाप (Activity)

पेड़ों के लाभ

(क) पेड़ प्रकृति की एक सुन्दर देन हैं।

(ख) पेड़ हमें छाया देते हैं।

(ग) पेड़ हमें फल-फूल, जड़ी-बूटियाँ, औषधियाँ और प्राणवायु देते हैं।

(घ) पेड़ की लकड़ियों से हम कई चीजें बनाते हैं, जैसे-कुर्सी, मेज, पेंसिल आदि।

(ङ) पेड़ मिट्टी के कटाव को रोकते हैं।

(च) पेड़ औषधि का महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

(छ) पेड़ जीव-जन्तुओं को भोजन और आश्रय प्रदान करते हैं।

(ज) पेड़ वातावरण को अनुकूलता प्रदान करते हैं।

पाठ–11

चाचा नेहरू

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।

2. **(क)** पं० जवाहरलाल नेहरू भारत के सबसे पहले प्रधानमंत्री थे।

(ख) हम प्रतिवर्ष 14 नवंबर को बाल-दिवस मनाते हैं।

(ग) बच्चे पंडित जवाहरलाल नेहरू को चाचा कहकर पुकारते थे।

(घ) नेहरूजी सन् 1912 में भारत लौटे।

लिखित (Written)

1. **(क)** **(ब)** इलाहाबाद में

(ख) **(ब)** पंडित मोतीलाल नेहरू

(ग) **(स)** बाल-दिवस

2. **(क)** तन-मन-धन **(ख)** वकील
(ग) प्रधानमंत्री **(घ)** 14

3. **(क)** ✗ **(ख)** ✓ **(ग)** ✓ **(घ)** ✓ **(ङ)** ✗

4. **(क)** पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्म 14 नवंबर, सन् 1889 को हुआ था।

(ख) पंडित नेहरू के पिता का नाम पंडित मोतीलाल नेहरू तथा माताजी का नाम श्रीमती स्वरूप रानी नेहरू था।

(ग) पंडित नेहरू बच्चों से बहुत प्यार करते थे इसलिए उनकी याद में उनका जन्मदिन बाल-दिवस के रूप में मनाया जाता है।

(घ) नेहरू जी ने उच्च शिक्षा ट्रिनिटी कॉलेज लंदन से प्राप्त की।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** नेहरू **(ख)** निरन्तर
(ग) स्वतंत्रता **(घ)** पंडित

2. **(क)** गुलामी, **(ख)** अशिक्षा,
(ग) दुखी, **(घ)** असहयोग,
(ङ) अंतिम **(च)** निर्धन

क्रियाकलाप (Activity)

1. छात्र स्वयं करें।

2. अध्यापक के सहयोग से छात्र स्वयं करें।

पाठ–12

दीपावली

मौखिक (Oral)

(क) हमारा भारत अपनी सभ्यता और संस्कृति के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है।

(ख) भगवान श्रीराम चौदह वर्षों का वनवास पूरा करके अयोध्या लौटे थे।

(ग) पटाखे व फुलझड़ियाँ दीपावली के त्योहार पर चलाए जाते हैं।

(घ) दीपावली के दिन लोग नए-नए वस्त्र पहनते हैं।

लिखित (Written)

1. **(क)** दीपावली का त्योहार अक्टूबर-नवम्बर के महीने में मनाया जाता है।

(ख) भगवान श्रीराम के घर वापस आने पर लोगों ने घी के दीपक जलाए थे।

(ग) दीपावली से कुछ दिन पहले लोग अपने घरों और दुकानों की सफाई करते हैं।

(घ) दीपावली की रात में गणेश तथा लक्ष्मी की पूजा की जाती है।

2. **(क)** त्योहार, **(ख)** रौनक, **(ग)** मिठाइयाँ, **(घ)** दीये, **(ङ)** पटाखे।

3. **(क)** भारतीय → **(iii)** संस्कृति

(ख) श्रीराम → **(iv)** अयोध्या

(ग) दीये → **(v)** घी

(घ) दीपावली → **(ii)** त्योहार

(ङ) पूजा → **(i)** लक्ष्मी-गणेश

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** संस्कृति **(ख)** अयोध्या

(ग) त्योहार **(घ)** मिठाइयाँ

(ङ) नवंबर **(च)** लक्ष्मी

2. **(क)** भारतीय संस्कृति महान है।

(ख) भारत में अनेक त्योहार मनाए जाते हैं।

(ग) दीपावली हिन्दुओं का प्रसिद्ध त्योहार है।

(घ) दीपावली पर बाजारों में रौनक रहती है।

(ङ) दीपावली पर लोग लक्ष्मी-गणेश की पूजा करते हैं।

3. **(ख)** (त्योहारों) **(ग)** (दुकानों) **(ङ)** (मिठाइयाँ)

(छ) (पटाखे) **(झ)** (फुलझड़ियाँ)

क्रियाकलाप (Activity)

1. दीपावली के आने से पहले हम अपने घरों की सफाई करते हैं। नए-नए कपड़े, पटाखे और मिठाइयाँ खरीदते हैं। दीपावली वाले दिन हम मित्रों और रिश्तेदारों को मिठाइयाँ बाँटते हैं। रात को परिवार के सभी सदस्यों के साथ मिलकर दीये जलाते हैं। फिर गणेश-लक्ष्मी की पूजा करते हैं। पूजा करने के बाद हम पटाखे व फुलझड़ियाँ चलाते हैं और मिठाइयाँ खाते हैं। इस दिन हम खूब मजे करते हैं।

2. छात्र स्वयं करें।

पाठ–13

रसगुल्ले

मौखिक (Oral)

(क) रसगुल्ले उजले रंग के होते हैं।

(ख) रसगुल्लों का आकार गोल होता है।

(ग) बच्चे ने माँ से एक रसगुल्ला माँगा।

(घ) बच्चा टिफिन में रसगुल्ले ले जाना चाहता है।

लिखित (Written)

1. डूबे हुए चाशनी में ये,
माँ तुझ जैसे लगते हैं।
इनको माँ तू मुझको दे दे,
ये मेरे मुँह में फबते हैं।

2. **(क)** रसगुल्लों का स्वाद मीठा होता है।

(ख) रसगुल्लों पर नजर पड़ते ही उन्हें खाने का मन करता है।

(ग) रसगुल्ले चाशनी में डूबे हुए हैं।

3. **(क)** **(ब)** गोल, **(ख)** **(ब)** मुँह में पानी आता है,

(ग) **(स)** मित्रों के।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** रसगुल्ले बहुत स्वादिष्ट होते हैं।

(ख) कोयल की आवाज मधुर होती है।

(ग) रसगुल्ले चाशनी में डूबे होते हैं।

(घ) बच्चा टिफिन में रसगुल्ले ले जाना चाहता है।

2. माता – जननी, माँ पानी – जल, वारि

मित्र – सखा मुँह – मुख

क्रियाकलाप (Activity)

* छात्र अभिभावक, अध्यापक एवं मित्रों की सहायता से स्वयं करें।

पाठ–14

सारस और किसान

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।

2. **(क)** सारसों का जोड़ा मक्का के एक खेत में रहता था।

(ख) सारसों के बच्चे छोटे थे।

(ग) सारस शाम को भोजन लेकर बच्चों के पास वापस लौटे।

लिखित (Written)

1. **(क)** **(अ)** स्वार्थी, **(ख)** **(ब)** काम पूरा नहीं होता, **(ग)** **(स)** मक्का के खेत में।

2. **(क)** गाँव, **(ख)** फसल, **(ग)** स्वार्थी, **(घ)** भरोसे, काम।

3. **(क)** ✓ **(ख)** × **(ग)** × **(घ)** ✓

4. **(क)** मक्का के खेत में सारस पक्षियों का जोड़ा रहता था।

(ख) सारसों ने बाहर जाने से पहले बच्चों से कहा, "हमारे यहाँ न रहने पर यदि कोई खेत के पास आए तो उसकी बात सुनकर याद रखना और हमें बताना।"

(ग) फसल पकने पर किसान ने अपने बेटे से कहा कि मैं गाँव के लोगों से फसल काटने के लिए कहूँगा।

(घ) सारसों के बच्चे अब उड़ने में निपुण हो गए, इसलिए वे निर्भय हो गए थे।

(ङ) अंत में सारस ने बच्चों से कहा कि किसान अब स्वयं फसल काटने वाला है अत: अब फसल अवश्य कटेगी।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** जल्दी, **(ख)** योग्य, **(ग)** प्रबंध, **(घ)** चिन्ता, **(ङ)** निर्भय, **(च)** अवश्य।

2. **(क)** मनुष्य सबसे स्वार्थी प्राणी है।

(ख) दूसरों के भरोसे कोई कार्य पूरा नहीं होता है।

(ग) हमें अपना कार्य स्वयं करना चाहिए।

(घ) किसान ने अपनी फसल स्वयं काटी।

3. **(क)** बच्चे, **(ख)** स्थानों, **(ग)** गाँवों, **(घ)** पक्षियों **(ङ)** पेड़ों, **(च)** खेतों, **(छ)** अंडे, **(ज)** फसलों।

4. अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

5. **(क)** शाम **(ख)** उजाला

(ग) निराशा **(छ)** भूल जाना

(ङ) छोटी **(च)** निर्भय

(छ) बूढ़ा **(ज)** चलना

क्रियाकलाप (Activity)

1. **(क)** मोर **(ख)** मैना
(ग) कठफोड़वा **(घ)** नीलकंठ
(ङ) कबूतर **(च)** तोता
(छ) कोयल **(ज)** चिड़िया

2. छात्र स्वयं करें।

पाठ–15

दाँतों की सफाई

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।

2. **(क)** राधा दूसरी कक्षा में पढ़ती थी।

(ख) राधा के दाँतों में दर्द रहता था।

(ग) राधा अपनी माँ के साथ दाँतों के डॉक्टर के क्लीनिक पर गई।

(घ) प्रतिदिन दाँत साफ न करने के कारण दाँतों में दर्द होता है।

लिखित (Written)

1. **(क)** **(स)** मधुर

(ख) **(ब)** दाँतों में कीड़ा लगना

(ग) **(अ)** दाँतों में दर्द के कारण

2. **(क)** रो, **(ख)** दाँतों, **(ग)** दूसरी, **(घ)** दर्द, **(ङ)** फल, कच्ची, **(च)** स्वस्थ।

3. **(क)** ✓ **(ख)** ✓ **(ग)** ✓ **(घ)** × **(ङ)** ✓

4. **(क)** राधा के मुँह से बदबू आने के कारण कक्षा के सभी बच्चे राधा से दूर-दूर रहते थे।

(ख) डॉक्टर ने राधा से कहा कि राधा, तुम्हारे दाँत बहुत गंदे हैं। क्या तुम दाँत साफ नहीं करती हो?

(ग) शरीर के पोषण हेतु भोजन को ठीक से चबाया जा सके इसलिए दाँतों का मजबूत व स्वस्थ होना आवश्यक है।

(घ) राधा मुस्कराकर डॉक्टर अंकल से बोली कि अब मैं दिन में दो बार दाँत साफ किया करूँगी, रोज दूध पीया करूँगी, कच्ची सब्जियाँ और फल भी खाया करूँगी।

(ङ) दाँतों की मजबूती के लिए फल तथा कच्ची सब्जियाँ खानी चाहिए, दूध पीना चाहिए और दिन में दो बार दाँत साफ करने चाहिए।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** मजबूत **(ख)** दाँत
(ग) बदबू **(घ)** स्वस्थ
(ङ) दवाई **(च)** डॉक्टर

2. **(क)** दूध हमें पोषण देता है।
(ख) तुलसी एक गुणकारी पौधा है।
(ग) हमें सबके साथ मधुर व्यवहार करना चाहिए।
(घ) राधा के दाँतों में तेज दर्द था।
(ङ) डॉक्टर ने उसके दाँतों का परीक्षण किया।

3. **(क)** भाती **(ख)** आती **(ग)** गुणकारी
(घ) बुलाती **(ङ)** लड़की **(च)** सिखलाती

4. **(क)** पीना चाहिए
(ख) खेल रहा है
(ग) परीक्षण किया

5. **(क)** मीठा **(ख)** शिष्या **(ग)** काया
(घ) जननी **(ङ)** स्कूल **(ग)** सखी

क्रियाकलाप (Activity)

1. हमें प्रतिदिन अपने दाँतों की सफाई करनी चाहिए। दिन में दो बार दाँत साफ करने चाहिए। रोज दूध पीना चाहिए। फल व कच्ची सब्जियाँ खानी चाहिए।

2. छात्र स्वयं करें।

पाठ–16

अमर शहीद `आज़ाद'

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।

2. **(क)** जुलूस में चन्द्रशेखर आजाद शामिल थे।
(ख) जुलूस को पुलिस ने आकर रोका।
(ग) उस साहसी बालक का नाम चन्द्रशेखर था।
(घ) अंग्रेज मजिस्ट्रेट ने बालक चन्द्रशेखर को पन्द्रह बेंत लगाए जाने की सजा दी।

लिखित (Written)

1. **(क)** जुलूस में 'भारतमाता की जय' और 'महात्मा गांधी की जय' के नारे लगाए जा रहे थे।
(ख) दारोगा ने जुलूस पर लाठियाँ चलवाईं इसलिए आज़ाद ने दारोगा के सिर पर पत्थर दे मारा।
(ग) मजिस्ट्रेट ने आज़ाद से उनका नाम, पिता का नाम और उनके घर का पता पूछा।
(घ) नगरवासियों ने आजाद का स्वागत फूल-मालाओं से किया।

2. **(क)** ✓ **(ख)** ✓ **(ग)** × **(घ)** ×

3. **(क)** पुलिस **(ख)** लाठियाँ
(ग) पन्द्रह **(घ)** फूल-मालाओं

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** महात्मा **(ख)** जुलूस **(ग)** मातृभूमि
(घ) पत्थर **(ङ)** मजिस्ट्रेट **(च)** सार्थक

2. **(क)** भारत एक महान देश है।
(ख) आजाद एक महान शहीद स्वतंत्रतासेनानी थे।
(ग) अंग्रेज दारोगा ने जुलूस पर लाठियाँ चलवाईं।
(घ) आज़ाद को पन्द्रह बेंत की सजा सुनाई गई।

3. **(क)** बच्चे, **(ख)** नारे, **(ग)** सवालों,
(घ) बेंतें, **(ङ)** मालाएँ, **(च)** नगरों।

4. **(क)** पिता, **(ख)** बालक, **(ग)** लट्ठ,
(घ) पुरुष, **(ङ)** नगरवासी, **(च)** गोला।

क्रियाकलाप (Activity)

1. चन्द्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई, 1906 को एक आदिवासी गाँव भाबरा में हुआ था। चन्द्रशेखर सिर्फ 14 साल की उम्र में 1921 में गांधी जी के असहयोग आंदोलन से जुड़ गए थे और तभी उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। जब जज ने उनसे उनका व उनके पिता का नाम और पता पूछा तो जवाब में चन्द्रशेखर ने अपना नाम आजाद और पिता का नाम स्वतंत्रता और पता जेल बताया था। उन्होंने राम प्रसाद बिस्मिल के साथ मिलकर काकोरी काण्ड को अंजाम दिया। भगत सिंह के साथ मिलकर लाला लाजपत राय की

मौत का बदला सॉण्डर्स की हत्या करके लिया एवं दिल्ली पहुँचकर असेम्बली बम काण्ड को अंजाम दिया। उन्होंने आजीवन आजाद रहने की कसम खाकर स्वयं को गोली मारकर जान दे दी किन्तु अंग्रेजों की पकड़ में नहीं आए।

2. अंग्रेजों ने भारत पर 150 वर्षों तक राज किया। वे भारतीयों के साथ गुलामों जैसा व्यवहार करते थे। उनसे कड़ी मेहनत करवाते थे और कम मेहनताना देते थे। वे स्त्रियों, बच्चों एवं बूढ़ों के साथ भी बहुत बुरा व्यवहार करते थे। मासूम लोगों को मारना, सताना, उन पर अत्याचार करना उन्हें बेहद पसंद था।

3. **भगत सिंह**

भगत सिंह का जन्म 27 सितंबर, 1907 को लायलपुर बंगा में हुआ था, जो इस समय पाकिस्तान में है। उनके पिता का नाम किशन सिंह और माता का नाम विद्यावती था। भगत सिंह लाला लाजपज राय से बेहद प्रभावित थे। इन्होंने चन्द्रशेखर आजाद के साथ मिलकर एक क्रांतिकारी संगठन तैयार किया। भगत सिंह एक अच्छे वक्ता, पाठक व लेखक भी थे। अंग्रेज इनके नाम से काँपते थे। भगतसिंह को 23 मार्च 1931 को इनके दो साथी राजगुरु व सुखदेव के साथ फाँसी दी गई।

पाठ–17

माता और पिता

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।

2. **(क)** माता-पिता को कवि ने ईश्वर का वरदान बताया है।

(ख) माता-पिता अपने बच्चों के लिए रात-दिन चिन्ता करते हैं।

(ग) उनके बच्चे पढ़-लिखकर विद्वान बनें यही प्रत्येक माता-पिता का अरमान होता है।

(घ) माता-पिता की सेवा से हमें समस्त सुख एवं भोग प्राप्त होते हैं।

लिखित (Written)

1. **(क)** माता-पिता सदैव अपने बच्चों का कल्याण चाहते हैं।

(ख) माता-पिता के मन में सदैव यही बात रहती है कि उनके बच्चे सदैव सुखी रहें।

(ग) यह सारा संसार माता-पिता के उपकारों से चलता है।

(घ) हमें बड़े होकर अपने माता-पिता की सेवा करनी चाहिए।

2. **(क)** ✓, **(ख)** ✗, **(ग)** ✓, **(घ)** ✗

3. **(क)** ईश्वर **(ख)** अनन्त

(ग) आज्ञा **(घ)** शान्ति

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** ईश्वर **(ख)** विद्वान

(ग) वरदान **(घ)** बलिदान

(ङ) सन्तति **(च)** नम्रता

(छ) शोक **(ज)** अशक्त

2. **(क)** माता-पिता सदैव अपनी सन्तान का कल्याण चाहते हैं।

(ख) हमें पीड़ित व्यक्तियों की सहायता करनी चाहिए।

(ग) हमें अपने माता-पिता के अरमान पूरे करने चाहिए।

(घ) हम नादान बालक हैं।

(ङ) हमें अपने माता-पिता का अपमान नहीं करना चाहिए।

3. **(क)** चाहते हैं **(ख)** रहती हैं

(ग) करते हैं **(घ)** कहती हैं

(ङ) खाते हैं **(च)** बनते हैं

(छ) सहते हैं **(ज)** चलते हैं

4. **(क)** पिता **(ख)** सेवक

(ग) भाई **(घ)** नौकर

(ङ) पुत्र **(च)** सेठ

(छ) फूफा **(ज)** ठाकुर

5. **(क)** प्रभु परमात्मा

(ख) दिवस वार

(ग) रात्रि रैन

(घ) विश्व दुनिया

(ङ) नौकर दास

क्रियाकलाप (Activity)

1. माता-पिता अपने बच्चों का अच्छे से पालन-पोषण करते हैं। उनकी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। उन्हें अच्छे विद्यालय में पढ़ने भेजते हैं। अच्छे संस्कार देते हैं। उन्हें अच्छा इंसान बनाते हैं।

2. हम बड़े होकर अपने माता-पिता की सभी आवश्यकताओं का ध्यान रखेंगे। उन्हें पूरा समय देंगे जिससे वे स्वयं को अकेला ना समझें। हम उनकी भावनाओं को समझेंगे। उन्हें आदर और सम्मान देंगे।

पाठ–18

हाथी और बया

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।

2. **(क)** हाथी नहाने और पानी पीने नदी पर जाते थे।

(ख) अपने शरीर की खुजली मिटाने के लिए हाथी पेड़ों से अपना शरीर रगड़ते थे।

(ग) बया चिड़ियों ने हाथियों को पेड़ों से अपना शरीर न रगड़ने की बात कही।

(घ) बया चिड़ियाँ हाथियों के कान में घुस गई जिससे उनके कानों में तेज दर्द होने लगा और हाथियों ने उनसे हार मान ली।

लिखित (Written)

1. **(क)** पेड़ों पर बया चिड़ियों के घोंसले थे।

(ख) हाथी पेड़ों से अपना शरीर रगड़कर खुजली मिटाने के लिए पेड़ों के नीचे रुकते थे।

(ग) घोंसलों के हिलने के कारण बया चिड़ियों के बच्चे डर जाते थे।

(घ) बया चिड़ियाँ हाथियों के कानों में घुस गईं। हाथी दर्द से चीखने-चिंघाड़ने लगे और उन्होंने अपनी हार मान ली।

2. **(क)** **(स)** बया चिड़ियों के बच्चे

(ख) **(ब)** बया चिड़ियों ने

(ग) **(ब)** बया चिड़ियों की

3. **(क)** ✓ **(ख)** ✓ **(ग)** × **(घ)** ×

4. **(क)** रुकते, **(ख)** हिलते,

(ग) बहुत, **(घ)** हार।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** रास्ते **(ख)** हाथियों

(ग) चिड़िया **(घ)** शरीर

(ङ) खुजली **(च)** हिलाओ

(छ) घोंसले **(ज)** परिवारों

2. **(क)** जंगल में बहुत सारे पशु-पक्षी रहते हैं।

(ख) हाथी एक विशालकाय पशु है।

(ग) पेड़ पर बया चिड़िया का घोंसला है।

(घ) मेरा परिवार एक संयुक्त परिवार है।

(ङ) हमें कभी लड़ाई नहीं करनी चाहिए।

3. **(क)** हाथी – गज, कुंजर

(ख) चिड़िया – पक्षी, खग

(ग) शरीर – तन, काया

(घ) जंगल – कानन, वन

(ङ) हार – पराजय, असफलता

4. **(क)** हाथी **(ख)** नदियाँ

(ग) चिड़ियाँ **(घ)** जंगल

(ङ) बच्चे **(च)** दिनों

(छ) पेड़ **(ज)** शरीरों

5. **(क)** घमंडी → **(v)** हाथी

(ख) छोटे-छोटे → **(iii)** बच्चे

(ग) लम्बे-लम्बे → **(iv)** पेड़

(घ) छोटी-छोटी → **(ii)** चिड़ियाँ

(ङ) दर्द → **(i)** पीड़ा

क्रियाकलाप (Activity)

1.

चींटी और घमंडी हाथी

एक जंगल में चींटियों का झुंड रहता था। उसकी रानी बहुत मेहनती थी। वह प्रतिदिन सुबह-सुबह टोली के साथ खाने की तलाश में निकल पड़ती थी। इसी जंगल में एक हाथी भी रहता था। वह जंगल के सभी जानवरों को परेशान करता था। कभी गंदे नाले का पानी अपनी सूँड़ में भरकर उन पर फेंकता तो कभी अपनी ताकत का प्रदर्शन करके उन्हें डराता था।

उस हाथी को इन चींटियों से बहुत ईर्ष्या थी। वह जब भी उन्हें देखता, तो पैरों से कुचल डालता था। एक दिन रानी चींटी ने उस हाथी से बड़ी विनम्रता से पूछा कि आप दूसरों को ऐसे क्यों परेशान करते हो? यह आदत अच्छी नहीं है।

यह सुनकर हाथी क्रोधित हो गया और उसने चींटी को धमकाया कि तुम अभी बहुत छोटी हो, अपनी जुबान पर लगाम लगाकर रखो, मुझे मत सिखाओ कि क्या सही है, क्या गलत, वरना तुम्हें भी कुचल दूँगा।

यह सुनकर चींटी ने उस हाथी को सबक सिखाने की ठानी। अगले दिन वह चींटी पास ही एक झाड़ी में छिप गई और मौका पाकर उस हाथी की सूँड़ में घुस गई, फिर उसने हाथी को काटना शुरू कर दिया। हाथी परेशान हो उठा। उसने अपनी सूँड़ जोर-जोर से हिलाई लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। हाथी दर्द से कराहने लगा और रोने लगा। यह देखकर चींटी ने उससे कहा कि हाथी भइया, आप दूसरों को परेशान करते हो, अब मजे लो। हाथी को अपनी गलती का एहसास

हो गया। उसने चींटी से माफी माँगी कि आगे से वह कभी किसी को नहीं सताएगा।

चींटी को उस पर दया आ गई और वह उसकी सूँड़ से बाहर आकर बोली, "कभी किसी को छोटा और कमजोर नहीं समझना चाहिए।" यह सुनकर हाथी बोला कि मुझे सबक मिल चुका है। अब मैं कभी किसी को परेशान नहीं करूँगा।

2. बया चिड़ियों का पक्ष न्याय का पक्ष है; क्योंकि उन्होंने अपने विरुद्ध हो रहे अन्याय और अत्याचार का विरोध किया। हाथियों को सबक सिखाया। बया चिड़ियाँ साहसी और दृढ़ संकल्पी थीं तभी अपने छोटे-छोटे बच्चों की रक्षा कर पाईं।

आदर्श प्रश्न–पत्र–1

उत्तरमाला

1. स्वर– 11
व्यंजन–33

2. इ (ि)–किला, पिता, मित्र, निशा, किसान।
ई (ी)–सीता, आदमी, चीनी, माली, लालची।

3. **(ख)** मैना **(ग)** गाजर
(च) चीनी **(ज)** बालक

4. **(क)** गाड़ी **(ख)** आम
(ग) गन्ना **(घ)** आई
(ङ) पुस्तक **(च)** स्याही
(छ) नारंगी **(ज)** दूध

5. **(अ)** **(क)** आग – पानी **(ख)** आओ – जाओ
(ग) रात – दिन **(घ)** माता – पिता
(ब) **(क)** बादल – घन, मेघ
(ख) गाय – धेनु, गऊ
(ग) शेर – सिंह, हरि
(घ) आदमी – इंसान, मनुष्य

6. **(क)** गीदड़– गीदड़ एक धूर्त जानवर है।
(ख) जंगल– शेर जंगल का राजा है।
(ग) माला– रानी के गले में मोतियों की सुंदर माला है।
(घ) सड़क– हमें सड़क पार करने से पहले दोनों ओर देखना चाहिए।

7. **(क)** सूरज उगने पर चिड़ियाँ चहकने लगती हैं।
(ख) वर्षभर के लिए अनाज पूरा नहीं होगा इसी चिन्ता से किसान परेशान रहता था।
(ग) कुत्ते ने अपने लालच के कारण अपनी रोटी भी खो दी, इसलिए कुत्ते को अपने लालच पर पछतावा हुआ।
(घ) अक्षरा को जन्मदिन की सबसे पहले बधाई उसकी माँ ने दी।

8. **(क)** उसके पंख रंग-बिरंगे होने के कारण तितली बच्चों को अच्छी लगती है।
(ख) मुर्गी के चूजे बिल्ली को खतरनाक मानते थे।
(ग) आकाश में बादल देखकर मोर खुश होकर नाचता है।
(घ) मुर्गा कुत्ते के डर से पेड़ पर बैठा था।
(ङ) पेड़ों से हमें फल-फूल, औषधियाँ, छाया और प्राणवायु मिलती है।

9. **(क)** **(ब)** श्रुति
(ख) **(स)** लाल
(ग) **(स)** ग्यारह महीने का
(घ) **(अ)** फूलों का रस
(ङ) **(ब)** नाचता है

10. **(क)** सुंदर, प्यारी तितली रानी,
रंग-बिरंगी तितली रानी।
तरह-तरह के रंगों वाली,
रंग-बिरंगे पंखों वाली।
हरी-सुनहरी, काली तितली,
पीली, लाल और नीली तितली।
लगती है ये बड़ी सुहानी,
सबको भाती, तितली रानी।

(ख) एक समय की बात है। एक कुत्ता गाँव के रास्ते से जा रहा था। अचानक उसकी नजर पेड़ पर बैठे एक मुर्गे पर पड़ी। मुर्गे को देखकर उसके मुँह में पानी आ गया। वह मुर्गे को खाने की योजना बनाकर उस पेड़ के नीचे पहुँच गया और वहाँ जाकर उस मुर्गे से बोला, "अरे मुर्गे भाई! तुम ऊपर पेड़ पर क्या कर रहे हो? नीचे आकर सबके साथ खेलो।" कुत्ते की बात सुनकर मुर्गा बोला, "मुझे तुमसे डर लगता है इसलिए यहाँ बैठा हूँ।" तो कुत्ते ने कहा कि मुझसे कैसा डर! शायद तुमने अब तक यह समाचार नहीं सुना कि अब कोई भी जानवर किसी जानवर पर आक्रमण नहीं करेगा, इसीलिए तो मैं तुम्हें खाने के लिए पेड़ पर नहीं चढ़ा। यह सुनकर मुर्गा बोला, "यह तो बहुत अच्छी बात है। मैं अभी नीचे आता हूँ। लेकिन मेरी समझ में एक बात नहीं आ रही....। "क्या समझ में नहीं आ रहा?" कुत्ते ने पूछा। यही कि मेरा मालिक इतने गुस्से में

इधर ही क्यों चला आ रहा है। "ऐसा क्या", कुत्ते ने डरकर कहा, अच्छा मित्र सुनो! मुझे एक जरूरी काम याद आ गया, अब मुझे जाना पड़ेगा। ''लेकिन क्यों मित्र आओ साथ खेलें, मैं भी नीचे आ रहा हूँ। रुको ना," मुर्गा बोला। कुत्ता बोला, "वह तो ठीक है, किन्तु तुम्हारे मालिक को देखकर यह लगता है कि उन्होंने अभी तक यह समाचार नहीं सुना।" यह कहकर कुत्ता वहाँ से भाग जाता है।

(अ) हाथी

1. हाथी जमीन पर रहने वाला एक विशाल स्तनपायी जानवर है।
2. इसके एक सूँड़ और आगे की ओर निकले दो बड़े दाँत होते हैं।
3. इनकी खाल मोटी और स्लेटी रंग की होती है।
4. यह शाकाहारी जानवर है, इसे गुड़ और गन्ना बहुत पसंद होते हैं।
5. हाथी पेड़ से पत्तियाँ व शाखाएँ तोड़ने के लिए सूँड़ का प्रयोग करते हैं।
6. यह अफ्रीका, भारत , थाईलैंड, श्रीलंका आदि देशों में पाए जाते हैं।
7. इनका प्रयोग वजन उठाने के लिए किया जाता है।
8. हाथी बहुत उपयोगी जानवर है।

(ब) गाय

1. गाय एक पालतू पशु है।
2. यह कई रंगों की होती है; जैसे—सफेद, भूरी, काली आदि।
3. यह घास खाती है।
4. यह हमें दूध देती है, जिससे दही, पनीर, मक्खन और घी बनता है।
5. हम इसकी पूजा करते हैं।
6. हम इसे गऊ माता भी कहते हैं।
7. इसके गोबर से कण्डे बनाए जाते हैं, जो ईंधन के रूप में प्रयोग होते हैं।
8. गाय बहुत ही उपयोगी पशु है।

(स) पेड़

1. पेड़ प्रकृति का सबसे बड़ा उपहार है।
2. पेड़ों से हमें फल, फूल, ईंधन, भोजन आदि प्राप्त होता है।
3. पेड़ हमें शुद्ध ऑक्सीजन देते हैं और कार्बन डाइ ऑक्साइड ग्रहण करते हैं।
4. हम इसकी लकड़ी का प्रयोग खाना बनाने, घर, दरवाजे, खिड़कियाँ और खिलौने आदि बनाने में करते हैं।
5. पेड़ हमें बहुत-सी व्यापारिक लाभ की कच्ची सामग्री भी प्रदान करते हैं।
6. वातावरण को दूषित होने से बचाते हैं।
7. गरमी में छाया प्रदान करते हैं। बाढ़-जैसी आपदाओं को रोकते हैं।
8. हमें अधिक-से-अधिक पेड़ लगाने चाहिए।

(द) सूरज

1. सूरज एक तारा है।
2. सूरज आग और गैसों का दहकता हुआ गोला है।
3. सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते हैं।
4. सूरज संपूर्ण विश्व का जीवन आधार है।
5. सूरज हमें गर्मी और प्रकाश देता है।
6. सूर्य के प्रकाश में पेड़-पौधे भोजन बनाते हैं।
7. सूरज वर्षा कराने में सहयोगी है।
8. सूरज की धूप से हमें विटामिन डी मिलता है।
9. सूरज के अभाव में हमारी फसलें नहीं पकेंगी।
10. सूरज के बिना जीवन संभव नहीं है।

(घ) छात्र स्वयं करें।

आदर्श प्रश्न–पत्र–2

उत्तरमाला

1. क ख ग घ ङ
त थ द ध न

2. उ —सुनना, सुनहरी, बुरा, मुर्गा, सुन्दर।
ऊ — सूर्य, छूना, फूल, दूध, पूँछ।

3. **(क)** किताब **(ख)** चिड़िया
(ग) कुरसी **(घ)** पाठशाला।

4. **(अ)** **(क)** बालक — लड़का
(ख) पुस्तक — किताब
(ग) मंदिर — देवालय
(घ) नदी — तरणि, सरिता
(ब) **(क)** लड़का — लड़के
(ख) किताब — किताबें
(ग) चिड़िया — चिड़ियाँ
(घ) केला — केले

5. **(अ)** **(क)** सत्य **(ख)** असत्य **(ग)** सत्य
(घ) असत्य **(ङ)** सत्य
(ब) **(क)** पेड़, **(ख)** प्राणवायु **(ग)** भारत
(घ) दीपावली **(ङ)** मीठा

6. **(क)** पंडित नेहरू की माता का नाम श्रीमती स्वरूप रानी था।
(ख) भगवान राम को चौदह वर्ष तक वन में रहना पड़ा।
(ग) रसगुल्ले चाशनी में डूबे रहते हैं।
(घ) सारसों का जोड़ा मक्का के खेत में रहता था।
(ङ) राधा अपने दाँत साफ नहीं करती थी, इसलिए उसके मुँह से बदबू आती थी।

7. **(क)** सूरज पश्चिम दिशा में छिपता है।
(ख) लालची कुत्ते ने पानी में अपनी परछाईं देखी।
(ग) हम अपने जन्मदिन पर केक काटते हैं और अपने मित्र व सम्बन्धियों को भोजन पर निमंत्रित करते हैं।
(घ) तितलियाँ अपने रंग-बिरंगे पंखों के कारण बच्चों को अच्छी लगती हैं।
(ङ) मुर्गी के चूजों ने बिल्ली को डराने के लिए छोटू मामा का नाम लिया।

8. **(क) मेरा कुत्ता**
1. मेरे पालतू कुत्ते का नाम टॉमी है।
2. यह भूरे रंग का, अच्छी नस्ल का कुत्ता है।
3. इसमें गजब की फुर्ती और तेजी है।
4. यह डबलरोटी, रोटी, दूध, बिस्कुट, चावल आदि खाता है।
5. टॉमी बहुत होशियार है। यह मेरे और घर के सभी सदस्यों के इशारे समझता है।
6. टॉमी मेरे परिवार का सदस्य है।
7. मैं अपने कुत्ते से बहुत प्यार करता हूँ।
8. शाम को उसे घुमाने पार्क ले जाता हूँ।
9. मुझे इसके साथ खेलना अच्छा लगता है।
10. वह मेरे घर की रखवाली करता है।

(ख) मेरा घर
1. मेरे घर का नाम शांती सदन है।
2. मेरा घर छोटा-सा है।
3. मेरे घर में चार कमरे, एक रसोईघर तथा बाथरूम है।
4. मेरे घर में ताजी हवा आने के लिए खिड़कियाँ और रोशनदान भी हैं।
5. मेरे घर की दीवारें गुलाबी रंग से पुती हुई हैं।
6. मेरे घर का हॉल बहुत ही सुंदर ढंग से सजा हुआ है।
7. मेरे घर के सामने एक बगीचा है, उसमें बहुत सुंदर फूल लगे हैं।
8. मेरे घर में कुल छह सदस्य रहते हैं।
9. मुझे सबसे ज्यादा आनंद अपने घर में ही आता है।
10. मेरे लिए मेरा घर ही मंदिर है।

(ग) दीपावली
1. दीपावली हिन्दुओं का सबसे बड़ा त्योहार है।
2. दीपावली दीपों का त्योहार है।
3. दीपावली कार्तिक माह की अमावस्या को मनाई जाती है।
4. दीपावली भगवान राम के अयोध्या आने की खुशी में मनाई जाती है।
5. इस दिन लोग अपने घरों की साफ-सफाई करके उन्हें सजाते हैं।
6. घर पर तरह-तरह की मिठाइयाँ और पकवान बनाए जाते हैं।
7. दीपावली पर सभी नए कपड़े पहनते हैं।
8. रात को गणेश-लक्ष्मी का पूजन होता है।
9. बच्चे पटाखे जलाते हैं।
10. दीपावली अंधकार पर प्रकाश की विजय का पर्व है।

(घ) पेड़ों का महत्व
1. पेड़ों का हमारे जीवन में बहुत महत्व है।
2. पेड़ हमें फल-फूल, ईंधन, औषधियाँ आदि प्रदान करते हैं।
3. पेड़ वातावरण को शुद्ध करके ताजी हवा प्रदान करते हैं।
4. पेड़ों पर बहुत-से पशु-पक्षी निवास करते हैं।
5. पेड़ वर्षा कराने में सहयोगी हैं।
6. पेड़ जमीन के कटाव और बाढ़-जैसी आपदाओं को रोकते हैं।
7. पेड़ हमें व्यापारिक लाभ की कच्ची सामग्री प्रदान करते हैं।
8. पेड़ों की लकड़ियों का प्रयोग हम खाना बनाने, घर, खिड़की, दरवाजे, फर्नीचर आदि बनाने में करते हैं।
9. पेड़ प्रकृति का अमूल्य उपहार हैं।
10. हमें अधिक-से-अधिक पेड़ लगाने चाहिए।

(ङ) महात्मा गांधी

1. महात्मा गांधी को हम राष्ट्रपिता या बापू भी कहते हैं।
2. महात्मा गांधी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था।
3. महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को गुजरात के पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ था।
4. उनके पिता का नाम करमचंद गांधी तथा माता का नाम पुतलीबाई था।
5. तेरह वर्ष की आयु में उनका विवाह कस्तूरबा के साथ हुआ।
6. वह बैरिस्टरी की पढ़ाई के लिए विदेश गए।
7. महात्मा गांधी सत्य और अहिंसा के पुजारी थे।
8. उन्होंने देश को स्वतंत्र कराने के लिए अनेक आंदोलन किए।
9. 30 जनवरी, 1948 ई. को नाथूराम गोडसे नामक व्यक्ति ने गोली मारकर उनकी हत्या कर दी।
10. पूरा विश्व आज भी गांधी जी को उनकी देशभक्ति के लिए नमन करता है।

9. बुद्धिमान चूजे की कहानी

शाम होने वाली थी। मुर्गी को भोजन लेने के लिए बाजार जाना था इसलिए उसने अपने पाँचों चूजों को अपने पास बुलाया। मुर्गी ने उन सभी चूजों से कहा कि मुझे खाने का सामान लेने बाजार जाना है। जब तक मैं ना आऊँ तब तक दरवाजा नहीं खोलना। बाहर एक काली बिल्ली घूमती है। वह बहुत खतरनाक है। यह सुनकर चूजों ने मुर्गी से पूछा, "माँ! यह खतरनाक क्या होता है।'' तो मुर्गी बोली, ''जिससे हमें खतरा हो वही खतरनाक होता है। बिल्ली छोटे-छोटे चूजों को पकड़कर खा जाती है इसलिए वह खतरनाक है।" तीसरे चूजे ने पूछा, "माँ बिल्ली किससे डरती है?" ''कुत्ते से'', मुर्गी ने कहा। अपने चूजों को समझाकर बाजार चली गई। मुर्गी के जाते ही काली बिल्ली वहाँ आ जाती है। चूजों को अकेला देखकर उसके मुँह में पानी भर आता है।

वह बड़े प्यार से चूजों को पुचकारकर दरवाजा खोलने के लिए कहती है। उसने चूजों से कहा, "मेरे प्यारे चूजो, मैं तुम्हारी मौसी हूँ। अभी-अभी दिल्ली से आई हूँ। तुम्हारे लिए लड्डू लाई हूँ।'' उसकी आवाज सुनकर छोटे चूजे ने खिड़की से झाँककर देखा और बोला, " नहीं, नहीं हम दरवाजा नहीं खोलेंगे। तुम खतरनाक हो। माँ ने बताया था कि तुम छोटे-छोटे चूजों को पकड़कर खा जाती हो।'' बिल्ली ने बड़े प्यार से कहा, "अरे नहीं पगलो! मैं किसी के लिए खतरनाक नहीं हूँ। कोई किसी को कुछ नहीं करता। मैं भी तुम्हें कुछ नहीं करूँगी।" बिल्ली की बात सुनकर चूजों ने कहा,"ठीक है मौसी कोई किसी के लिए खतरनाक नहीं है, तो दो मिनट रुको! अभी छोटे मामा आकर दरवाजा खोलेंगे क्योंकि दरवाजे की चाबी उन्हीं के पास है। छोटे मामा कुत्ते का नाम सुनकर बिल्ली डरकर काँपने लगती है। वह चूजों से बोली, "अरे बच्चों में लड्डू तो घर पर ही भूल आई लेकर आती हूँ।" यह कहकर बिल्ली वहाँ से भाग गई। छोटे चूजे ने उसे आवाज लगाकर कहा कि मौसी मामा से तो मिलती जाओ। कोई किसी के लिए खतरनाक नहीं है। यह कहकर सभी चूजे खिलखिलाकर हँसने लगते हैं।

कविता

गोल-गोल सुंदर रसगुल्ले,
मुझको लगते प्यारे हैं।
मम्मी मुझको एक खिला दो,
देखो कितने सारे हैं।

कितने मधुर रसीले उजले,
मुँह में पानी आता है।
जब भी इन पर नजर पड़े,
खाने को मन ललचाता है।

डूबे हुए चाशनी में ये,
माँ तुम जैसे लगते हैं।
इनको माँ तू मुझको दे दे,
ये मेरे मुँह में फबते हैं।

टिफिन में माँ रसगुल्ले रख दे,
लंच नहीं ले जाऊँगा।
सब मित्रों के संग बाँटकर,
रसगुल्ले मैं खाऊँगा।

10. छात्र स्वयं करें।

●●

हिन्दी 3

पाठ–1

मेहनत की बेला

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।

2. **(क)** सूरज की किरणें आने पर कलियाँ खिल जाती हैं।

(ख) अंधकार भाग जाने पर गलियाँ प्रकाश से रोशन होती हैं।

(ग) सूरज के निकलने पर चिड़ियाँ घोंसला छोड़कर उड़ जाती हैं।

लिखित (Written)

1. **(क)** चिड़ियाँ छोड़ घोंसले उड़तीं,
गातीं मीठा गाना।
जग जाओ अब तुम भी प्यारे,
निद्रा दूर भगाना।

(ख) उठकर चलने की ये घड़ियाँ,
यह मेहनत की बेला है।
जिसने इनको गँवा दिया,
उसने बस दु:ख ही झेला है।

2. **(क)** हमें सूरज उगने से पहले जगना चाहिए।

(ख) मेहनत न करने पर जीवन भर बस दु:ख ही झेलना पड़ता है।

(ग) सूरज के निकलने पर चिड़ियाँ गाना गाती हैं।

3. **(क)** ✓ **(ख)** × **(ग)** ✓ **(घ)** ×

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** कलियाँ खिलकर फूल बनती हैं।

(ख) सूरज के निकलने पर गलियाँ जगमगाने लगती हैं।

(ग) चिड़ियाँ मीठा गाना गाती हैं।

(घ) हमें मेहनत से नहीं डरना चाहिए।

(ङ) मेहनत हमें दु:ख से बचाती है।

2.

किरण	–	किरणें	कली	–	कलियाँ
घोंसला	–	घोंसले	गली	–	गलियाँ
गाना	–	गाने	चिड़िया	–	चिड़ियाँ
प्यारा	–	प्यारे	घड़ी	–	घड़ियाँ

3. **(क)** सूरज की किरणें आती हैं।

(ख) सारी कलियाँ खिल जाती हैं।

(ग) चिड़ियाँ मीठा गाना गाती हैं।

(घ) यह उठकर चलने की घड़ियाँ हैं।

(ङ) यह मेहनत की बेला है।

4. किरणें, कलियाँ, गलियाँ, घोंसले, अंधकार, घड़ियाँ, मुँह, गँवाना।

क्रियाकलाप (Activity)

* छात्र स्वयं करें।

* मेहनत न करने वाला व्यक्ति आलसी हो जाता है। आलसी व्यक्ति जीवन में सफलता हासिल नहीं कर पाता है और पीछे रह जाता है इसलिए उसे दु:ख सहना पड़ता है।

* छात्र स्वयं करें।

पाठ–2

सच्चा मित्र

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।

2. **(क)** दोनों मित्र के नाम राम तथा श्याम थे।

(ख) दोनों ने शहर जाकर पैसे कमाने की योजना बनाई।

(ग) रास्ते में दोनों मित्रों को भालू मिला।

(घ) राम पेड़ पर चढ़ गया।

लिखित (Written)

1. **(क)** दोनों मित्र एक गाँव में रहते थे।

(ख) दोनों मित्र निर्धन परिवार से संबंध रखते थे।

(ग) भालू को आते हुए श्याम ने देखा।

(घ) श्याम जमीन पर लेट गया।

2. **(क)** प्रशंसा, **(ख)** पैसा, **(ग)** घना, **(घ)** पैर, **(ङ)** मरा हुआ।

3. **(क)** दोनों मित्र निर्धन परिवार से संबंध रखते थे, इसलिए पैदल ही यात्रा पर गए।

(ख) दोनों मित्रों के साथ वन में भालू के मिलने की घटना घटी।

(ग) भालू को देखकर दोनों तेज-तेज चलने लगे। भालू से बचने के लिए राम झट से पेड़ पर चढ़ गया और श्याम साँस रोककर जमीन पर लेट गया।

(घ) श्याम जानता था कि भालू मरे हुए जानवर नहीं खाता है, अत: वह अपनी साँस रोककर वहीं जमीन पर लेट गया। जब भालू उसके पास आया तो उसे मरा हुआ समझकर वहीं छोड़कर चला गया। इस प्रकार श्याम ने अपनी जान बचाई।

4. **(क)** **(ब)** सहायता

(ख) **(ब)** उसे सूँघा

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** दोनों मित्र गाँव में रहते थे।

(ख) वे दोनों गहरे मित्र थे।

(ग) उनका संबंध निर्धन परिवार से था।

(घ) जंगल में भालू की आवाज सुनाई दी।

(ङ) स्वार्थी मित्र पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए।

(च) श्याम के पैर में चोट लगी थी।

2.

(क) मित्र	–	शत्रु	**(ख)** बड़ा	–	छोटा
(ग) शहर	–	गाँव	**(घ)** ज्यादा	–	थोड़ा
(ङ) निर्धन	–	धनी	**(च)** थोड़ा	–	ज्यादा
(छ) दूर	–	पास	**(ज)** आगे	–	पीछे
(झ) नीचे	–	ऊपर	**(ञ)** असली	–	नकली

3.

एक	–	अनेक	गाँव	–	गाँवों
शहर	–	शहरों	मित्र	–	मित्रों
परिवार	–	परिवारों	वस्त्र	–	वस्त्रों
जानवर	–	जानवरों	वृक्ष	–	वृक्षों
कान	–	कानों	सच्चा	–	सच्चे

क्रियाकलाप (Activity)

* सच्चे मित्र में निम्नलिखित गुण होते हैं–

(i) सच्चा मित्र आपकी पीठ पीछे बुराई नहीं करता।

(ii) सच्चे मित्र बेवजह नाटकपन या बनावटीपन नहीं दिखाते हैं।

(iii) आपकी व्यक्तिगत या गोपनीय बातें दूसरी को नहीं बताते हैं।

(iv) आपको कभी नीचा दिखाने की कोशिश नहीं करते।

(v) वह आपसे हमेशा प्यार और शांति से बात करता है।

(vi) सच्चा मित्र आपके गुणों को उभारकर कमियों को दूर करता है।

(vii) एक अच्छा और सच्चा मित्र भावनात्मक रूप से बुद्धिमान होता है।

(viii) बुरे समय में जब कोई आपका साथ नहीं देता, तब भी सच्चा मित्र आपका साथ नहीं छोड़ता।

(ix) सच्चा मित्र आपकी सफलता से कभी नहीं जलता, बल्कि सबसे अधिक प्रसन्न होता है क्योंकि वह जानता है यह आपकी मेहनत का नतीजा है।

(x) सच्चा मित्र आपके पास केवल टाइम पास के लिए मित्रता नहीं करता, बल्कि वह लंबे समय तक आपसे दोस्ती निभाता है।

सच्चा मित्र सदैव प्रत्येक परिस्थिति में आपका साथ देने के लिए तैयार रहता है।

* छात्र स्वयं करें।

पाठ–3

संगठन की शक्ति

मौखिक (Oral)

1. **(क)** कौआ जंगल में बरगद के पेड़ पर रहता था।

(ख) कौए ने एक दिन एक शिकारी को देखा।

(ग) सब पंछियों ने उस दिन जाल में दाना ना चुगने जाने का निश्चय किया।

(घ) शिकारी के जाल में कबूतर फँस गए।

(ङ) शिकारी के जाल को चूहे ने काटा।

लिखित (Written)

1. **(क)** **(स)** सैकड़ों

(ख) **(ब)** दाने की

(ग) **(स)** कबूतरों का

(घ) **(अ)** जाल को साथ लेकर उड़े

2. **(क)** कौए ने सोचा, यदि इस शिकारी ने अपना जाल मेरे पेड़ के नीचे बिछा दिया तो मेरे सैकड़ों साथी व्यर्थ में इसके जाल में फँसकर मारे जाएँगे।

(ख) कौए ने पहले ही अपने सारे साथियों को शिकारी के जाल के विषय में बता दिया था, इसलिए कोई भी पंछी दाना चुगने नहीं आया।

(ग) कौए ने कबूतरों को समझाया–"यदि आप सब हिम्मत से काम लें तो इस दुष्ट शिकारी के जाल से बच सकते हैं।"

(घ) चूहे ने अपने छोटे-छोटे पैने दाँतों से थोड़ी ही देर में सारा जाल काटकर कबूतरों को बंधन से मुक्त कर दिया।

(ङ) संगठन में शक्ति होती है। मिल-जुलकर हम बड़ी-से-बड़ी मुसीबत का सामना कर सकते हैं।

3. **(क)** दयालु, **(ख)** प्रसन्न, **(ग)** ध्यान, **(घ)** चूहे, **(ङ)** हिम्मत।

व्याकरण (Grammar)

1. कौआ, शिकारी, पंछी, कबूतर, चतुर, बुद्धि, प्रशंसा, झुंड, चूहा, शक्ति।

2. **(क)** बरगद के पेड़ पर सैकड़ों पंछी रहते थे।
(ख) कौआ बहुत दयालु था।
(ग) चूहा कौए का मित्र था।
(घ) शिकारी ने पेड़ के नीचे अपना जाल फैलाया।
(ङ) संगठन में शक्ति होती है।

3. दयालु – क्रूर नीचे – ऊपर
आना – जाना देर – जल्दी
खुश – दु:खी खुशी – दु:ख

4. दयालुता, सफलता।
प्रसन्नता, सहजता।
मित्रता, सुन्दरता।

क्रियाकलाप (Activity)

* संगठित रहने से हम कठिन से कठिन कार्य में आसानी से सफल हो सकते हैं। संगठित रहने पर दुश्मन हमें हरा नहीं सकता है। संगठित रहने पर बड़ी से बड़ी मुसीबत का सामना किया जा सकता है और उससे छुटकारा भी पाया जा सकता है। अतएव सदैव संगठित रहना चाहिए।

* किसी जंगल में एक बरगद के पेड़ पर सैकड़ों पंछी घोंसला बनाकर रहते थे। उसी पेड़ पर एक कौआ भी रहता था। एक दिन जब कौआ दाने की तलाश में उड़ा, उसे एक शिकारी दिखाई दिया। शिकारी के कंधे पर जाल रखा हुआ था। शिकारी को देखकर कौए ने सोचा, कहीं मेरे साथी दाना देखकर इस शिकारी के जाल में न फँस जाएँ। यह सोचकर वह अपने पेड़ पर वापस लौट आया। पेड़ पर आकर उसने सभी पंछियों को शिकारी और उसके जाल के विषय में बताया। तभी सभी पंछियों ने उस दिन दाना ना चुगने जाने का निश्चय किया। इधर शिकारी उसी पेड़ के नीचे अपना जाल बिछाकर दाना डालकर छिप गया। लेकिन कोई भी पंछी दाना चुगने नहीं उतरा। कौआ बड़ा खुश था कि उसने आज अपने सभी मित्रों की जान बचा ली। किंतु कहीं से कबूतरों का एक झुंड उड़ता आया। पेड़ नीचे बिखरे दानों को चुगने उतर गया। वे दूर से जाल को नहीं देख पाए और जाल में फँस गए। यह देखकर वह कौआ बहुत दु:खी हुआ। वह कबूतरों के सरदार के पास पहुँचा और बोला यदि आप सभी एक साथ उड़ें तो इस जाल को उड़ाकर ले जा सकते हो। मेरा मित्र एक चूहा है। वह इस जाल को काट देगा। कबूतरों ने कौए की बात मानकर एकसाथ जोर लगाया और जाल को लेकर उड़ गए। शिकारी ने बहुत दूर तक उनका पीछा किया। अंत में हारकर वापस लौट गया। कौआ उन सारे कबूतरों को लेकर अपने मित्र चूहे के पास पहुँचा और उसे सारी बात सुनाई। चूहे ने थोड़ी ही देर में पूरा जाल काट दिया। जाल कटते ही कबूतर आजाद हो गए। उन सभी ने कौए और चूहे को धन्यवाद दिया।

वास्तव में संगठन में शक्ति होती है। हिम्मत और समझदारी से सभी समस्याएँ हल हो सकती हैं।

* छात्र स्वयं करें।

पाठ–4

अपना पर्यावरण बचाओ

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।

2. **(क)** पानी बहुत दुर्लभ है इसलिए पानी बेकार हीं बहाना है।
(ख) सूरज अंगार गिराता है।
(ग) सोन-चिरैया जल-संरक्षण का गाना गाती है।

लिखित (Written)

1. पानी बहुत हुआ है दुर्लभ,
बड़ा कठिन है पानी लाना।
अब तो सहन नहीं होता है,
सूरज का अंगार गिराना।

2. **(क)** घंटे भर नहाने से कवि का आशय, पानी को व्यर्थ बहाने वालों को सचेत करने से है।
(ख) पानी की मात्रा सीमित है और, लोग पानी को व्यर्थ बहाते हैं इसलिए पानी दुर्लभ हो गया है।
(ग) सोन-चिरैया जल, जंगल और जमीन के गीत गाती है।
(घ) जीवन के लिए जल का बहुत महत्व है। जल को बचाने के लिए पर्यावरण की सुरक्षा जरूरी है।

3. **(क)** जल → **(य)** जीवन
(ख) नहाना → **(द)** घंटाभर
(ग) दुर्लभ → **(स)** पानी
(घ) अंगार → **(ब)** गरमी
(ङ) सौन-चिरैया → **(अ)** गाना

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** हमें पानी की बचत करनी चाहिए।
(ख) वर्तमान में जल बहुत दुर्लभ होता जा रहा है।
(ग) सूरज से हमें ऊष्मा मिलती है।
(घ) जंगल में अनेक प्रकार के प्राणी रहते हैं।
(ङ) हम सभी को पर्यावरण की सुरक्षा करनी चाहिए।

2. बहाना – बहाया नहाना – नहाया
लाना – लाया गिराना – गिराया
बचाना – बचाया गाना – गाया

3. धरती – पृथ्वी, धरा, वसुंधरा
सूरज – रवि, सूर्य, दिनकर
जल – पानी, नीर, वारि
जंगल – कानन, वन, अरन्य

क्रियाकलाप (Activity)

* छात्र स्वयं करें।

* जल के बिना जीवन संभव नहीं है। यदि जल न होता तो पूरा भू-भाग सूखा होता। कहीं भी जीवन नहीं पनपता। जल हमारे कई काम आता है। पानी को पीकर ही हम अपनी प्यास बुझाते हैं। नहाने धोने से लेकर खाना बनाने तक हर जगह पानी का प्रयोग होता है। आज हमारा पर्यावरण इतना खराब हो चुका है कि जितनी बारिश होनी चाहिए नहीं होती, ग्लेशियर पिघल रहे हैं। पानी के प्राकृतिक स्रोत सूख रहे हैं। आने वाले समय में पानी का संकट दुनिया का सबसे बड़ा संकट होगा। जब पीने के लिए पानी ही नहीं मिलेगा तो जीवन कहाँ से संभव होगा?

अत: पानी को व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। उसका आवश्यकता के अनुसार प्रयोग करना चाहिए। हमें पर्यावरण का भी विशेष ध्यान देना होगा। इस धरती को हरा-भरा रखना होगा, जिससे समय पर वर्षा हो और पानी के प्राकृतिक स्रोत न सूखें।

* **पानी के विविध उपयोग–**

(i) हम वाहनों को धोने के लिए पानी का उपयोग करते हैं।

(ii) पशु-पक्षी पानी पीते हैं।

(iii) वस्त्रों को धोने के लिए भी पानी का प्रयोग किया जाता है।

(iv) बर्तन भी पानी से ही साफ होते हैं।

(v) हम पीने के लिए पानी प्रयोग करते हैं।

(vi) पेड़-पौधों को सींचने के लिए पानी की आवश्यकता होती है।

पाठ–5

बुद्धिमान खरगोश

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।

2. **(क)** सभी जानवरों ने शेर से प्रार्थना की कि वह आवश्यकता से अधिक शिकार न करे।

(ख) जानवरों ने खून-खराबा रोकने के लिए शेर के पास प्रतिदिन एक जानवर भोजन के लिए भेजने का उपाय सोचा।

(ग) शेर को शिकार के लिए परिश्रम नहीं करना पड़ेगा इसलिए उसने जानवरों की बात मान ली।

(घ) खरगोश अपने बुद्धिबल से दूसरे शेर द्वारा रोकने की बात बताकर शेर को कुएँ के पास ले गया। शेर कुएँ में अपनी परछाईं को दूसरा शेर समझकर उसमें कूद गया और मर गया।

लिखित (Written)

3. **(क)** ✗ **(ख)** ✗ **(ग)** ✗ **(घ)** ✓

2. **(क)** शेर जंगल के जानवरों के साथ बहुत बुरा व्यवहार करता था। वह प्रतिदिन कई जानवरों को मारकर खा जाता था।

(ख) शेर का भोजन बनने के लिए प्रतिदिन एक जानवर शेर के पास जाने लगा।

(ग) खरगोश को शेर को मारने का उपाय मिल गया था, इसलिए उसने शेर के पास जाने में देर की।

(घ) शेर ने अपनी परछाईं को ही दूसरा शेर समझ लिया।

3. **(क)** मजा, **(ख)** खाली, **(ग)** तड़प, **(घ)** शेर।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** प्रतिदिन एक जानवर शेर का भोजन बनने के लिए जाता था।

(ख) खरगोश बहुत बुद्धिमान था।

(ग) शेर ने जानवरों को आज्ञा दी।

2. शेर – शेरों लड़का – लड़के
बकरी – बकरियाँ पुस्तक – पुस्तकें

3. **(क)** सब जानवर शेर से भयभीत थे।

(ख) मेरा पेट कैसे भरे ?

(ग) हमने एक उपाय सोचा है।

(घ) शेर भूख से तड़प रहा था।

क्रियाकलाप (Activity)

* शेर बहुत क्रूर और निर्दय था। उसे शिकार करने में मजा आता था। भूख न होने पर भी वह कई जानवर मार डालता था, जिससे जंगल में जानवरों की संख्या घटती जा रही थी। किंतु वह शेर क्रूर होने के साथ-साथ मूर्ख भी था। वह एक छोटे से खरगोश की चाल में फँस गया। वह कुएँ में अपनी परछाईं को दूसरा शेर समझकर उसमें कूद गया और अपनी मूर्खता के कारण मारा गया।

* किसी जंगल में एक शेर रहता था। वह प्रतिदिन कई जानवरों को मारकर खा जाता था। जंगल के सभी जानवर उससे

भयभीत रहते थे। एक दिन सभी जानवर मिलकर उससे प्रार्थना करने गए। हाथी ने उससे कहा कि महाराज यह जंगल जानवरों से खाली होता जा रहा है। अब जंगल में बहुत कम जानवर बचे हैं। शेर यह सुनकर बहुत नाराज हुआ और बोला कि यदि मैं जानवरों को नहीं मारूँगा तो मेरा पेट कैसे भरेगा? हाथी ने उसे एक उपाय बताया कि प्रतिदिन एक जानवर उसके पास उसका भोजन बनने आएगा, जिससे उसे शिकार भी नहीं करना पड़ेगा। यह सुनकर वह शेर बहुत प्रसन्न हुआ। अब प्रतिदिन एक जानवर शेर का भोजन बनने के लिए जाने लगा। एक दिन एक छोटे खरगोश की बारी आई। वह खरगोश छोटा अवश्य था किंतु बहुत बुद्धिमान था। उसने सोचा आज मुझे मरना ही है तो क्यों न आराम से चलूँ और साथ ही अपनी और जंगल के दूसरे जानवरों की जान बचाने का कोई उपाय भी सोचूँ। रास्ते में खरगोश ने एक कुँआ देखा और वह बहुत प्रसन्न हुआ क्योंकि उसे शेर को मारने का उपाय मिल गया था। इधर शेर भूख से मरा जा रहा था। खरगोश जैसे ही उसके पास पहुँचा वह क्रोध से उबल पड़ा और बोला एक तो तू वैसे ही बहुत छोटा है। तुझे तो खाकर भी मेरी भूख नहीं मिटेगी, उस पर भी तू इतनी देर से आया। खरगोश दोनों हाथ जोड़कर उससे बोला, "महाराज! इसमें मेरी कोई गलती नहीं हैं? मैं तो आपके ही पास आ रहा था किंतु मुझे रास्ते में दूसरे शेर ने रोक लिया था।" शेर दूसरे शेर का नाम सुनकर चौंक गया और खरगोश से बोला, "चल, मुझे बता वह शेर कहाँ है, मैं उसे अभी ठीक करता हूँ। खरगोश बनावटी भयभीत होता हुआ बोला, "महाराज वह शेर बहूत ही खूँखार है। मैं बहुत मुश्किल से उससे बचकर आया हूँ। कृपया, आप उसके पास ना जाएँ। यह सुनकर शेर को और अधिक गुस्सा आ गया। वह बोला, "तू पहले मुझे उसके पास ले चल। पहले उसे मारूँगा, फिर तुझे खाऊँगा।" खरगोश शेर को उसी कुँए के पास ले जाकर बोला,"महाराज! वह शेर इसी कुँए में रहता है। शेर ने कुँए के पानी में अपनी परछाईं देखी। वह उसे ही दूसरा शेर समझकर जोर से दहाड़ा। अपनी दहाड़ की गूँज को दूसरे शेर की दहाड़ मानकर वह मूर्ख शेर उस कुएँ में कूद पड़ा और डूबकर मर गया।

शेर की मृत्यु का समाचार सुनकर जंगल के सारे जानवर बहुत प्रसन्न हुए। उन सभी ने इस सबके लिए खरगोश को ढेर सारा धन्यवाद दिया।

*

मांसाहारी पशु	**शाकाहारी पशु**
शेर	खरगोश
भेड़िया	हिरण
चीता	जीराफ
भालू	हाथी

पाठ–6

सच्ची सहेली

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।

2. सोच समझकर बताइए–

(क) तितली का पंख एक नुकीले काँटे में फँस गया था, इसलिए वह दर्द से तड़प उठी।

(ख) तोते ने तितली को मोर के पास जाकर एक पंख माँग लेने की सलाह दी।

(ग) मोर ने तितली को अपना एक पंख तोड़कर दे दिया।

(घ) दौड़ते-दौड़ते थक जाने के कारण तितली जमीन पर गिर पड़ी।

(ङ) 'मिली' एक छोटी-सी प्यारी बच्ची थी।

लिखित (Written)

1. **(क)** खुशबू, **(ख)** काँटे, **(ग)** नाच, **(घ)** मिट्टी, **(ङ)** दवा।

2. **(क)** काँटे में फँसकर तितली का पंख टूट गया।

(ख) मधुमक्खी ने अपना एक पंख शहद की मदद से तितली के कंधे पर चिपका दिया।

(ग) मिली तितली के घायल पंख पर दवा लगाती। उसे प्यार से सहलाती, अपनी हथेली पर बिठाकर उसे इधर-उधर घुमाती; इस प्रकार उसने तितली का ध्यान रखा।

(घ) मिली ने तितली की बहुत देखभाल की। उसके जाने के बाद मिली उदास हो जाती, इसलिए उसने 'मिली' के पास रहने का फैसला किया।

3. **(क)** ✓ **(ख)** ✓ **(ग)** × **(घ)** × **(ङ)** ✓

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** बगीचा फूलों की खुशबू से महक रहा था।

(ख) तितली ने गुलाब की ओर देखा।

(ग) तितली का पंख काँटे में फँस गया।

(घ) मधुमक्खी ने शहद से पंख चिपकाया।

(ङ) मिली ने तितली का ध्यान रखा।

(च) वे दोनों अच्छी सहेली बन गईं।

2.

तितली	–	तितलियाँ
मधुमक्खी	–	मधुमक्खियाँ
काँटा	–	काँटे
बगीचा	–	बगीचे
चींटी	–	चींटियाँ

नुकीला – नुकीले
बच्ची – बच्चियाँ
मोर – मोरें

3.

	शब्द	वाक्य
(क)	वह	वह बहुत सुन्दर लड़की है।
(ख)	उसका	उसका घर शहर में है।
(ग)	तुम	तुम मोर से पंख माँग लेना।
(घ)	अपने	वह तितली को अपने घर ले गई।

क्रियाकलाप (Activity)

* **(क)** तोता – घोंसला
(ख) बिल्ली – घर
(ग) मुर्गा – दड़बा
(घ) साँप – बिल
(ङ) शेर – गुफा

केवल मनोरंजन के लिए

1. खरगोश	**11.** हाथी	**21.** रीछ	**31.** कोयल
2. ऊँट	**12.** कुत्ता	**22.** सिंह	**32.** गाय
3. मैना	**13.** गोरैया	**23.** साँप	**33.** चीता
4. उल्लू	**14.** गिलहरी	**24.** हंस	**34.** बैल
5. चील	**15.** बिल्ली	**25.** बाघ	**35.** तोता
6. मोर	**16.** सियार	**26.** लोमड़ी	**36.** बंदर
7. हिरण	**17.** अजगर	**27.** जेबरा	**37.** बकरी
8. भेड़	**18.** भेड़िया	**28.** बुलबुल	**38.** खर
9. तितली	**19.** चूहा	**29.** बंदर	**39.** वक
10. कबूतर	**20.** जिराफ	**30.** तीतर	**40.** बाज

पाठ–7

जागो प्यारे

मौखिक (Oral)

1. **(क)** पानी लेकर माँ आई है।
(ख) रात बीतने पर कमल खिल गए हैं।
(ग) पेड़ों पर चिड़िया चहक रही हैं।
(घ) धरती ने सुंदर छवि पाई है।

लिखित (Written)

1. बीती रात कमल दल फूले,
उनके ऊपर भँवरे झूले
नभ में न्यारी लाली छाई,
धरती ने प्यारी छवि पाई।
भोर हुआ सूरज उग आया,
जल में पड़ी सुनहरी छाया।

2. **(क)** यह कविता अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी ने लिखी है।
(ख) इस कविता में एक माँ अपने बेटे को जगा रही है।
(ग) सूरज के उगने से फूल खिल गए हैं। प्रात:काल का समय मनोहर हो गया है। इस प्रकार धरती ने प्यारी छवि पाई है।
(घ) कवि ने सुबह के सुन्दर समय को न खोने की बात कही है।

3. **(क)** लाल → **(स)** प्यारे
(ख) पानी → **(अ)** जल
(ग) चिड़ियाँ → **(य)** चहकना
(घ) कमल → **(ब)** खिलना
(ङ) भोर → **(र)** सूरज
(च) सुंदर → **(द)** समय

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** आँखें बहुत ही नाजुक होती हैं।
(ख) कमल तालाब में खिलते हैं।
(ग) चिड़ियाँ पेड़ों पर चहकती हैं।
(घ) नभ में प्यारी लाली छाई है।
(ङ) सुबह के सुन्दर समय को नहीं खोना चाहिए।

2. उठना – बैठना सोना – जागना
रात – दिन ऊपर – नीचे
सुंदर – बदसूरत धरती – आकाश
उगना – डूबना फूल – काँटा

3. फूले-डोले पर-सुंदर छाई-पाई आया-छाया खोओ-सोओ

4. **(क)** आँख – नेत्र, नयन
(ख) पानी – जल, नीर
(ग) नभ – गगन, आकाश
(घ) पेड़ – वृक्ष, पादप

5. **(क)** मोर – मोरनी **(ख)** बैल – गाय
(ग) भाई – बहन **(घ)** नर – मादा
(ङ) महाराज – महारानी **(च)** सेठ – सेठानी

क्रियाकलाप (Activity)

* छात्र स्वयं करें।
* सुबह होने पर कमल के फूल खिल जाते हैं और उनके ऊपर भँवरे गुंजार करने लगते हैं। चिड़िया चहकने लगती हैं। ताजी हवा बहती है। सूरज के उगने के कारण आकाश लाल दिखता है और धरती भी सुंदर दिखाई देती है। सूरज की सुनहरी किरणें जल में पड़ रही हैं।
* मैं सुबह छः बजे उठता हूँ। मेरी माँ मुझे बहुत प्यार से बेटा कहकर जगाती हैं। वे मुझसे कहती हैं कि सुबह जल्दी उठने से सेहत अच्छी रहती है और हम समय से अपने सभी कार्य पूरे कर सकते हैं।

पाठ–8

बर्तनों के बच्चे

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।

2. **(क)** लोग सेठ से बर्तन उधार ले जाते थे।
(ख) यह हरीश ने कहा।
(ग) मोहन ने सेठजी को सबक सिखाया।

लिखित (Written)

1. **(क)** **(अ)** सेठ की
(ख) **(ब)** नए-नए बर्तन इकट्ठे करने का
(ग) **(स)** हरीश

2. **(क)** चालाकी **(ख)** घबरा
(ग) उधार **(घ)** उत्सव
(ङ) बच्चे **(च)** बर्तन

3. **(क)** ✓ **(ख)** × **(ग)** ✓ **(घ)** ✓

4. **(क)** सेठ माधवपुर नामक गाँव में रहता था।
(ख) सेठ चालाकी से दुगुने बर्तन वसूलता था इसलिए लोग उससे बर्तन लेने में डरते थे।
(ग) हरीश ने सेठ को और बर्तन खरीदकर इसलिए दिए क्योंकि सेठ ने उसे धमकाया, यदि वह उसे और बर्तन नहीं देगा तो वह उसकी जमीन जब्त कर लेगा।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** एठ – ऐठ **(ख)** बियाह – ब्याह
(ग) जनम – जन्म **(घ)** दूगने – दुगने
(ङ) उतसव – उत्सव **(च)** ब्रतन – बर्तन

2. **(ख)** चाल, **(घ)** सेठ, **(च)** माधवपुर,
(ज) हरीश, **(झ)** बर्तन, **(य)** बच्चे।

क्रियाकलाप (Activity)

* ईमानदारी से कार्य करने पर सभी हमारा सहयोग करते हैं। आवश्यकता होने पर भी बेईमानी न करने वाला व्यक्ति ईमानदार होता है। हमें ईमानदारी का फल अवश्य मिलता है। ईमानदार व्यक्ति की सभी प्रशंसा करते हैं।
* यदि मोहन की जगह मैं होता तो मैं भी सेठ की करतूतों का जबाव उसे वैसे ही देता जैसे मोहन ने दिया। इससे उसे सबक मिलता और वह लोगों को मूर्ख बनाकर उनसे अधिक बर्तन वसूलना भूल जाता।

पाठ–9

हमारा राष्ट्रध्वज

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।

2. **(क)** हमारे राष्ट्रीय ध्वज का नाम तिरंगा है।
(ख) राष्ट्रध्वज में केसरिया रंग समर्पण और बलिदान का प्रतीक है।
(ग) अशोक चक्र में 24 तीलियाँ हैं।
(घ) 15 अगस्त को लालकिले पर राष्ट्रीय ध्वज प्रधानमंत्री फहराते हैं।
(ङ) तिरंगे का सफेद रंग शांति और सच्चाई की निशानी है।

लिखित (Written)

1. **(क)** तीन, **(ख)** स्वतंत्रता, **(ग)** अशोक चक्र, **(घ)** निजी, **(ङ)** सावधान।

2. **(क)** ✓ **(ख)** × **(ग)** × **(घ)** ✓ **(ङ)** ✓

3. **(क)** तिरंगा हमारे राष्ट्रीय गौरव, स्वतंत्रता और एकता का प्रतीक है।
(ख) तिरंगे के तीन रंग हैं–केसरिया, सफेद और हरा।
(ग) प्रधानमंत्री 15 अगस्त को दिल्ली के लालकिले पर तिरंगा फहराते हैं।
(घ) यह हमारे राष्ट्र के गौरव का प्रतीक है, इसलिए हमें तिरंगे का सम्मान करना चाहिए।

4. **(क)** राष्ट्रीय ध्वज → **(द)** तिरंगा
(ख) अशोक चक्र → **(स)** नीला
(ग) हरा रंग → **(ब)** ऊर्जा एवं समृद्धि
(घ) खादी → **(य)** कपड़ा
(ङ) तीलियाँ → **(अ)** चौबीस

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** तिरंगा हमारा राष्ट्रीय ध्वज है।
   (ख) प्रधानमंत्री लालकिले पर तिरंगा फहराते हैं।
   (ग) हमें अपने राष्ट्रीय ध्वज का सम्मान करना चाहिए।
   (घ) हमें खादी वस्त्र पहनने चाहिए।
   (ङ) हमें विद्यालय में अनुशासन के नियम अपनाने चाहिए।
2. द्वित्व व्यंजन – सम्मान, पट्टियाँ, सच्चाई, दिल्ली।
   संयुक्ताक्षर – स्वतंत्रता, प्रधानमंत्री, उपलक्ष, स्वतंत्रता दिवस।
3. **(क)** ध्वज → **(ब)** झण्डा
   (ख) आजादी → **(अ)** स्वतंत्रता
   (ग) वर्ष → **(स)** साल
   (घ) सख्त → **(र)** कठोर
   (ङ) वस्त्र → **(द)** कपड़ा
   (च) फायदा → **(य)** लाभ

क्रियाकलाप

* राष्ट्रीय पशु – बाघ राष्ट्रीय पक्षी – मोर
राष्ट्रीय पुष्प – कमल राष्ट्रीय गीत – वंदेमातरम्

* छात्र स्वयं करें।

पाठ–10

कोयल

मौखिक (Oral)

1. **(क)** वसंत ऋतु में पेड़ नए हो जाते हैं।
   (ख) बहकने का आशय है– मस्त हो जाना।
   (ग) कोयल अमराई में छुपकर बैठती है।
   (घ) कोयल मीठे स्वर में गाती है।

लिखित (Written)

1. तब अपनी ही धुन में ऐंठी,
   अमराई में छुपकर बैठी।
   मीठे स्वर में जो गाती है,
   वह ही कोयल कहलाती है।
2. **(क) (ब)** नए
   (ख) (अ) आम के पेड़ों को
   (ग) (स) कोयल
3. **(क)** पेड़, **(ख)** दिशा, **(ग)** अमराई,
   (घ) वह ही, **(ङ)** मीठी।
4. **(क)** कोयल प्राय: आम के पेड़ों में छुपकर बैठती है।
   (ख) पेड़ फल और फूलों से लद जाते हैं।
   (ग) महकने का तात्पर्य वातावरण के सुगंधित होने या खुशबू से भर जाने से है।
   (घ) हमें मीठी बोली बोलनी चाहिए।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** पुराने पत्ते झड़ जाते हैं।
   (ख) कोयल अपनी धुन में गाती है।
   (ग) वह जब देखो तब अपनी ऐंठ में रहता है।
   (घ) सूर्य पूरब दिशा में उगता है।
   (ङ) हमें मीठी बोली बोलनी चाहिए।
2. (चिड़ीया) (मिठी) (दिसा) (आकास) (फुल) (कलीयाँ)
3. मीठी – खट्टी जीवन – मृत्यु
   अपनी – पराई सूखा – हरा
   फूल – काँटा धरती – आकाश

क्रियाकलाप (Activity)

* मुझे पक्षियों में सबसे अच्छा मोर लगता है। इसके बहुत सुंदर और बड़े-बड़े पंख होते हैं। इसके सिर पर मुकुट के समान कलगी होती है। बादलों को देखकर जब मोर अपने पंख फैलाकर नाचता है तब यह मुझे और भी सुंदर लगता है। मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी भी है।

* छात्र स्वयं करें।

पाठ–11

बीरबल की खिचड़ी

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।
2. **(क)** बीरबल बादशाह अकबर के प्रिय मंत्री थे।
   (ख) गरीब ब्राह्मण कुछ इनाम की लालसा से अकबर के पास गया।
   (ग) ब्राह्मण सारी रात यमुना के जल में खड़ा रहा।
   (घ) बीरबल कई दिनों से महल में नहीं आए इसलिए बादशाह ने दरबारी को बीरबल का पता लगाने के लिए भेजा।
   (ङ) बीरबल कई दिनों से खिचड़ी पका रहे थे।

लिखित (Written)

1. **(क)** पुरस्कार, **(ख)** दीपक, **(ग)** उतर,
   (घ) व्यवहार, **(ङ)** खिचड़ी।

2. **(क) (अ)** दयालु **(ख) (स)** धन की
(ग) (अ) दीपक **(घ) (ब)** ब्राह्मण को

3. **(क)** बीरबल अपनी हाजिरजवाबी, बुद्धिमानी और न्यायप्रियता के लिए प्रसिद्ध थे।

(ख) "यह तो बेईमानी हुई। चूँकि तुम रातभर हमारे महल के चिराग से गरमी पाते रहे, इसलिए तुम्हें इनाम नहीं मिल सकता।"—यह कहकर बादशाह ने ब्राह्मण को इनाम नहीं दिया।

(ग) बीरबल ऐसी कौन-सी खिचड़ी पका रहा है जो कई दिनों से पक रही है इसलिए अकबर बीरबल को देखने गए।

(घ) बीरबल ने कहा जब महल के चिराग की गरमी नदी में खड़े ब्राह्मण तक पहुँच सकती है तो इस चूल्हे की आग से खिचड़ी भी पक सकती है।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** बीरबल बहुत दयालु थे।
(ख) बादशाह ने ब्राह्मण को पुरस्कार नहीं दिया।
(ग) महल में रातभर दीपक जलता रहा।
(घ) अकबर को मंत्री बीरबल की चिंता होने लगी।
(ङ) इतनी दूर से आग की गरमी खिचड़ी तक नहीं पहुँचेगी।

2. (अकबर) (इनाम) (गंगा)

3.

न्याय	–	अन्याय	रात	–	दिन
गरीब	–	अमीर	ठंडा	–	गरम
अँधेरा	–	उजाला	सरदी	–	गरमी
सुखी	–	दु:खी	ऊँचा	–	नीचा

क्रियाकलाप (Activity)

* **तोते की मौत**

एक बार बादशाह अकबर किसी व्यापारी के पास से तोता खरीद कर लाये। वह तोता देखने में बहुत सुंदर था और उसकी बोली भी बड़ी मीठी थी। अकबर ने उस तोते की रखवाली के लिए एक सेवक नियुक्त कर दिया और उसे साफ हिदायत दी कि—अगर तोता मरा तो तुम्हें मृत्यु दंड दे दूँगा। और इसके अलावा जिसने भी अपने मुँह से कहा कि "तोता मर चुका है उसे भी मौत की सजा मिलेगी। इसलिए तोते की रखवाली अच्छे से करना।"

सेवक तोता लेकर चला गया और बड़े उत्साह से उसकी देखभाल करने लगा। उसे कहीं ना कहीं यह डर सता रहा था कि अगर कहीं बादशाह का तोता मरा तो उसकी जान पर बन आएगी और फिर एक दिन ऐसा ही हुआ। तोता अचानक मर गया अब सेवक के हाथ पाँव फूलने लगे। उसे बादशाह अकबर की कही बात याद थी। वह तुरंत दौड़कर बीरबल के पास गया और पूरी बात बताई।

बीरबल ने उस सेवक को पानी पिलाया और कहा, "चिंता मत करो। मैं बादशाह से बात करूँगा... तुम बस इस समय उस तोते से दूर हो जाओ।"

थोड़ी देर बार बीरबल अकेले बादशाह के पास गए और बोले कि मालिक, आप का जो तोता था... वह इतना बोलकर बीरबल ने बात अधूरी छोड़ दी।

अकबर बादशाह तुरंत सिंहासन से खड़े हुए और बोले, क्या हुआ? तोता मर गया?

बीरबल बोले, "मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहूँगा कि आप का तोता ना मुँह खोलता है, ना खाता है, ना पीता है, ना हिलता है, ना डुलता है। ना चलता है, ना फुदकता है। उसकी आँखे बंद हैं। और वह अपने पिंजरे में लेटा पड़ा है। आप आइये और जरा उसे देखिये।" अकबर और बीरबल फ़ौरन तोते के पास गए।

"अरे! बीरबल 'तोता मर चुका है।' ये बात तुम मुझे वहीं पर नहीं बता सकते थे।" अकबर क्रोधित होते हुए बोले। "उस तोते का रखवाला कहाँ हैं? मैं उसे अपनी तलवार से सजाये मौत दूँगा।"

तब बीरबल बोले, "जी मैं अभी उस रखवाले को हाजिर करता हूँ लेकिन ये तो बताइये कि आपको मृत्यु दंड देने के लिए किसे बुलाऊँ?"

"क्या मतलब है तुम्हारा?" अकबर जोर से चीखे।

"जी, आप ही ने तो कहा था कि जो कोई भी बोलेगा कि 'तोता मर चुका हैं' उसे भी मौत की सजा दी जाएगी, और अभी कुछ देर पहले आप ही के मुख से ये बात निकली थी।"

अब अकबर को अपनी गलती का एहसास हो गया। बीरबल की इस चुतराई से अकबर हँस पड़े और वे दोनों हँसते-हँसते दरबार लौट गए। अकबर ने तुरंत घोषणा कर दी की उस सेवक पर कोई कार्यवाही नहीं की जाएगी। तोता अपनी मौत मरा है, उसमें किसी का कोई दोष नहीं है।

* अकबर के दरबार में ऐसे नौ गुणवान दरबारी थे, जिन्हें कालांतर में अकबर के नवरत्नों के नाम से भी जाना जाता है।

1. **अबुल फजल**—इन्होंने अकबर के शासनकाल की प्रमुख घटनाओं को कलमबद्ध किया था। इनका जन्म आगरा में हुआ था। इन्होंने अकबरनामा और आइन-ए-अकबरी की रचना की।

2. **फैज़ी**—ये अबुल-फजल के भाई थे जो फारसी में कविता लिखते थे। अकबर ने अपने बेटे के गणित शिक्षक के पद पर इन्हें नियुक्त किया था।
3. **तानसेन**—कवि तानसेन अकबर के दरबार के एक विलक्षण संगीतज्ञ थे। इन्हें दीपक राग का बहुत बड़ा ज्ञाता माना जाता था।
4. **बीरबल**—परम बुद्धिमान बीरबल राजा अकबर के विशेष सलाहकार थे।
5. **राजा टोडरमल**—ये अकबर के राजस्व और वित्तमंत्री थे। इन्होंने भूमि-पैमाइश के लिए विश्व की प्रथम मापन-प्रणाली तैयार की थी।
6. **राजा मानसिंह**—अकबर की सेना के प्रधान सेनापति थे।
7. **अब्दुल रहीम खान-ए-खाना**—रहीम एक प्रतिष्ठित कवि और अकबर के संरक्षक बैरम खान के बेटे थे।
8. **फकीर अजियोद्धीन**—अकबर के निजी हकीम थे।
9. **मुल्ला दो पियाजा**—ये अकबर के अमात्य थे। यह बात काटने के लिए काफी प्रसिद्ध और प्याज खाने के भी शौकीन थे।

* छात्र स्वयं करें।

पाठ–12

टिल्लू की सूझबूझ

मौखिक (Oral)

(क) मम्मी ने टिल्लू को इसलिए नहीं भेजा कि कहीं वह गीजर खराब होने की शिकायत की जगह कुछ और ना लिखवा आए।

(ख) शर्मा जी सोसाइटी के बहुत पुराने बिजली-मिस्त्री थे।

(ग) गीजर में कोई खराबी नहीं थी, बल्कि किसी ने नीचे से गीजर के तार खींच दिए थे।

(घ) रश्मि आंटी के छोटे भैया ने गीजर ठीक किया।

लिखित (Written)

1. **(क)** ऑन, **(ख)** इंजीनियर, **(ग)** रजिस्टर, **(घ)** अव्वल, **(ङ)** हड़ताल।
2. **(क)** टिल्लू का मुँह इसलिए लटक गया था क्योंकि मम्मी उसे किसी भी काम करने के योग्य नहीं समझती थीं।

   (ख) टिल्लू के पापा की फैक्ट्री में हड़ताल चल रही थी इसलिए घर में पैसों की तंगी थी, उस पर गीजर को ठीक कराने का अतिरिक्त खर्चा सुनकर मम्मी दुविधा में पड़ गईं।

   (ग) टिल्लू के दिमाग में अचानक कौंधा कि रश्मि आंटी के छोटे भैया बिजली के इंजीनियर हैं, वे बिजली के सभी उपकरण स्वयं ठीक कर लेते हैं।

   (घ) शर्मा जी झूठ बोलकर लोगों से पैसा हड़पते थे, इसकी जानकारी होने पर सोसायटी ने उन्हें नौकरी से निकाल दिया।
3. **(क)** ✓ **(ख)** × **(ग)** ✓ **(घ)** ✓ **(ङ)** ✓

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** गीजर पानी गरम करने का बिजली उपकरण है।
   (ख) सर्दी में नल से ठंडा पानी आता है।
   (ग) हमें जल्दी-जल्दी किताब पढ़नी चाहिए।
   (घ) रश्मि आंटी के छोटे भैया बिजली के इंजीनियर थे।
   (ङ) टिल्लू के पापा की फैक्ट्री में हड़ताल चल रही थी।
2. स्विच गीजर रजिस्टर क्लास
   मोटर फैक्टरी इंजीनियर अंकल
3. **विशेषण** **संज्ञा शब्द**
   (क) शिकायती → **(ब)** रजिस्टर
   (ख) ठंडा → **(अ)** पानी
   (ग) परेशान → **(द)** मम्मी
   (घ) छोटे → **(य)** भैया
   (ङ) खराब → **(स)** गीजर
4. झुकाया भागा लिखवाना खोलकर

क्रियाकलाप (Activity)

* हाँ, एक बार हमारे घर के नल में पानी नहीं आया और मुझे सुबह नहाकर स्कूल के लिए जाना था। कॉलोनी में एक दो घरों को छोड़कर किसी के घर में भी पानी नहीं आ रहा था। तब माँ ने मुझे कॉलोनी में रहने वाली सरला आंटी के घर पूछने के लिए भेजा कि उनके यहाँ पानी आ रहा है या नहीं। लेकिन उनके घर में भी पानी नहीं आ रहा था। पूरी कॉलोनी पानी न आने के कारण परेशान थी किसी को स्कूल, तो किसी को ऑफिस तो स्त्रियों को घर के काम पूरे करने में देर हो रही थी। मुझे भी स्कूल जाना था। लेकिन पानी न आने के कारण सभी काम रुके हुए थे। मैं अपना खिलौना लेकर खेलने बैठ गया। लेकिन मेरा ध्यान भी पानी के न आने के कारण पर ही लगा हुआ था। अचानक मुझे याद आया कि कल कॉलोनी में पानी की टंकी की सफाई करने वाले को बुलाया गया था। उसने सफाई करने से पहले सभी के घरों में जाने वाले पाइपों के बाल्व बंद कर दिए थे और शायद सफाई पूरी होने पर वह उन वॉल्वों को खोलना भूल गया हो।

यह सोचकर मैं तेजी से अपनी माँ के पास दौड़ा जो कॉलोनी में नीचे सभी के पास खड़ी थीं। मेरी बात सुनकर कॉलोनी के मैनेजर, मेरी माँ और कॉलोनी के सभी सदस्य अपनी छतों पर पहुँचे। जैसा मैंने कहा था वैसा ही हुआ था सभी के पाइपों के वॉल्व बंद थे, जिसके कारण किसी के भी घर में पानी नहीं आ रहा था। फिर सभी की पाइपों के वाल्व खोले गए और सभी के घरों में पानी आने लगा। मेरी इस सूझ-बूझ पर सभी ने मेरी पीठ थपथपाई और मुझे शाबासी दी। माँ ने भी मुझे खूब प्यार किया।

* **1.** फ्रिज **2.** पंखा **3.** कूलर
4. माइक्रोवेव **5.** एलईडी

* छात्र स्वयं करें।

पाठ–13

हिमालय

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।

2. **(क)** हिमालय आँधी-पानी से न डरने की बात कह रहा है।
(ख) हिमालय लाख मुसीबत आने पर भी अविचल खड़े रहने को कह रहा है।
(ग) जो व्यक्ति मुसीबत में अडिग रहता है वही सफल होता है।

लिखित (Written)

1. **(क)** (ब) मनुष्यों से
(ख) (अ) सोहनलाल द्विवेदी
(ग) (ब) अविचल

2. **(क)** डिगो न अपने प्रण से तो तुम,
सब कुछ पा सकते हो प्यारे।
तुम भी ऊँचे उठ सकते हो,
छू सकते हो नभ के तारे।
(ख) खड़ा हिमालय बता रहा है,
डरो न आँधी पानी में।
खड़े रहो तुम अविचल होकर,
सब संकट तूफानों में।

3. **(क)** अविचल → **(स)** अटल
(ख) संकट → **(द)** कष्ट
(ग) प्रण → **(अ)** प्रतिज्ञा
(घ) नभ → **(ब)** गगन

4. **(क)** खड़ा हिमालय बता रहा है कि किसी भी संकट से नहीं घबराना चाहिए।
(ख) हम दृढ़ प्रतिज्ञ होकर ऊँचे उठ सकते हैं।
(ग) जो अपने निश्चय पर अटल रहता है, सफलता उसी को मिलती है।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** मुसीबत आने पर धैर्य से काम लेना चाहिए।
(ख) अपने निश्चय पर अटल रहने वालों को सफलता अवश्य मिलती है।
(ग) हमें संकट से घबराना नहीं चाहिए।
(घ) हिमालय हमें अपने पथ पर अडिग रहने की सलाह देता है।
(ङ) हमें अपने पथ से डगमगाना नहीं चाहिए।

2. **(क)** नभ – गगन **(ख)** पथ – मार्ग
(ग) प्रण – प्रतिज्ञा **(घ)** डर – भय

3. **(क)** सफलता – असफलता **(ख)** ऊँचे – नीचे
(ग) पानी – आग **(घ)** डर – निडर

क्रियाकलाप (Activity)

1. छात्र स्वयं करें।

2. **भावार्थ**–प्रस्तुत कविता में हिमालय के माध्यम से कवि ने यह बताने का प्रयास किया है कि विशाल हिमालय पर्वत हमें जीवन को जीने का संदेश दे रहा है। हिमालय हमें बताता है कि रास्ते में आने वाली कठिनाइयों का बहादुरी से सामना करते हुए निरंतर आगे बढ़ना चाहिए। जो व्यक्ति मुसीबतों से डरे बिना निरंतर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता रहता है। वह जीवन में सफलता अवश्य प्राप्त करता है।

पाठ–14

गुरुभक्त एकलव्य

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।

2. **(क)** एकलव्य एक गरीब भील-बालक था।
(ख) द्रोणाचार्य राजनियमों के अधीन थे इसलिए उन्होंने एकलव्य को धनुर्विद्या सिखाने से मना कर दिया था।
(ग) एकलव्य ने बिना किसी घाव के कुत्ते का मुँह बाण से बंद कर दिया था, इसलिए पाण्डव राजकुमार इस निपुण बाण चलाने वाले को ढूँढ़ रहे थे।
(घ) एकलव्य की गुरुभक्ति देखकर गुरु द्रोण प्रसन्न हो गए।

लिखित (Written)

1. **(क)** गुरुभक्त, **(ख)** गुरु, **(ग)** बाणों, **(घ)** स्वागत, **(ङ)** मूर्ति।
2. **(क) (अ)** बाण-विद्या
   (ख) (अ) गुरु मानकर
   (ग) (ब) उसके हाथ का अँगूठा
3. **(क)** द्रोणाचार्य पाण्डव तथा कौरवों गुरु थे।
   (ख) एकलव्य ने अपनी निष्ठा और गुरुभक्ति से गुरु द्रोणाचार्य की मूर्ति को ही गुरु मानकर बाण चलाना सीखा।
   (ग) बिना किसी घाव के बाणों से मुँह बंद किए कुत्ते को देखकर पाण्डव राजकुमारों को अचंभा हुआ।
   (घ) एकलव्य ने गुरुदक्षिणा में अपने दाहिने हाथ का अँगूठा काटकर गुरु द्रोण को दे दिया। इस प्रकार एकलव्य ने अपनी गुरुभक्ति साबित की।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** एकलव्य बाण चलाने का निरन्तर अभ्यास करता था।
   (ख) द्रोणाचार्य कौरवों और पाण्डवों के गुरु थे।
   (ग) बालक एकलव्य उदास हो गया।
   (घ) एकलव्य ने पाण्डव राजकुमारों का स्वागत किया।
2. गरीब – निर्धन, बाण – तीर
   गुरु – अध्यापक, वृक्ष – पेड़
   हर्ष – प्रसन्नता, भक्ति – आराधना
3. बेटा – बेटे, महिला – महिलाएँ
   बालिका – बालिकाएँ, स्त्री – स्त्रियाँ
   मूर्ति – मूर्तियाँ, पुस्तक – पुस्तकें
4. ट्रक चर्चा द्रोण
   फैक्ट्री खर्चा प्रकार
   ड्रम अर्जुन प्रसन्न

क्रियाकलाप (Activity)

* **गुरुभक्त आरुणि**

महाभारत के अनुसार, आयोदधौम्य नाम के एक ऋषि थे। उनके एक शिष्य का नाम आरुणि था। वह पांचालदेश का रहने वाला था। आरुणि अपने गुरु की प्रत्येक आज्ञा का पालन करता था। एक दिन गुरु जी ने उसे खेत की मेढ़ बाँधने के लिए भेजा। गुरु की आज्ञा से आरुणि खेत पर गया और मेढ़ बाँधने का प्रयास करने लगा। काफी प्रयत्न करने के बाद भी जब वह खेत की मेढ़ नहीं बाँध पाया तो मेढ़ के स्थान पर स्वयं लेट गया ताकि पानी खेत के अन्दर न आ सके। बहुत देर तक जब आरुणि आश्रम नहीं लौटा तो उसके गुरु अपने अन्य शिष्यों के साथ उसे ढूँढ़ते हुए खेत तक आ गए। वहाँ जाकर उन्होंने आरुणि को आवाज लगाई। गुरु की आवाज सुनकर आरुणि ने उन्हें अपनी पूरी स्थिति बताई। आरुणि की गुरुभक्ति देखकर गुरु आयोदधौम्य बहुत खुश हुए और उन्होंने आरुणि को समस्त वेद और धर्मशास्त्रों का ज्ञान हो जाने का आशीर्वाद दिया।

* गुरु द्रोणाचार्य द्वारा एकलव्य का अँगूठा माँगना सर्वथा उचित था क्योंकि एकलव्य ने विद्या नियमानुसार गृहण नहीं की थी, बल्कि चुराई थी।

नियमानुसार गुरु द्रोणाचार्य हस्तिनापुर राज्य के लिए अनुबंधित थे। वे किसी और को शिक्षा नहीं दे सकते थे । एकलव्य मगद नरेश जरासंध के सेनापति हिरण्यधनु का पुत्र था। जरासंध एक पिशाच था जो धर्महन्ता था, और एकलव्य जरासंध की सेना का नेतृत्व करने का इच्छुक था। इसलिए संपूर्ण विवरण का विश्लेषण करने के उपरांत गुरु द्रोणाचार्य द्वारा गुरुदक्षिणा में अँगूठा लिया जाना किसी लिहाज से अनुचित नहीं था।

पाठ–15

क्रिसमस का दिन

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।
2. **(क)** इस एकांकी में क्रिसमस के त्योहार की बात की गई है।
   (ख) बूढ़ा व्यक्ति बालक से केक माँगता है।
   (ग) बालक ने जब दरवाजा खोला तो अपने सामने एक देवदूत को पाया।
   (घ) बालक ने केक एक बूढ़े व्यक्ति को दे दिया।

लिखित (Written)

1. **(क) (ब)** 25 दिसंबर को **(ख) (अ)** दस
   (ग) (अ) केक
2. **(क)** भगवान, **(ख)** भूख, **(ग)** क्रिसमस, **(घ)** केक, **(ङ)** निर्धन, बेबस, लाचार।
3. **(क)** ✗ **(ख)** ✗ **(ग)** ✓ **(घ)** ✓ **(ङ)** ✗
4. **(क)** बालक के पास त्योहार मनाने और केक खरीदने के लिए पैसे नहीं थे, इसलिए वह उदास था।
   (ख) बालक को घर जाते समय रास्ते में एक बूढ़ा व्यक्ति मिला।
   (ग) देवदूत ने बालक से कहा कि मैं वही बूढ़ा व्यक्ति हूँ जिसे तुमने अपना केक दिया था। एक निर्धन, बेबस, लाचार और भूखे व्यक्ति को पेट भरकर तुमने एक नेक काम किया है। यह लो केक और खूब खुशियाँ मनाओ।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** वह बालक बहुत निर्धन था।
(ख) हमें गरीब और बेबस लोगों की सहायता करनी चाहिए।
(ग) भूखे व्यक्ति का पेट भरकर तुमने एक नेक काम किया है।
(घ) हमें दूसरों की मदद करनी चाहिए।
(ङ) लड़का भी क्रिसमस का त्योहार मनाना चाहता था।

2. **(क)** बाप **(ख)** दादी
(ग) बच्ची **(घ)** बूढ़ी
(ङ) बालिका **(च)** पिता

3. **(क)** धनी **(ख)** देर
(ग) बुरा **(घ)** प्रसन्न
(ङ) काला **(च)** कम

4. **(क)** क्रिसमस **(ख)** खुश
(ग) देवदूत **(घ)** निर्धन
(ङ) रुपये **(च)** जल्दी

क्रियाकलाप

* हमारे जीवन में त्योहारों का बड़ा महत्व है। त्योहार समय-समय पर आकर हमारे जीवन में हर्षोल्लास भर देते हैं। इनसे जीवन की नीरसता समाप्त होती है। जीवन में नवीनता एवं सरसता का संचार होता है। त्योहार पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय एकता में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। त्योहारों को समाज के सभी वर्गों के साथ मनाने से सामाजिक एकता स्थापित होती है। हमारे त्योहार हमारी भारतीय संस्कृति की धरोहर हैं। इनसे ही हमारी संस्कृति की पहचान होती है।

* **(क)** **जन्माष्टमी**—जन्माष्टमी का पर्व भगवान श्रीकृष्ण के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है, जो रक्षाबंधन के बाद भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को मनाया जाता है।

(ख) **गांधी-जयंती**—यह 2 अक्टूबर को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में मनायी जाती है।

(ग) **दीपावली**—दीपावली की त्योहार कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है। जो अक्टूबर या नवम्बर के महीने में पड़ती है। यह त्योहार भगवान राम के वनवास खत्म करके और रावण को मारकर आने की खुशी में मनाया जाता है।

पाठ–16

मेरे दादाजी का गाँव

मौखिक (Oral)

1. छात्र स्वयं करें।

2. **(क)** यह पत्र किशोर लिख रहा है।
(ख) दादाजी के गाँव का नाम किशनगढ़ है।
(ग) गाँव के खेतों में गेहूँ, गन्ना, चना, मूँगफली और सब्जियाँ उगायी गयी थीं।
(घ) खेतों में से ताजी मूलियाँ, गाजर आदि उखाड़कर खाना अच्छा लगता है।

लिखित (Written)

1. **(क)** गाँव, **(ख)** सुन्दर,
(ग) आनन्ददायक, **(घ)** तालाब, **(ङ)** गन्ना।

2. **(क)** अपने दादाजी के गाँव की विशेषता बताने के लिए किशोर ने पत्र लिखा।
(ख) किशोर ने गाँव के खेत, तालाब आदि के बारे में बताया है।
(ग) गाँव का वातावरण बहुत शांत और स्वच्छ होता है।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** किशोर गर्मी की छुट्टियों में अपने दादाजी के घर आया था।
(ख) दादाजी का गाँव बहुत सुन्दर है।
(ग) ताजी गाजर उखाड़कर खाने में बहुत मजा आता है।
(घ) गाँव में एक छोटा-सा तालाब भी है।
(ङ) गाँव का वातावरण स्वच्छ है।

2.

गर्मी	– गर्मियाँ	गन्ना	– गन्ने
छुट्टी	– छुट्टियाँ	बच्चा	– बच्चे
सब्जी	– सब्जियाँ	पौधा	– पौधे
मूली	– मूलियाँ	मज़ा	– मज़े
गोभी	– गोभियाँ	लड़का	– लड़के

क्रियाकलाप (Activity)

* मेरे गाँव का नाम गोसाईं खेड़ा है। मेरे गाँव के अधिकांश लोग खेती करते हैं। प्रातःकाल औरतें मधुर गीत गाती हुई काम करती हैं। मेरे गाँव में एक छोटी-सी नदी बहती है। मेरे गाँव में एक विद्यालय और एक वाचनालय है जहाँ बैठकर लोग पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ते हैं। गाँव की शाम बहुत मनोरम होती है। पक्षी आकाश में कतार बनाकर अपने घोंसलों में

जाते दिखाई देते हैं। सूर्य डूबता दिखाई देता है। मेरा गाँव एक आदर्श गाँव है।

पाठ–17

काँच की किरच

मौखिक (Oral)

(क) चिल्ली की आवाज सुनकर मम्मी जाते-जाते ठिठक गईं।

(ख) चिल्ली ने छोटू के मुँह में दूध की बोतल लगाकर रोने से चुप कराया।

(ग) अलमारी के नीचे छोटू का सिर न फँस जाए यह सोचकर चिल्ली ने छोटू को अलमारी के नीचे से बाहर खींचा।

(घ) छोटू ने कहीं कोई चींटा-चीटीं या अन्य कोई कीड़ा-मकोड़ा या कंकड-पत्थर तो नहीं निगल लिया, इसलिए चिल्ली ने छोटू का मुँह और तालू टटोला।

(ङ) छोटू ने फर्श से चुटकी में कुछ लेकर मुँह में रख लिया, उस चीज को काँच की किरच समझकर चिल्ली छोटू को लेकर दवाखाने गया कि शायद छोटू ने वह काँच की किरच तो उठाकर नहीं खा ली है।

लिखित (Written)

1. **(क)** ब्याह, **(ख)** जंजीर, **(ग)** उचट, **(घ)** ताली, **(ङ)** केबिन।

2. **(क)** ✓ **(ख)** × **(ग)** ✓ **(घ)** × **(ङ)** ×

3. **(क)** चिल्ली ने पूछा, "मैं अलमारी वाले खिलौने खेलने के लिए ले लूँ।"

(ख) फर्श पर पड़ी सफेद चमकती किरच की तीखी धार देखकर चिल्ली के होश फाख्ता हो गए।

(ग) चिल्ली को अलमारी के नीचे एक सफेद चमकती किरच पड़ी मिली।

4. **(क)** चिल्ली के विश्वास को देखकर मम्मी छोटू को चिल्ली के पास छोड़कर जाने के लिए तैयार हो गईं।

(ख) छोटू का रोना बंद कराने के लिए चिल्ली ने दूध का बोतल उठाकर छोटू के मुँह में लगा दी।

(ग) चिल्ली के मास्टर जी ने कहा था कि काँच की एक मामूली-सी किरच अगर हमारे पेट में चली जाए तो वह आँतों को काट सकती है।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** मम्मी ने चिल्ली को ढेर सारी हिदायतें दीं।

(ख) चिल्ली ने जिज्ञासा के साथ फर्श पर देखा।

(ग) चिल्ली छोटू को लेकर दवाखाने गया।

(घ) छोटू ने अलमारी के नीचे से कुछ उठाकर खा लिया था।

2. **(क)** तुम, मैं

(ख) वह

(ग) उसने, मुझे

(घ) वे

(ङ) तुमने, उनको

3. दरवाजे, अलमारियाँ, खिलौने, तालियाँ, बोतलें, रेलगाड़ियाँ, हिदायतें, चींटियाँ, कीड़े, पटरियाँ।

क्रियाकलाप (Activity)

1. अगर मैं चिल्ली की जगह होता तो मैं भी वही करता जो चिल्ली ने किया। भले ही वह मिश्री की किरच थी। किंतु गलती से यदि वह काँच की किरच होती तो छोटू को परेशानी हो सकती थी।

2. प्लास्टिक, काँच, मिट्टी, फाइबर।

आदर्श प्रश्न–पत्र–1

उत्तरमाला

1. **(क)** भालू को आते हुए श्याम ने देखा था।

(ख) सोन-चिरैया जल, जंगल और जमीन के गीत गाती है।

(ग) लोग सेठ से बर्तन उधार ले जाते थे।

(घ) गीजर रश्मि आंटी के छोटे भैया ने ठीक किया।

(ङ) बालक ने केक एक बूढ़े व्यक्ति को दे दिया।

2. **(क)** हम दृढ़ प्रतिज्ञ होकर ऊँचे उठ सकते हैं।

(ख) "यह तो बेईमानी हुई। चूँकि तुम रातभर हमारे महल के चिराग से गर्मी पाते रहे, इसलिए तुम्हें इनाम नहीं मिल सकता।" ऐसा कहकर बादशाह अकबर ने ब्राह्मण को इनाम नहीं दिया।

(ग) मिली तितली के घायल पंख पर दवा लगाती। उसे प्यार से सहलाती, अपनी हथेली पर बिठाकर उसे इधर-उधर घुमाती; इस प्रकार उसने तितली का ध्यान रखा।

(घ) खरगोश अपने बुद्धिबल से शेर को दूसरे शेर द्वारा रोकने की बात बताकर कुएँ के पास ले गया। शेर अपनी परछाईं को दूसरा शेर समझकर कुएँ में कूद गया और डूबकर मर गया।

(ङ) कौए ने जाल में फँसे कबूतरों को समझाया कि एकता में बहुत शक्ति होती है यदि तुम सब एक साथ उड़ो तो इस जाल को साथ लेकर उड़ सकते हो।

3.

आश्चर्य	– अचरज	भोर	– सुबह, प्रात:काल
निर्धन	– गरीब	अविचल	– दृढ़, स्थिर
निद्रा	– नींद	प्रशंसा	– बड़ाई
सर्वदा	– सदैव	लाचार	– मजबूर
ध्वज	– झंडा	दुविधा	– असमंजस

4. **(क)** हमें संकट में धैर्य रखना चाहिए।

(ख) गाँव में एक छोटा-सा तालाब भी है।

(ग) नभ में ढेर सारे तारे निकले हुए हैं।

(घ) शेर ने अपनी परछाईं को दूसरा शेर समझा।

(ङ) मुसीबत में सच्चे मित्र की पहचान होती है।

5. **(क)** डिगो न अपने प्रण से तो तुम,
सब कुछ पा सकते हो प्यारे।
तुम भी ऊँचे उठ सकते हो,
छू सकते हो नभ के तारे।

(ख) भैया पानी नहीं बहाना,
अब घंटे भर नहीं नहाना।
पानी बहुत हुआ है दुर्लभ,
बड़ा कठिन है पानी लाना।

6. **(क)** ✗ **(ख)** ✓ **(ग)** ✓ **(घ)** ✓ **(ङ)** ✗

7.

दिन	–	रात	ऊपर	–	नीचे
न्याय	–	अन्याय	निर्धन	–	धनी
डर	–	निडर	सुखी	–	दु:खी
बड़ा	–	छोटा	राजा	–	रंक

8. **(क)** फूल – पुष्प, कुसुम

(ख) सूरज – भानु, भास्कर

(ग) जल – पानी, नीर

(घ) राजा – नृप, भूपति

(ङ) पेड़ – वृक्ष, पादप

9.

पुस्तक	– पुस्तकें	तारा	– तारे
खिलौना	– खिलौने	केला	– केले
कली	– कलियाँ	किरण	– किरणें
तितली	– तितलियाँ	बच्चा	– बच्चे

10. **(क)** मूर्ति, **(ख)** खिचड़ी, **(ग)** अशोक चक्र, **(घ)** दयालु, **(ङ)** पैर।

आदर्श प्रश्न–पत्र–2

उत्तरमाला

1. **(क)** सूरज के निकलने पर चिड़ियाँ घोंसले छोड़कर उड़ जाती हैं।

(ख) शिकारी के जाल को चूहे ने काटा।

(ग) पानी फालतू इसलिए नहीं बहाना चाहिए क्योंकि पानी बहुमूल्य है।

(घ) मिली से दूर होने पर तितली उदास हो गई थी।

2. **(क)** मेहनत न करने पर जीवन भर दु:ख झेलना पड़ता है।

(ख) भारत के राष्ट्रीय झण्डे का नाम तिरंगा है।

(ग) खरगोश शेर को कुएँ के पास ले गया।

(घ) माधवपुर के लोग सेठ से बर्तन माँगकर ले जाते थे।

3. **(क)** सूरज निकलने पर कलियाँ खिल जाती हैं।

(ख) कोयल मीठे स्वर में गाती है।

(ग) संगठन में बहुत शक्ति होती है।

(घ) हरीश ने अपनी चतुरता से सारी बाजी पलट दी।

4. **(क) (ब)** मित्र **(ख) (स)** कड़वा
(ग) (ब) केसरिया **(घ) (अ)** अमराई में

5. **(क)** स्वच्छता, **(ख)** रोगी,
(ग) जाल, **(घ)** दुर्लभ।

6. **(क)** बिलौटा **(ख)** मोरनी
(ग) शेरनी **(घ)** चुहिया
(ङ) बकरी **(च)** छात्रा

7. **(क)** कलियाँ **(ख)** खिलौना
(ग) मालाएँ **(घ)** छड़ी
(ङ) मेवाएँ **(च)** केला

8. **(क)** समूह **(ख)** दीया, दीपक
(ग) जो आसानी से प्राप्त न हो **(घ)** इनाम
(ङ) वातावरण **(च)** दया करने वाला

9. छात्र स्वयं करें।

(क) मेरा गाँव

मेरे गाँव का नाम 'इन्दरगढ़' है। मेरे गाँव के अधिकांश लोग खेती करते हैं। प्रात:काल स्त्रियाँ मधुर गीत गाते हुए काम करती हैं मेरे गाँव में एक छोटी-सी नदी बहती है। मेरे गाँव में एक विद्यालय और एक वाचनालय है, जहाँ बैठकर लोग पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ते हैं। गाँव की संध्या बहुत मनोरम होती है। शाम को पक्षी कतार बनाकर अपने घोंसलों की ओर जाते हैं मेरा गाँव एक आदर्श गाँव है।

(ख) मेरा विद्यालय

1. मेरे विद्यालय का नाम आदर्श विद्या मंदिर है।
2. मेरे विद्यालय का भवन बहुत सुंदर और विशाल है।
3. इसमें बीस कमरे हैं।
4. पुस्तकालय कक्ष, विज्ञान प्रयोगशाला, खेल-कूद का कक्ष, स्काउट कक्ष एवं एक बड़ा मीटिंग हॉल भी है।
5. मेरे विद्यालय में पच्चीस शिक्षक हैं।
6. सभी शिक्षक छात्रों के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं और रुचि के साथ पढ़ाते हैं।
7. मेरे विद्यालय के प्रधानाचार्य अत्यंत कुशल प्रशासक हैं।
8. विद्यालय की सफाई के लिए चार अनुचर भी हैं।
9. विद्यालय व्यावहारिक नियमों की शिक्षा देता है।
10. अपना विद्यालय मुझे बहुत पसंद है।

(ग) गीजर

गीजर बिजली से चलने वाला एक उपकरण है। यह सर्दियों के मौसम में पानी गरम करने के काम आता है। इससे कम समय में तेजी से पानी गरम किया जा सकता है। आजकल बाजारों में गैस से चलने वाले गीजर भी आ रहे हैं। परन्तु इनका उपयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिए। जरा-सी असावधानी किसी बड़ी दुर्घटना का कारण बन सकती है।

(घ) जल ही जीवन है

जल के बिना जीवन संभव नहीं है। यदि जल नहीं होगा तो संपूर्ण धरा सूख जाएगी। कहीं भी जीवन नहीं पनप पाएगा। जल हमारे कई काम आता है। जल पीकर हम अपनी प्यास बुझाते हैं। नहाने-धोने से लेकर खाना बनाने तक सभी जगह जल का प्रयोग किया जाता है। बिजली बनाने के लिए नदियों के जल का प्रयोग किया जाता है। आज हमारा पर्यावरण इतना प्रदूषित हो चुका है कि ग्लेशियर पिघल रहे हैं, जल के स्रोत सूख रहे हैं। यदि यही स्थिति रही तो जल्द ही पृथ्वी से जल और जल के साथ जीवन समाप्त हो जाएगा। हमें जल को व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। उसका आवश्यकता के अनुसार प्रयोग करना चाहिए। इसके साथ ही हमें पर्यावरण का भी विशेष ध्यान रखना होगा। इसे हरा-भरा बनाए रखना होगा जिससे तापमान में कमी आए और समय पर वर्षा संभव हो और जल के प्राकृतिक स्रोत न सूख पाएँ।

●●

हिन्दी 4

पाठ–1

विनती

मौखिक (Oral)

1. बच्चे ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं।

2. दया के सागर भगवान हैं।

3. बच्चे दीन दुखी, कमजोर और असमर्थ लोगों की सेवा करना चाहते हैं।

लिखित (Written)

1. वह शक्ति हमें दो दयानिधे!
कर्तव्य मार्ग पर डट जाएँ।
पर-सेवा, पर उपकार से हम,
निज जीवन सफल बना जाएँ।
निज आन-मान, मर्यादा का,
प्रभु! ध्यान रहे, अभिमान रहे।
जिस देश-जाति में जन्म लिया,
बलिदान उसी पर हो जाएँ।

2. **(क)** बच्चे भगवान से कर्तव्य-पथ पर डटे रहने की शक्ति माँग रहे हैं।

(ख) बच्चे कर्तव्य मार्ग पर डट जाना चाहते हैं।

(ग) बच्चे जीवन को सफल बनाना चाहते हैं।

(घ) बच्चे शुद्ध और सरल जीवन चाहते हैं।

3. **(क)** बच्चे भगवान से विनती कर रहे हैं कि वे उन्हें सद्गुण सम्पन्न बनाएँ ताकि वे समाज एवं देश की सेवा कर अपने जीवन को सार्थक बना सकें।

(ख) अपने देश और जाति की रक्षा और आन के हित स्वयं को न्योछावर करना चाहते हैं।

(ग) बच्चे छल-कपट, घमंड, दूसरों से ईर्ष्या, ढोंग तथा दूसरों के प्रति अन्याय करने जैसे अवगुणों से सदैव दूर रहना चाहते हैं।

(घ) बच्चे सदैव अपनी मान और मर्यादा का ध्यान और उस पर गर्व रखना चाहते हैं।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** प्रभु! मेरी विनती सुन लीजिए।

(ख) हमें अपने कर्तव्य का ध्यान रखना चाहिए।

(ग) हे ईश्वर! हमें दीन-दुखियों के संताप हरने की शक्ति दो।

(घ) प्रभु, मेरे हाथों कभी किसी का अन्याय न हो।

(ङ) व्यक्ति को अपनी मान-मर्यादा का अभिमान रहना चाहिए।

2. संताप - कष्ट पाखंड - ढोंग
सुधा - अमृत अभिमान - गर्व

3. वह, हमें, हम, उनकों, निज।

क्रियाकलाप (Activity)

* हे ईश्वर! मेरी विनती सुन लेना,
विश्व को छल-दम्भ-द्वेष से मुक्त कर देना,
निर्धन और निसहाय का हक ना लुटने देना।
हे ईश्वर! मेरी विनती सुन लेना,
लूट रहे जो आबरू उनका इंतजाम करना,
प्रलय को तुम अपने आगोश में ले लेना।
हे ईश्वर! मेरी इतनी विनती सुन लेना,
मिथ्या वाणी पर रोक लगा देना,
सरफरोशी की तमन्ना दिलों में जगा देना।
हे ईश्वर! मेरी इतनी विनती सुन लेना,
राम और रहीम का युग लौटा देना,
मन के विश्वास को न डगमगाने देना।

* हाँ, हम भी ईश्वर की पूजा और प्रार्थना करते हैं। हमारी प्रातः जैसे ही आँख खुलती है, हाथ जोड़कर ईश्वर का धन्यवाद करते हैं और वाणी से माँ गायत्री का मंत्रोच्चारण करते हैं। फिर धरती माँ के चरण-स्पर्श करते हैं। दैनिक क्रियाओं से निवृत्त होकर स्नान करके मंदिर में ईश्वर की आरती करते हैं। शाम होने पर पुनः मंदिर में आरती करते हैं और शयन से पूर्व ईश्वर का स्मरण करते हैं।

* छात्र स्वयं करें।

पाठ–2

ब्राह्मणी और नेवला

मौखिक (Oral)

(क) नेवले को ब्राह्मण के घर में घूमने-फिरने की पूरी स्वतन्त्रता थी।

(ख) नेवले ने जब बच्चे के पास साँप को आते हुए देखा, तो वह सतर्क हो गया।

(ग) नेवला इसलिए खुश था, क्योंकि उसने बच्चे की जान बचा ली थी।

(घ) नेवले को ब्राह्मणी ने मारा।

(ङ) ब्राह्मणी इसलिए पछता रही थी क्योंकि उसने बिना सोचे-समझे नेवले को मार दिया था।

लिखित (Written)

1. **(क)** धार्मिक **(ख)** देखभाल
(ग) पालने **(घ)** खून
(ङ) व्यर्थ

2. **(क)** ✗ **(ख)** ✓ **(ग)** ✓ **(घ)** ✗ **(ङ)** ✗

3. **(क)** ब्राह्मण धार्मिक व्यक्ति था।
(ख) अपना मन बहलाने के लिए।
(ग) पानी के भरे घड़े से।

4. **(क)** ब्राह्मण ने अपनी पत्नी से कहा कि यह नेवला कहीं हमारी संतान को नुकसान न पहुँचा दे। इसलिए इसे घर से निकाल दो।
(ख) ब्राह्मणी ने नेवले को घर से इसलिए नहीं निकाला क्योंकि ब्राह्मणी को नेवला बहुत प्यारा था।
(ग) नेवले ने बच्चे को साँप से बचाया। जब उसने साँप के बच्चे के पास जाते देखा तो उसने झपटकर साँप के टुकड़े-टुकड़े कर दिए।
(घ) जब ब्राह्मणी ने नेवले का खून से भरा मुँह देखा तो उसे लगा कि नेवले ने बच्चे को मार दिया है, इसलिए गुस्से में उसने नेवले को मार दिया।
(ङ) ब्राह्मण ने अपनी पत्नी को समझाया कि बिना सोचे-समझे जो काम किया जाता है, उसका परिणाम गलत ही निकलता है। उसमें हानि ही होती है।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** धार्मिक – ब्राह्मण एक धार्मिक व्यक्ति था।
(ख) देखभाल – हमें अपने स्वास्थ्य की देखभाल करनी चाहिए।
(ग) दूध – मुझे दूध पीना अच्छा लगता है।
(घ) सतर्क – हमें दुश्मनों से सतर्क रहना चाहिए।
(ङ) शत्रु – नेवला साँप का शत्रु होता है।

2.

बाह्मण	–	ब्राह्मणी	बेटा	–	बेटी
लड़का	–	लड़की	बच्चा	–	बच्ची
पति	–	पत्नी	साँप	–	साँपिन

3. साथ-साथ, टुकड़े-टुकड़े, पूजा-पाठ, घूमते-फिरते, घूमता-फिरता, सोचे-समझे, देख-भाल, रोती-बिलखती, धीरे-धीरे।

4. ब्राह्मण, सतर्क, व्यर्थ, धार्मिक।

क्रियाकलाप (Activity)

* छात्र अपने अध्यापक से सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी की कहानी सुनें।

* साँप और नेवले की शत्रुता के बारे में हमने पहले से सुन रखा है। वजह यह है कि सर्प नेवले के बच्चों को खा जाता है इसलिए अपने बच्चों को बचाने हेतु नेवला सर्प को देखते ही उस पर हाबी हो जाता है और सर्प अपनी रक्षा हेतु नेवले पर हावी हो जाता है। इसकी यह शत्रुता वर्षों से चली आ रही है।

* **नेवला**

1. नेवला सर्वाहारी जीव है। वह मांसाहारी तथा शाकाहारी दोनों प्रकार का भोजन करता है।
2. नेवला मछली, साँप, केकड़े, मेंढक और कीड़े खाना पसंद करता है।
3. वह अण्डे, फल, जड़-जामुन और बीज भी खाते हैं।
4. नेवला अधिकतर दूसरे जानवरों द्वारा खाली किए गए बिलों में रहता है।
5. नेवला जहरीला नहीं होता है।
6. ये साँपों से लड़ सकते हैं और निश्चित मात्रा तक साँपों के जहर को सहन कर सकते हैं।
7. नेवला बहुत तेज नहीं दोड़ सकता। ये धीमे स्थलीय जानवर हैं।
8. नेवला अण्डे चुराकर खाता है।
9. ये साँपों में नियंत्रण रखते हैं।
10. ये मगरमच्छ के अण्डे खाकर उनकी प्रजाति में नियंत्रण रखते हैं।

पाठ–3

बीरबल की चतुराई

मौखिक (Oral)

(क) व्यापारी का कीमती सामान चोरी हो गया था। वह इसकी शिकायत करने दरबार आया था।

(ख) बीरबल ने चोर का पता लगाने के लिए सभी नौकरों को छड़ियाँ दीं।

(ग) एक नौकर ने अपनी छड़ी को काटकर छोटा इसलिए कर दिया क्योंकि वह चोर था। उसे डर था कि उसकी छड़ी रात में 2 इंच बढ़ जाएगी।

लिखित (Written)

1. **(क)** नवरत्न **(ख)** व्यापारी
(ग) पूछताछ **(घ)** इंच
(ङ) बुद्धि

2. **(क) (ब)** अकबर **(ख) (स)** नौकरों पर
(ग) (ब) घड़ियाँ **(घ) (अ)** छोटी

3. **(क)** व्यापारी दु:खी इसलिए था क्योंकि उसका कीमती सामान चोरी हो गया था।
(ख) बीरबल चोर का पता लगाने व्यापारी के घर गए।
(ग) एक नौकर ने अपनी छड़ी को 2 इंच छोटा कर दिया।
(घ) चोर नौकर अपनी होशियारी की वजह से पकड़ा गया।

4. **(क)** बीरबल बादशाह अकबर के दरबारी और मंत्री थे। वह अपनी हाजिरजवाबी, चतुराई और बुद्धि के लिए प्रसिद्ध थे।
(ख) व्यापारी के घर में उसके माता-पिता, पत्नी, दो बच्चे तथा चार नौकर रहते थे।
(ग) बीरबल ने सभी नौकरों को छड़ियाँ देकर कहा कि इन्हें साधारण छड़ियाँ मत समझना। ये जादू की छड़ियाँ हैं। जिसने भी चोरी की है, उसकी छड़ी की लम्बाई रात में 2 इंच बढ़ जाएगी।
(घ) जिस नौकर ने चोरी की थी, उसने पकड़े जाने के डर के कारण अपनी छड़ी को 2 इंच काटकर छोटा कर दिया, इसी वजह से वह पकड़ा गया।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** बुद्धिमान – बीरबल एक बुद्धिमान व्यक्ति था।
(ख) प्रसिद्ध – अकबर भारत के एक प्रसिद्ध बादशाह थे।
(ग) सहायता – हमें दीन-दुखियों की सहायता करनी चाहिए।
(घ) छड़ी – चोर ने अपनी छड़ी को काट दिया।
(ङ) समस्या – हर समस्या का कोई-न-कोई समाधान होता है।

2. बेगम, माता, पत्नी, नौकरानी, बेटी।

3. मूर्ख, अवगुण, नापसंद, निर्धन, सुखी, असाधारण, दिन, शाम, बड़ा, घटना

4. **(क)** व्यापारी **(ख)** चोर
(ग) धनी **(घ)** बुद्धिमान
(ङ) बहुमूल्य

पाठ–4

पेड़ पर स्कूल

मौखिक (Oral)

(क) मीनू माँ की साड़ियों के साथ खेलती थी।
(ख) मीनू को गुड़िया की चाय के सेट की सफाई करनी होती थी, बर्तन माँजने होते थे, गुड़िया के रजाई-गद्दे धूप में डालने होते थे, फटे कपड़े सिलने होते थे और गुड़ियाघर को सजाना होता था।
(ग) मीनू बार-बार मम्मी के पास इसलिए जा रही थी क्योंकि वह दीपा मौसी से बात करना चाहती थी।
(घ) दीपा मौसी पेड़ पर बैठकर पढ़ती थी।

लिखित (Written)

1. **(क)** ढेर सारे **(ख)** चौथी 'ए'
(ग) चाय **(घ)** दो

2. **(क)** ✓ **(ख)** × **(ग)** ✓ **(घ)** ✓ **(ङ)** ×

3. **(क)** मीनू को माँ की साड़ियों से खेलना पसंद था।
(ख) मीनू की माँ का नाम उषा था।
(ग) कमरे में बैठकर।
(घ) मीनू की माँ की सहेली, दीपा मौसी।

4. **(क)** मीनू सात साल की एक छोटी लड़की थी। वह चौथी कक्षा में पढ़ती थी। उसके बाल घुँघराले, आँखें काली और दाँत चमकीले थे। वह बातचीत में सबका दिल जीत लेती थी।
(ख) मीनू माँ की साड़ियों को पहन-पहनकर देखती थी। कभी उनके पर्दे बनाती थी। कभी उन्हें झण्डे की तरह लहराती थी।
(ग) मीनू की माँ अपनी सहेली दीपा से बातें कर रही थी। मीनू बार-बार बीच में आ जाती थी और उन्हें बातें करने नहीं दे रही थी, इसलिए उसने मीनू को डाँटा।
(घ) दीपा मौसी पेड़ पर बैठकर लिखती और स्लेट को रस्सी में बाँध कर नीचे लटका देती। मास्टर जी पेड़ पर नहीं चढ़ सकते थे। इसलिए अगर वह गलत काम भी करती, तो भी उसे सजा नहीं मिलती थी।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** झंडा – तिरंगा हमारा राष्ट्रीय झंडा है।
(ख) गुड़िया – मुझे गुड़िया से खेलना पसंद है।
(ग) उदास – आज मेरा मन उदास है।
(घ) ताली – मीनू ने ताली बजाई।

(ङ) मजाक – हमें किसी का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए।

2. आँखें साड़ियाँ
गद्दे छुट्टिया
दरवाजे गुड़ियाँ
बातें रजाइयाँ
मंजिलें तालियाँ
कमरे मौसियाँ
स्लेटें लड़कियाँ
चेहरे हथेलियाँ

3. **(क)** काली **(ख)** चमकीले
(ग) फटे **(घ)** प्यारी
(ङ) उदास

4. माता, मौसी, गुड़िया, बेटी, बच्ची, चिड़िया, लड़की, मम्मी।

क्रियाकलाप (Activity)

* **1.** मेरा नाम सृष्टि है।
2. मेरे स्कूल का नाम जगदंबा विद्या मंदिर है।
3. मेरे स्कूल में बीस कमरे हैं।
4. मेरे स्कूल में दो मंजिलें हैं।
5. मेरे स्कूल में पन्द्रह अध्यापक-अध्यापिकाएँ हैं।

पाठ–5

राष्ट्रीय वृक्ष —बरगद

मौखिक (Oral)

(क) बरगद के वृक्ष को उसके विशाल आकार, सघन स्वरूप तथा एक साथ बहुत लोगों को छाया प्रदान करने के कारण दैवी प्रतिष्ठा का अधिकारी माना जाता है।
(ख) बरगद की पत्तियाँ बड़ी तथा अंडाकार होती हैं तथा इसके फल लाल रंग के अंजीर के जैसे होते हैं।
(ग) बरगद के वृक्ष को राष्ट्र का प्रतीक माना जाता है।
(घ) बरगद का वृक्ष 20 से 30 मीटर तक ऊँचा होता है।

लिखित (Written)

1. **(क)** निवास स्थान **(ख)** अंडाकार
(ग) अंजीर **(घ)** पवित्र **(ङ)** शुद्ध

2. **(क)** ✓ **(ख)** ✓ **(ग)** ✗ **(घ)** ✓ **(ङ)** ✗

3. **(क)** 1950 में।
(ख) बड़ी और मजबूत।
(ग) बरोह या प्राप जड़।
(घ) वट वृक्ष।
(ङ) लेटेक्स बरगद की टहनियों से निकलने वाला दूध होता है।

4. **(क)** बरगद की टहनियों से इसकी लम्बी-लम्बी जड़ें लटकती रहती हैं। इन जड़ों को बरोह या प्राप जड़ कहते हैं।
(ख) हिन्दू धर्म में इस वृक्ष को बहुत पवित्र माना जाता है। मान्यता है कि इस पेड़ पर देवी-देवता निवास करते हैं। इस वृक्ष की पूजा की जाती है।
(ग) बौद्ध धर्म की मान्यता के अनुसार, महात्मा बुद्ध को बरगद के वृक्ष के नीचे ही ज्ञान की प्राप्ति हुई थी।
(घ) बरगद का वृक्ष आकार में घना और बहुत बड़ा होता है। इसकी जड़ व तने बहुत मजबूत होते हैं। यह प्रायः हरी पत्तियों से घिरा होता है। इस पर टहनियों से लटकती लम्बी जड़ें इसे और भी आकर्षक बनाती हैं।
(ङ) बरगद का पेड़ हमारे लिए बहुत उपयोगी है। इस वृक्ष का लगभग हर भाग जैसे तना, छाल, पत्ते, फल इत्यादि हमारे लिए लाभदायक हैं। इससे कई प्रकार की औषधियाँ तैयार की जाती हैं।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** धार्मिक – बरगद के वृक्ष की धार्मिक मान्यता है।
(ख) बरगद – बरगद हमारा राष्ट्रीय वृक्ष है।
(ग) विशाल – बरगद का पेड़ बहुत विशाल होता है।
(घ) ऋषि – ऋषि तप कर रहा है।
(ङ) शुद्ध – साँस लेने के लिए शुद्ध हवा जरूरी है।
(च) संस्कृति – भारतीय संस्कृति बहुत महान है।

2. पौधा – पौधे शाखा – शाखाएँ
चिड़िया – चिड़ियाँ तना – तने
झूला – झूले जड़ – जड़ें
कमरा – कमरे पत्ता – पत्ते
किताब – किताबें टहनी – टहनियाँ
तितली – तितलियाँ हवा – हवाएँ
खिड़की – खिड़कियाँ सड़क – सड़कें

3.

राष्ट्र	प्रतिष्ठान	आकर्षक
राष्ट्रीय	केन्द्र	धर्म
फैक्ट्री	प्रायः	गर्मी

4. **(क)** मजबूत → **(द)** जड़ें
(ख) विशालकाय → **(य)** वृक्ष
(ग) राष्ट्रीय → **(र)** प्रतीक
(घ) अंडाकार → **(ब)** पत्तियाँ
(ङ) लम्बी → **(अ)** उम्र
(च) शुद्ध → **(स)** हवा

क्रियाकलाप (Activity)

* **1.** बरगद का पेड़ बहुत बड़ा होता है।
2. इसमें सबसे अधिक ऑक्सीजन पायी जाती है।
3. बरगद हमारा राष्ट्रीय वृक्ष है।
4. गौतम बुद्ध को इसी पेड़ के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था।
5. यह एक औषधीय पेड़ है।
6. बरगद को पूजा जाता है।
7. इसकी जड़ें मजबूत होती हैं।
8. इसकी उम्र सबसे अधिक होती है।
9. बरगद की जड़ें जमीन में घुसकर विशाल क्षेत्र घेर लेती हैं।
10. बरगद को वट भी कहते हैं।

पाठ–6

पर्वत कहता शीश उठाकर

मौखिक (Oral)

(क) पर्वत जीवन में ऊँचा उठना सिखाता है।
(ख) तरल तरंग।
(ग) धैर्य रखना चाहिए।

लिखित (Written)

1. पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो,
कितना ही हो सिर पर भार।
नभ कहता है फैलो इतना,
ढक लो तुम सारा संसार।

2. **(क)** ✓ **(ख)** × **(ग)** ✓ **(घ)** ×

3. **(क)** सागर में उठती तरंगें हमें खुश रहना तथा दिल में कोमल उमंग भरना सिखाती हैं।
(ख) पृथ्वी से हम धैर्य रखना सीख सकते हैं। पृथ्वी हमें सिखाती है कि चाहे सिर पर कितना भी बोझ या भार हो, हमें धीरज नहीं खोना चाहिए।
(ग) आकाश से हमें अपने हृदय को विशाल बनाने की सीख मिलती है ताकि हम दूसरों को प्यार, सम्मान और आदर दे सकें।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** पर्वत – हिमालय पर्वत बहुत ऊँचा है।
(ख) गहराई – समुद्र की गहराई मापना बहुत मुश्किल है।
(ग) दिल – हमारे दिल में सबके लिए सम्मान होना चाहिए।
(घ) धैर्य – हमें कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए।
(ङ) संसार – यह संसार बहुत बड़ा है।

2. **(क)** पर्वत – पहाड़, गिरि
(ख) सागर – समुद्र, जलधि
(ग) पृथ्वी – धरती, भूमि
(घ) नभ – आसमान, अंबर
(ङ) संसार – दुनिया, जगत्

3. उठ-उठ, गिर-गिर, भर लो-भर लो, मीठी-मीठी।

4. **(क)** गहरा → **(स)** सागर
(ख) ऊँचा → **(अ)** पर्वत
(ग) फैला → **(द)** नभ
(घ) तरल → **(ब)** तरंग

क्रियाकलाप (Activity)

* **खेल-खेल में**
कमल – लट्टू – टमाटर – रस्सी – सड़क – कबूतर – रजाई – ईख – खरगोश

पाठ–7

पितृभक्त श्रवणकुमार

मौखिक (Oral)

(क) अयोध्या।
(ख) तीर्थयात्रा पर।
(ग) राजा ने समझा कि कोई हाथी नदी में जल पी रहा है।

लिखित (Written)

1. **(क)** सेवा **(ख)** तीर्थयात्रा **(ग)** निपुण
(घ) छाती **(ङ)** शाप

2. **(क)** **(ब)** अंधे **(ख)** **(स)** प्यास
(ग) **(अ)** आवाज सुनकर **(घ)** **(अ)** नदी

3. **(क)** दशरथ बाण चलाने में निपुण थे।
(ख) शिकार खेल रहे थे।
(ग) दशरथ ने समझा कि कोई जंगली हाथी पानी पी रहा है।
(घ) दशरथ ने श्रवणकुमार के माता-पिता से क्षमा माँगी।

4. **(क)** श्रवण अपने माता-पिता की बहुत सेवा करता था। उन्हें कपड़े पहनाता, नहलाता, रोटी बनाकर खिलाता था। जब वे चाहते तो उन्हें तीर्थयात्रा पर ले जाता।

(ख) श्रवणकुमार एक दिन रात के समय तीर्थयात्रा के दौरान अपने प्यासे माता-पिता के लिए नदी पर पानी लेने गया था।

(ग) श्रवण नदी पर पानी भर रहा था। राजा दशरथ ने समझा कि कोई जंगली हाथी पानी पी रहा है। उन्होंने तीर चला दिया। तीर श्रवण की छाती में लगा और उसकी मौत हो गई।

(घ) राजा दशरथ के बाण से अनजाने में श्रवणकुमार की मौत हो गई। अपने इस अपराध के लिए राजा दशरथ ने श्रवणकुमार के माता-पिता से माफी माँगी।

(ङ) श्रवणकुमार की मृत्यु की खबर सुनकर उसके माता-पिता फूट-फूटकर रोने लगे। उन्होंने राजा दशरथ को श्राप दिया और कुछ ही देर में वे दोनों भी मर गए।

(च) श्रवण के माता-पिता ने राजा दशरथ को शाप दिया कि जिस प्रकार वे अपने पुत्र के बिछोह के दु:ख में मर रहे हैं, उसी प्रकार वह भी मरेगा।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** नदी — गंगा एक पवित्र नदी है।

(ख) तीर्थयात्रा — मेरे दादा जी कल तीर्थयात्रा पर गए।

(ग) पानी — हमें साफ पानी पीना चाहिए।

(घ) पुत्र — राम मोहनलाल का इकलौता पुत्र है।

(ङ) अँधेरा — बाहर घना अँधेरा है।

2. (ँ) माँ, काँवर, अँधेरा।

(ं) अंधे, जंगली, कंधे।

3.

अंधा	अंधे	अंधों
लड़का	लड़के	लड़कों
कपड़ा	कपड़े	कपड़ों
घंटा	घंटे	घंटों
नदी	नदियाँ	नदियों
रोटी	रोटियाँ	रोटियों
घड़ी	घड़ियाँ	घड़ियों
बिल्ली	बिल्लियाँ	बिल्लियों

4.

व्यक्तिवाचक संज्ञा	**जातिवाचक संज्ञा**
दशरथ, अयोध्या, श्रवण	राजा, लड़का, काँवर, घड़ा, बाण

क्रियाकलाप (Activity)

* **1.** परमाणु बम **2.** मिशाइल **3.** स्टेटगन **4.** ड्रोन्स **5.** लेजर हथियार

पाठ–8

पटाखों से तौबा

मौखिक (Oral)

(क) तीनों मित्र पटाखे खरीदने की योजना बना रहे थे।

(ख) ओजोन परत में पड़े छेद फैक्ट्रियों, वाहनों तथा पटाखों के धुएँ के कारण बड़े हो जाएँगे।

(ग) प्रकृति ने पृथ्वी पर ओजोन परत का छाता ताना हुआ है।

(घ) ओजोन परत।

लिखित (Written)

1. **(क)** (ब)चार्ट **(ख)** (स)गंधक **(ग)** (ब)पटाखों पर **(घ)** (ब) श्रीमती पूजा शर्मा

2. **(क)** पराबैंगनी **(ख)** जिदंगी **(ग)** फुलझड़ियाँ, छतरी **(घ)** मध्यावकाश

3. **(क)** विषैली → **(ब)** जहरीली

(ख) वनस्पति → **(द)** पेड़-पौधे

(ग) मुसीबत → **(य)** परेशानी

(घ) प्रकाश → **(अ)** रोशनी

(ङ) निर्धारित → **(स)** निश्चित

4. **(क)** पटाखे पौटेशियम क्लोरेट और गंधक के एक निश्चित अनुपात के मिश्रण से बनते हैं। इस मिश्रण को मोटे कागज की बेलनाकार आकृति नली में भर दिया जाता है। पटाखे जलाने पर इस मिश्रण के जलने से अत्यधिक गैस निकलती है तथा और भी कई विषैली गैसें निकलती हैं।

(ख) पटाखों से निकलने वाली रासायनिक गैसें और धुएँ के कारण ओजोन परत में पड़े छेद और भी बड़े हो जाएँगे और सूर्य की पराबैंगनी किरणें सबको हानि पहुँचाएँगी।

(ग) पटाखों से होने वाले वायु-प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण से श्वास रोग, क्षय रोग, हृदय रोग तथा बहरेपन जैसी बीमारियाँ हो सकती हैं।

(घ) विद्यार्थियों ने अंत में निश्चय किया कि वे पास की झोंपड़-पट्टी के गरीब बच्चों को मिठाई और खिलौने बाँटकर दीपावली मनाएँगे।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** जिंदगी – हमें सबकी जिदंगी में खुशियाँ भरने का प्रयत्न करना चाहिए।
   (ख) पटाखे – हमें पटाखे नहीं चलाने चाहिए।
   (ग) मध्यावकाश – आज मध्यावकाश में मेरी पुस्तक गुम हो गई।
   (घ) विज्ञान – विज्ञान मेरा प्रिय विषय है।
   (ङ) हानिकारक – वाहनों का धुआँ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है।

2. 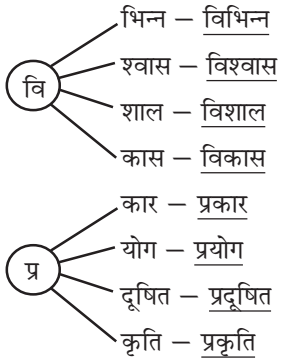

3. सूर्य – सूरज, दिनकर
   हृदय – मन, दिल
   वायु – हवा, समीर
   पृथ्वी – धरती, भूमि

क्रियाकलाप (Activity)

* छात्र स्वयं करें।

पाठ–9

शिमला की सैर

मौखिक (Oral)

(क) यह पत्र प्रेरणा ने अनन्या को लिखा है।
(ख) सब बच्चे चंडीगढ़ से रेलगाड़ी में शिमला गए।
(ग) घने जंगल, पहाड़, झरने इत्यादि।
(घ) रिज का सुंदर नजारा, पहाड़ों पर बसे घरों, होटलों आदि की बत्तियों ने।

लिखित (Written)

1. **(क)** कालका **(ख)** तारादेवी
   (ग) रिज **(घ)** हनुमान
   (ङ) यक्ष

2. **(क)** (अ) चंडीगढ़
   (ख) (स) हल्की ठंडे
   (ग) (ब) अंत्याक्षरी

3. **(क)** अपनी मौसी के पास देहरादून।
   (ख) चंडीगढ़ रेलवे स्टेशन तक।
   (ग) रिज पर।
   (घ) 108 फुट ऊँची।

4. **(क)** कालका से तारादेवी स्टेशन तक बच्चों ने प्रकृति के सुंदर नजारे देखे। उन्होंने कहीं घने जंगल, कहीं पहाड़, कहीं झरने तथा सुरंगें इत्यादि देखे।
   (ख) शिमला पहुँचकर सब पैदल ही अपने होटल गए। वहाँ कमरों में अपना सामान रखा, मुँह–हाथ धोए, कपड़े बदले और फिर टहलने के लिए निकल गए।
   (ग) दो दिन शिमला में उन्होंने बहुत-सी चीजें देखीं। उन्होंने लक्कड़ बाजार, लोअर शिमला, अपर शिमला, मॉल रोड, रिज आदि देखा।
   (घ) हनुमानजी संजीवन बूटी लेने जाते समय विश्राम करने और यक्ष ऋषि से संजीवनी बूटी का परिचय प्राप्त करने के लिए जाखू पहाड़ी पर गए थे।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** स्कूल – मुझे मेरा स्कूल बहुत अच्छा लगता है।
   (ख) रेलगाड़ी – रेलगाड़ी बहुत तेज चलती है।
   (ग) होटल – यह होटल बहुत सुंदर है।
   (घ) बाजार – पिता जी बाजार गए हुए हैं।

2. जंगल – वन
   घर – गृह
   आनंद – खुशी
   विश्व – संसार
   आकाश – आसमान
   पर्वत – शिखर

3. प्र + ताप = प्रताप
   अ + सत्य = असत्य
   अप + मान = अपमान
   सु + पुत्र = सुपुत्र
   वि + श्वास = विश्वास
   कु + मति = कुमति

पाठ–10

पण्डित जवाहरलाल नेहरू

मौखिक (Oral)

(क) नेहरूजी का जन्म 14 नवंबर 1889 को प्रयाग (इलाहाबाद) में हुआ।

(ख) नेहरू जी ने इंग्लैण्ड में हैरो स्कूल तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से शिक्षा ग्रहण की।

(ग) 1929 में।

(घ) पंचशील सिद्धांत को प्रचारित किया।

(ङ) हृदयाघात से।

लिखित (Written)

1. **(क)** वकील **(ख)** 1942
(ग) शांति **(घ)** उद्योगों
(ङ) दु:खी

2. (क) नेहरूजी → **(य)** चाचा नेहरू
(ख) प्रयागराज → **(द)** इलाहाबाद
(ग) 1915 → **(अ)** विवाह
(घ) लाहौर → **(र)** पूर्ण स्वराज्य
(ङ) पंचशील → **(स)** विश्व-शांति
(च) शांति वन → **(ब)** समाधि

3. **(क)** नेहरूजी का जन्म 14 नवंबर, 1889 को हुआ।
(ख) बैरिस्ट्री की परीक्षा।
(ग) 15 अगस्त, 1947 को।
(घ) शान्ति वन में।

4. **(क)** नेहरूजी की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। एक अंग्रेज शिक्षक इन्हें घर-घर पढ़ाने आते थे।
(ख) नेहरूजी ने पूर्ण स्वराज की माँग 1929 में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में की।
(ग) नेहरूजी आजादी के बाद भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने। 1947 से 1964 तक उन्होंने भारत के विकास के लिए बहुत प्रयत्न किए। उन्होंने लोगों के कल्याण के लिए अनेक योजनाएँ बनाईं।
(घ) नेहरूजी का जन्मदिन बाल-दिवस के रूप में मनाया जाता है क्योंकि उनको बच्चों से बहुत प्यार था।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** लेखक– नेहरूजी एक अच्छे <u>लेखक</u> थे।
(ख) अध्ययन – नेहरूजी ने हैरो स्कूल में <u>अध्ययन</u> किया।
(ग) ईमानदारी– <u>ईमानदारी</u> सबसे अच्छा गुण है।
(घ) विकास – हमें देश के <u>विकास</u> में सहयोग देना चाहिए।
(ङ) देहांत – 27 मई, सन् 1964 को नेहरूजी का <u>देहांत</u> हुआ।

2. **(क)** बहुत **(ख)** अच्छा
(ग) खराब **(घ)** अच्छा
(ङ) खूब

3. **(क)** टेलीफोन **(ख)** कार
(ग) टेलीविजन **(घ)** बस
(ङ) ट्रैक्टर **(च)** स्कूटी

4. **सर्वनाम–** हमारे, वो, उनको, इनके, इन्हें, वहाँ, इन्होंने, उनका, उन्होंने, उन्हें, उनके।

क्रियाकलाप (Activity)

भारत के प्रधानमंत्री–

1. जवाहरलाल नेहरू	**2.** गुलजारीलाल नन्दा
3. लालबहादुर शास्त्री	**4.** इंदिरागांधी
5. मोरारजी देसाई	**6.** चरणसिंह
7. राजीव गांधी	**8.** विश्वनाथ प्रताप सिंह
9. चन्द्रशेखर	**10.** पी0 वी0 नरसिह्मा राव
11. अटल बिहारी वाजपेई	**12.** एच0 डी0 देवगौड़ा
13. इंद्रकुमार गुजराल	**14.** मनमोहन सिंह
15. नरेन्द्र मोदी	

पाठ–11

पापा जब बच्चे थे

मौखिक (Oral)

(क) चौकीदार।

(ख) पापा आइसक्रीम बेचने वाला इसलिए बनना चाहते थे क्योंकि फिर वे ठेले को लेकर घूम सकते थे और जितना मन चाहे उतनी आइसक्रीम खा सकते थे।

(ग) जब रेलगाड़ी अपनी यात्रा पूरी कर लेती है।

(घ) शंटिंग, चौकीदारी और आइसक्रीम बेचना।

(ङ) पापा ने उन्हें काटने की कोशिश की।

लिखित (Written)

1. **(क)** चौकीदार **(ख)** आइसक्रीम
(ग) इंजन **(घ)** वायुयान
(ङ) कुत्ता

2. **(क)** ✓ **(ख)** ✗ **(ग)** ✓ **(घ)** ✓ **(ङ)** ✓

3. **(क)** आइसक्रीम वाले के चमकदार हरे ठेले ने।
(ख) शंटिंग करते हुए आदमी को।
(ग) शंटिंग और चौकीदारी।
(घ) लाठी हिलाते हुए गायों के पीछे घूमकर दिन बिताना चाहते थे।
(ङ) पापा कुत्ते के पास जाकर इसलिए बैठ गए क्योंकि वह उसके जैसे कान के पीछे खुजाना सीखना चाहते थे।

4. **(क)** पापा को यह सोचना अच्छा लगता था कि जब सारा शहर सोता है तब चौकीदार जागता है तथा तब सारे सोये हुए हों, तब चौकीदार खूब शोर मचा सकता है।
(ख) चौकीदार के अलावा पापा ने बहुत कुछ बनने के बारे में सोचा, जैसे—आइसक्रीम बेचने वाला, शंटिंग करने वाला, वायुयान चालक, अभिनेता, जहाजी, चरवाहा इत्यादि।
(ग) जब रेलगाड़ी अपनी यात्रा पूरी कर लेती है तो उसे अगली यात्रा के लिए तैयार किया जाता है। रेलगाड़ी की साफ-सफाई की जाती है। इंजन को घुमाकर ईंधन पानी भरा जाता है। इसे शंटिंग कहते हैं।
(घ) पापा दिन में इंजन की शंटिंग करने के साथ-साथ स्टेशन के पास में ही आइसक्रीम बेचना चाहते थे। फिर वे रात में चौकीदारी करना चाहते थे।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** चौकीदार — चौकीदार रात भर जागता है।
(ख) आइसक्रीम — मुझे आइसक्रीम बहुत पसंद है।
(ग) खिलौना — यह मेरा खिलौना है।
(घ) अभिनेता — मैं बड़ा होकर अभिनेता बनना चाहता हूँ।
(ङ) इंसान — हमें अच्छे इंसान बनना चाहिए।

2. **(क)** डॉक्टर **(ख)** अध्यापक
(ग) चरवाहा **(घ)** कवि
(ङ) दर्जी

3.

मास्टर	—	मास्टरनी
बच्चा	—	बच्ची
पिता	—	माता
आदमी	—	औरत
अभिनेता	—	अभिनेत्री
कुत्ता	—	कुतिया
बूढ़ा	—	बुढ़िया
गाय	—	बैल

पाठ–12

चाँद का कुरता

मौखिक (Oral)

(क) चाँद ने झिंगोला सिलवाने की जिद पकड़ी।
(ख) चाँद अपनी माता से बात कर रहा है।
(ग) नहीं।

लिखित (Written)

1. सन-सन चलती हवा रात भर, जाड़े से मरता हूँ।
ठिठुर-ठिठुर कर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ।
आसमान का सफर और यह मौसम है जाड़े का।
न हो अगर तो ला दो कुरता ही कोई भाड़े का
बच्चे की सुन बात कहा माता ने, "अरे सलोने!
कुशल करे भगवान, लगें ना तुझको जादू-टोने।

2. **(क)** × **(ख)** ✓ **(ग)** × **(घ)** ✓

3. **(क)** चाँद झिगोला लेने की जिद इसलिए कर रहा था क्योंकि वह ठंड से बचना चाहता था।
(ख) माँ चाँद के लिए कोई झिंगोला नहीं सिलवा सकती क्योंकि चाँद कभी भी एक नाप में नहीं होता।
(ग) अमावस्या की रात।
(घ) पूर्णिमा की रात।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** माँ — मुझे मेरी माँ से बहुत प्यार है।
(ख) चाँद — चाँद रात को दिखाई देता है।
(ग) झिंगोला — चाँद ऊन का झिंगोला लेना चाहता था।
(घ) मौसम — आज मौसम बहुत सुहावना है।
(ङ) दिन — आज का दिन बहुत अच्छा है।

2. विपरीतार्थक—

दिन — रात, आसमान — धरती, ठीक — गलत,
मोटा — पतला, घटता — बढ़ता, सरदी — गरमी,
नहीं — हाँ, बड़ा — छोटा।

3. पर्यायवाची शब्द—

चाँद—चंद्रमा, शशि, राकेश
माता—माँ, जननी, धात्री
कमल—पंकज, नीरज, जलज
आँख—नेत्र, नयन, लोचन
सूर्य—सूरज, रवि, भानु

पाठ–13

परख

मौखिक (Oral)

(क) आचार्य ने राजा से कहा कि काम बहुत है, सँभल नहीं रहा। उनको कोई सहायक चाहिए।

(ख) दो दिन में।

(ग) यंत्र की तरह रसायन बनाने वाला।

लिखित (Written)

1. **(क)** (ब) आचार्य के पाँव छुए
(ख) (ब) जिसने बीमार व्यक्ति की सेवा एवं सहायता की
(ग) (ब) रसायनशास्त्री
(घ) (ब) एक जैसे पढ़े-लिखे

2. **(क)** नागार्जुन **(ख)** चिकित्सा
(ग) रसायनशास्त्री **(घ)** असाध्य

3. **(क)** × **(ख)** ✓ **(ग)** × **(घ)** × **(ङ)** ✓

4. **(क)** नागार्जुन ने दूसरे व्यक्ति को अपना सहायक इस लिए बनाया क्योंकि उसने मनुष्य की सेवा की थी।

(ख) नागार्जुन ने दोनों युवकों को एक-एक पदार्थ दिया और उसे पहचानकर अपनी इच्छानुसार एक रसायन बनाने को कहा उन्होंने यह भी कहा कि घर जाने से पहले उनको पूरे राजमार्ग को पार करना है।

(ग) दूसरे युवक को पेड़ के नीचे एक बीमार आदमी पड़ा मिला। कोई भी उसे पूछ नहीं रहा था। वह उसको उठाकर अपने घर ले गया तथा उसकी सेवा की। इसलिए वह रसायन तैयार नहीं कर सका।

(घ) इस पाठ से यह शिक्षा मिलती है कि रोगियों के प्रति संवेदना रखने वाला सेवाभावी व्यक्ति ही श्रेष्ठ चिकित्सक सिद्ध होता है।

व्याकरण (Grammar)

1.

दिन	–	दिवस	वासर
घर	–	सदन	भवन
राजा	–	नृप	नरेश
आदमी	–	मनुष्य	मानव
रात	–	निशा	रजनी

2.

चीकित्सा	– चिकित्सा	मनूष्य	– मनुष्य
चककर	– चक्कर	पराचीन	– प्राचीन
मूलाकात	– मुलाकात	राजमारग	– राजमार्ग

3.

प्राचीन	– नवीन	आदर	– अनादर
असाध्य	– साध्य	आवश्यक	– अनावश्यक
उदास	– खुश	अपराधी	– निर्दोष
उत्तर	– प्रश्न	योग्य	– अयोग्य

पाठ–14

अच्छे–बुरे

मौखिक (Oral)

(क) हरी छोटा बच्चा था। बीबीजी को लगा कि वह काम नहीं कर पाएगा इसलिए उसने हरी को शंकित दृष्टि से देखा।

(ख) बीबीजी ने बंटी को इसलिए घुढ़का क्योंकि वे नहीं चाहती थीं कि बंटी हरी से दोस्ती करे।

(ग) सौ रुपये का नोट चुराने का।

(घ) बंटी को विश्वास था कि हरी ने चोरी नहीं की।

(ङ) बंटी के दोस्त।

लिखित (Written)

1. **(क)** बावड़ी **(ख)** तिलमिला
(ग) पर्स **(घ)** ईमानदारी
(ङ) निक्की

2. **(क)** (ब) बंटी **(ख)** (स) माँ
(ग) (ब) निक्की ने **(घ)** (अ) सौ का

3. **(क)** घर का काम करने।
(ख) बंटी को।
(ग) तीन सालों से।
(घ) हरी पर।

4. **(क)** दूसरे दिन हरी ने बंटी के कमरे की तरफ जाते समय सुना कि बीबीजी बंटी से कह रही थी कि वह हरी से बात नहीं करेगा और उससे दूर रहेगा। एक तो ये झोंपड़पट्टी वाले बच्चे गंदे रहते हैं, दूसरा उन्हें शक था कि हरी ने पैसे चुराए हैं।

(ख) जब हरी ने पैसे चुराने की बात पर कहा कि हो सकता है कि बीबी जी ने पैसे खर्च किए हों और वह भूल गई हों, तो हरी के इस जवाब पर वह तिलमिला उठीं।

(ग) हीरा तीन साल से उस घर में काम कर रही थी। पर उस पर कभी भी पैसे चुराने का इल्जाम नहीं लगा इसलिए उसने हरी को डाँटा कि वह सच-सच बता दे।

(घ) बीबीजी को पैसे चोरी के लिए हरी पर शक था। पर उसकी अनुपस्थिति में भी पैसे चोरी हुए। इसलिए हीरा दुविधा में थी। पर जब पता चल गया कि पैसे निक्की ने चुराए थे, हरी ने नहीं, तो हीरा ने संतुष्टि की साँस ली।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** गर्व – मुझे मेरे देश पर गर्व है।

(ख) इकलौता – राम अपने माता-पिता का इकलौता पुत्र है।

(ग) अलमारी – कपड़े अलमारी में रख दो।

(घ) मेहनत – हमें मेहनत करनी चाहिए।

(ङ) स्कूल – हरी स्कूल जाता है।

(च) ग्लानि– बंटी की आँखों में ग्लानि के आँसू थे।

2. तकरीबन, सख्त, तोहमत, मजाल, माजरा, शुबहा, नज़र, फिजूल।

3.

छोटा	– बड़ा	गहरा	– उथला
सख्त	– नरम	जवाब	– सवाल
उदास	– प्रसन्न	कोमल	– कठोर
ईमानदार	– बेईमान	संतुष्ट	– असंतुष्ट।

4. **व्यक्तिवाचक संज्ञा–** हरी, बंटी, हीरा, पिंचू, निक्की।
भाववाचक संज्ञा– गर्व, उदास, तिलमिला, गुस्सा, भरोसा, दुविधा, ईमानदारी, ग्लानि, अच्छा, बुरा, संतुष्टि।

पाठ–15

कला का सम्मान

मौखिक (Oral)

(क) मनोहर एक गरीब मूर्ति बनाने वाला था।

(ख) मनोहर ललिता को खिलौने बनाना इसलिए नहीं सिखाता था क्योंकि वह सोचता था कि लड़की तो शादी करके दूसरे घर चली जाएगी इसलिए उसे काम नहीं सिखाना चाहिए।

(ग) दस रुपये।

(घ) अन्त में मनोहर ने ललिता को मूर्तियाँ बनाना सिखाने का निर्णय लिया।

लिखित (Written)

1. **(क)** (ब) सही-सही हिसाब करना
(ख) (ब) ललिता के पिता का हाल जानने
(ग) (स) बहुत बीड़ी पीना

2. **(क)** बैलगाड़ी **(ख)** ललिता
(ग) लकड़ियाँ **(घ)** औरतों
(ङ) खिलौने

3. **(क)** ✓ **(ख)** × **(ग)** × **(घ)** × **(ङ)** ✓ **(च)** ×

4. **(क)** मनोहर अपने छोटे बेटे को खिलौने बनाना सिखाना चाहता था ताकि वह बड़ा होकर अपने पिता की मदद कर सके।

(ख) ललिता चार दिन तक स्कूल इसलिए नहीं गई क्योंकि उसके पिता जी बीमार थे और अस्पताल में दाखिल थे।

(ग) टीचर ने खिलौने बिकवाने का उपाय बताया कि स्कूल में मेला लग रहा था। वह अपनी मूर्तियाँ और खिलौने उस मेले में बेच सकते हैं।

(घ) अस्पताल से लौटने पर मनोहर को पता लगा कि ललिता के बनाए खिलौने हाथों-हाथ बिक गए हैं और उसकी बनाई हुई मूर्ति को पुरस्कार मिला है।

(ङ) बड़े साहब को ललिता के बनाए खिलौने बहुत पसंद आए इसलिए उन्होंने ललिता को इनाम दिया।

व्याकरण (Grammar)

1.

नुमाइस	–	नुमाइश	डाकटर	–	डॉक्टर
खीलौने	–	खिलौने	मुरती	–	मूर्ति
व्यापारि	–	व्यापारी	पुरसकार	–	पुरस्कार

2.

खाँसी	–	मुझे खाँसी हो गई है।
बैलगाड़ी	–	बैलगाड़ी धीरे चलती है।
मूर्तियाँ	–	ये मूर्तियाँ बहुत सुन्दर हैं।
नुमाइश	–	आज मूर्तियों की नुमाइश है।

3.

बाजार	–	बाज़ारें
बैलगाड़ी	–	बैलगाड़ियाँ
लड़की	–	लड़कियाँ
खिलौना	–	खिलौने
औरत	–	औरतें
मूर्ति	–	मूर्तियाँ

पाठ–16

मीठी बोली

मौखिक (Oral)

(क) टूटे नाते।

(ख) मीठी बोली।

(ग) पेंचीदे।

लिखित (Written)

1. रगड़ों, झगड़ों का कड़वापन खोने वाली।
जी में लगी हुई काई को धोने वाली।
सदा जोड़ देने वाली जो टूटा नाता।
मीठी बोली प्यार बीज का बोने वाली।।
काँटों में भी सुंदर फूल खिलाने वाली।
रखने वाली कितने ही मुखड़ों की लाली।
निपट बना देने वाली है बिगड़ी बातें।
होती मीठी बोली की करतूत निराली।।

2. **(क)** मोम ।
   (ख) मीठी बोली।
   (ग) निराली।
   (घ) अनूठी सुगंध।
3. **(क)** मीठी बोली से सारे प्राणी बस में हो जाते हैं। सारे झगड़े खत्म हो जाते हैं। बिगड़ी बातें बन जाती हैं और मन का मैल धुल जाता है। इसलिए हमें मीठी बोली बोलनी चाहिए।
   (ख) मीठी बोली प्यार का बीज बोकर टूटे नाते जोड़ देती है।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** प्राणी – मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।
   (ख) पत्थर – यह पत्थर बहुत बड़ा है।
   (ग) बीज– बीज से ही पौधा बनता है।
   (घ) फूल – मुझे गुलाब का फूल बहुत पसंद है।
   (ङ) सुगंध – फूलों की सुगंध चारों ओर फैली हुई है।
2. **(क)** बोली – मीठी, कड़वी
   (ख) फूल – विकसित, लाल
   (ग) आँखें – बड़ी काली
   (घ) हवा – शुद्ध, तेज
3. आँखों के तारे, झगड़ों का कड़वापन
   मुखड़े की लाली, बोली की करतूत
   दिल के मसले, ताले की चाबी

क्रियाकलाप (Activity)

* छात्र स्वयं करें।

पाठ–17

हार की जीत

मौखिक (Oral)

1. बाबा भारती का घोड़ा।
2. सुल्तान को देखने।
3. कहीं खड़गसिंह घोड़े को चुरा न ले।
4. खड्गसिंह।

लिखित (Written)

1. **(क)** घृणा **(ख)** अधीर
   (ग) कराह **(घ)** आश्चर्य
2. **(क)** ✓ **(ख)** × **(ग)** ✓ **(घ)** ✓
3. **(क)** बाबा भारती गाँव के बाहर एक मन्दिर में रहते थे।
   (ख) खड़गसिंह एक डाकू था।
   (ग) घोड़े की चाल देखकर खड़गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया।
4. **(क)** बाबा भारती अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते थे।
   (ख) बाबा भारती को डाकू खड़गसिंह का डर लगा रहता था क्योंकि वह बाबा भारती को घोड़ा ज्यादा दिन तक न रख पाने की धमकी दे चुका था।
   (ग) अपाहिज व्यक्ति के द्वारा अपने घोड़े को भगाकर ले जाने के कारण उनके मुख से भय और विस्मय की चीख निकल गई।

व्याकरण (Grammar)

1. **(क)** ऐसी उन्हें भ्रांति हो गयी थी कि वह सुल्तान के बिना रह नहीं सकेंगें।
   (ख) सुल्तान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची।
   (ग) बाबा भारती इस भय को स्वप्न की तरह समझने लगे।
   (घ) बाबा भारती ने देखा कि एक अपाहिज वृक्ष की छाया में कराह रहा था।
2. **(क)** प्रसन्न **(ख)** पवित्र
   (ग) गरीब **(घ)** निराश
3. अपर्ण – अर्पण उपस्थीत – उपस्थित
   पर्योजन – प्रयोजन आश्चरय – आश्चर्य
   विसमय – विस्मय परसन्न – प्रसन्न

आदर्श प्रश्न–पत्र–1

उत्तरमाला

1. **(क)** व्यर्थ
   (ख) चौथी
   (ग) निपुण
   (घ) इंजन
2. **(क)** (ब) लक्ष्मण
   (ख) (स) सन् 1942 में
   (ग) (स) बंटी
3. **(क)** × **(ख)** × **(ग)** × **(घ)** ×
4. **(क)** बरगद की टहनियों से निकलने वाले दूध को लेटेक्स कहते हैं।

(ख) 108 फुट ऊँची।

(ग) 14 नवम्बर, 1889 (इलाहाबाद)।

(घ) बच्चे सबको सदा सुख देने के लिए अच्छा इंसान बनना चाहते हैं।

(ङ) व्यापारी दु:खी इसलिए था क्योंकि उसका कीमती सामान चोरी हो गया था।

5. (क) बीरबल ने कहा कि इन्हें साधारण छड़ियाँ मत समझना। ये जादू की छड़ियाँ हैं। जिसने भी चोरी की है उसकी छड़ी की लम्बाई रात में 2 इंच बढ़ जाएगी।

(ख) बरगद की विशेषताएँ निम्नवत् हैं–

1. बरगद के पेड़ पर देवी-देवता निवास करते हैं।
2. इस वृक्ष को हिन्दू धर्म में बहुत पवित्र माना जाता है।
3. यह स्वास्थ्य के लिए अति लाभदायक वृक्ष है।
4. इसकी छाल, पत्ते व टहनियाँ हमारी औषधियों के काम आते हैं।

(ग) प्रेरणा ने शिमला में दो-दिन में बहुत-सी चीजें देखीं; जैसे–
लक्कड़ बाजार, लोअर शिमला, अपर शिमला, मॉल रोड और रिज आदि।

(घ) पटाखों से निकलने वाली रासायनिक गैसें व धुएँ के कारण ओजोन परत में पड़े छेद और भी बड़े हो जाएँगे और सूर्य की पराबैंगनी किरणें सबको हानि पहुँचाएँगी।

(ङ) नागार्जुन ने दोनों युवकों को एक-एक पदार्थ दिया और उसे पहचानकर अपनी इच्छानुसार एक रसायन बनाने को कहा। उन्होंने यह भी कहा कि घर जाने से पहले उनको पूरे राजमार्ग को पार करना है।

6. नुमाइश – प्रदर्शनी अनूठी – विलक्षण
परख – जाँच सम्पन्न – अमीर

7. ● आज हमारे स्कूल में सद्भावना दिवस मनाया जायेगा।
● यह रेलगाड़ी पटना तक जायेगी।
● आज का मौसम सुहावना है।
● मुझे अपने देश पर गर्व है।

8. पत्ता – पत्ते नदी – नदियों
आँख – आँखें हथेली – हथेलियाँ

9.

पृथ्वी	–	धरा	भूमि
जंगल	–	वन	कानन
आकाश	–	व्योम	गगन
घर	–	गृह	आलय

10. स्वतंत्रता-दिवस

1. 15 अगस्त, 1947 को हमारा देश ब्रिटिश शासन से पूरी तरह आजाद हुआ था।
2. आजादी मिलने के बाद हर वर्ष हम इस दिन को स्वतंत्रता-दिवस के रूप में मनाते हैं।
3. इस दिन सभी सरकारी कार्यालय कार्य के उद्देश्य से बंद रहते हैं।
4. इस दिन सभी स्कूल व दफ्तरों में तिरंगा फहराया जाता है।
5. भारत को आजादी दिलाने के लिए कई स्वतंत्रता-सेनानियों को जान गँवानी पड़ी थी।
6. इस दिन से एक दिन पहले राष्ट्रपति देश के समक्ष अपना संबोधन भाषण प्रस्तुत करते हैं।
7. स्वतंत्रता-दिवस को हर वर्ष देश के प्रधानमंत्री लाल-किले पर तिरंगा फहराते हैं।
8. इस दिन को हम सभी भारतवासी बहुत ही उत्साह व गौरव से मनाते हैं।
9. इस दिन उन सभी महापुरुषों और शहीदों को श्रद्धांजलि दी जाती है जिन्होंने स्वतंत्रता हेतु प्रयत्न किये थे।
10. इस दिन स्कूलों में मिठाइयाँ बाँटकर खुशियाँ मनाई जाती हैं।

●●

हिन्दी 5

पाठ–1

पुष्प की अभिलाषा (कविता)

मौखिक

(क) सुरबाला के

(ख) सम्राटों

(ग) जब उसे देवताओं पर चढ़ाया जाता है।

(घ) बहादुर सैनिक

लिखित

1. इन पंक्तियों में कवि कहता है कि फूल माली से कह रहा है कि वह उसे तोड़ कर उस रास्ते पर फेंक दे, जिस रास्ते पर अनेक वीर चलते हैं और मातृभूमि पर अपनी जान न्यौछावर करते हैं।

2. चाह नहीं सम्राटों के शव पर,
हे हरि, डाला जाऊँ।
चाह नहीं देवों के सिर पर,
चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ।

3. **(क)** फूल प्रेमी की माला में नहीं गुँथना चाहता क्योंकि वह किसी प्रेमिका को ललचाने की बजाय वीर सैनिकों को श्रद्धांजलि देना चाहता है।

(ख) फूल को सम्राटों के शव पर या देवों के सिर पर चढ़ाए जाने की चाहत नहीं है।

(ग) फूल वनमाली से कहता है कि वह उसे तोड़ कर उस पथ पर फेंक दे जहाँ मातृभूमि पर अपनी जान न्यौछावर करने के लिए बहादुर सैनिक जाते हैं।

(घ) इस कविता के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि हमारे वीर जवान, जो मातृभूमि के लिए अपनी जान तक न्यौछावर करते हैं, सबसे महान हैं। हम सबको उन जवान वीरों का सम्मान करना चाहिए।

व्याकरण

1. **(क)** पुष्प – कमल हमारा राष्ट्रीय पुष्प है।

(ख) मातृभूमि – हमें अपनी मातृभूमि की रक्षा करनी है।

(ग) सम्राट – अशोक भारत के प्रसिद्ध सम्राट थे।

(घ) पथ – हमें सदा सच्चाई के पथ पर चलना चाहिए।

(ङ) वीर – हमारे वीर सैनिक बहुत महान हैं।

2. **(क)** पुष्प – फूल, कुसुम

(ख) सम्राट – राजा, बादशाह

(ग) देव – देवता, सुर

(घ) अभिलाषा – चाह, इच्छा

(ङ) गहना – जेवर, आभूषण

3. **(क)** गहना = गहनों

(ख) शव = शवों

(ग) वीर = वीरों

(घ) देव = देवों

(ङ) पुष्प = पुष्पों

4. **(क)** गहने **(ख)** फुटबाल

(ग) माला **(घ)** प्रार्थना

(ङ) पत्र

पाठ–2

छोटी बहन

मौखिक

(क) स्कूल

(ख) क्योंकि अंदर गर्मी बहुत थी।

(ग) घर से बकरी गायब थी। सबको लगा कि रात को भेड़िया आया होगा। इसलिए सुबह शोर मचा हुआ था।

(घ) शिब्बू पहलवान

लिखित

1. **(क)** डग **(ख)** खेत

(ग) बकरी **(घ)** पैर

2. **(क)** **(ii)** खेत **(ख)** **(iii)** गाय

(ग) **(iii)** सहेलियाँ **(घ)** **(i)** भेड़िया

3. **(क)** फर्रुखाबाद रेलवे स्टेशन के पास बने क्वार्ट्स में।

(ख) क्योंकि गाय ने दूध देना बंद कर दिया था।

(ग) क्योंकि उन्हें लगता था कि गुड़िया बहुत कमजोर है।

(घ) गुड़िया के पहलवान भाई को देखकर।

4. **(क)** गुड़िया अक्सर बीमार रहती थी। वह बहुत कमजोर थी, पर उसे दूध पीना पसंद नहीं था। इसलिए पहलवान उसे जबरदस्ती दूध पिलाते थे।

(ख) पहलवान रात को उठे तो उन्होंने देखा कि घर में उनके माता-पिता यहाँ तक कि खुद गुड़िया भी चैन से सो रही थी। किसी को कोई चिन्ता नहीं थी।

(ग) गुड़िया की सुरक्षा के लिए पहलवान चिंतित थे कि सोते हुए उसे भेड़िया न उठा ले जाए। इसलिए उन्होंने बकरी के गले से रस्सी खोल कर गुड़िया के पैर में चारपाई से बाँध दी।

व्याकरण

1. **(क)** बाग – हमारे गाँव में आम के बहुत बाग हैं।
(ख) पशु – गाय एक दुधारू पशु है।
(ग) तख्ती – तख्ती पर स्याही और कलम से लिखते हैं।
(घ) चिंता – हमें चिंता नहीं करनी चाहिए।
(ङ) चारपाई – गुड़िया चारपाई पर सोयी हुई है।

2. **(क)** ह ल – हाल हिला हौले हिल
(ख) ख ल – खेल खुला खोल खिल
(ग) प र – पार परी पीर पोर
(घ) क स – किस कोस कसा किसी

3. **(क)** गाड़ीवान = गाड़ी + वान
(ख) पहरेदार = पहरे + दार
(ग) घरवाला = घर + वाला
(घ) कलाकार = कला + कार
(ङ) मददगार = मदद + गार

पाठ–3

कुछ जरूरी बातें

मौखिक

(क) देर तक सोने से विद्या नहीं आती।
(ख) जागने के बाद माता-पिता तथा घर के अन्य जनों को प्रणाम करना चाहिए।
(ग) घर साफ रखने से घर में लक्ष्मी आती है।
(घ) ईश्वर की बनाई हुई प्रत्येक वस्तु से प्रेम करने से।

लिखित

1. **(क)** शरीर **(ख)** संकल्प
(ग) भलाई **(घ)** सहायता **(ङ)** बल

2. **(क)** (✗) **(ख)** (✓)
(ग) (✓) **(ग)** (✗) **(ङ)** (✗)

3. **(क)** माता जी, बहन तथा नौकरों की।
(ख) दूसरों के पास किसी चीज को देखकर वैसी ही चीज प्राप्त करने की जिद नहीं करनी चाहिए।
(ग) जानवर के समान।
(घ) साथियों के सुख में सुखी और दुख में दुखी होना चाहिए।

4. **(क)** प्रातः जल्दी उठने से शरीर में चुस्ती रहती है। मन प्रसन्न रहता है और काम करने में मन लगता है।
(ख) घर की सफाई रखने से घर में लक्ष्मी जी आती हैं। साफ घर का हमारे हृदय पर भी बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है, इसीलिए घर को खूब साफ रखना चाहिए।
(ग) नित्य स्नान करने से शरीर में स्फूर्ति आती है। सुस्ती दूर हो जाती है और काम करने में मन लगता है।

व्याकरण

1. **(क)** सूर्य = पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है।
(ख) दीपावली = दीपावली मेरा प्रिय त्योहार है।
(ग) सफाई = लोग प्रतिदिन घरों में सफाई करते हैं।
(घ) पाठशाला = हमें रोज पाठशाला जाना चाहिए।
(ङ) संतोष = जो हमारे पास है, उसी में संतोष करना चाहिए।

2. **(क)** प्रातः = सांय **(ख)** उदय = अस्त
(ग) चुस्ती = सुस्ती **(घ)** रोगी = निरोगी
(ङ) बुद्धू = समझदार **(च)** गुणवान = निर्गुण
(छ) संतोष = असंतोष **(ज)** प्यार = नफरत

3. **(क)** साफ = घर, कपड़े
(ख) अच्छा = इंसान, मन
(ग) सुंदर = स्त्री, चित्र
(घ) पाँच = दिन, साथी
(ङ) अनजान = व्यक्ति, रास्ता

4. **(क)** उदास **(ख)** सुस्ती
(ग) पाठशाला **(घ)** दुःखी

पाठ–4

मैरी कॉम

मौखिक

(क) ओंखोलर
(ख) सेंट जेवियर कैथोलिक स्कूल
(ग) डिंगको सिंह की सफलता ने
(घ) अनब्रेकेबल एन आटोबायोग्राफी

लिखित

1. **(क)** आर्थिक **(ख)** एथलीट
(ग) दिल्ली **(घ)** पद्म भूषण

2. **(क)** **(iii)** एथलैटिक्स **(ख)** **(ii)** डिंगको सिंह
(ग) **(iii)** तीन **(घ)** **(ii)** परिवार को

3. **(क)** मैंगते चुन्गनेजंग मेरी कॉम।
(ख) 12 मार्च 1983 को कन्गथेइ, मणिपुर में।
(ग) 2001 में नेशनल वूमेन बॉक्सिंग चैम्पियनशिप।
(घ) क्योंकि उनके परिवार को उनका बॉक्सिंग खेलना पसंद नहीं था।

4. **(क)** मेरी कॉम का जन्म 12 मार्च 1983 को कन्गथेइ, मणिपुर में हुआ। इनके पिताजी गरीब किसान थे। यह चार भाई बहनों में सबसे बड़ी थी, इसीलिए माता-पिता की मदद के लिए उनके साथ काम करती थी साथ ही अपने छोटे भाई-बहनों की देखभाल भी करती थी।
(ख) मैरी कॉम ने छठी तक की पढ़ाई लोकटक क्रिश्चियन मॉडल हाईस्कूल से की तथा आठवीं तक की पढ़ाई सेंट जेवियर कैथोलिक स्कूल से की। नवमी तथा दशमी के लिए वह आदिम जाति हाई स्कूल गई परन्तु उत्तीर्ण न होने पर उन्होंने स्कूल की पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी। बाद में एनआईओएस से उन्होंने परीक्षा दी। उन्होंने अपना ग्रेजुएशन चुराचंदपुर कॉलेज इंफाल से किया।
(ग) मैरी कॉम एशियन महिला मुक्केबाजी प्रतियोगिता में 5 स्वर्ण और एक रजत पदक, एशियाई खेलों में दो रजत और एक स्वर्ण पदक, 2015 के लंदन ओलंपिक में एक कांस्य पदक प्राप्त कर चुकी हैं। वह 5 बार एआईबीए में स्वर्ण पदक जीत चुकी हैं। वे एकमात्र महिला मुक्केबाज हैं जिन्होंने 6 विश्व प्रतियेगिताओं में कोई-न-कोई पदक जीता है।
(घ) मैरी कॉम को अनेक पुरस्कार और सम्मान मिल चुके हैं। 2003 में भारत सरकार ने उन्हें अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया। 2006 में पद्म श्री, 2009 में राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार और 2013 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

5. **(क)** कन्गथेइ जन्मस्थान
(ख) साई स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया
(ग) लंदन ओलम्पिक 2012
(घ) अर्जुन पुरस्कार 2003
(ङ) पद्म श्री 2006

व्याकरण

1. **(क)** खिलाड़ी – सचिन तेंदुलकर क्रिकेट के विश्व प्रसिद्ध खिलाड़ी हैं।
(ख) किसान – किसान हल चला रहा है।
(ग) लक्ष्य – हमें अपने जीवन का कोई न कोई लक्ष्य जरूर बनाना चाहिए।
(घ) एकमात्र – राम अपने परिवार का एकमात्र सहारा है।
(ङ) अभ्यास – किसी भी काम में पारंगत होने के लिए पर्याप्त अभ्यास करना पड़ता है।

2. **(क)** अप – अपमान, अपशब्द
(ख) अन – अनपढ़, अनचाहा
(ग) प्र – प्रकोप, प्रबल
(घ) खुश – खुशनसीब, खुशकिस्मत
(ङ) वि – विफल, विसंगति

3. **(क)** क्स = ओलम्पिक्स, अक्स
(ख) घ्न = विघ्न, शत्रुघ्न
(ग) थ्य = पथ्य, मिथ्या
(घ) व्य = व्यापार, व्यय
(ङ) स्व = स्वाति, स्वदेश

4. **(क)** राम अपने प्रथम आने की खुशी में फूला नहीं समा रहा।
(ख) घर वापिस आकर मेरी जान में जान आई।
(ग) पुलिस को देखते ही चोर नौ-दो ग्यारह हो गया।
(घ) इतना बड़ा बंगला देखकर मोहन ने दाँतों तले उँगली दबा ली।
(ङ) रोहित अपने माता-पिता की आँखों का तारा है।

पाठ–5

पागल हाथी

मौखिक

(क) राजा साहब का प्रिय हाथी
(ख) गुस्से में
(ग) मोती के डर से

(घ) महावत का बेटा

(ङ) मुरली

लिखित

1. **(क)** गरम **(ख)** साथियों

(ग) चट्टान **(घ)** इनाम

(ङ) मस्तक

2. **(क)** ✓ **(ख)** × **(ग)** × **(घ)** × **(ङ)** ✓

3. **(क)** महावत के।

(ख) अपनी लोहे को जंजीर तोड़ दी और जंगल की ओर भाग गया।

(ग) क्योंकि उसके गलें में रस्सी और पाँव में जंजीर थी।

(घ) उनकी गरीबी के कारण उन पर दया करके।

4. **(क)** मोती वैसे तो समझदार था पर कभी-कभी उसका मिजाज गरम हो जाता था। एक बार गुस्से में अपने महावत को मार डाला। इसीलिए उसकी पदवी छीन ली गई थी।

(ख) राजा साहब मोती से डरकर छोटी-सी झोंपड़ी में घुस गए थे। परंतु मोती ने उस झोंपड़ी को पैरों से रौंदकर चूर-चूर कर दिया। जान बचाने के लिए राजा साहब अपनी जान पर खेलकर दीवार पर चढ़ गए और दूसरी ओर कूद कर भाग निकले।

(ग) मोती क्रोध में पागल हो चुका था। जब उसने राजा साहब की जान लेनी चाही, तो क्रोध में राजा साहब ने ढिंढोरा पिटवाया कि जो आदमी मोती को जिंदा पकड़ कर लाएगा, उसे ₹ 1000 इनाम दिये जाएँगे।

(घ) मोती को मुरली महल में वापस लाया। जब मुरली ने इनाम के बारे में सुना, तो वह जंगल में मोती को पकड़ने के लिए गया। मोती ने उसको पहचान लिया था। मोती ने उसे अपनी सूँड से उठाकर अपने मस्तक पर बैठा लिया और उसके साथ राजमहल की ओर चल दिया।

व्याकरण

1. **(क)** मिजाज = रोहन गरम मिजाज का लड़का है।

(ख) जंजीर = हाथी के पाँव में जंजीर बँधी थी।

(ग) इनाम = सोहन ने पाँच सौ रुपये का इनाम जीता।

(घ) झोंपड़ी = साधु उस झोंपड़ी में रहता है।

(ङ) पेड़ = पेड़ हमें छाया प्रदान करते हैं।

2. **(क)** हाथी = गज, कुंजर

(ख) राजा = नृप, भूपति

(ग) नदी = सरिता, तटिनी

(घ) पेड़ = वृक्ष, तरुवर

(च) घोड़ा = अश्व, तुरंग

3. व्यक्तिवाचक संज्ञा = मोती, मुरली।

जातिवाचक संज्ञा = राजा, हाथी, महावत, नदी, जंगल, जंजीर, महल, घोड़ा, पेड़, पिता, बेटा।

भाववाचक संज्ञा = क्रोध, दुख, डर, लालच, दया, पागलपन, हिम्मत, खुशी।

4. **(क)** मिजाज गरम होना – गुस्से में होना।

आज राम का मिजाज गरम है।

(ख) मुँह फेर लेना – साथ न देना।

बुरे दिनों में अच्छे दोस्त भी मुँह फेर लेते हैं।

(ग) जान पर खेलना – साहसिक कार्य करना।

हम अपनी जान पर खेलकर भी अपने देश की रक्षा करनी चाहिए।

(घ) कमर कसना – बहुत परिश्रम करना।

राम ने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कमर कस ली है।

(ङ) नाक कटवाना – बेइज्जती करवाना।

सोहन ने कक्षा में फेल होकर अपने माता-पिता की नाक कटवा दी।

पाठ–6

वीर तुम बढ़े चलो

मौखिक

(क) ध्वज

(ख) सिंह की दहाड़ से

(ग) सूर्य और चन्द्रमा की तरह

लिखित

1. सामने पहाड़ हो, सिंह की दहाड़ हो
तुम निडर, डरो नहीं, तुम निडर डटो वहीं
वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़ चलो
अन्न भूमि में भरा, वारि भूमि में भरा

यत्न कर निकाल लो, रत्न भर निकाल लो
वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो

2. **(क)** ✓ **(ख)** × **(ग)** × **(घ)** ✓

3. इन पंक्तियों में कवि कहता है कि हे वीर पुरुष! तुम्हें हमेशा आगे बढ़ते रहना चाहिए। चाहे प्रात:काल हो या रात हो। चाहे कोई तुम्हारा साथ दे या न दे। तुम्हें सूर्य और चन्द्रमा की भाँति निरंतर आगे बढ़ते रहना है। हे वीर और धैर्यवान पुरुष! तुम आगे बढ़ते चलो।

4. **(क)** ध्वज हमेशा ऊँचा रहना चाहिए।

(ख) सूर्य और चन्द्रमा से निरंतर आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा मिलती है।

(ग) मातृभूमि की रक्षा के लिए प्रण करना चाहिए।

(घ) वीरों को निडर होकर रणभूमि में डटे रहना चहिए।

व्याकरण

1. **(क)** वीर = सुमित एक वीर बालक है।

(ख) ध्वज = हमें राष्ट्रीय ध्वज का सम्मान करना चाहिए।

(ग) सिंह = सिंह बहुत शक्तिशाली जानवर है।

(घ) मातृभूमि = हमें मातृभूमि की रक्षा करनी चाहिए।

(ङ) अन्न = किसान देश के लिए अन्न उगाते हैं।

2. **(क)** बाल = बालक , लड़का

(ख) ध्वज = झंडा , पताका

(ग) पहाड़ = पर्वत , गिरि

(घ) सिंह = शेर , वनराज

(ङ) चन्द्रमा = चाँद, राशि

(च) रात = रात्रि , निशा

(छ) भूमि = धरती , धरा

(ज) सूर्य = रवि, आदित्य

(झ) पानी = वारि , नीर

3. **(क)** निडर

(ख) अमर

(ग) परिश्रमी

(घ) आज्ञाकारी

(ङ) कामचोर

4. ध्वजा- सजा, झुके - रुके, पहाड़ - दहाड़, रात - साथ

5. **(क)** हाथी = हथिनी

(ख) सिंह = सिंहनी

(ग) बाल = बाला

(घ) पिता = माता

(ङ) शेर = शेरनी

पाठ–7

भक्त प्रह्लाद

मौखिक

(क) कयाधु

(ख) ईश्वर

(ग) उसे मारने के लिए

(घ) भगवान विष्णु ने नृसिंह के रूप में

लिखित

1. **(क)** हिरण्याक्ष **(ख)** प्रह्लाद
(ग) केंचुए **(घ)** होलिका
(ङ) नृसिंह

2. **(क)** **(ii)** देवताओं से **(ख)** **(iii)** ब्रह्मा जी

(ग) **(i)** मस्तक पर बिठा लिया।

(घ) **(ii)** विष।

3. **(क)** भगवान ने वाराह का रूप धारण करके हिरण्याक्ष को मारा।

(ख) भगवान की भक्ति

(ग) पालतू कुत्ते के समान

(घ) फाल्गुन मास की पूर्णमासी के दिन।

4. **(क)** हिरण्यकशिपु ने ब्रहमा जी से वरदान प्राप्त किया था कि उनका बनाया हुआ कोई भी जीव, बाहर-भीतर, दिन में, रात में, पृथ्वी में, आकाश में, अस्त्र से, शस्त्र से उसे मार नहीं सकता।

(ख) होलिका को यह वरदान था कि वह अग्नि में बैठकर भी जल नहीं सकती। इसीलिए वह प्रह्लाद को अपनी गोदी में लेकर आग में बैठ गई जिससे कि प्रह्लाद जलकर मर जाए।

(ग) हिरण्यकशिपु जब खुद प्रह्लाद को मारने लगा, तो खंभे से भगवान नृसिंह के रूप में प्रकट हुए। उनका आधा शरीर मनुष्य का और आधा शेर का था। भगवान ने उसे पकड़कर शाम के समय, जब दिन खत्म होने

वाला और रात को शुरू होने वाली थी, सबके सामने देहली पर बैठाकर अपने नाखूनों से चीर डाला।

(घ) नृसिंह भगवान का आधा शरीर मनुष्य के समान था और आधा शेर के समान।

व्याकरण

1. **(क)** पृथ्वी – पृथ्वी को नीला ग्रह भी कहते हैं।

(ख) भयंकर – प्रह्लाद को भयंकर साँपों के बीच छोड़ दिया गया।

(ग) जंगली – जंगली जानवर खतरनाक होते हैं।

(घ) तपस्वी – तपस्वी तपस्या कर रहा है।

(ङ) आशीर्वाद – हमें बड़ों का आशीर्वाद लेना चाहिए।

2. **(क)** राजा = रंक **(च)** अँधेरा = उजाला

(ख) देवता = दानव **(छ)** विष = अमृत

(ग) वरदान = शाप **(ज)** नम्र = कठोर

(घ) प्यार = नफरत **(झ)** समाप्त = आरम्भ

(ङ) निर्दयी = दयावान

3.

	क्रिया	**काल**
(क)	डरता था	भूतकाल
(ख)	अच्छे लगते हैं	वर्तमान काल
(ग)	वध करूँगा	भविष्य काल
(घ)	थे	भूतकाल
(ङ)	रहते हैं	वर्तमान काल

4. **(क)** भक्त प्रह्लाद **(ङ)** सीधा केंचुआ

(ख) छोटा लड़का **(च)** जंगली शेर

(ग) भयंकर हाथी **(छ)** पालतु कुत्ता

(घ) दुष्ट हिरण्यकशिपु

पाठ–8

बुद्धि का सौदागर

मौखिक

(क) बुद्धि की

(ख) शहर में

(ग) किसी भी कार्य को करने से पहले विचार कर लेना चाहिए।

(घ) जब राजा को दवा में विष मिलाकर दिया गया था, तो उस दवा को पीने से पहले राजा विचार करने लगा। इससे वैद्य और मंत्री घबरा गए और अपना जुर्म स्वीकार कर लिया। राजा की जान बच गई।

लिखित

1. **(क)** **(ii)** शहर, **(ख)** **(iii)** मंत्री, **(ग)** **(ii)** एक पैसे

2. **(क)** हस्ताक्षर **(ख)** दासियाँ

(ग) माता-पिता **(घ)** पागल **(ङ)** धन कमाने

3. **(क)** ✓ **(ख)** ✓ **(ग)** × **(घ)** × **(ङ)** ✓

4. **(क)** निर्धन लड़के के माता-पिता नहीं थे। गाँव में उसके पास आजीविका का भी कोई साधन नहीं था। परंतु वह बुद्धिमान था। उसके दिमाग में अपनी बुद्धि से धन कमाने का विचार आया। इसलिए उसने शहर जाने की ठान ली।

(ख) सेठ का लड़का मूर्ख था। उसने जब बुद्धि की दुकान देखी, तो उसे कुछ समझ नहीं आया। परंतु उसने सोचा, "मेरे पिता मुझे हमेशा निर्बुद्धि और मूर्ख कहते हैं, क्यों न मैं यहाँ से बुद्धि खरीद लूँ।" यह सोचकर उसने बुद्धि खरीद ली।

(ग) सेठ के बेटे ने बुद्धि के सौदागर बच्चे से करारनामा किया था कि वह उसकी दी हुई सीख का इस्तेमाल नहीं करेगा, इसलिए वह झगड़े वाले स्थान पर ही खड़ा रहा। करारनामे के अनुसार वह झगड़े वाली जगह से खिसक नहीं सकता था।

व्याकरण

5. **(क)** परवाह = बेपरवाही **(ख)** बुद्धिमान = मूर्ख

(ग) होश = बेहोश **(घ)** निर्बुद्धि = सुबुद्धि

(ङ) उपयोगी = बेकार **(च)** सस्ती = महंगी

6. शक्ति + मान = शक्तिमान समान + ता = समानता

मूर्ति + मान = मूर्तिमान अनपढ़ + ता = अनपढ़ता

चलाय + मान = चलायमान सफल + ता = सफलता

7. **(क)** बुद्धिमान **(ख)** दूरदर्शी

(ग) सर्वप्रिय **(घ)** निर्धन

(ङ) निष्कपट

पाठ–9

कम्प्यूटर

मौखिक

(क) सी॰ पी॰ यू, मॉनिटर, की-बोर्ड, माउस

(ख) मानव निर्मित प्रोग्राम के आधार पर

(ग) इंटरनेट पर घर बैठे शॉपिंग करना।

(घ) इससे हम अपना व्यापार देश-विदेश तक फैला सकते हैं।

लिखित

1. **(क)** कम्प्यूटर **(ख)** गणना
(ग) आज्ञाकारी **(घ)** एकत्र
(ङ) मस्तिष्क

2. **(क)** ✓ **(ख)** × **(ग)** × **(घ)** × **(ङ)** ✓

3. **(क)** कम्प्यूटर से रोगों का इलाज करना आसान और आधुनिक हो गया है।
(ख) संगणक
(ग) मानव निर्मित प्रोग्राम के आधार पर।
(घ) कम्प्यूटर की सूचनाओं को प्रिंट अथवा छाप सकते हैं।

4. **(क)** कंप्यूटर का सबसे मुख्य अंग सीपीयू होता है। इसे कंप्यूटर का मस्तिष्क भी कहते हैं। यह सभी आदेशों का पालन मानव निर्मित प्रोग्राम के अनुसार करता है। इसका दूसरा महत्त्वपूर्ण अंग है—मॉनिटर। यह देखने में टेलीविजन की तरह होता है। जो सूचनाएं माँगी जाती है, वह मॉनिटर में दिखाई देती हैं। इसके अन्य महत्त्वपूर्ण भाग हैं—कीबोर्ड और माउस। कीबोर्ड पर सूचनाएँ टाइप करते हैं और माउस का प्रयोग कंप्यूटर को विभिन्न आदेश देने में किया जाता है।

(ख) इंटरनेट से शिक्षा के क्षेत्र में बहुत लाभ हैं। इससे हम घर बैठे ही शिक्षा हासिल कर सकते हैं। ई-शिक्षा में बहुत सी वेबसाइट हैं जिन पर अगणित शिक्षण सामग्री और ज्ञानवर्धक साहित्य उपलब्ध है। इससे हम विश्व के लगभग हर देश और हर विषय के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

(ग) कंप्यूटर मनुष्य द्वारा बनाई गई एक मशीन है जिसमें हम तरह-तरह की सूचनाएँ और जानकारी एकत्रित करके रख सकते हैं। कंप्यूटर बहुत शीघ्रता से गणना भी कर सकता है तथा और भी कई काम कर सकता है।

(घ) कंप्यूटर वास्तव में मनुष्य द्वारा बनाई गई एक मशीन है। यह मनुष्य का एक आज्ञाकारी सेवक है। यह दिन रात अथक परिश्रम करता है परंतु यह मनुष्य की आज्ञा के बिना कुछ नहीं कर सकता इसीलिए यह एक आज्ञाकारी सेवक की तरह है।

व्याकरण

1. **(क)** आविष्कार = कम्प्यूटर वर्तमान युग का एक महत्त्वपूर्ण आविष्कार है।
(ख) इंटरनेट = इंटरनेट ने पूरे विश्व में क्रांति ला दी है।
(ग) शीघ्रता = हमें अपना काम शीघ्रता से करना चाहिए।
(घ) परिश्रम = परिश्रम ही सफलता की कुंजी है।
(ङ) अनिवार्य = शिक्षा सभी के लिए अनिवार्य है।

2.

(ं)	(ँ)
प्रयोग, शीघ्रता	महत्त्वपूर्ण, निर्मित, कार्य,
प्रोग्राम, तीव्र, प्रकार	बोर्ड, वर्षों, ज्ञानवर्धक,
प्रिंटर, क्रांति, सामग्री	अनिवार्य, विद्यार्थी

3. **(क)** प्रतिदिन **(ख)** प्रत्येक
(ग) परिश्रम **(घ)** पुस्तकालय
(ङ) विद्यालय **(च)** नीलकमल

4. **(क)** नम्रता **(ख)** स्वतंत्रता
(ग) लोकप्रियता **(घ)** समानता
(ङ) अज्ञानता

पाठ–10

पिता का पुत्र को पत्र

मौखिक

(क) चरित्र निर्माण और कर्तव्य का ज्ञान ही सच्ची शिक्षा है।

(ख) 25 मार्च 1909 को

(ग) अपनी आत्मा का, अपने आप का तथा ईश्वर का सच्चा ज्ञान प्राप्त करना।

(घ) डिप्टी गवर्नर ने

लिखित

1. **(क)** **(ii)** ब्रह्मचर्य-आश्रम संन्यास-आश्रम के समान है।
(ख) **(iii)** तीन
(ग) **(iii)** प्रिटोरिया जेल से
(घ) **(ii)** गांधी जी ने

2. **(क)** संस्कृत **(ख)** साबूदाना
(ग) सूर्योदय **(घ)** बराबर
(ङ) तनिक

3. **(क)** ✓ **(ख)** × **(ग)** ✓ **(घ)** ✓ **(ङ)** ×

4. **(क)** गांधी जी को जेल में प्रतिमाह एक पत्र लिखने का अधिकार मिला था। बारी-बारी से उन्हें मिस्टर रीच, मिस्टर पॉल और अपने पुत्र के ख्याल आए, परंतु उन्होंने पुत्र को ही पत्र लिखना पसंद किया क्योंकि पढ़ने के समय उन्हें अपने पुत्र का ही ध्यान बराबर रहता था।

(ख) गांधीजी ने अपने पुत्र को अक्षर ज्ञान में गणित और संस्कृत पर ध्यान देने को कहा था।

(ग) गांधी जी ने अपने पुत्र को आश्रम और परिवार को सँभालने की जिम्मेदारी दी थी। उन्हें आशा थी कि उनका पुत्र उस जिम्मेदारी को आनंद से निभा रहा होगा। उन्हें अपने पुत्र से यह भी आशा थी कि वह प्रतिदिन नियमपूर्वक प्रार्थना करता होगा और उसके दिए आदर्शों का पालन करता होगा।

(घ) गांधी जी ने अपने पत्र में अक्षर ज्ञान में गणित और संस्कृत पर पूरा ध्यान देने को कहा। उन्होंने कहा कि भविष्य में संस्कृत उसके लिए उपयोगी सिद्ध होगी। यह दोनों विषय बड़ी उम्र में सीखना कठिन है। उसे संगीत में भी रुचि रखनी चाहिए।

(ङ) गांधी जी के अनुसार 12 वर्ष की उम्र के बाद बच्चों को अपनी जिम्मेदारी और कर्तव्य का ज्ञान होना चाहिए। क्योंकि उन्हें लगता था कि आमोद-प्रमोद एक निश्चित आयु तक ही शोभा देते हैं।

व्याकरण

1.

योग्य = अयोग्य	ज्ञात = अज्ञात
जिम्मेदारी = लापरवाह	सुख = दुख
खुशी = गम	न्याय = अन्याय
शांति = अशांति	पसंद = नापसंद

2. अज्ञान, असत्य, अशांति, असंतोष

3. **(क)** माँ = माता , जननी , अम्बा

(ख) आयु = उम्र , जीवनकाल , वय

(ग) संसार = जगत , विश्व , दुनिया

(घ) उद्यान = बाग , बगीचा , वाटिका

(ङ) ईश्वर = प्रभु , परमात्मा , भगवान

पाठ–11

पेड़

मौखिक

(क) पेड़

(ख) पत्ते झड़ जाते हैं।

(ग) धरती का शृंगार वृक्ष हैं।

(घ) वृक्षों पर

लिखित

1. **(क)** जो मानव जीवन के हैं आधार
वे मानव से ही हुए लाचार।
काटे जा रहे निर्ममता से
धरती के हैं जो शृंगार।

(ख) हवाओं में लहराएगा कौन?
बरखा में कैसे नहाएगा कोई।
सावन के झूले फिर पड़ेंगे कहाँ?
परिंदों के घरों को बसाएगा कौन?

2. **(क)** ✓ **(ख)** × **(ग)** × **(घ)** ✓

3. **(क)** मौसम में बदलाव का पेड़ों पर बहुत प्रभाव पड़ता है। धूप में पेड़ चमकने लगते हैं, तो धुंध होते ही सारे ढक जाते हैं। बरसात में सभी पेड़ नहाते हैं तो पतझड़ आने पर सब के पत्ते झड़ जाते हैं।

(ख) अगर पेड़ नहीं होंगे तो मौसम पर इसका बुरा प्रभाव पड़ेगा। हर समय या तो कड़कती धूप खिली रहेगी या फिर धुंध ही रहा करेगी। हर समय पतझड़ होगा और बसंत ऋतु नहीं आएगी।

(ग) पेड़ लगाना बहुत जरूरी है क्योंकि पेड़ हमारे जीवन का आधार हैं। पेड़ों से ही हमारी सृष्टि चल रही है। पेड़ नहीं होंगे तो जीवन मुश्किल हो जाएगा।

व्याकरण

1. **(क)** धूप = आज कड़कती धूप है।

(ख) पतझड़ = पतझड़ में पत्ते झड़ जाते हैं।

(ग) शृंगार = महिलाओं को शृंगार करना बहुत पसंद है।

(घ) झूले = पेड़ों पर झूले पड़े हैं।

(ङ) पछताना = गलती करने पर पछताना पड़ता है।

2. **(क)** हवा = समीर, वायु
(ख) बरखा = बरसात, बारिश , वर्षा
(ग) मानव = इंसान, मनुष्य
(घ) धरती = भूमि, पृथ्वी
(ङ) पेड़ = तरु, वृक्ष

2. **(क)** उत्तर = जवाब , एक दिशा
(ख) कनक = गेहूँ, सोना
(ग) गुरु = अध्यापक, बड़ा
(घ) हल = एक यंत्र, समाधान

4. **(क)** झूला = झूले **(ख)** कंधा = कंधे
(ग) परिंदा = परिंदे **(घ)** घोड़ा = घोड़े
(ङ) गहना = गहने

पाठ–12

हमारे राष्ट्रीय प्रतीक

मौखिक

(क) उसके राष्ट्रीय प्रतीक
(ख) तिरंगा
(ग) सारनाथ में बने अशोक स्तम्भ से
(घ) 52 सैकिंड
(घ) मैनजीफेरा इंडिका

लिखित

1. **(क)** सारनाथ **(ख)** कलकत्ता
(ग) बल **(घ)** देवी **(ङ)** वट

2. **(क)** **(i)** 3:2 **(ख)** **(iii)** साँड़ तथा घोड़ा
(ग) **(i)** बंकिम चन्द्र **(घ)** **(ii)** कलगी
(ङ) **(iii)** ब्रिटिश सेना को

3.

(क)	26 जनवरी 1950	अशोक चिह्न
(ख)	अप्रैल 1973	बाघ
(ग)	22 जुलाई 1947	तिरंगा
(घ)	27 दिसंबर 1911	राष्ट्रीय गान का गायन
(ङ)	26 जनवरी 1963	मोर

4. **(क)** मुण्डकोपनिषद् से
(ख) 24 जनवरी 1950
(ग) ताकत, अपार शक्ति, फुर्तीलापन
(घ) 1896 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में
(ङ) धन तथा वैभव का

5. **(क)** तिरंगा झंडा हमारा राष्ट्रीय ध्वज है। इसमें तीन रंग हैं। केसरिया, सफेद तथा हरा। सफेद पट्टी के बीच में नीले रंग से अशोक चक्र बना है। इसमें 24 तालियाँ है। तिरंगे की लंबाई तथा चौड़ाई का अनुपात 3:2 है।
(ख) अशोक चक्र सम्राट अशोक द्वारा सारनाथ में बनाए गए स्तम्भ से लिया गया है। इसमें तीन शेर दिखाई देते हैं। उनके नीचे केंद्र में चक्र है। चक्र के दाहिनी ओर सांड तथा बायीं और घोड़ा है। इसके नीचे देवनागरी लिपि में 'सत्यमेव जयते' लिखा गया है।
(ग) भारतीय हॉकी टीम पहली बार 26 मई 1928 को ओलंपिक खेलों में शामिल हुई और विजय प्राप्त की। भारतीय हॉकी का स्वर्णिम युग 1928-56 तक था, जब भारतीय टीम ने लगातार छह ओलंपिक स्वर्ण पदक हासिल किए थे।

व्याकरण

1. **(क)** विशिष्ट – भारतीयों की दुनिया में एक विशिष्ट छवि है।
(ख) समृद्धि– ईश्वर ही सब सुख-समृद्धि का दाता है।
(ग) मुद्रा – रुपया भारत की आधिकारिक मुद्रा है।
(घ) पोशाक – उसकी पोशाक बहुत अच्छी है।
(ङ) विशालकाय – बरगद एक विशालकाय वृक्ष है।

2.

	भूतकाल	**वर्तमान काल**	**भविष्य काल**
(क)	चला	चलता है	चलेगा
(ख)	हुआ	होता है	होगा
(ग)	मिला	मिलता है	मिलेगा
(घ)	भागा	भागता है	भागेगा
(ङ)	खाया	खाता है	खाएगा

3. **(क)** ऐतिहासिक
(ख) राष्ट्रीय
(ग) कुम्हार
(घ) चिकित्सक
(ङ) ग्रामीण

पाठ–13

बीरबल की बुद्धिमानी

मौखिक

(क) फारस के राजा का दूत

(ख) शेर की

(ग) बीरबल ने

(घ) दो दिन के बाद इस काम को करने का निर्णय लिया।

(ङ) सेवक ने

लिखित

1. **(क)** **(ii)** मोम का **(ख)** **(i)** अकबर के लिए

(ग) **(ii)** फारस

2. **(क)** पिघल **(ख)** दो

(ग) और **(घ)** पहली **(ङ)** काम

3. **(क)** ✓ **(ख)** ✓ **(ग)** ✗ **(घ)** ✓ **(ङ)** ✓

4. **(क)** फारस के राजा ने अकबर से गुजारिश की थी कि वह उनके द्वारा दी गई शेर की मूर्ति को उपहारस्वरूप स्वीकार करें तथा पिंजरा उन्हें वापस भेज दें परंतु बिना तोड़े।

(ख) शेर का पुतला धातु का न होकर मोम का बना हुआ था। उस पर धातु की सिर्फ परत चढ़ाई हुई थी।

(ग) मोम के शेर के ऊपर धातु की परत चढ़ाई गई थी। जब बीरबल ने सुलगती हुई छड़ों को शेर के पुतले से स्पर्श करना प्रारंभ किया तो छड़ों की गर्मी से शेर पिघल गया।

(घ) अकबर ने प्रसन्न होकर बीरबल को बहुत सारे पुरस्कार दिए।

(ङ) बीरबल ने ध्यान पूर्वक निरीक्षण करने के पश्चात् निर्णय लिया कि वह पिंजरे को बिना तोड़े खाली कर सकता है। परंतु इसके लिए 3 से 2 दिन का समय चाहिए।

व्याकरण–

1. **(क)** शायद– शायद वह कल आएगा।

(ख) परेशानी – आपको क्या परेशानी है?

(ग) स्वीकार – मुझे आपका प्रस्ताव स्वीकार है।

(घ) निरीक्षण – हैडमास्टर ने कक्षा का निरीक्षण किया।

(ङ) मोम – पुतला मोम का बना हुआ था।

(च) आदेश – महाराज ने सेवक को आदेश दिया।

2.

सैवक = सेवक	धानपूरक = ध्यानपूर्वक
मूति = मूर्ति	पेर = पैर
पीजंड़ = पिंजड़ा	गुजारिस = गुजारिश
निरिक्षण = निरीक्षण	पहेलि = पहेली

3. **(क)** समय = वक्त , घड़ी

(ख) राजा = नृप , भूपति

(ग) शेर = सिंह , वनराज

(घ) दिन = दिवस , वार

(ङ) जल = पानी , नीर

(च) घर = गृह , सदन

4.

भट्ठी	=	भट्ठियाँ
मूर्ति	=	मूर्तियाँ
परेशानी	=	परेशानियाँ
पहेली	=	पहेलियाँ
पुतला	=	पुतले
छड़	=	छड़ें
पिंजरा	=	पिंजरे
सेवक	=	सेवकों
धातु	=	धातुओं
पगड़ी	=	पगड़ियाँ

पाठ–14

रँगा सियार

मौखिक–

(क) शिकार

(ख) कुत्तों से

(ग) जंगल में आए नीले जानवर के बारे में

(घ) किसी ने भी नहीं

(ङ) शेर ने

लिखित—

1. **(क)** रँगरेज **(ख)** नीले
(ग) जानवरों **(घ)** तकलीफ
(ङ) चालाकी

2. **(क)** **(ii)** बस्ती में **(ख)** **(i)** कुत्ते
(ग) **(ii)** रँगरेज के **(घ)** **(iii)** लोमड़ी को

3. **(क)** शिकार की तलाश में।
(ख) नीले रंग से भरी नाद में।
(ग) उसके नीले रंग के कारण।
(घ) उसका स्वागत किया।

4. **(क)** एक बार सियार शिकार की तलाश में बस्ती की तरफ निकल गया। वहाँ कुत्तों ने उसका पीछा करना शुरू कर दिया। कुत्तों से बचते हुए वह एक रँगरेज के घर में घुस गया, जहाँ वह नीले रंग की नाद में गिर गया और उसका रंग नीला हो गया।

(ख) सियार ने शेर से कहा कि उसे भगवान ने उस जंगल में उन सब पर शासन करने के लिए भेजा है। उस जंगल में अन्य सब जंगलों की अपेक्षा अधिक गड़बड़ रहती थी। इसलिए भगवान ने उसे वहाँ अच्छा राज्य स्थापित करने के लिए भेजा है।

(ग) सियार ने जंगल के जानवरों की सभा बुलाकर कहा कि उस जंगल में बहुत अत्याचार हो रहे हैं। उन अत्याचारों को देखकर भगवान के हृदय में बड़ी दया आई और उन्होंने उन सबकी सेवा के लिए उसे यहाँ भेजा है। वह सब के साथ न्याय करेगा। यह सुनकर सब जानवर बहुत प्रसन्न हुए।

(घ) एक बार रात में सब सो रहे थे। तभी किसी सियार ने आवाज लगाई। उसे सुनकर सिया राजा की आँख खुल गई और वह भी अपने भाई सियार की तरह आवाज लगाने लगा। शेर यह शोर सुनकर जाग गया और सियार का झूठ पकड़ा गया।

व्याकरण—

1. **(क)** रँगरेज — मेरे पिता जी रँगरेज हैं।
(ख) शिकार — शेर हिरन का शिकार करता है।
(ग) बलवान — समय बड़ा बलवान होता है।
(घ) दरबार — शेर का दरबार लगा था।
(ङ) तरकीब — उसे एक तरकीब सूझी।

2. **(क)** चालाक **(ख)** रंगा
(ग) नीला **(घ)** लम्बी
(ङ) कई

3. **(क)** शेर बोला — "आइये, महाबली! आपका स्वागत है।"
(ख) उसने कहा — "हाँ, हाँ! आप सही कह रहे हैं।"
(ग) क्या आप मुझे जानते हैं?
(घ) भाइयो! मैं सब ठीक कर दूँगा।
(ङ) शेर, लोमड़ी और बाकी जानवर डर गए थे।

पाठ–15

नीति के दोहे

मौखिक—

(क) तोड़ना नहीं चाहिए।
(ख चंदन के वृक्ष के साथ
(ग) हम ही सबसे बुरे हैं।
(घ) आज
(ङ) यात्री को छाया नहीं मिलती और फल भी बहुत दूर लगते हैं।

लिखित—

1. **(क)** पेड़ तथा सरोवर के।
(ख) क्योंकि गुरु ही गोविंद से मिलवाता है।
(ग) दूसरों का तथा अपना मन शान्त रहता है।
(घ) कभी भी दु:ख नहीं होता।

2. **(क)** काल्ह करे सो आज कर, आज करे सो अब्ब
पल में परलै होयगी, बहुरि करैगो कब्ब।।
(ख) रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुरै, जुरै गाँठ पड़ जाय।।
(ग) जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग।।
(घ) धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कछु होय।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय।।

3. **(क)** ✗ **(ख)** ✓ **(ग)** ✗
(घ) ✓ **(ङ)** ✗

व्याकरण—

1. **(क)** गाँठ = धागे में गाँठ पड़ गई है।
(ख) संपत्ति = उसके पास बहुत धन-संपत्ति है।
(ग) प्रकृति = प्रकृति प्रेम सबसे सुन्दर प्रेम है।
(घ) गुरु = अपने गुरु का आदर करो।
(ङ) वाणी = उसकी वाणी बहुत मधुर है।

2. **(क)** पेड़ = तरु, वृक्ष
(ख) भुजंग = सर्प , विषधर
(ग) गुरु = अध्यापक , शिक्षक
(घ) विष = जहर , हलाहल
(ङ) सरोवर = सर , जलाशय

3. **(क)** परोपकार = पर + उपकार
(ख) प्रसार = प्र + सार
(ग) उपयोग = उप + योग
(घ) निर्जीव = निर् + जीव
(ङ) खुशकिस्मत = खुश + किस्मत

4. **(क)** प्रेम का धागा तोड़ कर जोड़ने से गाँठ पड़ जाएगी।
(ख) क्या बच्चा सो रहा है?
(ग) अध्यापक बच्चों को पढ़ा रहा है।
(घ) तुमने ताजमहल अभी तक नहीं देखा होगा।
(ङ) सोहन बीमार नहीं है।

पाठ–16

बाल गंगाधर तिलक

मौखिक—

(क) क्योंकि उसने प्रश्नों को हल कर दिया था।
(ख) माता का नाम पार्वती बाई तथा पिता का नाम गंगाधर राव था।
(ग) बाल गंगाधर तिलक ने।
(घ) सत्य भामा बाई
(ङ) 1908 में

लिखित—

1. **(क)** एकाग्रचित् **(ख)** कुशाग्र
(ग) स्वतन्त्रता **(घ)** मांडले
(ङ) तीन

2.

(क) 1856	जन्म वर्ष
(ख) 1885	दक्षिणी शिक्षा समाज की स्थापना
(ग) 1907	कांग्रेस का विभाजन
(घ) 1908	मांडले जेल
(घ) 1920	देहांत

3. **(क)** बिना दहेज विवाह कर के।
(ख) केसरी और मराठा।
(ग) नरमपंथी रवैये के।
(घ) स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर रहेंगे।
(ङ) गीता रहस्य, ओरियन तथा आर्कटिक होम इन वेदाज

4. **(क)** तिलक का जन्म 23 जुलाई 1856 को महाराष्ट्र के कोंकण जिले में रत्नागिरी स्थान पर हुआ था।
(ख) तिलक शिक्षा को स्वतंत्रता का आधार मानते थे। राष्ट्रीय चेतना जागृत करने के लिए इन्होंने 'इंग्लिश स्कूल' तथा 'दक्षिणी' 'शिक्षा समाज' की स्थापना की। साथ ही साथ उन्होंने 'केसरी' और 'मराठा' नाम के समाचार-पत्र भी निकाले।
(ग) तिलक ने विद्यालय जाने से पूर्व ही बहुत से श्लोक याद कर लिए थे। गणित, इतिहास और संस्कृत उनके प्रिय विषय थे। शिक्षक भी इनकी प्रतिभा से बहुत प्रभावित थे। इससे पता चलता है कि तिलक कुशाग्र बुद्धि के बालक थे।
(घ) लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक तथा विपिन चंद्र पाल।
(ङ) तिलक ने भारतीय समाज में सुधार लाने के लिए बाल विवाह का विरोध किया तथा मजदूरों की दशा सुधारने पर जोर दिया।

व्याकरण ज्ञान—

1. **(क)** एकाग्रचित्त – सभी छात्र एकाग्रचित्त होकर पढ़ रहे थे।
(ख) कुशाग्र बुद्धि – मोहित कुशाग्र बुद्धि का बालक है।
(ग) विद्वान – उसके पिताजी संस्कृत के विद्वान हैं।
(घ) लोकप्रिय – वह एक लोकप्रिय खिलाड़ी है।
(ङ) आधुनिक – आधुनिक युग विज्ञान तथा तकनीकी का युग है।

2. अध्यापक = अध्याापिका बालक = बालिका
गायक = गायिका नायक = नायिका
लेखक = लेखिका शिक्षक = शिक्षिका

3. स्वतन्त्र = परतन्त्र आदर = अनादर
मौखिक = लिखित सार्वजनिक = निजी
जीवन = मृत्यु प्रारम्भ = अन्त
विद्वान = मूर्ख आसान = कठिन

4. **(क)** आसमान सिर पर उठना = उपद्रव करना
- मेरे भाई को गुस्सा आता है, तो वह आसमान सिर पर उठा लेता है।

(ख) जान हथेली पर रखना = जान की परवाह न करना
- सैनिक अपने देश की रक्षा के लिए जान हथेली पर रखते हैं।

(ग) जमीन-आसमान एक करना = सब उपाय कर डालना/ बहुत कोशिश करना
- चुनाव में सफलता पाने के लिए नेता जमीन/आसमान एक कर देते हैं।

(घ) आँखों का तारा = बहुत प्यारा
- आशीष अपने माता-पिता की आँखों का तारा है।

(ङ) दंग रह जाना = हैरान हो जाना
- घर में चोरी का समाचार सुन कर वह दंग रह गया।

पाठ–17

साप्ताहिक धमाका

मौखिक–

(क) एक अखबार
(ख) सनातन धर्म मंदिर
(ग) क्योंकि उनका भंडाफोड़ हो रहा था।
(घ) साप्ताहिक धमाका के बच्चों के बारे में चर्चा करने के लिए
(घ) उसी मोहल्ले के 4 बच्चे

लिखित–

1. **(क)** फुल स्केप **(ख)** तौल, घोटाला,
(ग) नमूने **(घ)** निर्णय **(ङ)** स्वर

2. **(क)** **(ii)** धनी राम ने **(ख)** **(iii)** शैतान बच्चों की
(ग) **(i)** 'धमाका' वालों को इनाम देने के लिए
(घ) **(ii)** पाँच-पाँच सौ रुपये
(ङ) **(ii)** अखबार बाँटने वालों को पकड़ने के लिए

3. **(क)** उनकी कम तोलने की कला में माहिर होने के लिए।
(ख) मानो किसी ने मिर्चों का पैकेट खोल हवा में उछाल दिया हो।
(ग) रेडियो धीमी बजाने की क्योंकि तेज आवाज से बच्चों की पढ़ाई में बाधा पड़ती है।
(घ) संपादक बच्चों का पता लगाने के लिए।
(ङ) क्योंकि बच्चों ने बायें हाथ से लिखने का अच्छा अभ्यास किया था।

4. **(क)** साप्ताहिक धमाका एक अखबार था जिसे मोहल्ले के चार बच्चे मिलकर लिख रहे थे। उनका मुख्य उद्देश्य मोहल्ले की समस्याओं को सुलझाना और लालची तथा भ्रष्टाचारों लोगों का पर्दाफाश करना था।
(ख) कुछ लोगों ने साप्ताहिक धमाका के संपादक बच्चों का पता लगाने के लिए उन्हें पुरस्कार देने की घोषणा की और एक सभा बुलाई। सभा में बच्चों को आगे आने के लिए कहा गया ताकि उन्हें पाँच-पाँच सौ रुपये का इनाम दिया जा सके। लेकिन कोई भी बालक मंच की ओर नहीं बढ़ा। इसलिए लोग मंच पर बैठे नेताओं की खिल्ली उड़ाने लगे।
(ग) जब साप्ताहिक धमाका के बच्चों का पता नहीं लगाया जा सका तो मोहल्ले के बड़े लोगों की एक मीटिंग बुलाई गई। कुछ लोग जहाँ इस बात को गलत ठहरा रहे थे वहीं प्रोफेसर माथुर ने उन बच्चों का पक्ष लिया और साप्ताहिक धमाका की बहुत तारीफ की फिर मीटिंग में बहुत हंगामा हुआ इसीलिए मीटिंग बिना निर्णय के ही खत्म हो गई।
(घ) कुछ लोग साप्ताहिक धमाका से नाराज थे क्योंकि साप्ताहिक धमाका मोहल्ले के भ्रष्टाचारी और गलत लोगों के काले कारनामों का भंडाफोड़ कर रहा था। इसलिए ऐसे लोग नाराज थे।

व्याकरण–

1. **(क)** सनसनीखेज – साप्ताहिक 'धमाका' में सनसनी खेज खबरें छपती थीं।
(ख) अपील – सरकार ने बाढ़ पीड़ितों की सहायता की जनता से अपील की।
(ग) उत्सुक – वह सब कुछ जानने के लिए उत्सुक रहता है।

(घ) मंदिर – मेरे घर के पास एक मंदिर है।

3. मुर्गी = मुर्गियाँ खबर = खबरें
घड़ी = घड़ियाँ बच्चा = बच्चे
शादी = शादियाँ मोहल्ला = मोहल्ले

3. क्रमांक, कालांक, दिव्यांग, प्रियांशु, प्राप्तांक

पाठ–18

बादलों की गोद से

मौखिक–

(क) वह सोच रही थी कि उसके भाग्य में क्या लिखा है।
(ख) सीप के अन्दर।
(ग) क्योंकि वह भविष्य के बारे में चिंतित होते हैं।
(घ) पलायनवादी व्यक्तियों की निराशावादी प्रकृति का।

लिखित–

1. **(क)** **(ii)** सीप के मुँह में जाकर।
(ख) **(ii)** अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'।
(ग) **(ii)** वर्षा की बूँद से।
(घ) **(i)** मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में

2. **(क)** ज्यों निकलकर बादलों की गोद से,
थी अभी *एक बूँद कुछ आगे बढ़ी*
सोचने फिर-फिर यही जी में लगी,
आह! क्यों घर छोड़कर मैं यों कढ़ी।

(ख) *लोग यों ही हैं झिझकते, सोचते*
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर।
किंतु घर को छोड़ना अक्सर उन्हें,
बूँद लौं कुछ और ही देता है कर।

3. **(क)** बूँद सोच रही थी कि उसके भाग्य में पता नहीं क्या लिखा है। वह बचेगी या धूल में मिल जाएगी। किसी अंगारे पर गिर जल जाएगी या कमल के फूल पर गिरेगी।

(ख) एक तेज हवा का झोंका उसे समुद्र की ओर ले गया। वहाँ वह एक सीप के मुँह में गिर गई।

(ग) सीप के मुँह में गिरने पर वह बूँद मोती बन गई।

(घ) लोग घर छोड़ते समय भविष्य को लेकर झिझकते है।

(ङ) इस कविता से यह संदेश मिलता है कि हमें पलायनवादी तथा निराशावादी नहीं होना चाहिए।

व्याकरण–

1. घर = बेघर
सुंदर = बदसूरत
भाग्य = दुर्भाग्य
खुला = बंद
हवा = पानी
आगे = पीछे

2. **(क)** बूँद = पानी की हर बूँद कीमती होती है।
(ख) गोद = बच्चा माँ की गोद में सो रहा है।
(ग) भाग्य = हम मेहनत से अपना भाग्य स्वयं लिख सकते हैं।
(घ) अंगारे = अँगीठी में अंगारे दहक रहे हैं।
(ङ) मोती = पानी की बूँद सीप में गिर कर मोती बन गई।

3. अशुद्ध = शुद्ध
सँदेश = संदेश
फुल = फूल
मोति = मोती
मुहँ = मुँह
बुंद = बूँद
सिप = सीप

4. **(क)** हवा = समीर , वायु
(ख) बादल = जलधर , मेघ
(ग) समुद्र = सागर , सिंधु
(घ) घर = गृह , सदन
(ङ) फूल = पुष्प , कुसुम

5. **(क)** भाग्य में क्या बदा
(ख) मिलूँगी धूल में
(ग) जलूँगी अंगारे पर
(घ) चूड़ूँगी कमल के फूल में

1 कविता - कोयल

मौखिक

(क) कोयल काले रंग की होती है।

(ख) कोयल हरे पत्तों में छिप कर बैठती है।

(ग) पेड़ नये पत्तों, फल और फलियों से लद जाते है।

(घ) लड़कों को मीठी बोली बोलने की प्रेरणा दी गई है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क)

(i) पेड़ वसंत ऋतु होने पर हरे हो जाते हैं।

(ii) पेड़ हरे-हरे पत्ते पाते हैं।

(iii) कोंपल और कलियों से पेड़ लद जाते हैं।

(iv) हरे होने पर पेड़ सुन्दर लगते हैं।

(ख) (i) (ग), (ii) (क), (iii) (घ), (iv) (क)।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) कोयल काली है।

(ख) जाड़ा कम होने पर सूजर गरमाता है।

(ग) पंचम स्वर में गाने वाली को कोयल कहते हैं।

(घ) हमें मीठी बोली बोलनी चाहिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) कोयल पेड़ पर हरे पत्तों में छिपकर बैठी है।

(ख) जाड़ा कम होने पर मौसम सुहावना होने लगता है।

(ग) अपनी मीठी बोली से कविता के आधार पर कोयल अपनी मधुर आवाज और सहजता के माध्यम से प्रकृति और जीवन को सुंदरता से भर देती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) कोयल कविता के माध्यम से कवि एक गहरा और सार्थक संदेश देना चाहता है। कोयल को प्रतीक बनाकर कवि हमें हमारी जड़ों, हमारी भाषा, संस्कृति और प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति जागरूक करने की कोशिश करता है। इसका मुख्य संदेश निम्न प्रकार है—

1. **प्रकृति का सम्मान और संरक्षण**—कोयल की आवाज प्रकृति की सुंदरता और उसकी अहमियत को दर्शाती है।
2. **सौंदर्य और आत्मिक शांति का स्रोत**—यह हमें सिखाती है कि हमें जीवन में सुंदरता और आत्मिक शांति की खोज करनी चाहिए।
3. **भाषा और संस्कृति का प्रचार-प्रसार**—कोयल की बोली अपनी पहचान और क्षेत्रीयता को प्रकट कर उसका प्रचार-प्रसार करना चाहती है।
4. **सरलता और मधुरता का महत्व**—कोयल हमें सिखाती है कि मधुर स्वभाव से ही समाज में शांति और सौहार्द का वातावरण बनता है।

अत: इस कविता के माध्यम से कवि हमें 'हमारी मिट्टी, भाषा, संस्कृति और प्रकृति से जुड़े रहने की प्रेरणा देती है।

(ख) 'जो पंचम स्वर में गाती है' से कवि का तात्पर्य कोयल की मधुर और उच्चतम स्वर में गाने की कला से है। पंचम स्वर, भारतीय संगीत में सबसे मधुर और प्रभावशाली स्वर माना जाता है। इस पंक्ति का गूढ़ अर्थ यह है कि कोयल की आवाज न केवल प्राकृतिक रूप से मधुर है, बल्कि यह संगीत के एक विशेष स्तर का प्रतीक है। पंचम स्वर भारतीय शास्त्रीय संगीत का ऐसा स्वर है जो रागों को संतुलित और पूर्ण बनाता है तथा गाने की कला यह संकेत देती है कि वह अपने गीतों के माध्यम से प्रेम, सौहार्द और आनंद का संदेश दे रही है।

(ग) कोयल वसंत ऋतु में मतवाली होकर गाती है। वसंत ऋतु को ''ऋतुओं का राजा'' कहा जाता है क्योंकि यह प्रकृति के सौंदर्य, मधुरता और उल्लास का प्रतीक है। इस ऋतु का विस्तार से वर्णन निम्नलिखित है—

1. **प्रकृति का सौंदर्य**—वसंत ऋतु में प्रकृति अपनी पूर्ण सुंदरता को प्राप्त करती है। वृक्षों पर नए पत्ते और फूल खिलते हैं। ऐसे समय में कोयल की मधुर आवाज इस प्राकृतिक सुंदरता में मधुरता भर देती है।
2. **मौसम का सुखद अनुभव**—इस समय वातावरण में एक आनंद और उल्लास का भाव होता है, जो कोयल के गीतों से और बढ़ जाता है।
3. **त्योहार और सांस्कृतिक महत्व**—वसंत ऋतु में होली और वसंत पंचमी जैसे त्योहारों पर संगीत व नृत्य का विशेष महत्व होता है।
4. **कोयल का गायन, प्रेम और उमंग का प्रतीक**—कोयल वसंत ऋतु में पंचम स्वर में गाती है तथा प्राचीन साहित्य में कोयल का गायन प्रेमी और प्रेमिका के बीच संवाद का माध्यम माना जाता है।

   अत: इस ऋतु का आनंद कोयल के गान के बिना अधूरा है। वसंत ऋतु में गाना इस ऋतु की विशेषताओं को और महत्वपूर्ण बनाता है।

(घ) मीठी बोली बोलने के कई लाभ होते हैं, जो न केवल व्यक्तिगत स्तर पर, बल्कि सामाजिक और पेशेवर जीवन में सकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

इसके मुख्य लाभ निम्नलिखित हैं—

1. अच्छे संबंध बनते हैं।
2. सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
3. तनाव कम होता है एवं झगड़े और विवाद कम होते हैं।
4. सामाजिक स्वीकार्यता एवं आत्मविश्वास बढ़ता है।
5. प्रेरणा का स्रोत एवं सकारात्मक माहौल बनता है।
6. व्यवसाय और पेशेवर जीवन में लाभ होता है।
7. आध्यात्मिक व नैतिक लाभ होता है।

अत: मीठी बोली न केवल दूसरों को खुश करती है, बल्कि यह बोलने वाले को भी मानसिक और भावनात्मक संतोष प्रदान करती है।

विविध प्रश्न

1. (क) × (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) × (ङ) ✓

2. काली-काली कू-कू करती,
जो है डाली-डाली फिरती।
कुछ अपनी ही धुन में ऐंठी,
छिपी हरे पत्तों में बैठी।

व्याकरण बोध

(i) (क) पंचम — प् + अं + च् + अ + म् + अ
(ख) सूरज— स् + ऊ + र् + अ + ज् + अ
(ग) गरमाता— ग् + अ + र् + अ + म् + आ + त् + आ
(घ) निराला—न् + इ + र् + आ + ल् + आ
(ङ) फलियाँ— फ् + अ + ल् + इ + य् + आँ
(च) कोंपल — क् + ओ + अँ + प् + अ + ल् + अ
(छ) मनोहर— म् + अ + न् + ओ + ह् + अ + र् + अ
(ज) प्यारे — प् + आ + र् + ए
(झ) महकने— म् + अ + ह् + अ + क् + अ + न् + ए
(ञ) मुँह— म् + उँ + ह् + अ

(ii) (क) सूरज —रवि, दिवाकर।
(ख) कोयल — कोकिला, श्यामा।
(ग) पेड़ — तरु, पादप।
(घ) हवा — वायु, समीर।
(ङ) फूल — सुमन, कुसुम।
(च) नया — नवीन, नव।

(iii) (क) डाली — डालियाँ।
(ख) लड़का — लड़के।
(ग) पेड़ — पेड़ों।
(घ) कली — कलियाँ।
(ङ) पत्ता — पत्ते।
(च) फली — फलियाँ।
(छ) फूल — फूलों।
(ज) बोली — बोलियाँ।

(iv)

(क) डाल
- शाख—तोता हरी डाल पर बैठा है।
- डालना (क्रिया)—बेटी सुई में धागा डाल दो।

(ख) फूल
- फूलना (क्रिया)—चार घंटे में चने फूल जाएँगे।
- पुष्प — हर डाल पर फूल आ गए हैं।

(ग) गाना
- गीत — मोहन ने बड़ा सुंदर गाना गाया।
- गाना (क्रिया)—यह सब गाना-बजाना बंद करो।

(घ) धुन
- गीत की लय — इस गीत की धुन सुनकर मजा आ गया।
- मस्ती — मुझे काम की धुन में किसी की बात नहीं सुनाई देती।

2 बूढ़ी काकी

मौखिक

(क) बूढ़ी काकी के भतीजे का नाम पं. बुद्धिराम था।

(ख) पूरे परिवार में पं. बुद्धिराम की छोटी लड़की लाड़ली को बूढ़ी काकी से अनुराग था।

(ग) बुद्धिराम के बड़े लड़के मुखराम का तिलक आया था।

(घ) बूढ़ी काकी लिए पूड़ियाँ लाड़ली लाई।

(ङ) बूढ़ी काकी के हृदय से रूपा के लिए सच्ची सदिच्छाएँ निकल रही थीं।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क)

(i) बूढ़ी काकी अपनी कोठारी में शोकमय विचारक के समान बैठी हुई थीं।

(ii) बूढ़ी काकी को मसालों व पकवानों की सुगंध बेचैन कर रही थी।

(iii) कलेजे में हूक उठना—तीव्र पीड़ा महसूस करना।

(iv) आपे से बाहर होना- बहुत क्रोधित होना।

(ख) (i) (ख), (ii) (ग), (iii) (घ) ।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) बूढ़ी काकी अपने भतीजे बुद्धिराम के यहाँ रहती थीं।

(ख) बूढ़ी काकी ने अपने भतीजे के नाम पूरी सम्पत्ति इसलिए लिख दी थी क्योंकि उनका और कोई न था।

(ग) रूपा के घर में उसके बड़े बेटे मुखराम का तिलक था, इसलिए उत्सव था।

(घ) पं. बुद्धिराम के बड़े लड़के का नाम मुखराम था।

(ङ) बूढ़ी काकी के मन को ललचाने वाले व्यंजन तरकारी, दही, पूड़ियाँ, कचौड़ियाँ थीं।

(च) इस कहानी का नाम ''बूढ़ी काकी'' तथा इसके लेखक ''मुंशी प्रेमचन्द'' हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) पं. बुद्धिराम और उनकी पत्नी का बूढ़ी काकी के प्रति बहुत ही उपेक्षापूर्ण और कठोर व्यवहार था।

(ख) लेखक ने बुढ़ापे को बचपन का पुनरागमन इसलिए कहा है, क्योंकि जैसे बच्चे अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए दूसरों पर निर्भर रहते हैं, वैसे ही बुजुर्ग भी अन्तिम पड़ाव पर दूसरों पर निर्भर रहते हैं।

(ग) पकवानों से आने वाली सुगंध को सूँघकर काकी मंसूबे बाँधने लगी—तरकारी, पूड़ियाँ, दही और शक्कर तथा कचौड़ियाँ रायते के साथ खाऊँगी।

(घ) पं. बुद्धिराम ने बूढ़ी काकी के दोनों हाथों को पकड़ा और उन्हें घसीटते हुए, अँधेरी कोठरी में पटक दिया। यह दृश्य देखकर लाड़ली का हृदय ऐंठकर रह गया।

(ङ) पेट भर पूड़ियाँ खाने की लालसा पूरी न होने पर काकी जूठी पत्तलों से पूड़ियों के टुकड़े चुन-चुनकर खाने लगी।

(च) एक भोले-भाले बच्चे के समान, जो मिठाइयाँ पाकर मार और तिरस्कार सब भूल जाता है। उसी प्रकार बूढ़ी काकी ने रूपा को माफ कर खाना खाया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) बूढ़ी काकी का व्यवहार ऐसा था कि वह अपनी हर बात और हरकत के जरिए सबका ध्यान आकर्षित करती थीं अथवा बाजार से कोई वस्तु आती और उन्हें न मिलती तो वे रोने लगतीं। उनका रोना-सिसकना कोई साधारण रोना न था, वे गला फाड़-फाड़कर रोती थीं।

बूढ़ी काकी में जिह्वा स्वाद के सिवा और कोई चेष्टा शेष न थी और न ही अपने कष्टों की ओर आकर्षित करने के सिवाय कोई दूसरा सहारा न था। अगर उनकी इच्छा के विरुद्ध कोई कार्य करते तो वह परेशान हो जाती थीं।

(ख) पं. बुद्धिराम मेहमानों के बीच में बूढ़ी काकी को देखकर क्रोध से तिलमिला उठे। उन्होंने लपककर बूढ़ी काकी के दोनों हाथों को पकड़ा और उन्हें घसीटते हुए लाकर, उनको अँधेरी कोठरी में पटक दिया।

अत: पं. बुद्धिराम ने काकी के प्रति कुछ अपमानजनक और असंवेदशील व्यवहार किया।

(ग) लाड़ली का दादी के प्रति व्यवहार बहुत आदरपूर्ण और स्नेही था। वह दादी को अपनी शरण और मार्गदर्शक मानती थी और उन्हें परिवार के एक आदर्श व्यक्ति के रूप में देखती थी। लाड़ली दादी के साथ समय बिताती और हमेशा उनके पास बैठकर उनकी बातें सुनती थी।

(घ) बूढ़ी काकी का हृदय मसोस रहा था कि पूड़ियाँ कैसे पाऊँ? वे अपनी भूख पर काबू न कर सकीं और उनके मन से उचित और अनुचित का विचार जाता रहा। वे भली भाँति जानती थीं कि मैं वह काम कर रही हूँ जो मुझे कभी नहीं करना चाहिए। मैं जूठी पत्तल चाट रही हूँ। किंतु बुढ़ापा तृष्णा का अन्तिम समय है। क्योंकि उनके परिवार के लोगों ने उन्हें नकारा और उन्हें इस अपमान को सहने के सिवा कोई और विकल्प नहीं था। उनका मन खाने की (भूख) इच्छा के प्रबल प्रवाह में बह गया और उन्होंने जूठी पत्तलों से खाना खाना शुरू किया।

(ङ) रूपा ''बूढ़ी काकी'' को जूठी पत्तलों में से खाना के टुकड़े बीन-बीनकर खाते देखकर घबरा गई और रूपा सोचेन लगी, 'हाय मैं कितनी निर्दयी हूँ! जिसकी सम्पत्ति से मुझे दो सौ रुपये की आय हो रही है, उसकी मेरे कारण ऐसी दुर्गति हो रही है। ईश्वर मुझे क्षमा करो।

रूपा भंडारग्रह में से सारी सामग्रियाँ एक थाल में सजाकर बूढ़ी काकी की ओर चल पड़ी और कहा—काकी उठो, भोजन कर लो। मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई। मुझे माफ करना काकी।

पाठ से आगे

नोट— छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क), (ङ), (ग), (च), (घ), (ख)
2. (क) × (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) × (ङ) ✓
3. **(क) आर्तनाद—** अत्यधिक पीड़ा-घायल लोगों के आर्तनाद ने सभी का दिल दहला दिया।

(ख) अनुराग—प्रेम—उसका अपने माता-पिता के प्रति अनुराग उसे जुड़ी चीजों की याद दिलाता है।

(ग) क्षुधावर्धक—भूख को बढ़ाने वाला— घी और मसालों की क्षुधावर्धक महक चारों ओर फैली थी।

(घ) अद्‌र्धांगिनी—जीवन साथी— अपनी अद्‌र्धांगिनी के साथ बिताये हुये पल याद रहेंगे।

(ङ) सदिच्छाएँ—शुभकामनाएँ काकी से रूपा के लिए सच्ची सदिच्छाएँ निकल रही थीं।

व्याकरण-बोध

1. (क) पुनः + आगमन (विसर्ग सन्धि)
   (ख) रस + स्वादन (व्यंजन सन्धि)
   (ग) सदा + एव (वृद्धि सन्धि)
   (घ) क्षुधा + आतुर (दीर्घ सन्धि)
   (ङ) सद् + इच्छा (दीर्घ सन्धि)
2. (क) उत्तर देना।
   वाक्य प्रयोग—उसने मेरे सवाल का जवाब दिया।
   (ख) आकर्षक वादे करना।
   वाक्य प्रयोग—वह हमेशा लोगों को सब्जबाग दिखाता है और कुछ नहीं कर सकता।
   (ग) बहुत क्रोधि होना।
   वाक्य प्रयोग— काकी खाना देखकर आपे से बाहर हो गईं।
   (घ) तीव्र पीड़ा महसूस होना।
   वाक्य प्रयोग—मोना को रोता देखकर, मेरे कलेजे से हूक-सी उठी।
3. तेलदार, ठेकेदार, चटपटेदार, जमादार, हिस्सेदार।

4.

क्र.	मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया	द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया
1.	भूलना	भुलाना	भुलवाना
2.	पीसना	पिसाना	पिसवाना
3.	कहना	कहलाना	कहलवाना
4.	घसीटना	घसिटाना	घसिटवाना
5.	देखना	दिखाना	दिखवाना
6.	खाना	खिलाना	खिलवाना
7.	बैठना	बैठाना	बैठवाना
8.	माँगना	मँगाना	मँगवाना

5. (क) दोबारा आना
   (ख) असत्य (सब्जबाग)
   (ग) भूखवर्धक (क्षुधातुर)
   (घ) शुभेच्छा (सदिच्छाएँ)

रचनात्मक गतिविधियाँ

नोट— छात्र स्वयं करें।

3 बीज से पौधे का जन्म

मौखिक

(क) उसभाग को हम जड़ (मूल) कहते है।

(ख) पेड़-पौधों की मधुमक्खियों और तितलियों से घनिष्ठता होती है।

(ग) उन्हें देखने के लिए हम माइक्रोस्कोप (सूक्ष्मदर्शी) का उपयोग करते हैं।

(घ) वृक्ष हवा का थपेड़ा लगने पर थरथराने लगता है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) प्रकाश ही जीवन का मूलमंत्र है।

(ii) शाकाहारी एवं पालतू पशु हरियाली खाकर अपने जीवन का निर्वाह करते हैं।

(iii) मांसाहारी, मृत

(ख) (i) (ग) ✓ (ii) (क) ✓ (iii) (ख) ✓ ।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) पाठ का नाम 'बीज से पौधे का जन्म' व पाठ के लेखक का नाम श्री जगदीशचन्द्र बसु है।

(ख) वृक्षों का तना ऊर्ध्वदिशा में वृद्धि करता है।

(ग) पेड़-पौधों द्वारा ग्रहण की जाने वाली वायु ''अंगारक'' वायु कहते हैं।

(घ) मधुमक्खियाँ और तितलियाँ दल-बल सहित फूल देखने आती हैं।

(ङ) कीटों के आक्रमण तथा पानी कमी से वृक्ष मर जाता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) पाठ के आधार पर अंकुरण क्रिया उस क्रिया को कहते हैं, जिसमें बीज एक पौधे में बदलने लगता है। जड़ें मिट्टी से पोषक तत्व और पानी खींचती हैं और वह अंकुरित होकर पौधे में बदलता है।

(ख) जब उन्होंने पौधे को उल्टा लटका कर रखा, तो उन्होंने देखा कि उसकी सब पत्तियाँ और डालियाँ टेढ़ी होकर ऊपर की ओर उठ आईं तथा जड़ें नीचे की ओर लटक गईं।

(ग) पेड़-पौधों की वंशवृद्धि की प्रक्रिया मुख्य रूप से बीज के माध्यम से होती है। जब बीज को मिट्टी में बोया जाता है और उसे पानी, हवा और सूर्य का प्रकाश मिलता है, तो पौधा वृद्धि करता है, उसमें फूल और फल बनते हैं फिर फूलों में बीज बनता है उसे वंशवृद्धि कहते हैं।

(घ) रात में बाहर निकलने वाले कीटों को पेड़-पौधे अपनी गंध, रंग, चमक और शहद के माध्यम से अपनी ओर खींचते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) पेड़-पौधे भोजन ग्रहण करने के लिए प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया का पालन करते हैं। जिसमें वे सूर्य के प्रकाश, पानी और कार्बन डाइऑक्साइड का उपयोग करके भोजन बनाते हैं।

1. **सूर्य का प्रकाश**—यह प्रकाश संश्लेषण के लिए ऊर्जा प्रदान करता है।
2. **पानी का अवशोषण**—पेड़ की जड़ें मिट्टी से पानी को अवशोषित करती हैं।
3. प्रकाश संश्लेषण—यह ऊर्जा, पानी और कार्बन डाइऑक्साइड के साथ मिलकर ग्लूकोज ($C_6H_{12}O_6$) और ऑक्सीजन (O_2) बनाती हैं।
4. **कार्बन डाइऑक्साइड का अवशोषण**—पेड़ की पत्तियाँ वायुमण्डल से कार्बन डाइऑक्साइड गैस को अवशोषित करती हैं।

(ख) माइक्रोस्कोप के माध्यम से पेड़-पौधों से सम्बन्धित कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त हुई हैं—

1. **कोशिका की खोज**—रॉबर्ट हुक ने माइक्रोस्कोप के माध्यम से पहली बार पौधों की कोशिका की खोज की।
2. **कोशिका की संरचना**—पौधों की कोशिकाएँ सेल वॉल (Cell wall) से घिरी होती हैं जो उन्हें कठोरता प्रदान करती हैं।
3. **प्रजनन प्रणाली**—माइक्रोस्कोप से परागकण और अंडाणु के निर्माण और निषेचन की प्रक्रिया समझी गई।
4. **रोग और संक्रमण**—पौधों में रोग पैदा करने वाले सूक्ष्मजीवों का पता लगा।

अत: माइक्रोस्कोप के माध्यम से पेड़-पौधों की संरचना, कार्य और जीवन-चक्र को समझने में क्रान्तिकारी विकास हुआ। इसके माध्यम से अनुवांशिकता, वहनीयता, पौधों में संवेदनाएँ आदि की जानकारी प्राप्त होती है।

(ग) ''प्रकाश की जीवन का मूल मंत्र है'' इस कथन का अर्थ है कि प्रकाश और ऊर्जा सभी जीवों का आधार है। डॉ. बसु अपने प्रयोगों से यह दिखाया है कि पेड़-पौधे प्रकाश चाहते हैं। प्रकाश न मिलने की अवस्था में वे जीवित नहीं रह सकते हैं।

1. **प्रकाश का भौतिक रूप एवं आध्यात्मिक रूप**—पौधे सूर्य के प्रकाश पर निर्भर हैं, जो उनके विकास और जीवन का मुख्य स्रोत है। प्रकाश यहाँ ज्ञान और सत्य का प्रतीक है।
2. **प्रकृति और संघर्ष**— यदि आप खिड़की के पास गमले में देखें तो पाएँगे कि सारी पत्तियाँ और डालियाँ अंधकार से बचने के लिए प्रकाश की ओर बढ़ती हैं। घने जंगल में जाने पर पता चलता है कि पेड़-पौधों में प्रकाश को पाने की होड़ लगी रहती है।

अत: अब आप समझ गए होंगे कि प्रकाश ही जीवन का मूल आधार है। ईंधन को जलाने में जो प्रकाश और ताप निकलता है वह सूर्य का प्रकाश और ऊर्जा है।

(घ) मधुमक्खियों का आगमन पौधों के विकास और प्रजनन के लिए लाभकारी होता है। इसे निम्न प्रकार समझाया गया है–

1. **परागण में सहायता**—नर और मादा फूलों के बीच परागण होता है। जो बीज बनने और पौधों के विकास के लिये आवश्यक है।
2. **फलों और बीजों का निर्माण**—जब मधुमक्खियाँ फूलों में परागण करती हैं, तो इससे फलों और बीजों का निर्माण होता है।
3. **पौधों के जीवन-चक्र को बढ़ाना**—मधुमक्खियों के कारण पौधों का जीवन-चक्र संतुलित और तेज रहता है।
4. **प्रकृति में संतुलन**—मधुमक्खियाँ पौधों से भोजन प्राप्त करती हैं और बदले में वे पौधों को परागण करके उनका उपकार करती हैं।

अत: मधुमक्खियों का आगमन पौधों के लिए अत्यन्त लाभकारी है। उनकी मदद से पौधों का विकास परागण और फलों का निर्माण होता है।

(ङ) अंत में वृक्ष की दशा बड़ी दुखद होती है। वृक्ष भी मनुष्यों की तरह संवेदनशील होते हैं। वे भी पीड़ा महसूस करते हैं।

जब वृक्ष को काटा जाता है, तो वह भी दर्द महसूस करता है। जब वृद्धावस्था आती है तो वृक्ष की जड़े कमजोर हो जाती हैं। उसका जीवन धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है। संतान रूपी बीज के लिए वृक्ष अपना सबकुछ लुटा देता है। जो वृक्ष हरा-भरा था, वह बिल्कुल सूख जाता है। सूखा वृक्ष हवा का आघात सहन नहीं कर पाता। हवा का एक थपेड़ा लगते ही वह थरथराने लगता है। इस तरह एक दिन वृक्ष समाप्त हो जाता है।

पाठ से आगे

• **प्राणियों और पेड़-पौधों की श्वसन क्रिया में अंतर**—प्राणियों में श्वसन फेंफड़ों, त्वचा, गलफड़ों के माध्यम से होता है, जबकि पेड़-पौधों में श्वसन सभी भागों में होता है जिसमें पत्तियों, जड़ें और पत्ते शामिल हैं। पेड़-पौधे कार्बन डाइऑक्साइड का प्रयोग प्रकाश संश्लेषण के लिए करते हैं जबकि प्राणी जीवित रहने के लिए ऑक्सीजीन का प्रयोग करते हैं।

• **पेड़-पौधों की सुरक्षा और उपयोगिता**—पेड़-पौधे हमें खाने के लिए भोजन, रहने के लिए आवास और भोजन को पकाने के लिए ईंधन आदि जरूरत की सभी वस्तुएँ प्रदान करते हैं। ये हमारे वातावरण को संतुलित और हरा-भरा बनाते हैं। सम्पूर्ण प्राणिजन इन पर ही निर्भर हैं। अत: हमें पेड़ों का संरक्षण करना चाहिए। इन्हें बनाए रखने के लिए हमें निरन्तर पेड़-पौधे लगाते रहना चाहिए। सरकार को इनके संरक्षण हेतु सख्त कानून बनाने चाहिए ताकि प्रकृति का संरक्षण और संतुलन बना रहे।

विविध प्रश्न

1. (क) ✓ (ख) × (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) × (च) ✓
2. मूल, तना, पत्तियाँ, फूल, फल, बीज, शाखा, टहनी।
3. (क) अंकुर – कोंपल – बीज में अंकुर 7फूटने के बाद, पौधा तेजी से बढ़ने लगता है।
   (ख) औंधा – उल्टा – डॉ. बसु ने गमले को औंधा लटकाए रखा।
   (ग) सेवन – उपयोग – उसने दाल-चावल का सेवन किया।
   (घ) परागकण–पुष्परज – कीड़े पराग-कणों को एक फूल से दूसरे फूल तक ले जाते हैं।
   (ङ) क्षीण – कमजोर – उसकी क्षीण हालत देखकर सबको दया आ गई।

व्याकरण बोध

1. (क) चीनी **में** पानी डालने **पर** चीनी गल जाती है।
   (ख) पेड़-पौधों **के** रेशे-रेशे **में** सूर्य **की** किरणें आबद्ध रहती हैं।
   (ग) खुशी **के** मौके **पर** हम अपने परिजनों **को** आमंत्रित करते हैं।
   (घ) पेड़-पौधे अपने फूलों **में** शहद **का** संचय करके रखते हैं।

(ङ) वृक्ष जमीन **पर** गिर पड़ता है।

2. (क) अँधेरा — उजाला, अंधकार, प्रकाश
(ख) वृक्ष — फूल, तना, पेड़
(ग) फूल — पुष्प, जड़, तना
(घ) मधु — मिठास शहद रस

3. ऊपर — नीचे कोमल — कठोर
निराहार — आहार अंधकार — प्रकाश
दुर्गंध — सुगंध मृत्यु — जीवित

4. (क) भविष्यकाल (ख) भूतकाल
(ग) वर्तमान काल (घ) वर्तमान काल
(ङ) भूतकाल

रचनात्मक गतिविधियाँ

नोट—छात्र स्वयं करें।

4 उषा आ रही है

मौखिक

(क) उषा आ रही है।

(ख) पक्षी गा रहे हैं।

(ग) उषा मंद-मंद मुसकरा रही है।

(क) (i) निशा धुल चली है।
(ii) तम से दृष्टि घिरी हुई है।
(iii) जगत-संसार, ब्रह्मांड।

(ख) (i) (क) सुबह को
(ii) (ख) क्षितिज के
(iii) (क) मोर

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) उषा आ रही है।

(ख) दृष्टि तुम से घिरी हुई है।

(ग) नया जीवन बंधनों के पाश में बँधा हुआ है।

(घ) क्षितिज पर नई रोशनी (सूरज की चमक) आ गई है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) उषा के आने पर जीवन में नया उत्साह, ऊर्जा और सकारात्मक बदलाव आया।

(ख) उषा की प्रभा मौन लहरा रही है।

(ग) उषा घने कोहरे पर मंद मुसकरा रही है।

(घ) इस कविता से हमें प्रेरणा मिलती है कि धैर्य और संकल्प के माध्यम से मनुष्य हर प्रकार की कठिनाइयों से मुक्त हो सकता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) कविता में प्राकृति सौंदर्य का विस्तार से वर्णन करते हुये यह संदेश देना चाहते है कि प्राकृतिक बदलाव के साथ जीवन में भी निरंतर बदलाव आते रहते है। जैसे रात के बाद सुबह का सूरज उगता है। वैसे ही जीवन में कठिनाइयाँ और दु:ख के बाद खुशियाँ और सफलताएँ आती हैं। हमें हमेशा आशावादी दृष्टिकोण अपनाना चाहिये। जैसे उषा धीरे-धीरे धरती पर अपनी रोशनी फैलाती है वैसे ही हमें भी सकारात्मक सोच के साथ हर दिन का स्वागत करना चाहिये। उषा के आने से हमें यह संदेश मिलता है कि कभी भी उम्मीद का दामन नहीं छोड़ना चाहिये और जीवन में नए बदलावों के साथ आगे बढ़ना चाहिये।

(ख) इसके माध्यम से कवि कहना चाहता है कि जीवन में नई शुरुआत हो रही है, लेकिन इसके साथ-साथ कुछ बंधनों या सीमाओं का भी सामना करना पड़ता है। जो हमें यह प्रेरणा देती हैं कि संघर्षों और सीमाओं के बावजूद, जीवन में सकारात्मकता और ऊर्जा का संचार करना आवश्यक है। हमें अपने जीवन की ''अंगड़ाई'' को समझकर उसे एक नई दिशा में मोड़ना चाहिए और हर दिन को एक सुनहरे अवसर के रूप में अपनाना चाहिए।

(ग) उषा के आने पर प्रकृति में होने वाले सकारात्मक परिवर्तनों का वर्णन निम्नवत् है—

1. **आध्यात्मिक बदलाव**—उषा के प्रकाश से मन और आत्मा शुद्ध होती है। यह न केवल बाहरी प्रकृति को बल्कि अंतर्मन को भी प्रकाशित करती है।

2. **प्राकृतिक बदलाव**—उषा के आने से रात का अंधकार समाप्त हो जाता है और प्रकाश

फैल जाता है। वातावरण में हरियाली और चमक आ जाती है।

3. **जीवन में उत्साह और ऊर्जा**—उषा के आगमन से जीवन में स्फूर्ति और उमंग जाग्रत होती है।

4. **प्रगति की दिशा**—उषा के प्रकाश में प्रेरणा मिलती है कि कठिन समय के बाद सफलता और उज्ज्वल भविष्य की उम्मीद की जा सकती है।

अत: उषा के आने पर अंधकार का अंत, प्रकाश का आगमन और जीवन में नई ऊर्जा और आशा का संचार होता है।

(घ) ''घने कोहरे पर मन्द मुसका रही है'' पंक्ति में कवि ने प्रकृति के माध्यम से एक गहरे भाव को व्यक्त किया है। यह पंक्ति प्राकृतिक सुंदरता और जीवन में बदलाव का प्रतीक है। कवि ने सुबह (उषा) के आगमन को कोहरे से ढकी हुई धरती पर मंद मुस्कान के रूप में चित्रित किया है। यह केवल दृश्यात्मक सुंदरता नहीं, बल्कि जीवन के गहन सत्य और आशावाद को भी दर्शाती है।

''घना कोहरा'' जीवन की उन परिस्थितियों का प्रतीक है जो धुँधली, अस्पष्ट कठिनाइयों से भरी होती है।

''मन्द मुस्कान'' उषा की वह पहली किरण है जो धीरे-धीरे कोहरे को चीरती है और अपने हल्के प्रकाश से धरती पर जीवन का संचार करती है।

अत: प्राकृतिक सौंदर्य और जीवन के आशावादी दृष्टिकोण को बहुत ही सरल और सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया गया है।

कविता के आगे

छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) ×, (ख) ✓, (ग) ✓, (घ) ×, (ङ) ✓।

2. **सभी को** जगाती,
हँसाती, **खिलाती**,
बुलाती, नए भाव से **गुदगुदाती**,
हृदय में उषा और **धड़कन** बढ़ाती,
घने कोहरे पर मंद मुसका रही है।

व्याकरण बोध

1. **(क) कनक**— सोना— उसके गहनों में कनक की चमक थी।
कनक — धतूरा—रघु कनक खाने से पागल हो गया।

(ख) घन — बादल — आज आसमान में घन छा रहे हैं।
घन — हथौड़ा — मनुष्य घन से पत्थर तोड़ रहा था।

(ग) तीर — बाण — उसने तीर से लक्ष्य को भेद दिया।
तीर — किनारा — बाढ़ आने पर नदी के तीर डूब रहे थे।

2. (क) जगत — संसार, विश्व।
(ख) तम — अंधकार, अँधेरा।
(ग) निशा — रात्रि, रात।
(घ) विहग — पक्षी, खग।
(ङ) आँख — नेत्र, नयन।
(च) छोर — किनारा, कोना।

रचनात्मक गतिविधियाँ—

नोट— छात्र स्वयं करें।

5 नंगे पैर

मौखिक

(क) पोस्टमैन।

(ख) पोस्टमैन को नंगे पैर देखकर।

(ग) 'बालमित्र' का नया अंक।

(घ) कोलतार की सड़कें।

(ङ) हरीबा।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) शांत माहौल में गीतों के सुर गूँज रहे थे।

(ii) बेबी बैसाखियों के सहारे चलकर दरवाजे आई।

(iii) असुविधाजनक।

(ख) (i) (ग) बेबी ने।

(ii) (क) बेबी के पैरों को देखकर

(iii) (ख) बड़ी दाढ़ी वाला

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) रेडियो पर गीत-माला कार्यक्रम चल रहा था।

(ख) पोस्टमैन को नंगे पैर न रहने देने के निश्चय से बेबी को अपार संतोष की अनुभूति हुई।

(ग) दोपहर के समय बेबी को सदैव अकेलापन महसूस होता है।

(घ) किसके साथ बात करे? किसके साथ हँसे? यही प्रश्न बेबी के मन में हमेशा बने रहते थे।

(ङ) उपहार में मिले जूतों को देखकर पोस्टमैन ने सोचा– 'इस बच्ची ने मुझे जूते दिये' किन्तु उसके पास तो पैर ही नहीं हैं, वो मैं कैसे दे पाऊँगा?

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) पोस्टमैन का काम डाक बाँटना है।

(ख) बंद दरवाजा खोलने में बेबी को समय इसलिए लगा था क्योंकि उसके पैर नहीं थे, वह वैसाखियों के सहारे चलती थी।

(ग) बेबी को दोनों पोस्टमैन में अंतर दिखाई दिया कि पहला डाक फेंककर चला जाता था और वह दाढ़ी वाला था; जबकि वह पोस्टमैन (बालक) नंगे पैर आता और हाथ में डाक देता था।

(घ) पोस्टमैन नंगे पैर रहता था क्योंकि शायद उसके पास जूते नहीं थे। उसे नंगे पैर देखकर बेबी को दवा आई और बेबी ने उसे फिर कभी नंगे पैर न रहने देने का दृढ़ निश्चिय किया। जूते पाकर गरीब पोस्टमैन की आँखें भर आईं।

(ङ) बेबी ने होली के उपहार के रूप में पोस्टमैन को नए जूते दिये। जूते पाकर गरीब पोस्टमैन की आँखें भर आईं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) बेबी को ध्यान आया कि पोस्टमैन के पैर नंगे हैं क्योंकि जब पोस्टमैन पत्र देने के लिए आया, तो बेबी की नजर उसके पैरों की तरफ गई, जब कोई नंगे पैर होता है, तो वह उसकी स्थिति या परिस्थितियों के बारे में सवाल उठाता है। यही बात बेबी ने देखी और उसे एहसास हुआ कि एक पोस्टमैन के पैर नंगे हैं, जो शायद उसके जीवन के संघर्ष को दर्शा रहे हैं।

(ख) ''चैन से कोई नंगे पैर घूमेगा'' इस कथन का भाव यह है कि उसकी कोई मजबूरी या परिस्थितियाँ होंगी जिसके कारण वह नंगे पैर घूमता है।

अर्थात् हमें दूसरों की परिस्थितियों को समझना चाहिये। यह गरीबी, अभाव, सामाजिकता और असमानता की ओर ध्यान आकर्षित करने वाला वाक्य है, जो हमें इस बात को सोचने के लिए प्रेरित करता है कि कोई व्यक्ति नंगे पैर क्यों घूम रहा है, और क्या हम उसकी मदद कर सकते हैं? जिस प्रकार बेबी ने उसकी मदद की।

(ग) ''लगने दो बहिन! पोस्टमैन का काम जिस-तिस की डाक को जिस-तिस के हाथ में सौंपने का है, अहाते में फेंकने का नहीं'' यह कथन हमें अपने काम के प्रति कर्तव्यनिष्ठ बनने की प्रेरणा देता है। यदि हर व्यक्ति अपने कर्तव्य को जिम्मेदारी से निर्वहन करे तो सारी समस्याएँ ही समाप्त हो जाएँ। जिस प्रकार एक पोस्टमैन नंगे पैरों तपती धूप में अपनी जिम्मेदारी को समझता हैं। उसी प्रकार हर व्यक्ति को सोचना चाहिए।

(घ) बेबी सीढ़ी से नीचे अहाते में उतरी और अपनी जेब से परकार निकालकर पोस्टमैन के पैरों का आड़ा, सीधा, टेढ़ा माप लिया। दो दिन बाद जब हरीबा मोची आया तब बेबी ने जूते बनाने के लिए उसे पोस्टमैन के पैरों का नाम दिया।

(ङ) जब बेबी ने मुस्कराते हुये उस पोस्टमैन को उपहार में जूते दिये। यह देखकर उसकी आँखे भर आईं। वह मन-ही-मन सोचने

लगा—इस बच्ची ने मेरे नंगे पैरों के लिये जूते दे दिए, किन्तु उसके पास तो पैर ही नहीं है, वो मैं उसे कैसे दे पाऊँगा ? इसलिये पोस्टमैन ने डाकघर के बड़े बाबू से अपनी लाइन बदलने को कहा।

पाठ के आगे :

• अपनी विवशता के प्रति हमारा दृष्टिकोण एकात्मक और आशावादी होना चाहिए। हमें अपनी कमजोरियों को स्वीकारना चाहिए और दूसरों से कुछ भी सीखने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में आई समस्याओं से कभी घबराना नहीं चाहिए, बल्कि यह जानने का प्रयास करना चाहिए कि यह समस्या किस जगह कमजोर पड़ने के कारण आई और फिर उस पर सुधार करना चाहिए।

• ''साहब मेरी लाइन बदल दीजिए, सिटी में कहीं भी बदली कर दीजिए''—इस कथन से यह पता चलता है कि पोस्टमैन एहसानफरामोस नहीं था। वह बेबी के उपकार का कायल था। बेबी के पैर न होने के कारण वह उसको जूते वापिस नहीं कर सकता था, इसलिए वह उससे नजरे मिलाने से कतराता था और उसके सामने नहीं पड़ना चाहता था।

विविध प्रश्न—

1. (क) ✓, (ख) ×, (ग) ×, (घ) ✓, (ङ) ✓।
2. (क)-(ङ), (ख)-(घ), (ग)-(क), (घ)-(च), (ङ)-(ग), (च)-(ख)।
3. (क) माहौल, (ख) धक्का, (ग) नंगे पैरो, (घ) कोलतार, (ङ) बेबी।
4. (क) माहौल— वातावरण—समारोह का माहौल उत्साहपूर्ण है।
   (ख) परिचित—जान-पहचाना—यह लड़का परिचित लग रहा है।
   (ग) मौन—चुप रहना—मोहन बहुत मौन रहता है।
   (घ) अपार—असीमित—माँ का अपार स्नेह बच्चों के लिए अनमोल है।
   (ङ) अचरज—आश्चर्य—उसकी मेहनत ने सबको अचरज कर दिया।

व्याकरण बोध

1. (क) चतुर + आई = चतुराई
   (ख) लिख + आई = लिखाई
   (ग) पढ़ + आई = पढ़ाई
   (घ) मोटा + ई = मोटाई
   (ङ) चढ़ा + ई = चढ़ाई
   (च) धुल + आई = धुलाई
2. (क) कर्ता, संबंध (ख) कर्म
   (ग) कर्ता, अपादान (घ) अधिकरण
   (ङ) संबंध कारक
3. (क) सार्वनामिक विशेषण
   (ख) गुणवाचक विशेषण
   (ग) संख्यावाचक विशेषण
   (घ) गुणवाचक विशेषण
4. (क) खिड़कियाँ (ख) कमरें
   (ग) बैसाखियाँ (घ) दरवाजें
   (ङ) कुर्सियाँ (च) सड़कें

रचनात्मक गतिविधियाँ

नोट—छात्र स्वयं करें।

6 जलते जहाज में

मौखिक

(क) बादलों के ऊपर उड़ने पर नजारा बदल जाता है।

(ख) हवाई जहाज के डैने की तरह फैले दोनों पंखों में ईंधन भरा रहता है।

(ग) विमान ने लखनऊ से दिल्ली की ओर उड़ान भरी।

(घ) विमान को सकुशल जमीन पर उतारने वाले विमान चालक का नाम ले० बिस्वास है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) 3 फरवरी, 1152 को रविवार था।
(ii) जहाज ने लखनऊ से दिल्ली की ओर उड़ान भरी।
(iii) जहाज में सेना के छः वरिष्ठ अधिकारी सवार थे।

(ख) (i) (ख) (ii) (घ) (iii) (क)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) जहाज से नीचे देखने पर मोटरें माचिस की डिब्बी के समान दिखती हैं।

(ख) 'डेवन' प्रकार के जहाज ने लखनऊ से उड़ान भरी।

(ग) हवा में विमान को सीधा बनाए रखने के लिए ले० बिस्वास ने दूसरे चलायमान इंजन को भी बदल दिया।

(घ) सभी विमान यात्रियों को जब विमान में आग लगी थी। वह पल रह-रहकर याद आ रहे थे।

(ङ) ले० बिस्वास को भारत सरकार ने 'अशोक चक्र' से सम्मानित किया।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) जलते हुये विमान के यात्रियों के रूप में छः वरिष्ठ अधिकारी सवार थे, जिनमें पश्चिमी कमान के दो लेफ्टिनेट जनरल, सेना मुख्यालय के क्वार्टर मास्टर जनरल, मिलिट्री सेक्रेट्री, एक मेजर जनरल और एक बिग्रेडियर सम्मिलित थे और पायलेट वायुसेना के युवा अवसर फ्लाइट लेफ्टिनेंट सुहास बिस्वास थे।

(ख) उड़ते हुए विमान में अचानक से दोनों इंजनों में से किसी एक में गड़बड़ होने के कारण भारी आवाजें आने लगीं। और एक इंजन जमीन पर गिर पड़ा।

(ग) ले० बिस्वास ने ऊबड़-खाबड़ जगह पर विमान उतारने का निश्चय किया।

(घ) दोनों इंजनों के बिना और हवाई पट्टी के अभाव में इस प्रकार सही सलामत विमान का उतर आना एक तरह का करिश्मा ही था। इस घटना को 'करिश्मा' नाम दिया गया है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) 'विमान में गड़बड़ी होने पर' ले० बिस्वास के सामने कई चुनौतियाँ थीं, जो निम्नवत् हैं—

1. इंजन खराबी के विमान को नियंत्रित करना मुश्किल हो गया था।
2. ले० बिस्वास ने विमान के दूसरे चलायमान इंजन को भी बंद कर दिया।
3. उन्होंने विलक्षण कुशलता के साथ विमान को धरती के उसी ऊबड़-खाबड़ टुकड़े पर उतारने का दुस्साहस किया।
4. ले० बिस्वास ने बड़ी कठिनाई के साथ जबकि एक इंजन टूटकर नीचे गिर गया और वरिष्ठ अधिकारियों को सही सलामत नीचे उतारा।

(ख) 'जाको रोखो साइयाँ, मार सके ना कोय' यह कहावत इस पाठ के सन्दर्भ में चरितार्थ होती है। किस प्रकार मानवीय धैर्य और साहस का ईश्वर ने साथ दिया और एक जलता हुआ विमान बिना किसी मानवीय क्षति के सकुशल जमीन पर उतारा गया, वह भी बिना किसी सुविधा और सहायता के। यदि मनुष्य विपत्ति के समय अपना धैर्य न खोए तो वह किसी भी दुष्कर कार्य को सम्पन्न कर सकता है, जैसा कि फ्लाइट लेफ्टिनेंट सुहास बिस्वास ने कर दिखाया।

(ग) पायलट ले० बिस्वास ने न तो अपना धैर्य छोड़ा, न ही किसी प्रकार की हड़बड़ी प्रदर्शित की। जब विमान से एक इंजन अलग होकर गिर पड़ा तब भी उन्होंने बड़ी निपुणता से विमान का संतुलन बनाए रखा। बिना एक भी इंजन के, जहाज को खुरदरी धरती पर उतारने में उन्होंने अपने अभूतपूर्व साहस और सम्पूर्ण निपुणता का परिचय दिया। घने बादलों तथा शाम के अँधेरे में भी उन्होंने विमान के नीचे उतरने लायक भूमिखंड ढूँढ़ ही लिया।

उन्हें इस साहसपूर्ण कार्य के लिए भारत सरकार ने 'अशोक चक्र' से सम्मानित किया।

पाठ के आगे :

छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न—

1. (क) ×, (ख) ✓, (ग) ✓, (घ) ✓, (ङ) ×।

2. (क) चलचित्र– फिल्म – मैंने आज चलचित्र देखा।
   (ख) तरकीब – उपाय – मोहन खेलने गया तभी उसके दिमाग में एक तरकीब आई।
   (ग) ऊबड़-खाबड़ – आसमान – हमारे गाँव का रास्ता बहुत ऊबड़-खाबड़ है।
   (घ) नियति – किस्मत – रोहन की नियति खराब है।
   (ङ) करिश्मा – चमत्कार – सोहन ने एक करिश्मा देखा।

व्याकरण-बोध

1. (क) दोहरा लाभ प्राप्त होना।
   वाक्य—ऑनलाइन पढ़ाई में छात्रों को ज्ञान भी मिल रहा है और यात्रा का समय बच रहा है, यह हुआ आम के आम गुठलियों के दाम।
   (ख) एक कार्य से दो लाभ
   वाक्य—पेड़ लगाने से पर्यावरण सुधरेगा और छाया मिलेगी। इसे कहते हैं एक पंथ दो काज।
   (ग) दोषी व्यक्ति हमेशा डरता है।
   वाक्य—रमेश चोरी में पकड़े जाने के बाद से वह सहमा-सहमा सा रहने लगा। इसे कहते हैं चोर की दाढ़ी में तिनका।
   (घ) शक्तिशाली होना (ताकतवर)।
   वाक्य—प्रभूदयाल ने अपनी दम पर गाँव की परती जमीन पर कब्जा कर लिया। यह तो वही बात हुई जिसकी लाठी उसकी भैंस।
   (ङ) एक वस्तु के लिए कई दावेदार।
   वाक्य—नौकरी के पद के लिये हजारों दावेदार आये। यह वही बात हुई– एक अनार सौ बीमार।
2. (क) बड़ी (ख) पुरानापन
   (ग) जबाव (घ) कनिष्ठ
   (ङ) ऊबड़-खाबड़।

रचनात्मक गतिविधियाँ

नोट—छात्र स्वयं करें।

7 कुछ काम करो

मौखिक

(क) कवि कुछ काम करने को प्रेरित कर रहा है।

(ख) हम कुछ काम करके वांछित वस्तु प्राप्त कर सकते हैं।

(ग) इस कविता के रचयिता मैथलीशरण गुप्त हैं।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) कवि कह रहा है कि सुअवसर का उचित उपयोग करो।
(ii) संसार को सपना नहीं समझना चाहिये।
(iii) रास्ता।

(ख) (i) (क) (ii) (क) (iii) (ग)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) अपने जन्म को सार्थक बनाने के लिए हमें बिना रुके सतत् रूप से कर्मशील रहना चाहिये।

(ख) कवि शरीर का उपयोग मानव जीवन में अच्छे कार्य करने के लिए कह रहा है।

(ग) कवि ने जगत् को सपना न समझने के लिए कहा है।

(घ) कवि ने जीवन को व्यर्थ न त्यागने की सलाह दी है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) मानव जीवन को सार्थक बनाने के लिये बिना रुके सतत रूप से कर्मशील रहें तथा हमें कभी निराश नहीं होना चाहिये क्योंकि निराश होने से हमारा मन हताश हो जाता है और अपने लक्ष्य तक पहुँचने से पहले ही काम करना छोड़ देते हैं।

(ख) 'सुयोग' और 'सदुपाय' शब्दों के माध्यम

से कवि कहना चाहता है कि किसी भी कार्य को सही समय पर सही तीरके से करना ही सफलता और जीवन का सही मार्ग है।

(ग) नर हो, न निराश करो मन को
कुछ काम करो, कुछ काम करो,
जग में रहकर, कुछ नाम करो।
यह जन्म हुआ किस अर्थ रहो,
समझो जिससे यह व्यर्थ न हो।

(घ) यदि हमें वांछित वस्तु प्राप्त नहीं होती है, तो इसमें हमारे कर्मों का दोष है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) हम अपने जीवन को सफल बनाने के लिए कड़ी मेहनत, आत्मविश्वास, समय का प्रबंधन और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनायें साथ ही समाजसेवा, दान-पुण्य और अच्छे कार्य करके अपने जीवन को सफल बनायें।
जीवन को सफल बनाने के उद्देश्य—

1. स्पष्ट उद्देश्य ओर लक्ष्य निर्धारित करें।
2. ईमानदारी और मेहनत से काम करें।
3. समय का सही प्रयोग करें।
4. आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच रखें।
5. सीखने की इच्छा रखें।
6. दूसरों के प्रति दया की भावना रखें।
7. स्वास्थ्य का ध्यान रखें।
8. संयम और धैर्य रखें।

इस प्रकार हमारा जीवन सफल बन सकता है।

(ख) कवि कह रहा है कि हम सबका जीवन कभी-न-कभी समाप्त होगा, लेकिन हमें अपने जीवन के कार्यों से इतना मूल्य और गुणवत्ता छोड़नी चाहिए कि जब हम चले जाएँ, तो हमारे कार्यों का गूँजता हुआ प्रभाव लोगों के दिलों में बना रहे। अत: हमें अपने आत्मसम्मान और अपनी महत्वता को बनाये रखना चाहिए। हमें जीवन में संघर्ष के बावजूद निराश नहीं होना चाहिए। हमें ऐसा करना चाहिए कि लोग हमारे जाने के बाद याद करें।

(ग) जब हमें कोई अच्छा अवसर (सुयोग) या सही सहयोग मिलता है, तो उसे सही दिशा में प्रयोग करना चाहिए। अगर हम उस अवसर का उपयोग सही तरीके से नहीं करते या उसे व्यर्थ कर देते हैं, तो वह सहयोग सदुपाय भी व्यर्थ हो जाता है।

निष्कर्ष—समय और स्थान का सही चुनाव करके हम उन्हें सार्थक बना सकते हैं, वरना वे हमारी समझदारी को व्यर्थ बना सकते हैं।

(घ) कविता में निहित संदेश के आधार पर बताया गया है कि हम अपने जीवन को केवल सपना नहीं समझें, बल्कि अपना मार्ग प्रशस्त करें। ''कुछ काम करो'' यानी जीवन का उद्देश्य तय करे। उसे पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करों और व्यक्ति को लक्ष्य स्पष्ट रूप से निर्धारित करने से व्यक्ति को उचित दिशा मिलती है। व्यक्ति को अपने मन को निराश नहीं करना चाहिये। ईश्वर ने दो हाथ दिये हैं दान करने के लिए, अच्छे कार्य करो और जीवन को सफल बनाओ।

कविता से आगे :

नोट—छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) ×, (ख) ✓, (ग) ✓, (घ) ✓, (ङ) ×।
2. नर हो, **न निराश करो** मन को
कुछ काम करो, कुछ काम करो,
जग में रहकर **कुछ नाम करो**।
यह **जन्म** किस **अर्थ** अहो,
समझो जिससे यह **व्यर्थ न** हो।

व्याकरण-बोध

1. करो तन को, करो मन को, नित ज्ञान रहे, यह ध्यान रहे, मान रहे-गान रहे।
2. (क) आशा (ख) सार्थक
(ग) मृत्यु (घ) अनुपयुक्त
(ङ) दुरुपयोग (च) अनावलंबन
(छ) अज्ञान (ज) लभ्य

3. (क) सुबुद्धि सुकर्म
(ख) उपयोग उपकार
(ग) प्रहार प्रसाद
(घ) अवसर अवसाद
(ङ) अज्ञानी असफल

4. (क) प्रयोजन—इस पुस्तक का अर्थ विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक है।
धन—उसने अपनी मेहनत से अर्थ एकत्र किया।
(ख) हाथ—वह अपना कर मल कर रह गया।
टैक्स—सरकार ने कर बढ़ा दिया है।

5. (क) मानव मनुष्य
(ख) संसार दुनिया
(ग) रास्ता राह
(घ) भगवान ईश्वर

रचनात्मक गतिविधियाँ

नोट—छात्र स्वयं करें।

8 मित्र का ऋण

मौखिक

(क) एक का नाम निकोलस और दूसरे का नाम बेक था।

(ख) निकोलस असत्य बोलने वाला लड़का था।

(ग) बेक सेनानायक पद पर था।

(घ) क्रामवेल बड़ा ही उग्र और कठोर शासक था।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) हल्का-सा धक्का लगने पर खिड़की का शीशा टूट गया।
(ii) निकोलस को लगा शिक्षक अब मुझे सजा देंगे।
(iii) चेहरा पीला पड़ना-भय या चिन्ता में पड़ना।

(ख) (i) (घ) ✓ (ii) (क) ✓ (iii) (ग) ✓

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) बेक सत्य बोलने वाला और निकोलस असत्य बोलने वाला था।

(ख) खिड़की का शीशा तोड़ने का अपराध बेक ने अपने सिर पर ले लिया।

(ग) बेक और निकोलस इंग्लैण्ड के सुप्रसिद्ध स्कूल में पढ़ते थे।

(घ) चालीस वर्ष बाद निकोलस न्यायाधीश और सेनानायक पद पर थे।

(ङ) हाँ, निकोलस बेक को क्षमादान दिलाने में सफल हुआ।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) निकोलस का अपराध अपने सिर पर लेकर सच्चे मित्र होने का फर्ज निभाया।

(ख) एक हल्का-सा धक्का लगने पर खिड़की का शीशा टूटने के कारण निकोलस का चेहरा डर की वजह पीला पड़ गया।

(ग) युद्ध में राजतंत्र तथा बेक पराजित हुए और उसे साथियों के साथ बंदी बनाकर एक जिस्टर में भेज दिया गया।

(घ) क्रामवेल का आदेश था कि राजतंत्रवादी कैदियों को मृत्युदंड दिया जाए।

(ङ) निकोलस और बेक की मित्रता की कहानी ने उस कठोर हृदय वाले क्रामवेल की आँखों में आँसू छलका दिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) कक्षा में बेक बोल उठा, ''शीशा मैंने तोड़ा है।'' कक्षा के सभी लड़के आश्चर्यचकित होकर बेक को देखने लगे। बेक में मार पड़ने लगी और शरीर पर नीले-नीले दाग पड़ गए, किन्तु बेक के चेहरे पर दृढ़ता और विजय की भावना थी, क्योंकि उसने अपने दोस्त निकोलस का अपराध अपने सिर पर ले लिया था। यह देखकर निकोलस की आँखों में पश्चाताप के आँसू थे। वह मन-ही-मन अपने को धिक्कार रहा था। अंत में वह बेक के सामने गया। उसकी आँखें भरी

थीं। गला रुँधा हुआ था। उसने बड़ी ही कठिनाई से रुँधे हुए स्वर में कहा, ''बेक, तुमने अपने इस त्याग से मेरे भीतर एक नई ज्योति पैदा कर दी है। मुझ पर तुम्हारा बहुत बड़ा ऋण है। मैं तुम्हारे ऋण को जीवन भर नहीं भूलूँगा।

(ख) चालीस वर्षों के पश्चात् दोनों मित्रों की भेंट तब हुई जब निकोलस न्यायाधीश तथा बेक सेनानायक था। उस समय इंग्लैण्ड में क्रामवेल का शासन था। बेक राजतंत्रवादियों की ओर से युद्ध लड़ रहा था। राजतंत्र पराजित हुए। बेक भी पराजित हुआ और अपने साथियों के साथ बंदी बनाकर एकजिस्टर भेज दिया गया। उस समय निकोलस एकजिस्टर में न्यायाधीश था। वहीं बेक को बंदी के रूप में निकोलस के समक्ष न्यायालय में उपस्थित किया गया।

(ग) ''उसने उसे देखा और पहचान लिया, किन्तु कर्तव्य ने उसे विवश कर दिया।'' इस कथन से आशय है कि उसने कुछ सोचा और तब निर्णय देते हुए कहा, चार दिन के पश्चात् सबको फाँसी दे दी जाए।

कथन का आशय यह है कि निकोलस कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति था। वह अपने कर्तव्य को भलीभाँति समझता था। वह कानून की अवहेलना नहीं कर सकता था।

(घ) बेक को फाँसी से बचाने के लिए निकोलस को क्रामवेल की सहायता लेनी पड़ी। जब निकोलस क्रामवेल से मिला तब उसने अपनी और बेक की मित्रता की कहानी सुनाई। उसने कहा, ''आज मैं जो कुछ बन सका हूँ, वह केवल बेक के ही कारण। बेक ने ही मुझे इस पद तक पहुँचाया है। बेक ने यदि शीशा तोड़ने के मेरे अपराध को अपने ऊपर न लिया होता तो शायद मुझमें कभी भी सत्य बोलने की शक्ति जाग्रत न होती। अत: अपने प्राण-प्यारे मित्र के लिए मैं आपसे क्षमादान चाहता हूँ। यदि आप उसे क्षमादान न देंगे, तो दो दिन के बाद वह इस संसार से मिट जाएगा और उसके साथ ही निकोलस भी मिट जाएगा।

पाठ से आगे

नोट—छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) ×, (ख) ✓, (ग) ×, (घ) ✓, (ङ) ×।
2. (क)-(ग), (ख)-(छ), (ग)-(क), (घ)-(ङ), (ङ)-(च), (च)-(ख), (छ)-(घ)।
3. (क) उसके हाथ, (ख) सन्नाटा, (ग) पारावार, (घ) पानी-पानी, (ङ) निकोलस।

व्याकरण-बोध

(i) **पसीने से लथपथ होना**—घबराहट होना। मोनू के भाई को देखकर मैं पसीने से लथपथ हो गया।

(ii) **आँखों में आँसू छलकना**—अश्रुपात होना। बेटी की विदाई देखकर मेरे आँखों से आँसू छलकने लगे।

(iii) **चेहरा पीला पड़ना**—भयभीत पड़ना। परीक्षा का परिणाम सुनते ही उसका चेहरा पीला पड़ गया।

(iv) **आश्चर्यचकित होना**—अचम्भित होना। उसकी उपलब्धि देखकर सभी आश्चर्य-चकित रह गये।

2. (क) दोस्त — साथी
   (ख) गुरु — अध्यापक
   (ग) नयन — नेत्र
   (घ) अश्व — हय
3. (क) अभिन्न (ख) असत्य
   (ग) असाधारण (घ) अस्वीकार
   (ङ) असंभव।
4. (क) अनिश्चयवाचक सर्वनाम।
   (ख) पुरुषवाचक सर्वनाम।
   (ग) निजवाचक सर्वनाम।
   (घ) निश्चयवाचक सर्वनाम।
   (ङ) पुरुषवाचक सर्वनाम।

रचनात्मक गतिविधियाँ

नोट—छात्र स्वयं करें।

9 विजय पर्व

मौखिक

(क) आज के दिन बलकरन की वर्षगाँठ है।

(ख) बलकरन दूध लेने सुजान के घर गया।

(ग) बलकरन की माँ का नाम कल्याणी था।

(घ) तैमूर मंगोल आक्रमणकारी था।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) सुजान के घर दूध लेने बलकरन गया।
(ii) गाँव में भगदड़ तैमूर तुरक की फौज आने के कारण मची हुई है।
(iii) असुरक्षित।

(ख) (i) (ग) ✓ (ii) (घ) ✓ (iii) (घ) ✓

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) बलकरन की पिछली वर्षगाँठ पर माँ ने हथियारों की पूजा की थी।

(ख) कल्याणी बलकरन की वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में अपने बेटे को फूल-माला पहनायेगी एवं मिठाइयाँ और खीर बनाएगी।

(ग) तैमूर तुरक की फौज के आक्रमण करने पर बलकरन के गाँव में भगदड़ मची हुई थी।

(घ) कल्याणी को तलघर में पहला ग्रामीण खींचकर ले गया।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) तैमूर के सिपाहियों ने बलकरन के घर में घुसकर सामानों की तोड़-फोड़ शुरू कर दी।

(ख) तैमूर ने अपने सिपाहियों को आदेश दिया था कि आज शाम तक अमरकोट पहुँचना है।

(ग) बलकरन ने तैमूर से कहा, ''मेरा चाकू बड़ा तेज है'' और उससे अपनी ऊँगली चीरकर दिखा दी और कहा मैं चाकू से ही लड़ूँगा।

(घ) बलकरन ने तैमूर से कहा— मेरी मुराद पूरी करना चाहते हो तो मेरे गाँव से बाहर चले जाओ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) इस पाठ में तैमूर यद्यपि एक बेरहम शासक व आक्रमणकारी था, फिर भी वह बलकरन की वीरता-भरी बातें सुनकर उसे फौजी की तरह से सलाम करता है और उसकी एक मुराद पूरी करने की बात कहता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि तैमूर ने जब बलकरन से लड़ने को कहा, तब बलकरन चाकू जैसी मामूली चीज के बल पर शक्तिशाली, तैमूर से लड़ने के लिए तैयार हो गया। बालक का साहस देखकर तैमूर को दया आ गई और उसने उसे अपना बहादुर दोस्त माना। और कहाँ बलकरन ! हिन्दुस्तान की दौलत में तू भी एक अनमोल दौलत है।

(ख) बलकरन की साहस, वीरता, निष्ठा और नैतिकता ने हमको गहराई से प्रभावित किया। बलकरन की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन निम्न प्रकार है—

1. **साहस और वीरता**—बलकरन ने साहस और वीरता के साथ तैमूर से कहा—तुम वही तुरक हो जो बस खून बहाना जानते हो? तुझे क्या मालूम? मेरे पास चाकू है और वह तेरी तलवार से तेज है देखो इतना तेज है कि मेरी उँगली से खून निकाल सकता है।

2. **नैतिकता और आदर्शवाद**—बलकरन सत्य और न्याय के मार्ग पर चलता है, भले ही उसे इन कठिनाइयों का सामना करना पड़े। वह कभी अनुचित कार्यों को स्वीकार नहीं करता था।

अत: बलकरन की विशेषताएँ—साहस, देशभक्ति, नैतिकता, नेतृत्व-क्षमता और त्याग ने मुझे गहराई से प्रभावित किया है। साहस से असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं। बड़े-बड़े खूँखार और निर्दयी व्यक्ति भी साहस के सामने नतमस्तक हो जाते हैं। मंगोल आक्रमणकारी बड़े खूँखार तथा

अत्यंत क्रूर थे। महिलाओं, बच्चों और निर्दोष नागरिकों पर भी मंगोल आक्रमणकारी दया नहीं करते थे। उनके आक्रमणों से प्रभावित क्षेत्रों में गरीबी, भुखमरी और भय का माहौल बन जाता था।

उनकी विशेषताएँ निम्नवत् थी—

1. **कठोर अनुशासन**—उनकी सेना बड़ी अनुशासित थी। आदेशों की अवहेलना पर कठोर दण्ड दिया जाता था।
2. **मनोवैज्ञानिक युद्ध**—वे अक्सर भय पैदा करने के लिए नरसंहार का सहारा लेते थे।
3. **वीरों का सम्मान**—मंगोल आक्रमणकारी वीरों का सम्मान करते थे। तभी उन्होंने बलकरन की वीरता का सम्मान करते हुए उसे छोड़ देते हैं।

पाठ से आगे

नोट—छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) ✓, (ख) ×, (ग) ✓, (घ) ×, (ङ) ✓।
2. **(अ)** — **(ब)**

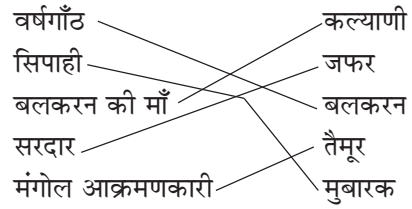

3. (क) निर्दयी—जंगल में एक खूँखार बाघ को देखा गया।
   (ख) इच्छा—मंदिर में लोग अपनी मुराद लेकर आते हैं।
   (ग) साहसी—वह इतना बहादुर है कि अकेले जंगल में चला गया।
   (घ) जिसका कोई मूल्य न हो—मोहन मेरा अनमोल रत्न है।

व्याकरण-बोध

(क) सिपाहियों (ख) मिठाइयाँ
(ग) तलवारें (घ) ग्रामीणों
(ङ) बच्चे (च) उँगलियाँ

2. (क) कितनी कायरता की बातें करता है।
   (ख) वह असुक्षित है।
   (ग) यह तो घटिया भोजन और मिठाइयाँ हैं।
   (घ) तू तो बड़ा ही कायर मालूम होता है।
   (ङ) मेरा चाकू बड़ा मंद है।
3. (क) क्या अभी तक दूध नहीं आया? जाऊँ, मैं ले आऊँ?
   (ख) बहन, चुप रहो! कहीं तुर्क सुन न ले। जल्दी चलो, जल्दी चलो।
   (ग) ''देखो, उस कोने में क्या रखा है?''
   (घ) खुशी से कहा, शाबाश! क्या सोना-चाँदी?
   (ङ) जैसे दूध छीन लिया था, वैसे ही तलवार भी छीन लो।

रचनात्मक गतिविधियाँ

नोट—छात्र स्वयं करें।

10 वारिस

मौखिक

(क) मास्टर जी लेखक व उनकी बहन को अँग्रेजी पढ़ाने आते थे।

(ख) लेखक को मास्टर जी आने का पता घड़ी में तीन बजे तथा सीढ़ियों पर लाठी की खट-खट की आवाज से चल जाता था।

(ग) मास्टर जी बहुत दिनों तक टाइफाइड से पीड़ित रहे।

(घ) मास्टर जी ने लेखक और उसकी बहन को बँगला भाषा सिखाने का मन बनाया।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) सीढ़ियों पर लाठी की खट-खट की आवाज होने लगती।
(ii) मास्टर जी के बैठक में पहुँचने से पहले घड़ी तीन बजा चुकी होती थी।

(iii) लेखक बहन के कान में कहता था— एक-दो-तीन।

(ख) (i) (ग) ✓ (ii) (घ) ✓ (iii) (क) ✓

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) लेखक दसवीं (मैट्रिक) कक्षा में पढ़ता था।

(ख) मास्टर जी लेखक व उसकी बहन को अँग्रेजी पढ़ाने आते थे।

(ग) मास्टर जी के जाते ही लेखक खुशी से उछलने लगता था।

(घ) मास्टर जी एक गली की कोठरी में रहते थे।

(ङ) मास्टर जी लेखक व उसकी बहन को पढ़ाने के लिए 'बी' पेपर तक लाते रहे।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) मास्टर जी जब भी देर तक पढ़ाते तब तक लेखक जम्हाइयाँ लेने लगता और ऊबकर बार-बार घड़ी की ओर देखता तथा 'नाउन' और 'एडजैक्टिव' में फर्क करना भी मुश्किल हो जाता था।

(ख) मास्टर जी के बीमार पढ़ने पर लेखक की ड्यूटी लगाई गई थी कि वह उनकी कोठरी में जाकर उनको सूप और दवाई देकर आएगा।

(ग) सहसा पढ़ाते-पढ़ाते मास्टर जी का गला भर्रा ने लग लगा क्योंकि बच्चों के पिता ने उन्हें यह सूचित कर दिया कि अँग्रेजी 'बी' की परीक्षा होने के बाद नहीं पढ़ाना।

(घ) मुर्गा गली के कूड़े को अपने पैरो से बिखेरता रहता और आठ-दस मिनट के बाद जोर से बाँग देता था।

(ङ) मास्टर जी ने लेखक को फाउण्टेन पेन दिया और कहा— मुझे तो अब इसकी जरूरत नहीं है। तुम इसे रखना या इसे फेंक देना।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) पाठ के आधार पर मास्टर जी की वेशभूषा निम्न प्रकार है—

वह सादा जीवन उच्च विचार पर विश्वास करते थे तथा रोज अपने कपड़ों के ऊपर एक मोटा गेरुआ कंबल डाले रहते थे। और आँखों से चश्मा लगाते थे। मास्टर जी की वेशभूषा उनके सादगीपूर्ण और अनुशासित जीवन का प्रतीक थी।

(ख) मास्टर जी जिस गली में रहते थे उस गली में भयानक दुर्गंध आती थी। जहाँ वह रहते थे वह गली पूरे शहर का कूड़ाघर थी। एक मुर्गा गली के कूड़े को अपने पैरों से बिखेरता रहता और हर आठ-दस मिनट के बाद जोर से बाँग देता था।

(ग) लेकिन की बहिन आँखों से इशारे करती थी जब मैं जम्हाइयाँ लेता था। 'नाउन' और 'एडजैक्टिव में फर्क करना मुश्किल हो जाता था। जब मास्टर जी एक घण्टे की जगह डेढ़ या दो घण्टे पढ़ाते थे तब मेरी बहिन कहती थी कि मैं मास्टर जी से तेरी शिकायत कर दूँगी।

(घ) लेखक के द्वारा जब मास्टर जी की कोठरी तलाशी गई तो उसमें ज्यादा सामान नहीं था। एक दिन जब थोड़ी देर के लिए मास्टर जी की आँख लगी, तो लेखक ने कोठरी में रखे उनके सारे सामान की जाँच की। कपड़ों के नाम पर चंद चिथड़े थे जो हम उनके शरीर पर देखा करते थे। डंडे और कमंडल के अतिरिक्त उनकी संपत्ति में कुछ पुरानी फटी हुई किताबें थीं, जिनमें से लेखक केवल 'भगवद्गीता' का शीर्षक ही पढ़ सका। पुस्तकें बँगला में थीं।

(ङ) शिक्षक वर्ग समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है। समाज को उसके प्रति भी संवेदनशील होना चाहिए। उसके द्वारा दी जाने वाली शिक्षा अनमोल है। जिसे पैसे से नहीं खरीदा जा सकता। अपने छात्रों को जीवनपयोगी शिक्षा प्रदान करने वाला शिक्षक स्वयं कैसी स्थिति में रहने को बाध्य हो सकता है। लेकिन शिक्षक बच्चों को सही मार्गदर्शन देता है। वह भविष्य में शिक्षक वर्ग के लिए एक ईमानदार वारिस चाहता है।

पाठ से आगे

नोट—छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) ×, (ख) ✓, (ग) ×, (घ) ×, (ङ) ✓।
2. (क) चापलूसी—मुझे अपना काम निकलवाने के लिए दूसरों की खुशादम करनी पड़ती है।
   (ख) दान—गरीबों को खाना खिलाना खैरात का काम है।
   (ग) साधुओं का पात्र—साधु के हाथ में एक कमंडल है।
   (घ) क्रोध का संकेत—गुस्से में गुरुजी ने अपनी त्यौरियाँ चढ़ा लीं।
   (ङ) प्रतियोगिता—दोनों छात्रों के बीच पढ़ाई में कड़ी स्पर्धा है।
3. (क) निश्चित, अनिश्चित,
   (ख) भी आँखों ही आँखों,
   (ग) कमंडल, किताबें,
   (घ) आँखें,
   (ङ) स्पर्धा, फाउण्टेन पेन।

व्याकरण-बोध

1. (क) चापलूसी करना—किसी की खुशामद करने से नौकरी मिलेगी।
   (ख) गंभीर होकर ध्यान देना—चोर के डर से उसने कोने में दम साध ली।
   (ग) क्रोध का संकेत—उसकी बात सुनते ही माँ की तैयारियाँ चढ़ गईं।
   (घ) रुआँसा होना—बात कहते-कहते लीला का गला भर्रा गया।
   (ङ) प्रोत्साहित करना—मोना ने अच्छे अंक लाने पर उसकी पीठ थपथपाई।
   (च) भावुक होना—विदाई के समय मेरी आँखे भर आईं।
   (छ) मना कर देना — उसने उधार चुकाने के नाम पर मुझे अँगूठा दिखा दिया।
2. (क) वह बैठक में पहुँच जाते थे।
   (ख) बहन का ध्यान उसकी ओर होता था।
   (ग) मैं भी आँखों ही आँखों से उसकी खुशामद कर लेता था।
   (घ) उनके बारे में हम ज्यादा नहीं जानते थे।
   (ङ) उन्होंने मास्टर जी के सारे सामान की जाँच कर डाली।
3. (क) विधानवाचक वाक्य
   (ख) संकेतवाचक वाक्य
   (ग) नकारात्मक वाक्य
   (घ) साधारण वाक्य
   (ङ) प्रश्नवाचक वाक्य

रचनात्मक गतिविधियाँ

नोट—छात्र स्वयं करें।

11 पेड़ों के संग बढ़ना सीखो

मौखिक

(क) कविता के रचियता का नाम सवेश्वरदयाल सक्सेना हैं।

(ख) कवि धरती पर बाग-बगीचा लगाने के लिए धरती पाना चाहता है।

(ग) आज सभ्यता हिंसक बन गई है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) कवि बहुत दिनों से धरती पाने की सोच रहा था।
(ii) कवि उस धरती पर बाग-बगीचा लगाना चाहता है।
(iii) तालाब, सरोवर।

(ख) (i) (ख) ✓ (ii) (घ) ✓ (iii) (ग) ✓

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) कवि धरती पाना चाहता है।

(ख) जलाशय में ताजी हवा अपना हर अंग भिगोना चाहती है।

(ग) पेड़ों को इंसान काट रहा है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) उपवन फूल, फलों से लदे हुए हों।

(ख) शाखाएँ कटने पर पेड़-पौधे शिशुओं जैसा रोते हैं।

(ग) दुनिया को बच्चे और पेड़ पौधे हरा-भरा रखते हैं।

(घ) पेड़ों की कटाई और प्रदूषण के कारण हवा जहरीली हो गई, जो इंसानों के फेफड़ों में जहर भर रही है। अत: सभ्यता इंसानों को जहर बाँट रही है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) कविता के माध्यम से कवि ने पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए पेड़-पौधों के प्रति जागरूक रहने का भाव स्पष्ट किया है। इसके माध्यम से कवि हमें यह बताना चाहता है कि वृक्ष हमारे लिए अत्यन्त उपयोगी हैं।

(ख) कवि मनुष्यों से विनती कर रहा है कि कभी उस दुनिया को मत खोना अर्थात् कभी पेड़ों को न काटने की बात कर रहा है। कवि निवेदन करता है कि यदि हम पेड़ों को काटेंगे तो चिड़ियाँ अपने घर खो देंगी। हर पत्ती हमारी उम्मीदों, सपनों और आशाओं का प्रतीक है। जब पेड़ काटे जाते हैं तो हमारी उम्मीद और सपने भी टूट जाते हैं। अर्थात् कवि मनुष्यों से पेड़ों को न काटने की बात कर रहा है जिससे वे पेड़ लगाएँ और धरती को हरा-भरा रखें।

(ग) कवि की इच्छा है कि कुछ जमीन प्राप्त करके बाग-बगीचा लगाऊँ अर्थात् वह चाहता है कि किसी जमीन पर अपने सपनों को बो सके। जब वह अपनी मेहनत से धरती को उर्वर बनाए, तो वहाँ फल-फूल खिलें, चिड़ियाँ गाने लगें और ताजगी से भरी हवा बहने लगे। यह एक आदर्श प्रकृति की छवि है, जो खुशहाली समृद्धि और शांति का प्रतीक है।

(घ) ''वे दुष्कर्मों का फल चखते हैं'' पंक्ति के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि जो व्यक्ति अपने कर्मों के परिणाम को समझने में असमर्थ हैं वे लोग अपने गलत कार्यों का परिणाम भोगते हैं। वे पेड़ों की अंधाधुंध कटाई के परिणाम को नहीं समझते। इन कर्मों का फल न केवल पर्यावरण पर, बल्कि समाज पर भी बुरा असर डालता है।

(ङ) प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि मनुष्यों से यह विनती कर रहे है कि वे प्रकृति और पर्यावरण का संरक्षण करें क्योंकि पेड़ पृथ्वी के जीवन के लिए आवश्यक हैं। वे यह संदेश दे रहे हैं कि बच्चों और पेड़ों के माध्यम से दुनिया हरा-भरा और जीवनदायी बनी रहती है।

कविता से आगे

नोट—छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. **बच्चे** और **पेड़** दुनिया को **हरा-भरा** रखते हैं। नहीं समझते जो, वे **दुष्कर्मों** का **फल** चखते हैं। आज **सभ्यता** वहशी बन, **पेड़ों** को काट रही है। **जहर फेफड़ों में भर**, इन्सानों को बाँट रही है।

भाषा-सौन्दर्य

छोटा-सा, बड़ा-सा, खुला-सा, ऊँचा-सा (कविता से अलग)

व्याकरण-बोध

1. (क) भूमि — धरा
   (ख) उपवन — वाटिका
   (ग) पुष्प — कुसुम
   (घ) तालाब — सरोवर
   (ङ) खग — विहंग
   (च) वृक्ष — तरु
2. (क) ज्यादा — (ख) बदबू
   (ग) बासी — (घ) अशांत
   (ङ) पाना — (च) सत्कर्म

रचनात्मक गतिविधियाँ

नोट—छात्र स्वयं करें।

12 फ्लॉप हो गई शरारत

मौखिक

(क) लेखक को बचपन में शरारत के दौरे पड़ते थे।

(ख) छुटकी संतरे की खट्टी-मीठी गोली चूसती आ रही थी।

(ग) सुनहले फ्रेम वाले शीशे का सोलह नंबर था।

(घ) लेखिका ने मौजीराम को पॉकेट मनी से पैसे देने की बात कही।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) लेखिका का दिमाग हरकत में आ गया।

(ii) लेखिका के दिमाग से शरारती आइडिया उछलकर बाहर आया।

(iii) खुफियागीरी शब्द का अर्थ जासूसी है।

(ख) (i) (घ) ✓ (ii) (ख) ✓ (iii) (क) ✓

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) लेखिका खतरनाक या अशिष्ट शरारतें नहीं करती थी।

(ख) लेखिका को मौजीराम को परेशान करने में मजा आता था।

(ग) छुटकी संतरे वाली खट्टी-मीठी गोली चूसती हुई आई।

(घ) लेखिका अपनी चतुराई से शीशा पाने में सफल हुई।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) पर्ची देने के बाद लेखिका को घबराहट हुई कि पोल खुल गई और छुटकी पकड़ी गई तो लेने के देने पड़ जाएँगे।

(ख) चाचा जी ने लेखिका की करामात को तिकड़म नाम दिया।

(ग) जब थोड़ी ही देर में छुटकी अपने हाथों में फ्रेम वाला शीशा पचास पैसे में लेकर आ गई तो लेखिका की खुशी का ठिकाना ना रहा।

(घ) जब चाचा जी ने मेरे बुद्धि के चमत्कार को तिकड़ी कहा और कहा तुमने तो दुकानदार को धोखा दिया है तब मेरी 'स्टार-इमेज' धूल फाँकने लगी।

(ङ) चाचाजी के अनुसार असली चमत्कार उस बच्चे की बुद्धि का चमत्कार, जिसकी वजह से एक बहुत बड़ी ट्रेन दुर्घटना होते-होते बच गई थी।

(च) लड़के ने ट्रेन दुर्घटना रोकने के लिए अपनी लाल रंग की शर्ट को झंडे में बाँधा और दौड़ता हुआ पटरी के किनारे पर खड़ा हो गया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) छुटकी की बात सुनकर लेखिका को शरारत सूझी और उसने छुटकी से पूछा, ''सुन, तुझे कुछ याद है? उस चार्ट में सबसे अच्छी चीज कौन-सी है और उसका क्या नंबर है? तब छुटकी ने बताया एक छोटा-सा सुनहले फ्रेमवाला शीशा उसका नंबर सोलह है, फिर से तू पचास पैसे लेकर जा और कोई भी पुड़िया खींच लेना फिर जल्दी से यह नंबर दुकानदार को दिखा देना। इस तरह लेखिका की खुशी का ठिकाना ना रहा, जब थोड़ी ही देर में छुटकी अपने हाथों में शीशा चमकाती हुयी विजयी भाव से लेखिका के पास आ गई। इस प्रकार, लेखिका सुनहले फ्रेमवाला शीशा पाने में अपनी चतुराई से सफल हुई।

(ख) चाचा जी ने लेखिका और छुटकी को बुद्धि के चमत्कार में और तिकड़ी में अन्तर बताया— कहा कि किसी अच्छे कार्य के लिये किया गया कार्य बुद्धि का चमत्कार और चतुराई से किया गया कार्य धोखा देना होता है। तुम्हें उस बच्चे की कहानी याद होगी जिसने ट्रेन में हजारों बैठे हुये यात्रियों की जान बचाई। उस बच्चे ने तुरन्त अपनी

लाल कमीज को उतारकर एक लंबी लकड़ी में झण्डे की तरह बाँधा और पटरी के किनारे पर खड़ा होकर झंडी की तरह शर्ट को हिलाता रहा और उसने ट्रेन की दुर्घटना होने से बचाया। इस बच्चे की करामात बुद्धि का चमत्कार कहा जाता है। और तुमने मौजीराम को धोखा देकर शीशा प्राप्त करा वह तिकड़म कहा जाता है।

पाठ से आगे

नोट—छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) ×, (ख) ✓, (ग) ×, (घ) ×, (ङ) ✓।
2. (क) मुझे एकाएक, आगा-पीछा
   (ख) खुशी का
   (ग) करामात, शेखी बघारी
   (घ) पानी-पानी
   (ङ) सुनहले फ्रेम।
3. (क)-(घ), (ख)-ख), (ग)-(ङ), (घ)-(ग), (ङ)-(क), (च)-(छ), (छ)-(च)।
4. (क) अच्छा-बुरा—शीतल ने मोहन से लड़ाई करते समय आगा-पीछा नहीं सोचा।
   (ख) शरारत—बच्चों ने स्कूलों में खुराफात की।
   (ग) जासूसी—मास्टर जी ने छात्र की खुफियागीरी की।
   (घ) चालाकी—मोनू ने परीक्षा के पास होने के लिए तिकड़मबाजी करी।
   (ङ) सुनसान—रात के समय बाहर का इलाका वीराना लगता है।

व्याकरण-बोध

1. (क) शरारत (ख) खतरनाक
   (ग) फिरकिनी (घ) खुफियागीरी
   (ङ) थपथपाते।
2. (क) प्रश्नवाचक वाक्य
   (ख) संदेहवाचक वाक्य
   (ग) विधानवाचक वाक्य
   (घ) संकेतवाचक वाक्य
   (ङ) निषेधवाचक वाक्य
3. (क)-(v), (ख)-(vi), (ग)-(iv), (घ)-(ii), (ङ)-(iii), (च)-(viii), (छ)-(i), (ज)-(vii)
4. (क) शिष्ट (ख) बड़ी
   (ग) बुरा (घ) दुखी
   (ङ) अनुपयोग।
5. (क) ''और अगर पुड़िया में कोई नंबर नहीं निकला तो?'' मैंने छुटकी से पूछा।
   (ख) शाम को अचानक छोटे चाचा घर आ गए।
   (ग) मिनटों में मेरी-'स्टार-इमेज' धूल फाँकने लगी थी।
   (घ) जी चाचा जी! लेकिन अब! हम क्या करें?

रचनात्मक गतिविधियाँ

नोट—छात्र स्वयं करें।

13 जो देखकर भी नहीं देखते

मौखिक

(क) प्रस्तुत पाठ की लेखिका हेलेन केलर हैं।

(ख) डेढ़ वर्ष की आयु में लेखिका ने अपनी सुनने व देखने की शक्ति खो दी थी।

(ग) जंगल में घूमने लेखिका की मित्र गई थी।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) लेखिका मित्रों की परीक्षा लेती है।
(ii) उनकी मित्र जंगल की सैर करके वापस लौटी थी।
(iii) आश्चर्य।

(ख) (i) (ग) ✓ (ii) (क) ✓ (iii) (ख) ✓

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) अपनी मित्र का जवाब सुनकर हेलेन को आश्चर्य इसलिये नहीं हुआ क्योंकि वह इन जवाबों की आदी हो चुकी थी।

(ख) नेत्रहीन होते हुए भी हेलेन भोजपत्र एवं चीड़ को स्पर्श करके पहचान लेती थी।

(ग) लेखिका को फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह को छूने और उनी घुमावदार बनावट महसूस करने में अपार आनंद मिलता है।

(घ) पाठ में ''प्रकृति का जादू'' प्रकृति के सौन्दर्य तथा उसमें हो रहे निरन्तर बदलाव को कहा गया है, जो हमें दिन-प्रतिदिन अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) हेलेन केलर को ऐसा इसलिए लगता है क्योंकि लोगों की संवेदना खत्म होती जा रही है। हमारे पास जो है हम उसकी कद्र नहीं करते हैं और जो नहीं है उसे पाने की इच्छा रखते हैं।

(ख) हेलन केलर प्रकृति की कुछ चीजों को छूकर और सुनकर पहचान लेती है। जैसे— भोज-पत्र के पेड़ की चिकनी छाल और चीड़ की खुरदरी छाल, वसंत के दौरान टहनियों में नई कलियाँ, फूलों की मखमली पंखुड़ियाँ। इसके साथ ही अपनी अंगुलियों के बीच झरने के पानी को बहते हुए महशूस कर आनंदित हो उठती है। चिड़िया के मधुर स्वर को सुनकर लेखिका हेलन केलर पहचान लेती थी।

(ग) दृष्टि हमारे लिए ईश्वर का अशीर्वाद है। हमें ईश्वर के इस वरदान की कद्र करनी चाहिये और इस वरदान के माध्यम से हम अपनी जिंदगी को खुशियों से भर सकते हैं।

(घ) लेखिका जब झरने के पानी में अंगुलियाँ डालकर उसके बहाव को महसूस करती है, तब वह आनंदित हो उठती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) लेखिका ने पाठ में उन मनुष्यों के स्वभाव की चर्चा की है, जो प्रकृति और जीवन की सुंदरता को देखकर भी उसे महसूस नहीं करते। उन्होंने इस बात पर जोर दिया है कि बहुत से लोग, जिनके पास देखने, सुनने और महसूस करने की क्षमता है, वे इन इंद्रियों का उपयोग जीवन की सच्ची सुंदरता को सराहने में नहीं करते।

1. **प्रकृति की सुंदरता**—जो लोग हर दिन पेड़ों, फूलों, सूरज की रोशन और चाँद की सुंदरता को देखकर भी उसे अनुभव नहीं करते।
2. **सामाजिक संबंधों का महत्व**—जो लोग अपने आस-पास के लोगों की भावनाओं और संबंधों को महत्व नहीं देते।
3. **जीवन के छोटे-छोटे आनंद**—जो लोग जीवन की छोटी-छोटी खुशियों को पहचानने और उन्हें सराहने में असफल है।

अत: लेखिका ने यह संदेश दिया कि हमें अपने इंद्रियों का उपयोग जीवन की गहराई और सुंदरता को महसूस करने के लिए करना चाहिए।

(ख) हेलन केलर ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि जो लोग किसी चीज को निरंतर देखने के आदी हो जाते हैं वे उनकी तरफ अधिक ध्यान नहीं देते हैं। लेखिका का यह विचार इस बात को दर्शाता है कि आँखों से देखना केवल शारीरिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि किसी भी वस्तु या घटना को समझने, महसूस करने और आत्मसात करने की एक मानसिक और आत्मिक प्रक्रिया भी है। वे मानती थी कि सच्ची ''दृष्टि'' सिर्फ आँखों से नहीं होती, बल्कि हमारी सोच, समझ और संवेदनाओं से भी जुड़ी होती है।

(ग) हेलेन केलर के अनुसार, जो लोग साधारण चीजों को सिर्फ भौतिक रूप से समझते हैं, वे अकसर उन चीजों की गहराई या महत्व को नहीं समझ पाते। उनके लिए जो चीजें साधारण या सामान्य लगती हैं, वे वास्तव में एक ''नियामत'' होती है। इस तरह से, हेलन केलर के अनुसार, किसी भी चीज को ''साधारण'' मानकर न देखना चाहिए, क्योंकि हर वस्तु और अनुभव का अपना एक उद्देश्य और गहरा अर्थ हो सकता है, जिसे हमें समझने की आवश्यकता है। इस नियामत से वे सारी चीजें संभव हैं जिनसे जीवन का उद्देश्य पूरा किया जा सकता

है। अपने जीवन को मार्गदर्शन भी किया जा सकता है।

(घ) इस पाठ से हमें शिक्षा मिलती है कि मुश्किलें और चुनौतियाँ केवल जीवन का हिस्सा हैं। अगर हम अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति, संघर्ष और सकारात्मक दृष्टिकोण को अपनाते हैं तो हम किसी भी कठिनाई को पार कर सकते हैं और अपनी मंजिल तक पहुँच सकते हैं।

पाठ से आगे

नोट—छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) ×, (ख) ✓, (ग) ×, (घ) ✓, (ङ) ×।

व्याकरण-बोध

1. (क) मजेदार—दादी माँ ने एक रोचक कहानी सुनाई।
   (ख) भाग्यशाली — मयंक की शादी होते ही जॉब लग गई, वह बहुत खुशनसीब है।
   (ग) नजारा—मैंने पहाड़ों पर समाँ देखा।
   (घ) सामर्थ्य—सभी लोगों की अपनी अलग-अलग क्षमताएँ होती हैं।
   (ङ) सहानुभूति—सरकार ने लोगों को संकट में देखकर गहरी संवेदना व्यक्त की।
2. (क) बिस्तर — कपड़ा
   (ख) तेल — पिघला हुआ गुड़
   (ग) दीवार — लोहा
   (घ) घड़ा — फर्श
   (ङ) फर्श — पेड़ की छाल
3. **छूकर**—फूलों की पंखुड़ियों को चीड़ की खुरदरी छाल।
   सुनकर—चिड़ियाँ के मधुर स्वर मधुर गाने।
   चखकर—मीठा, तीखा, खट्टा।
   सूँघकर—फूलों की खूशबू वातावरणीय महक।
4.

	लिंग	वचन
(क)	स्त्रीलिंग	एकवचन
(ख)	स्त्रीलिंग	बहुवचन
(ग)	पुल्लिग	एकवचन
(घ)	पुल्लिग	एकवचन
(ङ)	स्त्रीलिंग	एकवचन

5. (क) सैकड़ों = संख्यावाचक
   रोचक = गुणवाचक
   (ख) चिकनी = गुणवाचक
   (ग) नई = गुणवाचक
   (घ) मखमली = गुणवाचक
   आपार = परिमाणवाचक
   (ङ) मधुर = गुणवाचक

रचनात्मक गतिविधियाँ

नोट—छात्र स्वयं करें।

14 दोहे एवं साखियाँ

मौखिक

(क) रहीम का पूरा नाम 'अब्दुर्रहीम खान खाना' था।

(ख) कबीर की रचना 'बीजक' के तीन भाग हैं।

(ग) रहीम की प्रमुख रचनाएँ— मदनाष्टक, बरवै नायिका भेद, नगर शोभा।

(घ) कबीर मीठी वाणी बोलने की सलाह देते हैं।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) कवि अपने मन की पीड़ा को छिपाकर रखने के लिए कह रहा है।
(ii) दूसरे का दु:ख सुनकर लोग मजाक बनाते हैं।
(iii) व्यथा (पीड़ा)।

(ख) (i) (ग) ✓ (ii) (ग) ✓ (iii) (ग) ✓

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) रहीम ने अपने दुख (पीड़ा) को छिपाकर रखने की सलाह दी है।

(ख) हमारे मन की व्यथा सुनकर लोग मजाक उड़ाते हैं।

(ग) कबीरदास निदंक को अपने पास रखने की कह रहे हैं।

(घ) शिष्य के दोषों को गुरु दूर करता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) रहीम जी के अनुसार कोई भी व्यक्ति जन्म से ही यशस्वी नहीं होता। दुनिया में वैर, अतीत, अभ्यास और यश ये सभी चीजें धीरे-धीरे अपने कर्म और समय के साथ बढ़ती हैं।

(ख) कबीर ने तिनके की निंदा करने से इसलिए मना किया है क्योंकि वैसे तो तिनके का कोई असतित्व नहीं होता। उसे पैरों से कुचला जाता है लेकिन यदि कोई तिनका हमारी आँख में पड़ जाता है तो बड़ा कष्टदायक होता है। अत: सबके साथ नेक व्यवहार करना चाहिए।

(ग) हमें अपना दु:ख दूसरों तक इसलिए नहीं बताना चाहिए क्योंकि लोग बाद में हमारा मजाक बनाते हैं। अर्थात् हमें अपना दु:ख लोगों के समक्ष प्रकट करने से कोई फायदा नहीं है।

(घ) कबीर ने गुरु और शिष्य को कुम्हार और घड़े की उपमा दी है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) रहीम के अनुसार, हमें अपने जीवन में कुछ कार्यों से बचना चाहिए, जो हमारे नैतिक और सामाजिक जीवन पर नकारात्मक प्रभाव डालते है।

1. **मन की व्यथा दूसरों से साझा नहीं करनी चाहिए—**रहीम कहते है कि अपने मन के दु:ख को दूसरों से साझा करने का कोई लाभ नहीं है। लोग आपकी समस्या का हल निकालने की बजाय उसका मजाक उड़ाने लगते हैं।
2. **अपनी प्रशंसा स्वयं नहीं करनी चाहिए—** रहीम कहते हैं कि सच्चे महान व्यक्ति अपनी प्रशंसा स्वयं नहीं करते। वे अपने गुणों और कर्मों के माध्यम से अपनी पहचान बनाते हैं। जैसे हीरा कभी खुद नहीं कहता कि वह बहुमूल्य है, वैसे ही हमें अपने कर्मों को बोलने देना चाहिए। आत्मप्रशंसा से व्यक्ति का सम्मान कम होता है और उसे अहंकारी समझा जाता है।

(ख) निंदक को समीप रखने के लिए कबीर ने कहा है कि हमें निंदा करने वाले व्यक्ति से हमें कई लाभ मिलते हैं। उनके अनुसार निंदा करने वाला व्यक्ति हमारे दोषों को उजागकर करता है और हमें उन्हें सुधारने का अवसर देता है—

निंदक को पास रखने के लाभ—

1. आत्म-सुधार का अवसर मिलता है।
2. अहंकार समाप्त होता है।
3. संबंध बेहतर बनते हैं।
4. सत्य का सामना करने का साहस रहता है।
5. व्यक्तित्व में निखार आता है।

अत: निदंक को पास रखने से आत्म-सुधार, विनम्रता, और सहनशीलता के गुण विकसित होते हैं, जो हमारे जीवन को अधिक संतुलित और सकारात्मक बनाते हैं।

(ग) रहीम के अनुसार सच्चा मित्र वही होता है, जो कठिन समय में आपकी सहायता करे, बिना स्वार्थ के आपका साथ दे और आपकी खुशी और दुख में समान रूप से शामिल हो।

सच्चे मित्र की विशेषताएँ—

1. संकट में साथ देने वाला हो।
2. स्वार्थ रहित मित्रता करने वाला हो।
3. समझदार और मार्गदर्शन करने वाला हो।
4. सुख-दुख में समान रूप से सहभागी हो।
5. विश्वास का आधार हो।

अत: सच्चा मित्र वहीं होता है जो विपत्ति आने पर हमारा साथ दें।

(घ) ''गठि-गठि काढै खोट'' से तात्पर्य यह है कि अध्यापक जब अपने शिष्य को ज्ञान प्रदान करता है तब वह उसे पीटता है और पुन: ज्ञान देता है, इस प्रकार वह उसकी कमियों को दूर करता है अर्थात् कमियों को दूर करना ही इसका वास्तविक अर्थ होगा।

अत: शिष्य के भीतर भी कई कमजोरियाँ और दोष होते हैं, जो उसे सही मार्ग पर चलने के लिए चुनौतीपूर्ण बनाते हैं। ऐसे में गुरु शिष्य को अपने सानिध्य में रखकर

उसे सही मार्गदर्शन देकर जीवन के मार्ग में चलने के काबिल बनाता है। इसके लिए उसे कुछ यातनाएँ भी देता है जो उसके हित में होती हैं।

(ङ) कबीर अपनी पंक्ति ''घास न निंदिए के माध्यम से'' कह रहे हैं जो चीज हमें साधारण और तुच्छ लगती हैं, उसका मूल्य हम तब तक नहीं समझते, जब तक उसकी आवश्यकता न पड़ जाए। यह जीवन में उन साधारण, लेकिन महत्वपूर्ण चीजों और संबंधों का प्रतीक है जिन्हें हम अनदेखा करते हैं।

कबीरदास जी अपनी इस छोटी-सी पंक्ति के माध्यम से सामाजिक बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया है। उन्होंने घास के तिनके के माध्यम से समाज के उस छोटे और कमजोर लोगों की अवहेलना न करने की बात की है जो समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ऐसे लोगों की निंदा समाज में घातक परिणाम खड़े कर सकती है।

कविता से आगे

नोट—छात्र स्वयं करें।

भाषा-सौन्दर्य

नोट—छात्र स्वयं करें।

व्याकरण-बोध

1. बिथा — व्यथा साँचे — सच्चे
   मीत — मित्र जस — यश
   सीतल — शीतल सिष — शिष्य
2. (क) मित्र दोस्त
   (ख) कीमत दाम
   (ग) दुश्मन शत्रु
   (घ) पैर चरण
   (ङ) अस्त्र कटार
   (च) घड़ा गागर

रचनात्मक गतिविधियाँ

नोट—छात्र स्वयं करें।

15 हींगवाला

मौखिक

(क) हींग बेचने वाला व्यक्ति खान था।

(ख) सावित्री के तीन बच्चे थे।

(ग) छोटे बच्चे के कानों में मलाई की बरफ वाले की आवाज गूँज रही थी।

(घ) श्यामू सावित्री का नौकर था।

(ङ) दंगों में से बच्चों को बचाकर खान लाया।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) खान ने हींग के कई-छोटे डिब्बे खोलकर सावित्री के सामने रख दिए।
(ii) खान हींग बेच रहा था।
(iii) डिब्बा।

(ख) (i) (ख) ✓ (ii) (क) ✓ (iii) (घ) ✓

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) खान हींग बेचने आया था।

(ख) खान अपने देश जा रहा था।

(ग) होली के अवसर पर शहर में दंगे होने लगे।

(घ) बच्चे काली का जुलूस देखने जाना चाहते थे।

(ङ) सावित्री के बच्चे जुलूस से नहीं लौटकर आये थे इसलिए बेचैन हो रही थी।

लघु उत्तरयी प्रश्न

(क) खान सावित्री से हींग खरदीने की जिद इसलिए कर रहा था क्योंकि वह अब अपने देश को जा रहा था और बहुत दिनों में लौटेगा, हींग थोड़ी-सी बची थी और उसे बोहनी करनी थी।

(ख) उन्हें यही लग रहा था कि माँ ने खान को तो इतने पैसे दे दिए, यदि हम माँगे तो कभी न दें। इसलिए तीनों बच्चे नाराज हो रहे थे।

(ग) सावित्री ने बच्चों को पैसों का, खिलौना का सिनेमा का प्रलोभन दिया।

(घ) देहाती ने सावित्री को बताया, ''दंगा हो गया माँ जी, दंगा।

(ङ) श्यामू जिद्दी व लापरवाह व्यक्ति था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) खान और सावित्री का संबंध माँ और बेटे जैसा था। सावित्री खान को हींग बेचने वाला नहीं बल्कि परिवार का एक सदस्य मानती

थी। यह सम्बन्ध तब और मजबूत हो गया जब सावित्री के बच्चों को फँसे दंगों में से वह बचा कर लाया। अत: खान और सावित्री का संबंध माँ बेटे जैसा अटूट सम्बन्ध था।

(ख) सावित्री के बच्चों में झगड़ों की नौबत इसलिए आ गई क्योंकि उन्होंने कहा कि माँ अगर हम पैसो माँगे तो नहीं देती और खान को आपने इतने पैसे दे दिये। तब माँ ने कहा मैं छह-छह आने सबको देती हूँ। परन्तु हिसाब केवल सोलह आने थे जिसमें छह आने रतन, छह मुन्नी के फिर छोटे के लिए चार आने ही बचे। इसी बात पर छोटा बिखर गया और दोनों भाइयों में झगड़े की नौबत आ गई।

(ग) खान सीधा-सादा, दयालु और ईमानदार व्यक्ति था। वह सावित्री के परिवार का हिस्सा-सा बन गया था। खान का स्वभाव शांतिपूर्ण और सहयोगी था। वह अपने कर्तव्यों को पूरी निष्ठा से निभाता था। अत: खान का चरित्र उन मूल्यों को दर्शाता है जो आपसी विश्वास, लगाव और सेवा-भाव पर आधारित है।

(घ) सावित्री के बच्चों को सकुशल 'खान' वापस घर लाया था। खान ने सावित्री को बताया कि दंगा जरूर हो गया था। पुलिस को झूठे फायर भी करने पड़े। अलबत्ता दंगे के दौरान कोई मरा नहीं। हाँ, कुछ लोग घायल हुए थे। वे भी पुलिस की गोली से नहीं, पत्थरों से। अब सब जगह शांति है।

पाठ से आगे

नोट—छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) ×, (ख) ✓, (ग) ✓, (घ) ×, (ङ) ✓।
2. हींग, सोना, चाँदी।
3. (क)-(v), (ख)-(iii), (ग)-(ii), (घ)-(i), (ङ)-(iv)।

व्याकरण-बोध

1. (क) उनके रोकते-रोकते खान आँगन में सावित्री के सामने पहुँच चुका था।
   (ख) देखते-देखते दिन ढल गया।
   (ग) ऐसी भीड़-भाड़ में बाहर न भेजना।
   (घ) रात के साथ-साथ नीरवता बढ़ चली।
   (ङ) बच्चो की सोच-सोचकर सावित्री का हाल बेहाल हुआ।
2. (क) पीपे (ख) दिनों
   (ग) डिब्बे (घ) बच्चे
   (ङ) दंगे (च) खिलौने
3. (क) बरामदा (ख) चबूतरा
   (ग) होली (घ) दशहरा
   (ङ) देहाती (च) सकुशल

रचनात्मक गतिविधियाँ

नोट—छात्र स्वयं करें।

16 चिड़िया और चुरुंगुन

मौखिक

(क) चुरुंगुन अपनी माँ से उड़ने की आज्ञा माँग रहा है।

(ख) चिड़ियाँ के बच्चे का नाम चुरुंगुन है।

(ग) चुरुंगुन बार-बार अपनी माँ से यह सुनना चाहता है कि उसे उड़ना आ गया है।

(घ) कविता के कवि का नाम 'हरिवंशराय बच्चन' है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) चुरुंगुन घोंसला छोड़कर बाहर आया।
(ii) घोंसले से बाहर आकर चुरुंगुन ने देखा शाखाएँ और पत्ते हिल रहे हैं।
(iii) चुरुंगुन ने सुना पत्ते आपस में बात कर रहे हैं।
(iv) चुरुंगुन अपनी माँ से पूछता है कि माँ क्या मुझे उड़ना आया?

(ख) (i) (क) ✓ (ii) (ग) ✓ (iii) (ख) ✓

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) चुरुंगुन अपनी उड़ान के बारे में अपनी माँ से पूछता है।

(ख) चुरुंगुन एक डाली से दूसरी डाली पर तथा धरती से दाना चुगकर लाने लगा।

(ग) चुरुंगुन को डालों, पत्तों पर घूमना, पत्ते का हिल-हिलकर बातें करते देखना, नीला गगन देखना तथा अपने साथियों के साथ खेलना अच्छा लगता है।

(घ) चुरुंगुन अपनी माँ से यह सवाल कर रहा है कि माँ मुझमें उड़ने की पूरी क्षमता और साहस है।

लघु उत्तरयी प्रश्न

(क) चिड़ियाँ के बच्चे ने घोंसले से निकलकर बाग, बगीचों और मैदानों को देखा। उसने वहाँ रंग-बिरंगे फूल, बच्चे, लोग, पानी, जानवर और अन्य जातियों के पक्षियों को देखा तथा हिलते हुये पत्ते आपस में बाते करते सुना। चिड़ियाँ के बच्चे को आसमान से उसकी आन्तरिक आवाज उड़ने को प्रेरित कर रही थी।

(ख) चिड़िया का बच्चा उड़ना चाहता है। वह चाहता है कि मैं भी उड़कर पूरी दुनिया को देख सकूँ।

(ग) चुरुंगुन का इंतजार उसका लक्ष्य कर रहा है जो उसे अनंत आकाश में उड़ने को प्रेरित कर रहा है।

(घ) चुरुंगुन का मन उसे बार-बार उड़ने को कहता है।

(ङ) जी हाँ, मैं इस कविता को एक नया शीर्षक दे सकता हूँ। कविता में चिड़िया के बच्चे की आत्म-खोज, उड़ने की इच्छा और लक्ष्य के लिए संघर्ष का वर्णन है। कविता का उपयुक्त नया शीर्षक ''लक्ष्य की ओर पहला कदम'' है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) ''चिड़िया और चुरुंगुन'' कविता का भाव यह है कि इसमें माँ और बच्चे के बीच का गहरा स्नेह और लक्ष्य की ओर बढ़ने की जिज्ञासा तथा आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने के लिए हर व्यक्ति को पहले भीतर की आवाज और डर को समझना और पार करना होता है। यह आंतरिक आवाज आत्मविश्वास और साहस का प्रतीक है। जहाँ प्राणी को अपने बल पर आगे बढ़ने का अनुभव करना होता है।

(ख) कविता में कवि ''नहीं चुरुंगुन, तू भरमाया'' यह वाक्य बार-बार कहता है क्योंकि वह चिड़िया के बच्चे चुरुंगुन को यह समझाना चाहता है कि वह अभी अपने माँ के संरक्षण में है और अपनी माँ की देख-रेख में सुरक्षित है। उसने अभी कामयाबी की वास्तविक उड़ान नहीं भरी।

(ग) चुरुंगुन ने अपनी माँ को उड़ने देने के लिए ये बाते कही-मुझे लगता है कि नीला आकाश मुझे पुकार रहा है। मेरे हृदय के अंदर से आवाज लगा रही है कि अपने पंखों को चलाओ और बिना रुके तुम आसमान में उड़ जाओ, खुद पर भरोसा करो और उड़ जाओ। अत: चुरुंगुन अपने घोंसले से बाहर की दुनिया देखना और उड़ना चाहता है। वह बार-बार अपनी माँ से पूछता है कि माँ क्या मैं उड़ने के लिए तैयार हूँ।

(घ) चुरुंगुन को उसकी माँ ने तब उड़ने की आज्ञा दी जब वह उड़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हो गया। माँ ने पहले उसे धैर्य और हिम्मत सिखाई, और जब उसे लगा कि उसका बच्चा जिम्मेदारी निभाने और संघर्ष करने के लिए सक्षम है, तब उसे उड़ने की अनुमति दी।

कविता से आगे

नोट—छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) ×, (ख) ✓, (ग) ✓, (घ) ✓, (ङ) ×।
2. मैं नीले **अज्ञात गगन की,**
   सुनता हूँ, अनिवार पुकार
   कोई अंदर से कहता हैं।
   उड़ जा, **उड़ता जा पर मार**

व्याकरण-बोध

1. (क) घ्+ओं+स्+अ+ल्+आ
   (ख) ह्+इ+ल्+अ+म्+इ+ल्+अ
   (ग) आ+प्+अ+स्+अ
   (घ) म्+उ+झ्+अ+क्+ओ,
   (ङ) च्+उ+र्+उं+ग्+न्+अ
   (च) क्+अ+ल्+इ+य्+आँ
   (छ) फ्+उ+न्+अ+ग्+ई
   (ज) अ+न्+इ+व्+आ+र्+अ
   (झ) उ+ड़्+अ+न्+आ
   (ञ) क्+आ+य्+आ

2. (क) पर्ण — पत्र
   (ख) जननी — माता
   (ग) पुष्प — कुसुम
   (घ) देह — शरीर
   (ङ) सखा — दोस्त
   (च) वृक्ष — पेड़
   (छ) धरा — भूमि
   (ज) आकाश — नभ

3. (क) घोंसले (ख) डाल
   (ग) पत्ता (घ) डालियाँ
   (ङ) कलियाँ (च) कच्चा
   (छ) गाने (ज) दाने

4. (क) शाखा—पेड़ की डाल पर तोता बैठा है।
   डालना (क्रिया)—किसान ने खेत में बीज डालना शुरू किया है।
   (ख) पुष्प—बाग में फूल खिल रहे हैं।
   खिलना (क्रिया)—श्याम के बगीचे में सुन्दर पुष्प फूले हैं।
   (ग) जड़—कामयाबी के वास्तविक मूल को समझना जरूरी है।
   वजह, कारण—पहले झगड़े का मूल जानना होगा।
   (घ) पंख—मोर अपने पर फैला रहा है।
   दूसरा—श्याम परदेश गया है।

रचनात्मक गतिविधियाँ

नोट—छात्र स्वयं करें।

17 कमला की होली

मौखिक

(क) पाठ में होली त्योहार का वर्णन किया गया है।

(ख) कार्यक्रम में पधारे मुख्य अतिथि का नाम मनदीप सिंह है।

(ग) प्रस्तुत पाठ के कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य होली का दहन है।

(घ) नेताजी ने अपने मन का कचरा दहन किया।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) भाई साहब ने जो तख्ती उठाई है, उस पर आलस्य लिखा हुआ था।
(ii) सब बच्चे मंच संचालक को अपना लीडर मानते थे।
(iii) भाई साहब प्लेटफार्म पर जब ट्रेन छूट जाती है, तब पहुँचते हैं।
(iv) भाई साहब ने अपनी तख्ती को जलती हुई अग्नि में डाल दिया।

(ख) (i) (ग) ✓ (ii) (क) ✓ (iii) (ग) ✓ (iv) (ख) ✓

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) होली के उत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में मनदीप सिंह को आमंत्रित किया गया था।

(ख) नेता जी के देर से आने वाली बात सुनकर मालती ने राहत की साँस इसलिये ली क्योंकि उसे उत्सव की तैयारी के लिए थोड़ा समय और मिल जाएगा।

(ग) प्राचीन मान्यता के अनुसार होली का आग में ''प्रह्लाद'' को अपनी गोद में लेकर बैठी थी।

(घ) तनिष्का बेढंगे तरीके से काम करती थी। इसी आदत को लेकर उसकी माँ परेशान हो जाती थीं।

(ङ) नेताजी ने पीठ थपथपाकर बच्चों से कहा

अंदर-बाहर दोनों की सफाई बहुत अच्छे ढंग से हो गई।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) भाई साहब के अन्दर आलस्य का दुर्गण था। इसके कारण उनके कई काम रुक जाते थे। जैसे कि अकसर वे प्लेटफार्म पर तब पहुँचते थे जब ट्रेन छूट चुकी होती थी। अत: उनके अन्दर आलस्य था।

(ख) 'कमाल की होली' पाठ के अन्तर्गत होलिका दहन के त्योहार को ''मन का कचरा दहन'' के रूप में मनाया गया।

(ग) मालती ने अपने दुर्गुण के बारे में बताया कि वह बहुत बातूनी थी। वह दिन-भर नॉन स्टॉप पटर-पटर करती थी, बोलने में शक्ति और समय दोनों ही बर्बाद करती थी।

(घ) प्रेरित की काम करते हुए खाते रहने की आदत थी। इसलिए वह मोटा होता जा रहा था।

(ङ) नेता जी ने कहा मैं भी किसी को झूठा आश्वासन नहीं दूँगा। आज मैं भी इसे अग्नि में स्वाहा करता हूँ। इसलिए भाई साहब ने नेताजी से ऐसा कहा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) हर व्यक्ति में कोई-न-कोई दुर्गुण होता है, और उसे सुधारना आवश्यक है। मुझमें यदि आलस्य की प्रवृत्ति है, तो मैं इसकी आहुति देना चाहूँगा। यह दुर्गुण मेरे कार्यों में बाधा डालता है और समय की महत्ता को कम कर देता है। इसलिए, मैं प्रयास करूँगा कि इस दुर्गुण को छोड़कर अधिक अनुशासित और मेहनती बनूँ। इस प्रकार अपने दुर्गुणों को पहचानकर उन्हें सुधारने की कोशिश करना ही हमारे जीवन को बेहतर बनाता है।

(ख) चिराग के अन्दर ''चुगलखोर'' वाला दुर्गुण था। वह किसी की चुगली करने में, दूसरे को नीचा दिखाने, डाँट खिलाने में उसे बड़ा मजा आता था। उसने अपने इस दुर्गुण को हमेशा के लिए अग्नि में स्वाहा कर दिया।

(ग) हाँ, मुझे भी कभी-कभी असफलता से डर लगता है। यह डर तब होता है जब मैं किसी कठिन काम को शुरू करता हूँ।

अपने इस डर को दूर करने के लिए मैं यह करूँगा—

1. हर काम की अच्छे-से तैयारी करूँगा।
2. खुद पर भरोसा रखूँगा।
3. सकारात्मक सोच रखूँगा और छोटे-छोटे लक्ष्यों को हासिल करके आत्मविश्वास बढ़ाऊँगा।
4. उन लोगों से प्रेरणा लूँगा जिन्होंने कठिनाइयों का सामना करके सफलता हासिल की है।

(घ) तनिष्का बेढंगे तरीके से काम करती थी। स्वच्छता की कमी नीचे कार्टून बने है जिसमें किसी को कहीं भी थूकते तथा कचरा फेंकते हुए दिखाया गया है। तनिष्का कुछ भी खाकर, कचरा कहीं भी फेंक देती है, जिससे उसकी माँ उससे परेशान थी।

(ङ) हमें इस पाठ से यह शिक्षा मिलती है कि हमारे अन्दर जो बुराई है उसे हमको दूर करना होगा। अत: अनुचित का त्याग करके समुचित को ग्रहण करना ही होलिका-दहन की प्रथा का सही संदेश है। हम सभी में कोई-न-कोई दुर्गुण है। उस दुर्गण को पहचानकर हमें उसे छोड़ने का दृढ़-निश्चय करना चाहिए।

पाठ से आगे

नोट—छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) ×, (ख) ✓, (ग) ✓, (घ) ×, (ङ) ✓, (च) ✓।
2. (i)-(ग), (ii)-(ङ), (iii)-(च), (iv)-(क)-(v)-(ख), (vi)-(घ)।
3. (क) मेहमान—हमारे घर एक अतिथि आए, जो पिताजी के पुराने मित्र थे।
   (ख) किसी कार्य में पूरी तरह लगा रहना—बहिन की शादी में वह पूरे दिन व्यस्त रहा।

(ग) बुरी आदत—झूठ बोलना एक दुर्गुण है, जिससे व्यक्ति का विश्वास खो जाता है।

(घ) निशान या चिह्न—उसने कॉपी के पहले पन्ने पर अपना नाम अंकित किया।

(ङ) चुगली करने वाला —चुगलखोरों की वजह से घर में अनबन हो गई।

व्याकरण बोध

1. (क) म्+ओ+ह्+अ+ल्+ल्+ए
   (ख) स्+व्+आ+ग्+अ+त्+अ
   (ग) क्+आ+र्+य्+अ+क्+र्+अ+म्+अ
   (घ) क्+अ+च्+अ+र्+आ+प्+ए+ट्+ई
   (ङ) अ+न्+उ+र्+ओ+ध+अ
2. हाथ-पाँव, लाल-पीला, खाऊँ-पीऊँ, टूट-फूट
3. (क) हाथ-पाँव फूलना—डर से घबरा जाना
   प्रयोग—अचानक दादी जी की हृदय घात की बात सुनकर मेरे हाथ-पाँव फूल गये।
   (ख) लाल-पीला होना—बहुत क्रोधित होना।
   वाक्य प्रयोग—परीक्षा में नबंर कम आने पर मेरे पिताजी लाल-पीले हो गये।
   (ग) पीठ थपथपाना—शाबासी देना।
   वाक्य प्रयोग—श्याम ने मोहन की जान बचाई इसलिये पिताजी ने श्याम की पीठ थपथाई दी।
   (घ) फूला न समाना—अत्यधिक प्रसन्न होना।
   वाक्य प्रयोग—मेरी परीक्षा का रिजल्ट देखकर मेरे पिताजी फूले न समाये।
4. (क) साधारण वाक्य
   (ख) संदेहवाचक वाक्य
   (ग) प्रश्नवाचक वाक्य
   (घ) निषेधवाचक वाक्य
5. (क) भाई साहब के साथ-साथ तीन-चार बच्चों का प्रवेश।
   (ख) चलिए, शुरुआत मैं स्वयं से करता हूँ।
   (ग) अत: आज से यह 'आलस्य' इस अग्नि में स्वाहा।
   (घ) ओह हो! अब खाना कैसे हजम होगा बेचारी मालती का?
   (ङ) बैनर को अग्नि में फेंकती है।

रचनात्मक गतिविधियाँ

नोट—छात्र स्वयं करें।

18 खेल

मौखिक

(क) उपर्युक्त पाठ में वर्णित दृश्य गंगा नदी का है।

(ख) नदी किनारे खेल रहे दोनों बच्चों का नाम मनोहर और सुरवाला था।

(ग) मनोहर लकड़ी से तट के पानी को छपा-छप उछाल रहा था।

(घ) सुरवाला भाड़ बनाती है तथा मनोहर नदी के पानी को छपा-छप उछाल रहा है।

(ङ) 'खेल' पाठ के लेखक जैनेन्द्र कुमार है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) गंगा के तट पर मौन-मुग्ध संध्या का वर्णन किया गया है।

(ii) दोनों बच्चों ने बालू और पानी को अपना आत्मीय बना रखा था।

(iii) गंगा नदी का पानी बालक द्वारा पानी में चोट खाने पर भी उस बालक से मित्रता जोड़ने के लिए व्याकुल था।

(iv) बालिका अपने एक पैर पर रेत जमाकर और थोप-थोपकर एक भाड़ बना रही थी।

(ख) (i) (ग) ✓ (ii) (क) ✓ (iii) (घ) ✓ (iv) (ख) ✓

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) दोनों बच्चे संध्या के समय गंगा नदी के तट पर खेल रहे थे।

(ख) बालिका रेत से भाड़ बना रही थी।

(ग) बालिका मनोहर को अपनी कुटी में साझी बनाना चाहती थी।

(घ) मनोहर ने सुरवाला के भाड़ में एक लात मारी और उसका काम तमाम कर दिया।

(ङ) सुरवाला ने मनोहर से भाड़ बनाने के लिए कहा।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) गंगा तट पर बच्चे सारे संसार को भूलकर बालू और पानी से खेल रहे थे। बालक पानी को छपा-छप उछाल रहा था तथा बालिका आपने पैर पर बालू से भाड़ बना रही थी।

(ख) लेखक ने इस कहानी में बच्चों की मासूमियत, उनके खेल केवल मनोरंजक नहीं होता, बल्कि उसमें गहरे जीवन के मूल्य और संवेदनाएँ छिपी होती हैं।

(ग) मनोहर को नहीं पता कि भाड़ तोड़ने पर उस पर रोष और अनुग्रह किया जायेगा। मनोहर द्वारा भाड़ तोड़ने पर उसकी बहन गुस्सा होगी इस बात से वह अनजान था।

(घ) मनोहर की उम्र नौ साल तथा सुरवाला की उम्र सात साल थी।

(ङ) सुरवाला ने भाड़ के नीचे से अपना पेर बड़ी सावधानी से निकाला, जिस प्रकार के माँ नवजात शिशु को बिछौने में लिटाने के लिए धीरे से छोड़ती है।

(च) पाठ के अंत में सुरवाला ने लात से भाड़ तोड़ देती है और खुशी से नाचने लगती है तथा मनोहर भी उत्फुल्लता से कहकहा लगाने लगता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) सुरवाला अपने एक पैर पर रेत जमाकर और थोप-थोप कर एक भाड़ बनाती है और उस भाड़ के सिर पर अपनी कुटी भी तैयार की तथा एक सींक को भाड़ पर गाड़ दिया ताकि धुआँ निकले। उसने ब्रह्मांड का सबसे सम्पूर्ण भाड़ तथा विश्व की सबसे सुंदर वस्तु तैयार की। इधर मनोहर ने गंगा नदी के तट पर पानी को छपा-छप उछाल रहा था। पानी मानो चोट खाकर भी उस बालक से मित्रता जोड़ने के लिए विह्वल होकर उछल रहा था।

(ख) सुरवाला के रूठ जाने पर मनोहर अपने भीतर ही भीतर मसोस रहा है और सुरवाला से कहता है कि ''सुरी, मनोहर तेरे पीछे खड़ा है। यह बड़ा दुष्ट है। बोल मत, पर उस पर रेत क्यों नहीं फेंक देती, मार क्यों नहीं लेती! मुझमें थप्पड़ लगा— मैं अब कभी कसूर नहीं करेगा।'' सुरवाला तुम्हारा भाड़ भी बना के दूँगा। इस प्रकार मनोहर ने सुरवाला को मनाया।

(ग) भाड़ बनाते समय सुरबाला के लिए, ब्रह्माण्ड का सबसे सम्पूर्ण भाड़ और विश्व की सबसे सुंदर वस्तु तैयार हो गई थी। भाड़ के ऊपर चार चुटकी रेत धीरे-धीरे छोड़कर सुरवाला ने अपनी कुटी तैयार कर ली।

वह कल्पना करती है कि मनोहर खड़ा होकर भाड़ में पत्ते झोंकेगा। जब वह हार जाएगा, बहुत कहेगा, तभी उस कुटी के भीतर आने दूँगी। वह यदि दगा करेगा तो मैं उसे कुटी में नहीं आने दूँगी।

(घ) भाड़ बनाते समय सुरबाला ने मनोहर से कहा, मेरे लिए भाड़ वैसा ही तैयार करो जैसा मैंने बनाया था। उस पर हमारी कुटी थी, उस पर धुएँ का रास्ता था। मुझे वैसा ही भाड़ चाहिए जैसा मैंने बनाया था।

(ङ) पाठ के अन्तर्गत लेखक ने मनोहर को मूर्ख कहा है। लेखक ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि मनोहर यह भी नहीं समझ पाया कि खेल में शामिल होना सिर्फ नियमों का पालन करना

नहीं है, बल्कि उसमें अपनापन, संवेदनशीलता और सहभागिता का महत्व होता है। उसकी यह सोच उसे बाकी बच्चों से अलग कर देती है जो लेखक को इसे ''मूर्खता'' के रूप में तथा दूसरों की भावनाओं को न समझ पाने को दर्शाती है।

पाठ से आगे

नोट—छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) ×, (ख) ✓, (ग) ×, (घ) ×, (ङ) ✓।
2. (क)-(ङ), (ख)-(क), (ग)-(च), (घ)-(घ), (ङ)-(ग), (च)-(ख)।
3. (क) शाम—सूरज ढलते ही संध्या हो गई।
   (ख) हँसी को पैदा करने वाला—गोविंदा की फिल्में हास्योत्पादक होती हैं।
   (ग) प्रसन्न—अपने बेटे की सफलता को देखकर माँ का मन पुलकित हो गया।
   (घ) दया रहित—राजा ने उस अपराधी को निर्दयी कहकर कठोर दंड दिया।
   (ङ) दु:ख—सीता का घर टूटने पर उसे बड़ी व्यथा हुई।
   (च) खुशी—मनोहर उत्फुल्लता से कहकहा लगाने लगा।

व्याकरण बोध

1. (क) उसने भाड़ के सिर पर एक ही पत्ते की ओट लगाई।
   (ख) जब तक तुम न कहोगी और तब तक न उठूँगा और न बोलूँगा।
   (ग) मनोहर ने जोर का कहकहा लगाकर एक लात में भाड़ का काम तमाम कर दिया।
   (घ) पापा जी ने डाँटा और आशु रोने लगा।
   (ङ) सुरवाला की यह दशा देखकर मनोहर का मन न जाने कैसा हो गया।
   (च) वह व्यक्ति आया और उसने अपनी लात से उसे तोड़-फोड़ डाला।
   (छ) कथा समाप्त होने पर हमें प्रसाद मिलेगा।
2. (क) दंगाई (ख) हास्यकार
   (ग) नवजात (घ) निर्दयी
   (ङ) निर्जन
3. (क) आबाद (ख) शत्रुता
   (ग) अमरख (घ) बुद्धिमान
   (ङ) निष्ठुर (च) नरक
   (छ) सज्जन (ज) जीत
3. (क) काम-तमाम करना—कार्य को नष्ट करना।
   वाक्य प्रयोग—पुलिस ने अपराधी का काम तमाम कर दिया।
   (ख) किला फतह करना—विजय प्राप्त करना।
   वाक्य प्रयोग—उसने बड़ी मुश्किलों से किला फतह किया।
   (ग) मन मसोस कर रह जाना—इच्छा दबाना।
   वाक्य प्रयोग—जब सोहन को मेहनत करने के बाद अच्छे अंक नहीं प्राप्त हुये तब वह अपना मन मसोस कर रह गया।
   (घ) फूला न समाना—बहुत खुश होना।
   वाक्य प्रयोग—मोहन अपनी पहली नौकरी की खुशी सुनकर फूला नहीं समाया।
   (ङ) लाल-पीला होना—अत्यधिक गुस्सा करना।
   वाक्य प्रयोग—जब उसने मुझ पर झूठा आरोप लगाया, तो मैं लाल-पीला हो गया।

रचनात्मक गतिविधियाँ

नोट—छात्र स्वयं करें।

19 कलम, आज उनकी जय बोल

मौखिक

(क) कवि स्वतंत्रता सेनानियों की जय बोलने को कह रहे हैं।

(ख) स्वतंत्रता सेनानियों ने देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दी।

(ग) कवि ने यह कविता महान स्वतंत्रता सेनानियों को समर्पित की है।

(घ) 'कलम आज उनकी जय बोल' कविता के रचियता रामधारीसिंह ''दिनकर'' हैं।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) कवि जय बोलने के लिए ''कलम'' से कह रहा है।

(ii) स्वतंत्रता सेनानियों ने अपनी अस्तियों को चिंगारी बनाया।

(iii) स्वतंत्रता सेनानी हँसते हुए फाँसी के फन्दे पर चढ़ गए।

(iv) स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने बलिदान के बदले किसी से कीमत नहीं माँगी।

(ख) (i) (ग) ✓ (ii) (घ) ✓ (iii) (घ) ✓ (iv) (क) ✓

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) सूर्य, चंद्र आदि वीरों की महिमा के साक्षी हैं।

(ख) कवि ने शहीदों के रक्त को लाल शिखाएँ कहा है।

(ग) धरती देश पर मर-मिटने वाले वीरों के सिंहनाद से सहम गई।

(घ) चिटकाई जिसने चिंगारी से कवि का संकेत देश के युवाओं द्वारा चहुँओर क्रांति की अलख जगाने से है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) कवि अपनी लेखनी से उन अमर शहीदों की जय बोलने को कह रहा है जो अपने देश के लिए फाँसी के फन्दे पर चढ़ गये थे।

(ख) देश की आन पर मर मिटे पर उन लोगों ने स्नेह नहीं माँगा भाव कविता प्रयुक्त पंक्ति में हैं–

जो अगणित लघुदीप हमारे
तूफानों में एक किनारे,
जल-जलाकर बुझ गए,
किसी दिन माँगा नहीं स्नेह मुँह खोल।

(ग) वीर शहीदों की महिमा के साक्षी सूर्य, चंद्र, भूगोल और खगोल हैं।

(घ) **भाव**–वीर शहीदों ने जो सिंह गर्जना की, उससे पृथ्वी भयभीत होकर अभी भी हिल रही है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) 'कलम, आज उनकी जय बोल' कविता का मूलभाव यह है– कवि ने उन अमर शहीदों की विजय का गान किया है जिन्होंने अपना सब कुछ बलिदान करके क्रान्ति की भावना जाग्रत की और समाज में नई चेतना फैलाई तथा जिन्होंने बिना किसी मूल्य के कर्तव्य की पुण्यवेदी पर स्वयं न्योछावर हो गये तथा उन वीरों ने दीपक की भाँति जलकर जो तेज अग्नि में प्रज्वलित हो गये। कवि उन स्वतंत्रता सेनानियों की जय बोलने को कह रहा है।

(ख) इस कविता में कवि देश पर अपने प्राणों को न्योछावर कर देने वाले वीर जवानों का गुण गान किया है। कवि कहते हैं कि उन वीरों ने अपनी अस्तियों को जलाकर स्वतंत्रता के लिए नए जुनून और चेतना की चिंगारी छिटकाई। इस प्रकार इन वीरों ने लोगों में नई क्रान्ति की भावना जगाई। उन्होंने अन्याय के खिलाफ संघर्ष किया और भारत माता को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए प्राणों की आहुति दे दी।

(ग) कवि ने 'अगणित लघु दीप' उन अमर वीरों को कहा है जो देश की आन पर मर मिटे।

ये शहीद दीपक की तरह जल बुझ गए, लेकिन उन्होंने किसी से स्नेह नहीं माँगा। अत: इस कविता में कवि ने देशप्रेम और राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत देश भक्तों के बलिदान का वर्णन किया है।

कविता से आगे

नोट—छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) ✓, (ख) ×, (ग) ✓, (घ) ×, (ङ) ×।
2. अंधा **चकाचौंध का मारा**
   क्या जाने इतिहास बेचारा?
   साखी **है उनकी महिमा के,**
   सूर्य, चंद्र, भूगोल, खगोल।
   कलम, **आज उनकी जय बोल**।

व्याकरण बोध

1. (क) वीर रस। (ख) शृंगार रस।
   (ग) वीर रस।
2. (क) अनुप्रास अलंकार
   (ख) यमक अलंकार
   (ग) अनुप्रास अलंकार
   (घ) यमक अलंकार
   (ङ) अनुप्रास अलंकार
3. (क) धरा भूमि
   (ख) रवि भानु
   (ग) शशि राकेश
   (घ) दीपक दिया
   (ङ) वार दिवस
4. (क) पानी जलना
   (ख) लालरंग पुत्र
   (ग) मूल्य रस्सी
   (घ) हिस्सा भागना
   (ङ) घड़ा घटित

रचनात्मक गतिविधियाँ

नोट—छात्र स्वयं करें।

20 साप्ताहिक धमाका

मौखिक

(क) प्रस्तुत कहानी में चर्चा का विषय धनीराम के मसालों में मिलाकर बना हुआ है।

(ख) मोहल्ले में इतवार की सुबह साप्ताहिक धमाका ने हंगामा मचाया।

(ग) मोहल्ले के बड़े लोगों द्वारा बुलाई गई मीटिंग में सभी समस्या हल हो गई।

(घ) साप्ताहक धमाका निकालने वाले बच्चों को पहचानने के लिए लोगों ने पाँच-पाँच सौ रुपए का इनाम देने का उपाय खोजा।

(ङ) मोहल्ले के लोग बच्चों की पहचान करने में सुफल नहीं रहे।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) इतवार की सुबह पूरे मोहल्ले में 'साप्ताहिक धमाका' की चर्चा थी।

(ii) साप्ताहिक धमाका का पहला अंक लाला धनीराम के मसालों में मिलावट पर लिखा गया था।

(iii) इस अंक की मुख्य खबर लाला धनीराम के मसालों में मिलावट थी।

(iv) सामान को कम तोलने की कला में माहिर 'लाला' को पुरस्कृत करने का प्रस्ताव रखा गया।

(ख) (i) (ग) ✓ (ii) (ग) ✓ (iii) (घ) ✓ (iv) (ख) ✓

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) 'साप्ताहक धमाका' के लेखक हरिकृष्ण देवसरे हैं।

(ख) मसालों में मिलावट का काम धनीराम करता था।

(ग) बैगन की सब्जी से गुटकू चिढ़ता है।

(घ) मंदिरा का चंदा खाने वाले लोगों ने बच्चों को ऊधमी और पापी कहा।

(ङ) मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष चिरंजीलाल थे।

(च) बच्चों को पुरस्कार स्वरूप पाँच सौ रुपये देने की बात कही थी।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) साप्ताहिक धमाका के अगले अंक के मुख्य आकर्षण थे— रिश्वतखोर मुंशी शादीलाल के काले कारनामे, मंदिर ट्रस्ट के हिसाब में घोटाला, सीक्रेट एजेंट डेविड की विशेष रिपोर्ट।

(ख) लाला धनीराम मसाले, चीनी, अनाज आदि में मिलावट करता था।

(ग) 'साप्ताहिक धमाका' अखबार के पहले अंक में छपी खबरों ने लोगों को चौंका दिया। इन खबरों ने कई लोगों की पोल खोल दी। जैसे कि—लाला धनीराम के मसालों में मिलावट, गुटकू भटनागर बैंगन की सब्जी से चिढ़ते है, ठेकेदार हजारासिंह ने लड़की की शादी में 50,000 नकद दहेज दिया, हेडमास्टर चौपड़ा के घर स्कूल के चपरासी काम करते हैं।

(घ) मुंशी शादीलाल यह कहकर अपना रोष प्रकट किया कि मैं एक-एक की खबर लूँगा। जेल की हवा खिलाऊँगा। मैं भी मुंशी हूँ मुंशी।

(ङ) प्रो. माथुर ने कहा—यह काम आजादी की लड़ाई के दिनों जैसा है। आज इस बात की बहुत जरूरत है कि जो लोग समाज और देशवासियों के दुश्मन हैं उनका भंडा-फोड़ किया जाये। जो काम हमें करना चाहिए था, वह काम ये छोटे-छोटे बच्चे कर रहे हैं। मैं इन बच्चों को बधाई देता हूँ।

(च) भीड़ में बैठे सब लोग अपने पीछे मुड़-मुड़कर देखने लगे कि वे कौन-से बच्चे हैं? पुरस्कार की घोषणा किए जाने पर भी एक भी बालक मंच की ओर नहीं बढ़ा। दो-मिनट, पाँच मिनट और फिर दस मिनट बीत गए। ऐसा देखकर भीड़ ने मंच पर बैठे नेताओं की हँसी उड़ाई।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) साप्ताहिक धमाके में निम्न खबरें छपी थीं—

1. धनीराम के मसालों में मिलावट।
2. गुटकू भटनागर बैंगन की सब्जी से चिढ़ते हैं।
3. ठेकेदार हजार सिंह ने लड़की की शादी में 50,000 नकद दहेज दिया।
4. हेडमास्टर चोपड़ा के घर स्कूल के चपरासी काम करते हैं।
5. वीरू के पिता की घड़ी चुराकर पाँच सौ रुपये में बेची।
6. राजेश का कुत्ता चोरी हो गया।

दीनू और रमेश ने स्कूल से भागकर फिल्म देखी। रिश्वतखोर मुंशी शादीलाल के काले कारनामें मंदिर ट्रस्ट हिसाब में घोटाला, सीक्रेट एजेंट डेविड की विशेष रिपोर्ट।

(ख) लाला धनीराम की मसालों में मिलावट की खबर अखबार में देखकर धनीराम की दुकान पर हंगामा हो गया। इधर लाला धनीराम की दुकान पर टंडन साहब ने एक किलों चीनी तुलवाई, फिर किलो का बाट उठाकर देखा तो उसे नीचे से खोखला पाया। हर तौल में कम-से-कम 100 ग्राम का घोटाला। लोग इकट्ठे हो गए और दुकान पर खूब हंगामा हो गया।

(ग) 'साप्ताहिक धमाका' बच्चों द्वारा निकाला गया पत्र पढ़कर लोगों के अन्दर भ्रष्टाचारी, घूसखोर, नीति विरोध को दूर किया। इसने समाज के विभिन्न पहलुओं, जैसे बच्चों की सोच, राजनीति और सामान्य जीवन की घटनाओं पर गंभीरता से सोचने के लिए प्रेरित किया।

(घ) बच्चों को पकड़ने के लिए रखी गई सभा का यह परिणाम हुआ कि लोग धीरे-धीरे अपने को बदलने लगे। मोहल्ले में तेज ध्वनि में बजने वाले रेडियो और भजन-कीर्तन वाले लाउडस्पीकरों का स्वर धीमा हो गया। मुंशी शादीलाल भी कहने लगे, ''अरे भाई! इस वानर सेना से कौन दुश्मनी ले? जो भगवान दे, उसी में खुश हूँ। ''साप्ताहिक धमाका के कारण डॉक्टरों के

यहाँ भी ठीक दवाइयाँ मिलने लगीं। अत: भ्रष्टाचारी, घूसखोरी और नीतिविरोधी लोगों की पोल खोलकर समाज को जागरूक करने का कार्य किया।

(ङ) सम्पादक बच्चों का कहना है कि जैसे ही उनके मोहल्ले की सभी समस्याएँ हल हो जाएँगी, यह साप्ताहिक धमाका बंद कर दिया जाएगा, लेकिन जरूरत पड़ने पर वे उसे दोबारा शुरू कर देंगे। इसलिए साप्ताहिक धमाका के बच्चों के नामों को गुप्त रखा।

कविता से आगे

नोट—छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) ✓, (ख) ×, (ग) ✓, (घ) ×, (ङ) ×।
2. (क)-(च), (ख)-(ख), (ग)-(छ), (घ)-(ज), (ङ)-(घ), (च)-(क), (छ)-(ग), (ज)-(ङ)।

व्याकरण बोध

1. (i) मोहल्ला, कुत्ता, पुरस्कार, साप्ताहिक, परास्त

   (ii) (क) विलुप्त लुप्त गुप्त
   (ख) परास्त हस्त अस्त
   (ग) चिल्ला मोहल्ला कुल्ला
   (घ) कुत्ता पत्ता सत्ता
   (ङ) आराध्य ध्यान मध्य

2. (क) पुल्लिंग (ख) पुल्लिंग
   (ग) स्त्रीलिंग (घ) स्त्रीलिंग
   (ङ) पुल्लिंग (च) पुल्लिंग
   (छ) पुल्लिंग (ज) पुल्लिंग
   (झ) पुल्लिंग (ञ) स्त्रीलिंग
3. (क) धमाका
   (ख) खबरें
   (ग) दुनिया
   (घ) खेज
   (ङ) निगाह
   (च) लोग
   (छ) प्रतियाँ
   (ज) स्वर
4. (क) ठेकेदार हजारा सिंह ने लड़के की शादी में पचास हजार नकद दहेज लिया।
   (ख) खबरें न केवल झूठी थीं, बल्कि कान खड़े करने वाली थीं।
   (ग) हम अपने ही मित्रों को नहीं पहचान पा रहे हैं।
   (घ) भाषण शुरू हो गया।
   (ङ) धीरे-धीरे सभा में शांति होने लगी।
   (च) उन्हें अपनी असफलता पर दुख है।

रचनात्मक गतिविधियाँ

नोट—छात्र स्वयं करें।

●●

1 स्वदेश-प्रेम

पाठ बोध

मौखिक प्रश्न

(क) मातृभूमि पर बलिदान होने की।

(ख) रामनरेश त्रिपाठी।

(ग) मृत्यु को।

लिखित प्रश्न

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) हिम, तम में काँप-काँप कर।
(ii) देश-भक्त।
(iii) अंधकार।

(ख) (i) (क), (ii) (क), (iii) (ख)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) विषुवत रेखा का वासी।

(ख) मातृभूमि को।

(ग) परिश्रम से बचना।

(घ) मृत्यु का।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) विषुवत रेखा का वासी नित्य तप में रहकर, अलौकिक अनुराग से प्रेरित होकर जीवन व्यतीत करता है। उसे गर्मी, बीमारी, भूख और प्राकृतिक कठिनाइयों को सहन करना पड़ता है, फिर भी वह अपनी मातृभूमि से प्रेम करता है और जीवन व्यतीत करता है।

(ख) ध्रुव वासी हिमांत तप में जीवन व्यतीत करते हैं। उन्हें अत्यधिक ठंड, बर्फवारी, अंधकार और भूख जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। फिर भी वे अपनी मातृभूमि पर प्राण न्योछावर करने को तत्पर रहते हैं।

(ग) प्रत्येक व्यक्ति पर मातृभूमि के अनेक ऋण हैं जिन्हें उतार पाना संभव नहीं है अत: हम अपनी मातृभूमि का त्याग नहीं कर सकते हैं।

(घ) मनुष्यता आत्मा के विकास से विकसित होती है, जो असीम त्याग और देश प्रेम के माध्यम से प्राप्त होती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) ध्रुव-प्रदेश और विषुवत रेखा के निवासियों को उनकी भौगोलिक परिस्थितियों के कारण विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

1. ध्रुव-प्रदेश के निवासियों की समस्याएँ—

1. अत्यधिक ठंड के कारण जीवनयापन कठिन होता है।
2. वर्षभर बर्फ जमी रहने से कृषि संभव नहीं होती।
3. परिवहन और संचार के साधन सीमित होते है।
4. भोजन और पानी की उपलब्धता में कठिनाई होती है।
5. शरीर को ठंड से बचाने के लिए विशेष प्रकार के वस्त्रों और आवासों की आवश्यकता होती है।

2. विषुवत रेखा के निवासियों की समस्याएँ—

1. अत्यधिक गर्मी के कारण स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।
2. वर्षभर अधिक वर्षा के कारण बाढ़ का खतरा बना रहता है।
3. अधिक गर्मी और नमी के कारण संक्रामक रोगों का प्रसार अधिक होता है।
4. कृषि में अत्यधिक नमी के कारण फसलों को नुकसान पहुँच सकता है।
5. जंगलों की अधिकता के कारण जंगली जानवरों और कीट-पतंगों का खतरा रहता है।

ध्रुव-प्रदेश और विषुवत रेखा के निवासियों की समानता—

1. दोनों ही अपने-अपने क्षेत्र की कठोर जलवायु में जीवन जीने के लिए संघर्ष करते हैं।
2. दोनों स्थानों के लोग अपने पर्यावरण के अनुसार अपने खान-पान, पहनावे और आवास में बदलाव करते हैं।
3. दोनों ही अपनी भौगोलिक

परिस्थितियों के अनुरूप कार्य करके जीवनयापन करते हैं।

4. चाहे अत्यधिक ठंड हो या अत्यधिक गर्मी, दोनों ही परिस्थितियाँ मानव जीवन के लिए चुनौतीपूर्ण होती है।

इस प्रकार, ध्रुव प्रदेश और विषुवत रेखा के निवासी विपरीत भौगोलिक परिस्थितियों में रहते हुए भी संघर्षशील और अनुकूलनशील होते हैं।

(ख) कविता के आधार पर, मनुष्य को मृत्यु से इसलिए डरना नहीं चाहिए क्योंकि मृत्यु एक अटल सत्य है और जीवन का स्वाभाविक अंत है। यह भय के बजाय वीरता और कर्तव्य परायणता का संदेश देती है जैसे–

1. **मृत्यु अवश्यभावी है**–जीवन और मृत्यु एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जब जन्म हुआ है, तो मृत्यु भी निश्चित है।
2. **कर्तव्य निभाना आवश्यक है**–मनुष्य को अपने जीवन काल में अच्छे कर्म करने चाहिए और अपने कर्तव्यों को निडरता से निभाना चाहिए ताकि उसका जीवन सार्थक बन सके।
3. **बलिदान की महिमा**–जो व्यक्ति अपने देश, समाज और कर्तव्य के लिए बलिदान देता है, उसकी मृत्यु व्यर्थ नहीं जाती। वह अमर हो जाता है और उसका नाम हमेशा लिया जाता है।
4. **साहस और आत्मसम्मान**–मृत्यु से डरकर जीवन जीने से अच्छा है कि व्यक्ति निडर होकर अपने आदर्शों और मूल्यों के साथ जिए। एक कायर की लंबी उम्र से बेहतर एक वीर का गौरवशाली जीवन होता है।

इस प्रकार कविता हमें सिखाती है कि मृत्यु से डरने के बजाय हमें अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए और समाज तथा देश के लिए प्रेरणादायक कार्य करना चाहिए, ताकि हमारी पहचान अमर हो।

(ग) यह कविता हमें अपने देश के प्रति प्रेम, कर्तव्य और बलिदान की भावना से भर देती है जैसे–

1. **देशभक्ति का महत्व**–व्यक्ति को अपने देश से प्रेम करना चाहिए क्योंकि राष्ट्र हमारी पहचान और अस्तित्व का आधार है।
2. **त्याग और बलिदान**–वीरों का बलिदान ही देश को सशक्त बनाता है।
3. **कर्तव्य पालन**–हमें अपने अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों का भी पालन करना चाहिए।
4. **संस्कृति और परंपराओं का सम्मान**–हमें अपनी संस्कृति और परंपराओं का भी सम्मान करना चाहिए।
5. **एकता और समृद्धि का संदेश**–देश तभी उन्नति करता है जब उसके नागरिक एकता व भाई-चारे की भावना से कार्य करते हैं।

(घ) 'मृत्यु एक है विश्राम स्थल' पंक्ति का आशय यह है कि मृत्यु को जीवन काअ ंत न मानकर, इसे एक विश्राम स्थल के रूप में देखा जाना चाहिए। इस पंक्ति में मृत्यु को एक यात्रा के अंतिम पड़ाव के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जहाँ व्यक्ति सांसारिक कष्टों, संघर्षों और मोह-माया से मुक्त होकर शांति प्राप्त करता है।

कविता से आगे

- हमारी मातृभूमि सबसे प्यारी है। यहाँ एकता, अखण्डता एवं प्रेम की भावना पाई जाती है।
- छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. तुम तो, हे प्रिय बंधु! स्वर्ग सी,
   सुखद, सकल विभवों की आकर।
   धरा-शिरोमणि मातृभूमि में,
   धन्य हुए हो जीवन पाकर॥
2. (क) प्रेम–माता-पिता का अपने बच्चों के प्रति अनुराग अटूट होता है।
   (ख) वैभव–राजा के महल की भव्यता और विभव देखने योग्य हैं।
   (ग) श्रेष्ठ सिरताज–महात्मा गाँधी को अहिंसा के क्षेत्र में शिरोमणि माना गया है।
   (घ) नया–नूतन वर्ष की शुरूआत सबके लिए मंगलमय हो।

भाषा-सौन्दर्य

- (क) वह अलौकिक अनुराग रखता है।
  (ख) वह काँप-काँप कर जी लेता है।
  (ग) हमें मृत्यु का निर्भय स्वागत करना चाहिए।
  (घ) यदि त्याग नहीं किया तो प्रेम प्राणों से रहित शरीर जैसा है।
- (क) देश-प्रेम वह पुण्य-क्षेत्र है, अमल असीम त्याग से विलसित। (अनुप्रास अलंकार)
  (ख) त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है, करो प्रेम पर प्राण निछावर। (रूपक अलंकार)
  (ग) मृत्यु एक विश्राम स्थल है। (रूपक अलंकार)
  (घ) फिर नूतन धारण करता है, काया रूपी वस्त्र बहाकर। (रूपक अलंकार)

व्याकरण-बोध

1. (क) नदी — तटिनी
   (ख) अंधकार — तिमिर
   (ग) पृथ्वी — भूमि
   (घ) पानी — नीर
   (ङ) देह — शरीर
2. (क) अप्रिय — (ख) मरण
   (ग) कायर — (घ) भयभीत
   (ङ) पुरातन — (च) पशुता

रचनात्मक गतिविधियाँ

छात्र स्वयं करें।

2 गाय की चोरी

पाठ बोध

मौखिक प्रश्न

(क) कमलेश्वर।
(ख) मुंशी प्यारेलाल।
(ग) सुक्खू।
(घ) गाय।
(ङ) मुंशी प्यारेलाल।

लिखित प्रश्न

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) बूढ़ी की।
(ii) मुंशी प्योरलाल।
(iii) नयन, नेत्र।
(ख) (i) (ग), (ii) (ख), (iii) (क)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) किसी प्रकार की वारदात।
(ख) शमा की पहेलियाँ भरते रहते थे।
(ग) सुखलाल ने।
(घ) गाय की तहकीकात और मौका मुआइना करने आया था।
(ङ) लाठियों की मार से।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) दो घटनाएँ एक साथ हो जाने पर मुंशी जी उन्हें आपस में जोड़-जाड़कर तुक बैठाने की कोशिश करते थे और आश्चर्यजनक रूप से वहाँ पहुँच जाते थे।
(ख) जबरदस्ती किवाड़ खोलकर अन्दर घुसने पर दर्शन को भी चार-छह डंडे पड़ने का खामियाजा भुगतना पड़ा।
(ग) पुलिस का नाम सुनते ही उनकी आँखें मिचलाई, जैसे आँखें पूरी तरह से खोल रहे हों, फिर अगुआ बनने के नाते बोले, ''अरे, उस वक्त बस जरा-सा ध्यान भर आ जाता तो भला गाय निकलने पाती।
(घ) मुंशी जी कुछ दिनों के लिए पास के नगला में किसी अहीर के यहाँ फौजदारी करने चले गए थे।
(ङ) अंत में मुंशी जी ने अपने साहस, धैर्य और सूझबूझ से उस गाय को हासिल कर लिया जिसे चोर चुरा कर ले गए थे। उन्होंने हार नहीं मानी और अपने दृढ़ निश्चय से गाय की खोज जारी रखी। यही उनका सबसे बड़ा कारनामा था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) मुंशी प्यारे लाल डॉक्टर साहब को सुक्खू की घटना बढ़ा-चढ़ाकर कह रहे थे जैसे— ''भाई यह बड़ा जुलम है। इन लोगों की

आदत ऐसी होती है कि चार पैसे पास होते ही दिमाग सातवें आसमान पर चढ़ जाता है। सुक्खू ने बिना वजह अपनी औरत का सिर फोड़ दिया, वह अस्पताल में पड़ी है बेचारी।'' भला बताइए, क्या औरत जात से इस तरह पेश आना चाहिए। और गालियों के बाद उसने डंडा उठा लिया। मैं तो हक्का-बका देखता रह गया।

(ख) मुंशी जी ने थानेदार के पूछने पर बयान दिया कि ''जी हुजूर, मैं तो मकान के भीतर सो रहा था। दरअसल बात यह हुई कि सुबह के आस-पास एक बड़ा डरावना सपना देखा। घर सुनसान था, सो तड़के ही चटाई लेकर यहाँ चबूतरे पर लुढ़क गया। घर में बड़ा डर लगता था... जब सवेरे शोर सुनकर आँख खुली तो जो सब लोग बात कर रहे थे, वहीं मैंने भी दोहरा दी थी। मुंशी जी कहते जा रहे थे और उनकी गरदन नीचे झुकती जा रही थी। नजर जमीन में गड़ाए हुए उन्होंने बड़ी मुश्किल से कहा था, ''हुजुर, मैंने और कुछ नहीं देखा।''

(ग) स्वयं को बहादुर सिद्ध करने के लिए मुंशी जी का शौक अपने को हर घटना का चश्मदीद गवाह सिद्ध करना था। पड़ोसन की गाय चोरी हो जाने पर जीवन में पहली बार अपने को उस घटना से जोड़ने से पहले तो कतराए, फिर गाय की खोज में इस हद तक शामिल हुए कि बेभाव की मार खाकर भी गाय खोजकर ही दम लिया।

(घ) मुंशी प्यारे लाल की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

1. वह अपने आस-पास घटित होने वाली चीजों को जानने में रूचि रखते थे।
2. किसी पर दुख या विपत्ति टूट पड़ने पर मददगार साबित होते थे।
3. झगड़े को वह रफा-दफा कर देते थे तथा घायल व्यक्ति को अस्पताल पहुँचा देते थे।
4. वे किसी भी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहते थे।

कविता से आगे

छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) × (घ) ✓ (ङ) ✓
2. (क) घटना—सी.सी.टी.वी. फुटेज की मदद से पुलिस ने वारदात के अपराधी को पकड़ा।
   (ख) नेता—समाज में अच्छे अगुआ ही विकास करते हैं।
   (ग) दबाव—मोनू अपने पिता के जब्र से भाग गया।
   (घ) घटना-स्थल का निरीक्षण—थानेदार ने गाय की चोरी होने का मौका-मुआवना किया।
   (ङ) चुप—अध्यापक की मार से छात्र खामोश हो गया।
3. (क) सहन (ख) मामला
   (ग) हार (घ) दुख
   (ङ) अनुपस्थित (च) समाचार

व्याकरण-बोध

1. (क) सहायता करना—परीक्षा की तैयारी में उसके दोस्त ने भी उसका हाथ बँटाया।
   (ख) किसी मामले को शांत करना—पुलिस ने मामले को रफा-दफा किया।
   (ग) घमंड होना—सोहन के बेटे की नौकरी लगने के कारण उसके पिता का दिमाग सातवें आसमान पर चढ़ गया।
   (घ) आश्चर्यचकित होना—मेरा दोस्त चोरों के साथ मिला-जुला है उसे देखकर मैं हक्का-बक्का हो गया।
2. (क) खबरें तो यहाँ बिजली की तरह फैलती हैं।
   (ख) भला बताइए, क्या औरत जात से इस तरह पेश आना चाहिए?
   (ग) जो कोई भी मिलता है, उससे कुछ न कुछ जानने की कोशिश करते।

(घ) एक आमदी पूछ रहा था, ''यही बँधी थी...और तुम कहाँ सो रही थी?''

3. (क) संयुक्त वाक्य (ख) मिश्रित वाक्य (ग) सरल वाक्य (घ) संयुक्त वाक्य (ङ) मिश्रित वाक्य।

रचनात्मक गतिविधियाँ

छात्र स्वयं करें।

3 क्या निराश हुआ जाए

पाठ बोध

मौखिक प्रश्न

(क) ठगी, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार से।

(ख) भीरु और बेबस लोगों के।

(ग) कोटि-कोटि दरिद्रजनों की।

(घ) टिकट बाबू ने 90 रुपये वापिस देकर ईमानदारी दिखाई।

(ङ) गाँधीजी, तिलक, मदनमोहन मालवीय, रवीन्द्रनाथ टैगोर।

लिखित प्रश्न

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) धर्म के रूप में।
(ii) कानून को।
(iii) अधर्म।

(ख) (i) (ख), (ii) (घ), (iii) (क)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) जितने ऊँचे पद पर है, उसमें उतने ही अधिक दोष गिनाए जाते हैं।

(ख) कमजोर और मेहनतकश पिस रहे हैं।

(ग) कानून को।

(घ) बस में रात को निर्जन स्थान पर खराबी होने के कारण बस यात्री घबरा गए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) लेखक का मन इसलिए बैठ जाता है क्योंकि वह समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, चोरी, डकैती जैसी नकारात्मक घटनाओं को देखकर निराश हो जाता है, और उसे लगता है कि समाज में ईमानदारी और नैतिकता का पतन हो गया है।

(ख) ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह और भोले-भाले श्रमजीवी को पिसते और झूठ तथा फरेब का रोजगार करने वालों को फलता-फूलता देखकर महान मूल्यों के प्रति हमारी आस्था हिलने लगी है।

(ग) देश में कायदे-कानून इसलिए बनाए गए हैं ताकि लोगों को गलत रास्ते से रोका जा सके और समाज में व्यवस्था स्थापित हो सके। खासकर गरीब ओर कमजोर लोगों की स्थिति में सुधार के लिए बनाए गऐ हैं।

(घ) लेखक के अनुसार, बुराई किसी के आचरण के गलत पक्ष को उजागर करके उसमें आनंद लेने और दोषों को ही एकमात्र कर्तव्य मानने में हैं, न कि निराश होने में।

(ङ) नई बस और उस कंडक्टर को देखकर सभी बस यात्रियों की जान में जान आई और सबने उसे धन्यवाद दिया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) पहली घटना रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते समय हुई थी, जहाँ लेखक ने गलती से दस के बजाय सौ रुपये का नोट दे दिया था, और टिकट वाले ने ईमानदारी से नब्बे रुपये लौटा दिए।

अत: लेखक को इस बात का विश्वास था कि भले ही समाज में बुराइयाँ और समस्याएँ मौजूद हों, लेकिन अच्छाई और मानवता पूरी तरह से समाप्त नहीं हुई है।

(ख) दोषों का पर्दाफाश करना उस समय बुरा रूप ले सकता है जब हम समाज से उस बुराई का उद्देश्य भूलकर किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित करने में आनंद लेने लगते हैं और उस बुराई को बढ़ा-चढ़ाकर दुनिया के सामने प्रस्तुत करने लगते हैं।

(ग) टिकट लेते समय लेखक ने गलती से दस की बजाय सौ रुपये का नोट दिया और जल्दी से गाड़ी में आकर बैठ गया। कुछ

समय बाद टिकट बाबू सेंकण्ड क्लास के डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ लेखक के सामने आकर खड़ा हो गया और बड़ी विनम्रता के साथ उसके हाथ में नब्बे रुपये दिए और कहा, ''यह बहुत बड़ी गलती हो गई थी आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा।'' मैं टिकट बाबू की ईमानदारी देखकर चकित रह गया। कैसे कहूँ कि दुनिया में सच्चाई और ईमानदारी लुप्त हो गई हैं।

(घ) बस-यात्रा के समय लेखक के साथ जो घटना घटी, उससे उनका विश्वास और अधिक मजबूत हो गया। जब बस रास्ते में खराब हो गई और कंडक्टर ने नई बस लाकर यात्रियों को उनके गंतव्य तक पहुँचाया। साथ ही, उसने लेखक के बच्चों के लिए दूध और पानी की व्यवस्था भी की। इन घटनाओं से लेखक को यह विश्वास हुआ कि मानवता और ईमानदारी अभी भी समाज में जीवित है।

(ङ) पाठ में ईमानदारी और मानवता के उदाहरण देकर यह दर्शाया गया है कि इस संसार में भले ही अनेक बुराइयाँ हों परंतु मानव हृदय में कहीं न कहीं इन्सानियत और ईमानदारी आज भी बरकरार है। मनुष्य के मन में आशा और विश्वास होना चाहिए। स्वयं के आचरण में शुद्धता लाने से सम्पूर्ण समाज प्रेरणा ग्रहण करता है।

कविता से आगे

छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) × (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ×
2. (क) बस में कुछ खराबी थी, अत: रुक-रुककर चलती थी।
   (ख) गंतव्य से कोई आठ किलोमीटर पहले ही एक निर्जन स्थान पर बस ने जवाब दे दिया।
   (ग) बस में सवार यात्री घबरा गए।
   (घ) कुछ नौजवानों ने ड्राइवर को पकड़कर मारने-पीटने का मन बनाया।
   (ङ) मैं भी बहुत भयभीत था, पर ड्राइवर को किसी तरह मारपीट से बचाया।
   (च) मेरे बच्चे भोजन और पानी के लिए व्याकुल थे।
   (छ) नई बस और उस कंडक्टर को देखकर सभी यात्रियों की जान में जान आई।
   (ज) सभी ने अपने दुर्व्यवहार के लिए ड्राइवर से माफी माँगी।
3. (क) **मेहनतकश**—एक श्रमजीवी व्यक्ति अपने परिवार का पालन-पोषण करता है।
   (ख) **क्रोध**—अन्याय देखकर उनके मन में गहरा क्षोभ उत्पन्न हुआ।
   (ग) **अनचाही**—समाज में अवांछित गतिविधियों को रोकना जरूरी है।
   (घ) **श्रेणी**—यह पुस्तक उच्च कोटि की है।
   (ङ) **लोगों से रहित**—निर्जन जंगल में अचानक शेर दिखाई दिया।

व्याकरण-बोध

1. (क) किसका रोजगार चलाने वाले फल-फूल रहे हैं?
   (ख) दरिद्रजनों की हीन अवस्था को दूर करने के लिए ऐसे क्या बनाए गए हैं?
   (ग) लोग किससे लाभ उठाने में संकोच नहीं करते?
   (घ) बच्चे किसके लिए व्याकुल थे।
   (ङ) किसकी आवश्यकता नहीं है?
2. (क) आरोप और प्रत्यारोप (द्वन्द्व समास)
   (ख) धर्म से भय रखने वाला (कर्मधारय समास)
   (ग) दरिद्र हैं जो लोग(बहुव्रीहि समास)
   (घ) मारना और पीटना (द्वन्द्व समास)
3. (क) धर्मभीरू
   (ख) संदिग्ध
   (ग) आरोप-प्रत्यारोप

(घ) टिकट बाबू
(ङ) परिचालक

4. (क) प्रति + आरोप
(ख) सदा + एव
(ग) रवि + इंद्र
(घ) उत् + नत
(ङ) व्य + आकुल

5. (क) ईमान + दार = ईमानदार
(ख) मूर्ख + ता = मूर्खता
(ग) सच्चा + ई = सच्चाई
(घ) अच्छा + ई = अच्छाई
(ङ) आवश्यक + ता = आवश्यकता

रचनात्मक गतिविधियाँ

छात्र स्वयं करें।

4 राष्ट्रपति भवन में प्रवेश

पाठ बोध

मौखिक प्रश्न

(क) रामस्वामी वेंकटरमन जी।
(ख) ज्ञानी जैलसिंह।
(ग) वायसराय हाउस।
(घ) पाँच वर्ष।

लिखित प्रश्न

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) 25 जुलाई 1987 को।
(ii) राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को श्रद्धांजलि देना और राजघाट पर प्रार्थना करना।
(iii) मुझे जो विस्मयकारी और दूभर जिम्मेदारी सँभालनी है, उसमें मेरा मार्गदर्शन करें।
(iv) श्रद्धा + अंजलि।

(ख) (i) (घ), (ii) (ग), (iii) (क), (iv) (घ)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) लोकतंत्र-प्रमुख के अधिकारों का प्रतीक है।
(ख) राजघाट पर।
(ग) राष्ट्रपति भवन है।
(घ) राष्ट्रपति जैलसिंह ने।
(ङ) भारत के मुख्य न्यायाधीश।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) गाँधी जी वायसराय हाउस लॉर्ड इरविन से मिलने गये थे।
(ख) रामस्वामी राष्ट्रपति बनने के बाद सबसे पहले राजघाट पर गए और गांधी जी से प्रार्थना की कि मुझे जो विस्मयकारी और दूभर जिम्मेदारी सँभालनी है, उसमें मेरा मार्गदर्शन करें।
(ग) रामस्वामी ने शपथ-ग्रहण समारोह में सिल्क की काली शेरवानी और सफेद चूड़ीदार पाजामी पहनी थी।
(घ) रामस्वामी के सामने प्रधानमंत्री, उनका मंत्रिमंडल, राज्यपाल, राजनीतिक दलों के नेता और सांसद सभी यथा स्थान बैठे हुए थे।
(ङ) रामस्वामी राष्ट्रपति भवन के राष्ट्रपति वाले शयनकक्ष में आराम से सोए थे।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) महात्मा गाँधी वायसराय हाउस में लार्ड इरविन से मिलने गए थे और विंस्टर चर्चिल ने गाँधी के जी विषय में यह अभद्र टिप्पणी की थी। ''यह चिंताजनक और उबकाई आने वाली बात है कि फकीर के भेष में अधनंगे वायसराय हाऊस की सीढ़ियों पर चल रहे हैं।''

(ख) विंस्टन चर्चिल की गाँधी जी के प्रति टिप्पणियाँ, भारत के प्रति उनके साम्राज्यवादी विचारों को दर्शाती हैं।

चर्चिल की गाँधीजी के प्रति टिप्पणियाँ– विंस्टन चर्चिल की महात्मा गाँधी के बारे में कही गई टिप्पणियाँ, जैसे कि उन्हें ''अधनंगे फकीर'' कहना, भारतियों के प्रति उनकी साम्राज्यवादी और तिरस्कारपूर्ण मानसिकता को दर्शाती है, जो उन्हें भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वाले भारतियों से अलग मानते हैं। उनकी साम्राज्यवादी मानसिकता

को दर्शाती हैं, जो भारत को ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन रखना चाहते थे।

(ग) यह विशाल भवन न केवल आकार में भव्य है, बल्कि इसकी वास्तुकला भी अद्वितीय है। इसे ब्रिटिश वास्तुकार सर एडविन लुटियंस ने डिजाइन कियाथा। इस भवन में 340 कमरे हैं और यह सैंकड़ों एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। राष्ट्रपति भवन का मुगल गार्डन भी इसकी भव्यता को और बढ़ाता है— जहाँ हर साल वसंत ऋतु में हजारों रंग-बिरंगे फूल खिलते हैं और यह जनता के लिए खोला जाता है।

संक्षेप में कहें तो, राष्ट्रपति भवन भारत की संस्कृति, कला, शक्ति और परंपरा का जीवंत उदाहरण है- एक ऐसा स्थान जो हर भारतीय को गर्व का अनुभव कराता है।

(घ) भारत के राष्ट्रपति की शपथ-ग्रहण समारोह एक बड़ी घटना है। यह समारोह संसद के सेंट्रल हॉल में दोपहर सवा बारह बजे होना था। शपथ-ग्रहण समारोह में जाने के लिए लेखक दोहपर बारह बजे से कुछ पहले राष्ट्रपति भवन पहुँच गए। वहाँ, वे निवर्तमान राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह के साथ एक छोटे मंच पर चढ़ गए। फिर गृह सचिव आगे आए और निवर्तमान राष्ट्रपति से कार्यवाही शुरू करने की आज्ञा माँगी। इसके बाद उन्होंने चुनाव आयोग की अधिसूचना पढ़ी, जिसमें घोषित किया गया था कि रामस्वामी वेंकटरमन भारत के विधिवत चुने गए राष्ट्रपति हैं। उसके बाद सवा बारह बजे मुख्य न्यायाधीश ने शपथ-पत्र का मूल पाठ पढ़ा। शपथ के दौरान ज्ञानी जैलसिंह, लेखक की कुर्सी पर आ गए और शपथ लेकर लेखक उनकी कुर्सी पर बैठ गए।

कविता से आगे

छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) ✓ (ख) × (ग) × (घ) ✓ (ङ) ✓
2. (क) लॉर्डइरविन
   (ख) महात्मा गाँधी, राजघाट
   (ग) संसद, सेंट्रल हॉल
   (घ) बिगुल, जैलसिंह
   (ङ) तुमुलनाद
3. (क)-(v), (ख)-(iv), (ग)-(i), (घ)-(ii), (ङ)-(iii)।

व्याकरण-बोध

1. (क) राष्ट्र का + पति
   (ख) अंग का + रक्षक
   (ग) घोड़े पर + सवार
   (घ) मंत्रियों का + मंडल
   (ङ) राज्य + पाल
   (च) लोक की + सभा
   (छ) राज्य की + सभा
   (ज) राष्ट्र का + गान
2. (क) विशाल (ख) आंगतुक
   (ग) सत्यवादी (घ) भव्य
   (ङ) काली (च) सफेद
   (छ) लाल (ज) नीला और सुनहरा
   (झ) सफेद लंबा (ञ) सफेद
3. (क) श्रद्धा + अंजलि (ख) पूर्व + अभ्यास
   (ग) निः + संदेह (घ) उप + अध्यक्ष
   (ङ) गोल + आकार

रचनात्मक गतिविधियाँ

छात्र स्वयं करें।

5 इतने ऊँचे उठो

पाठ बोध

मौखिक प्रश्न

(क) जातीय एवं धार्मिक भेद-भाव।

(ख) हमें जाति, धर्म, रंग-द्वेष आदि जैसे भेदभावों से ऊपर उठकर सभी को समानता की दृष्टि से देखना चाहिए।

(ग) मलय पवन के।

(घ) सूरज, चाँद तारे आदि।

लिखित प्रश्न

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) नए विचारों और नई पीढ़ी से।
(ii) वर्तमान का।
(iii) आदर्श और प्रगतिशील परिवर्तन की आवश्यकता को व्यक्त करना।
(iv) प्राचीन।

(ख) (i) (ख), (ii) (ग), (iii) (क), (iv) (क)।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) जाति, धर्म, रंग, लिंग आदि भेदभाव और ईर्ष्या को दूर करने की बात।

(ख) गगन के समान ऊँचा उठने को कह रहा है।

(ग) नए हाथों से संवारना चाहता है।

(घ) जीर्ण-शीर्ण का।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) कविता में पुरानी परम्पराओं जाति-धर्म आदि को तोड़ने की बात कही है।

(ख) युग की नई मूर्ति रचना से तात्पर्य ''युग का पुननिर्माण'' है।

(ग) कविता में धरती को स्वर्ग बनाने की चाह को प्रकट किया गया है।

(घ) पुराने रीति-रिवाजों, परंपराओं में जकड़ा समाज कुरूप हो चुका है इसलिए इसे नई परम्पराओं से सुंदर रूप देने को कहा गया है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) संसार से भेद-भाव दूर हो जाने पर यह जीवन अत्यंत सुखद, शांतिपूर्ण और समानता से परिपूर्ण हो जाएगा। ऐसा होने पर समाज में किसी के साथ ऊँच-नीच, जाति, धर्म, रंग या लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होगा। इससे सभी व्यक्तियों को समान अधिकार और अवसर प्राप्त होंगे, जिससे वे अपनी पूरी क्षमता के साथ उन्नति कर सकेंगे।

(ख) मौलिक विचार ही उत्तम रचना का साधन बनते हैं। किसी का अनुसरण या नकल करके हम उसकी अनुकृति बना सकते है। लेकिन वह रचना जिसका सब अनुकरण करें- केवल मौलिक विचारों द्वारा ही संभव है।

(ग) कवि अपने अतीत से वह उतना ही पोषक लेने की बात कर रहा है जो हमारी सभ्यता और संस्कृति से जुड़ा हुआ है जो हमारी प्रगति में सहायक है।

(घ) **आशय**

1. धरती पर कोई छोटे-बड़े, काले-गोरे, जाति-पाति का भेद-भाव न हो। सब एक-दूसरे को समान भाव से देखें।
2. पुराने का मोह प्रगति के मार्ग में बाधक हैं। अगर हम पुरानी परम्पराओं से बँधे रहेंगे तो जीवन में गति नहीं आएगी और गतिहीन जीवन मृत्यु के समान ही है।

कविता से आगे

छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) लो अतीत से उतना ही जितना पोषक है
जीर्ण-शीर्ण का मोह मृत्यु का ही द्वयोतक है
तोड़ो बंधन रुके न चिंतन
गति, जीवन का सत्य चिरंतन।

(ख) चाह रहे हम इस धरती को स्वर्ग बनाना
अगर कही हो स्वर्ग, उसे धरती पर लाना
सूरज, चाँद, चाँनी, तारे,
सब हैं प्रतिपल साथ हमारे
दो कुरूप को रूप सलोना,
इतने सुंदर बनो कि जितना आकर्षण है।

2. (क) (iii), (ख) (v), (ग) (iv), (घ) (i), (घ) (ii)

3. (क) ✓ (ख) × (ग) × (घ) × (ङ) ✓

भाषा-सौन्दर्य

(क) इतने ऊँचे उठो कि जितना उठा गगन है।

(ख) इतने शीतल बहो कि जितना मलय पवन है।

(ग) इतने मौलिक बनो कि जितना स्वयं सृजन है।

(घ) इतने गतिमय बनो कि जितना परिवर्तन है।

व्याकरण-बोध

1. (क) नीचा (ख) असमता

	(ग) आकाश	(घ) सफेद		(ङ) दिनकर	दिवाकर
	(ङ) पुरातन	(च) उष्ण		(च) चंद्रमा	शशि
	(छ) सुंदर	(ज) विकर्षण	3.	(क) कि	(ख) की
2.	(क) आकाश	नभ		(ग) कि	(घ) की
	(ख) संसार	जग		(ङ) कि	
	(ग) भूमि	पृथ्वी	**रचनात्मक गतिविधियाँ**		
	(घ) हवा	वायु	छात्र स्वयं करें।		

6 नीलकंठ

पाठ बोध

मौखिक प्रश्न

(क) तीतर है मोर कहकर ठग लिया है।

(ख) मोर की गर्दन नीली थी, इसलिए मोर का नाम नीलकंठ रखा तथा मोर के साथ मोरनी छाया के समान रहती थी इसलिए मोरनी का नाम राधा रखा।

(ग) जब मोर अपनी चोंच से उनके कान पकड़कर ऊपर उठा लेता था तब वह आर्तकृंदन करने लगते थे।

(घ) कुब्जा कुबड़ी की तरह थी उसकी बनावट टेढ़ी- मेड़ी थी।

(ङ) राधा नीलकंठ का इंतजार करती रहती है।

लिखित प्रश्न

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) एक साँप।
(ii) शिशु खरगोश।
(iii) जाली में ही दूर ऊपर झूले में।
(iv) अस्पष्ट।

(ख) (i) (क), (ii) (ग), (iii) (क), (iv) (ग)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) बड़े मियाँ की दुकान से।

(ख) अपनी बिल्ली चित्रा के भेय से।

(ग) लक्का कबूतर उनके चारों ओर गुटर-गूँ गुटर गूँ की रागिनी अलापने लगे।

(घ) मेघ के गरजने पर (वर्षा होने पर)।

(ङ) ईर्ष्या और शत्रुता का व्यवहार किया।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) मोर के शावकों को जब जाली के बड़े घर में पहुँचाया गया तो दोनों का स्वागत ऐसे किया गया जैसे नव वधू के आगमन पर किया जाता है।

(ख) जब वसंत ऋतु में आम के वृक्ष सुनहरी मंजरियों से लद जाते थे और अशोक के वृक्ष नए पत्तों में ढक जाते थे तब नीलकंठ जालीधर में अस्थिर हो जाता था। वह वसंत ऋतु में किसी घर में बंदी होकर नहीं रह सकता था। उसे पुष्पित और पल्लवित वृक्ष भाते थे। तब उसे बाहर छोड़ देना पड़ता था।

(ग) नीलकंठ खरगोश के बच्चों को चोंच से उनके कान पकड़कर ऊपर उठा लेता था और उन्हें तब तक अधर में लटकाए रखता था जब तक वे आर्तक्रंदन न करने लगते, कभी-कभी उनकी चोंच से खरगोश के बच्चों का कर्णवेध संस्कार भी हो जाता था।

(घ) विदेशी महिलाओं ने नीलकंठ को परफैक्ट 'जेंटिलमैन' की उपाधि दी, क्योंकि विदेशी जब मेहमान के रूप में महादेवी के साथ आते तो उनके प्रति सम्मान प्रकट करने हेतु वह अपने पंख मंडलाकार रूप में फैलाकर खड़ा हो जाता था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) नीलकंठ अपने इंद्रधनुषी गुच्छे जैसे पंखों को मंडलाकार बनाकर नाचता था। उसके नृत्य में एक सहजात लय-ताल रहता था। आगे-पीछे, दाएँ-बाएँ, उसके घूमने में भी क्रम रहता था तथा वह बीच-बीच में एक निश्चित अंतराल पर थम भी जाता था।

(ख) नीलकंठ देखने में बहुत सुंदर था वैसे तो उसकी हर चेष्टा ही अपने आप में आकर्षक थी लेकिन लेखिका को निम्न चेष्टाएँ अत्यधिक भाती थीं—

1. गर्दन ऊँची करके देखना।
2. विशेष भंगिमा के साथ गर्दन नीची कर दाना चुगना।
3. गर्दन को टेढ़ी करके शब्द सुनना।
4. मेघों की गर्जन ताल पर उसका इंद्रधनुष के गुच्छे जैसे पंखों को मंडलाकार बनाकर तन्मय नृत्य करना।
5. लेखिका के हाथों से उठाकर चने खाना तथा उनके सामने पंख फैलाकर खड़े होना।

(ग) इस आनंदोत्सव में की रागिनी में बेमेल स्वर कैसे बज उठा, यह वाक्य उस घटना की ओर संकेत कर रहा है जब लेखिका ने बड़े मियाँ से एक अधमरी मोरनी खरीदी और उसे घर ले गई। उसका नाम कुब्जा रखा। उसे नीलकंठ और राधा का साथ रहना नहीं भाया। वह नीलकंठ के साथ रहना चाहती थी जबकि नीलकंठ उससे दूर भागता था। कुब्जा ने राधा के अंडे तोड़कर बिखेर दिए। इससे नीलकंठ की प्रसन्नता का अंत हो गया क्योंकि राधा से दूरी बढ़ गई थी। कुब्जा ने नीलकंठ के शांतिपूर्ण जीवन में ऐसा कोलाहल मचाया कि बेचारे नीलकंठ का अंत ही हो गया।

(घ) एक बार एक साँप जालीधर के भीतर आ गया। सब जीव-जंतु भागकर इधर-उधर छिप गए, केवल एक शिशु खरगोश साँप की पकड़ में आ गया। साँप ने उसे निगलना चाहा और उसका आधा पिछला शरीर मुँह में दबा लिया। नन्हा खरगोश धीरे-धीरे चीं-चीं कर रहा था। सोए हुए नीलकंठ ने दर्दभरी व्यथा सुनी तो वह अपने पंख समेटता हुआ झूले से नीचे आ गया। अब उसने बहुत सतर्क होकर साँप के फन के पास पंजों से दबाया और फिर अपनी चोंच से इतने प्रहार उस पर किए कि वह अधमरा हो गया और फन की पकड़ ढीली होते ही खरगोश का बच्चा मुख से निकल आया। इस प्रकार नीलकंठ ने खरगोश के बच्चे को साँप से बचाया।

अत: नीलकंठ ने बड़ी बहादुरी व सतर्कता तथा कुशल संरक्षक बनकर खरगोश के बच्चे को बचाया।

(ङ) कुब्जा एक ईर्ष्यालु मोरनी थी। वह दूसरों को परेशान करती थी और सबको नीलकंठ से दूर करने की कोशिश करती रहती थी। वह सभी जानवरों को अपनी चोंच से घायल कर देती थी। उसने राधा को भी घायल कर दियाथा और उसके अंडे नष्ट कर दिये थे।

पाठ से आगे

छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) ✓ (ख) × (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓ (च) ✓ (छ) ×
2. (क) लेखिका का बड़े मियाँ की दुकान पर जाना।
   (ख) लक्का कबूतरों का नृत्य छोड़कर मयूर शावकों को देखना।
   (ग) जालीघर में साँप का घुस आना।
   (घ) लेखिका के सामने नीलकंठ का नृत्य मुद्रा में खड़े होना।
   (ङ) वर्षा ऋतु आने पर नीलकंठ और राधा का नृत्य करना।
   (च) कुब्जा का राधा के अंडे फोड़ देना।
   (छ) कजली का कुब्जा से सामना।
3. (क) (v), (ख) (i), (ग) (vii), (घ) (vi), (ङ) (ii), (च) (iii), (छ) (iv)

व्याकरण-बोध

1. (क) फलाहार फलहीन फलदार
   (ख) सुगंध दुर्गंध निर्गंध
   (ग) ज्ञानवान अज्ञान विज्ञान
   (घ) रंगीन बदरंग रंगीला
2. (क) नव + आगंतुक
   (ख) सिंह + आसन
   (ग) नील + आभ
   (घ) आनंद + उत्सव

(ङ) विस्मय + अभिभूत
(च) मेघ + आच्छन्न

3. (क) नीला है जो कंठ (कर्मधारय समास)
(ख) सेना का पति (तत्पुरुष समास)
(ग) कलह और कोलाहल (द्वंद्व समास)
(घ) चिड़ियों को मारने वाला (तत्पुरुष समास)
(ङ) पढ़ना और लिखना (द्वंद्व समास)
(च) श्याम और श्वेत (द्वंद्व समास)
(छ) जीव और जन्तु (द्वंद्व समास)

रचनात्मक गतिविधियाँ

छात्र स्वयं करें।

7 माँ

पाठ बोध

मौखिक प्रश्न

(क) प्लेग की बीमारी के कारण।
(ख) नसरूल्लाह खान के पास।
(ग) मदरसे में काम करता था।
(घ) नवासी दर्जिन।

लिखित प्रश्न

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) बीस रुपये।
(ii) किराए का घर मिलते ही।
(iii) अपनी बीबी को।
(iv) भवन-गृह।

(ख) (i) (ख), (ii) (ग), (iii) (क), (iv) (घ)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) बढ़ई का काम।
(ख) आगे-पढ़ने का।
(ग) मस्जिद में नवाज पढ़ता था।
(घ) नवासी दर्जिन से।
(ङ) यह खाना और सारा सामान कहाँ से आया यह देखकर हमीद हैरत में था।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) हमीद की माँ के पास बस अपने शौहर के वक्त के बारह रुपये थे और आँगन में कटहल का पेड़, जो हर साल पच्चीस-तीस रुपये में बिक जाता था। उसी से अपना खर्च चलाती थी।

(ख) हमीद चाहता था कि सारे कुनबे को साथ लेकर जाए, माँ के लिए और दूसरे सगे-संबंधियों और पड़ोसियों के लिए देहली के तोहफे भी ले जाए मगर इस सबके लिए कभी दाम न हो पाए। इसलिए वह अपनी माँ से मिलने नहीं जा पाता था।

(ग) जनुकिया की मौत की खबर का हमीद पर बुरा असर पड़ा और वह माँ से मिलने के लिए अकेला ही चल पड़ा।

(घ) हमीद को देखकर उसकी माँ हमीद से लिपटकर रोने लगी और प्यार से हमीद के सिर पर हाथ फेरा, फिर गालों पर, फिर उसके सिर को छाती से लगाया और मुस्कराहट-सी आई और कहा, ''बेटा तुझे तो देख सकती हूँ अल्लाह का शुक्र है।

(ङ) माँ ने खाँ साहब की कोठरी का कमरा इसलिये साफ करवाया क्योंकि माँ ने सोचा मेरा बेटा शहर का रहने वाला है और मदरसे में नौकर है। वह इस छोटी कोठरी में कैसे सोऐगा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) हमीद दिल्ली जैसे मँहगे शहर में पढ़ाई पूरी करने के साथ-साथ अपने परिवार का भरण-पोषण बड़ी कठिनाई से करता था। हमीद ने अपनी जामत के एक लड़के को, जो हिसाब में कमजोर था। उसे हिसाब पढ़ाना शुरू कर दिया। उस लड़के के अब्बा हमीद को सात रुपये महीने देने लेने। थोड़े दिन बाद हमीद की शादी हुई। वह अपनी बीबी को लेकर दिल्ली गया। इधर-उधर मारे-फिरने पर हमीद को मदरसे में काम

करने का मौका मिला। तब उसकी तनख्वाह बीस से तीस रुपये महीने थी तथा तीन रुपये माहवार का एक छोटा-सा आँगन का घर ले रखा था, साथ ही वह दस रुपये महीने पर एक लड़के को पढ़ाने पर जाया करता था। लेकिन दिल्ली के खर्चे तथा बाल बच्चों के साथ उसने बड़ी मेहनत की और अपने परिवार को पालने में समर्थ रहा।

(ख) हमीद स्वार्थी नहीं, बल्कि परिस्थितियों का मारा हुआ एक भावुक इंसान है, परंतु असलियत में वह माँ से अत्यधिक प्रेम करता है।

स्वार्थी प्रतीत होने वाली घटनाएँ—

1. 7 वर्षों तक माँ से मिलने नहीं गया। लोगों को लगता है कि माँ इतनी बीमार थी तो मिलने क्यों नहीं आया।
2. माँ के पत्रों का वही जवाब भेजता रहा—''इंशा अल्लाह, आमों के मौसम में आऊँगा'' यह जवाब सालों से भेजता रहा, लेकिन कभी नहीं आया।

   निष्कर्ष—परन्तु ऐसा कुछ नहीं था। वह हालात का मारा था। उसके पास छुट्टी तथा आने-जाने का खर्चा नहीं था वह गरीबी में अर्थात् उतना ही कमाता था जितना वह अपना घर चला सके। उसको माँ से अधिक प्रेम था जब जुनकिया की मौत हुई तो उसे अपनी माँ याद आई और वह अपनी माँ से मिलने के लिए आया जब इसको पता चला कि मकान बिक गया, उसकी माँ की आँखे कमजोर हो गई और वह बेहद अकेली है, तो वह तुरंत अकेला ही लंबा सफर तय करके मिलने आया।

(ग) हमीद की माँ ने बीते 7 वर्षों का हर दिन बेटे के इंतजार में बिताया।

- भले ही वह गरीबी और बीमारी से जूझती रही, परंतु बेटे से मिलने की उम्मीद ने उसे जीवित रखा।
- उसने बेटे के लिए धीरे-धीरे खूबसूतर चादर, तकिए, इत्र, कपड़े आदि जमा किए थे। यह सब 7 वर्षों की ममता और समर्पण का प्रतीक है।
- माँ ने पड़ोसियों से मदद लेकर ईद के दिन अच्छे भोजन की व्यवस्था भी की।

अत: यह सब दिखाता है कि एक माँ अपनी गरीबी, अकेलेपन और बुजुर्ग अवस्था के बावजूद कैसे अपने बेटे से मिलने की आस में सब कुछ संजोए रखती है। उसकी ममता अमूल्य है।

(घ) हमीद की माँ के दिल में अपने बच्चे के लिए प्यार तथा एक उम्मीद जगी हुई थी। उसने अपने बच्चे की गलती को क्षमा किया। जब उसने अपने पास हमीद को देखा तब हमीद से लिपटकर रोने लगी। हमीद की माँ के बदन में बस हड्डियाँ-ही-हड्डियाँ रह गई थीं और उसने अपने बेटा से कहा, ''तू आ गया, मेरी तो जिंदगी हो गई। हामीद की माँ ने कई बार परेशानियों का सामना किया और अपने बेटे की जिम्मेदारी को निभाया। अत: माँ के हृदय में अपने बच्चों की बड़ी से बड़ी गलती को क्षमा करने का स्थान होता है। माँ कष्ट सहकर अपने बच्चों को सुख-सुविधा देने का प्रयास करती है। इस पाठ में हमीद की माँ का अच्छा चरित्र प्रस्तुत किया है।

(ङ) हमीद का चरित्र सबसे अच्छा लगा तथा नवासी दर्जिन ने भी उसकी माँ का ध्यान रखा। जब हमीद दिल्ली चला गया था अपनी माँ को छोड़कर तब नवासी दर्जिन ने ही उसकी माँ ध्यान रखा। लेकिन हम हमीद को गलत नहीं कह सकते क्योंकि उसके ऊपर अपने परिवार की जिम्मेदारी तथा शहर जाकर कुछ कमाने का भाव था। ऐसा नहीं है कि वह अपनी माँ से प्रेम नहीं करता वह अपनी माँ से प्रेम करता था।

अत: हमीद के चरित्र में करुणा, कर्तव्यनिष्ठा, प्रेम, सहनशीलता और धैर्य

की भावना थी। उसके मन में अपनी माँ के लिए प्रेम और भावनात्मक गहराई थी। हमीद छोटी उम्र से ही आत्मनिर्भर बन गया था। उसने पढ़ाने के साथ-साथ एक बच्चे को ट्यूशन पढ़ाकर अपने खर्चों का प्रबंध किया था। वह बहुत समझदार और कर्मठ था।

पाठ से आगे

छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) × (ख) × (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓ (च) ×
2. (क) जब हमीद मिडिल का इम्तहान देने वाला था तभी बस्ती में प्लेग की बीमारी फैल गई।
   (ख) उस लड़के के अब्बा हमीद को सात रुपया महीना देने लगे।
   (ग) मदरसे पहुँचे तो उदास-उदास, घर आए तो सुस्त-सुस्त।
   (घ) बकरीद के दिन सूरज डूबने से कोई घंटा-भर पहले मास्टर हमीद मुर्शिदाबाद पहुँचे।
   (ङ) लच्छू ने यह कहकर दरवाजा बंद कर लिया।
   (च) हमीद ने माँ से पूछा, ''अम्माँ, क्या तुम यहीं सोती हो?''
   (छ) हमीद का तो मुँह ही पीला पड़ गया।
   (ज) तकियों पर कोई अच्छा-सा इत्र मला।
3. (क) परीक्षा—रोहित इम्तहान की तैयारी कर रहा है।
   (ख) कक्षा—वह पाँचवीं जमात में पढ़ता हैं।
   (ग) इंतजाम—शादी में अच्छा बंदोबस्त था।
   (घ) कुटुंब—मोहन का कुनबा बड़ा है।
   (ङ) सहसा—उसके होठों पर बेसाख्ता चुप्पी आ गई।
   (च) पत्र—श्याम ने खत लिखा।
   (छ) डाँट—अपनी गलती न मानने की वजह वह दूसरों की मलामत पड़वाता है।

व्याकरण-बोध

1. (क) मर जाना—माँ-बाप बेटे के गम में अचानक चल बसे।
   (ख) दर-दर की ठोकर खाना—मुकेश नौकरी पाने के लिए मारा-मारा फिर रहा है।
   (ग) चौंक जाना—उस खबर को सुनकर मेरा कलेजा धक्क से रह गया।
   (घ) गहरा दु:ख होना—उसके शब्दों ने मेरे दिल मे तीर मार दिया।
   (ङ) मार डालना—पुलिस ने अपराधी का काम तमाम कर दिया।
   (च) मृत्यु को प्राप्त होना—मोहन कोरोना में अल्लाह को प्यारा हो गया।
   (छ) भावुक होना—अपनी बचपन की सहेली को देखकर मेरा जी भर आया।
2. (क) तीन—संख्यावाचक
   (ख) गरीब—गुणवाचक
   (ग) सफेद—गुणवाचक
   (घ) बुरा—गुणवाचक
   (ङ) यह—निश्चयवाचक
   (च) कुछ—अनिश्चयवाचक
   (छ) चार—संख्यावाचक
3. (क) के बाद (ख) के
   (ग) के वक्त (घ) के सामने
   (ङ) के पास
4. (क) अब (ख) इधर-उधर
   (ग) धीरे (घ) टटोलकर
   (ङ) उधर
5. (क) क़फ़न (ख) दफ़न
   (ग) दरवाज़ा (घ) ज़माना
   (ङ) रोज़ (च) सफ़ेद
   (छ) जंज़ीर (ज) फ़ायदा

रचनात्मक गतिविधियाँ

छात्र स्वयं करें।

8 पेट्रोल का विकल्प

पाठ बोध

मौखिक प्रश्न

(क) इंजीनियर था।

(ख) पेट्रोल का।

(ग) यह इंजन हाइड्रोजन से चलेगा।

(घ) अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

लिखित प्रश्न

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) इंजीनियर नागवंशी।

(ii) गंभीरता और थकावट।

(iii) विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में तरह-तरह। के चमत्कारी आविष्कार।

(iv) सरल वाक्य।

(ख) (i) (क), (ii) (घ), (iii) (ख), (iv) (क)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) सहयोगियों को प्रतीत हुआ कि नागवंशी अपने उद्देश्य में सफल हो गये हैं।

(ख) पेट्रोल का विकल्प।

(ग) सर, जब पेट्रोल ही नहीं रहेगा तो इस इंजन की खोज का क्या फायदा।

(घ) कतरल ध्वनि से किया।

(ङ) हाइड्रोजन और ऑक्सीजन।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) नागवंशी जी अपने उद्देश्य में सफल हो जाने पर बहुत खुश दिखाई दे रहे थे। उनके चेहरे पर पहले जैसी गंभीरता और थकावट दिखाई नहीं दे रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे वह अपने प्रमुख उद्देश्य में सफल हो गए हैं।

(ख) नागवंशी के अनुसार पेट्रोल की समस्या का समाधान हाइड्रोजन से संभव है। वे एक ऐसे आविष्कार की खोज में लगे थे जो पेट्रोल की जगह ले सकें और विश्व की ऊर्जा समस्या का समाधान कर सकें।

(ग) पाठ के अनुसार, पेट्रोल का संकट एक गंभीर समस्या है क्योंकि पेट्रोल एक सीमित प्राकृतिक संसाधन है जो लगातार कम होता जा रहा है। इसके उपयोग से प्रदूषण भी बढ़ रहा है। नागवंशी ने इस समस्या को समझा और कई वर्षों के शोध और प्रयासों से ऐसा आविष्कार किया जो पेट्रोल का पर्यावरण के अनुकूल विकल्प बन गया। उनके इस आविष्कार से पेट्रोल की कमी और प्रदूषण दोनों की समस्या का समाधान संभव हुआ।

(घ) गिरधर ने नागवंशी के समक्ष अपनी शंका व्यक्त की और कहा– ''सर, दिनोंदिन पेट्रोल की कीमत भी बढ़ती जाएगी जिससे मँहगाई भी बहुत बढ़ जाएगी। इससे आम आदमी का जीना तो मुश्किल ही हो जाएगा।''

(ङ) नागवंशी बताना भूल गए कि गाड़ियों से प्रदूषक गैसे भी नहीं निकलेंगी, क्योंकि यह इंजन हाइड्रोजन को जलाकर ही छोड़ेगा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) नागवंशी ने हाइड्रोजन प्राप्त करने की विधि बताते हुए कहा कि सोलर पैनल की मदद से धूप से ऊर्जा प्राप्त कर गाड़ी के अन्दर जल का विद्युत-विच्छेदन करके हाइड्रोजन और ऑक्सीजन अलग की जाएगी। तब छोटे-छोटे कम्प्रेसरों द्वारा अलग-अलग टंकियों में इनको जमा किया जायेगा। तब ये गैसें इंजन को गति प्रदान करेंगी।

(ख) हमारे देश में ही सेंट्रल इलेक्ट्रॉनिक लिमिटेड सोलर पैनल का निर्माण करती है। इसी पैनल की छत बनाकर धूप द्वारा प्राप्त ऊर्जा से जल को तोड़कर गाड़ी के अंदर विद्युत विच्छेन विधि का प्रयोग किया जाएगा। उससे हाइड्रोजन तथा ऑक्सीजन का निर्माण होगा, फिर उसे धूप-चालित छोटे-छोटे कंप्रेसरों द्वारा दो अलग-अलग टंकियों में जमा कराया जाएगा तब गाड़ी चलाते समय

ये दोनों गैसे इंजन में जाकर गाड़ी को गति प्रदान करेंगी। इसमें केवल जल की आवश्यकता होगी जिसे समय-समय पर भरते रहने की आवश्यकता होगी।

(ग) नागवंशी का यह आविष्कार वर्तमान में अत्यन्त लाभप्रद हैं। इसके पीछे कई तर्क हैं—

1. **पर्यावरण संरक्षण**—यह आविष्कार प्रदूषण रहित है, जिससे वायु प्रदूषण में कमी आती है। वर्तमान में बढ़ते प्रदूषण के चलते यह बहुत उपयोगी है।
2. **पेट्रोल पर निर्भरता कम**—यह आविष्कार पेट्रोल का सस्ता और स्थायी विकल्प प्रदान करता है, जिससे देश की विदेशी तेल पर निर्भरता घटती है।
4. **आर्थिक लाभ**—सस्ता ईंधन आम जनता और देश दोनों के लिए आर्थिक रूप से लाभदायक है।
5. **नवीकरणीय ऊर्जा का समर्थन**—यह आविष्कार वैकल्पिक और नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र को बढ़ावा देता है, जो भविष्य के लिए जरूरी है।

इस प्रकार नागवंशी का यह आविष्कार न केवल वैज्ञानिक दृष्टि से बल्कि, सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय दृष्टि से अत्यन्त लाभकारी हैं।

(घ) इस कथन का आशय है कि हर समस्या का कोई न कोई समाधान होता है। जब भी किसी व्यक्ति के जीवन में कठिनाइयाँ या चुनौतियाँ आती हैं, तो उनके समाधान की संभावना भी साथ होती है। समस्या आने पर धैर्य और प्रयास से उसका हल खोजा जा सकता है। यह पंक्ति, यह विश्वास दिलाती है कि चाहे स्थिति कितनी भी कठिन क्यों न हों, उसका समाधान अवश्य मिलेगा।

पाठ से आगे

छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

2. (क) (iii), (ख) (v), (ग) (i), (घ) (ii), (ङ) (iv)

2. (क) पेट्रोल।
   (ख) पेट्रोलियम भंडार।
   (ग) पेट्रोल संकट।
   (घ) सेंट्रल इलेक्ट्रॉनिक लिमिटेड।
   (ङ) प्रदूषक गैसें।

व्याकरण-बोध

1. (क) नाखुश (ख) असफल
   (ग) निर्यात (घ) समाधान
   (ङ) नुकसान (च) दुखद
   (छ) मँहगा (ज) अनुपस्थित
2. (क) संघर्ष (ख) उत्साहपूर्वक
   (ग) पेट्रोल (घ) वर्ष
   (ङ) प्रक्रिया (च) प्रदूषक
3. (क) विधानवाचक। (ख) नकारात्मक।
   (ग) बिस्मयवाचक। (घ) संकेतवाचक।
   (ङ) प्रश्नवाचक।

रचनात्मक गतिविधियाँ

छात्र स्वयं करें।

9 महात्मा गाँधी : एक हकीम

पाठ बोध

मौखिक प्रश्न

(क) डॉक्टरी पढ़ने के।

(ख) अनुबद्योपाध्याय की पुस्तक 'बहुरूप गाँधी' से।

(ग) होम्योपैथिक में।

(घ) भिलावाँ जलाकर लगाने को कहा।

लिखित प्रश्न

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) मनोयोग और स्नेह से।
   (ii) घरेलू डॉक्टर।
   (iii) गाँधीजी की कुछ बातों का समर्थन किया।
   (iv) असफलता।

(ख) (i) (ख), (ii) (घ), (iii) (घ), (iv) (ग)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) राजकोट के अल्फ्रेड हाईस्कूल से।

(ख) जीव-जंतुओं की चीर-फाड़।

(ग) टाइफाइड।

(घ) गाँधीजी की पत्नी।

(ङ) सिर में चर्म रोग।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) गाँधी जी की डॉक्टरी पढ़ने की इच्छा पूरी इसलिए नहीं कर पाये क्योंकि वह जीव-जंतुओं की चीर-फाड़ करके उनका सीरम तैयार करने के सख्त खिलाफ थे। इसी कारण वह डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी नहीं कर पाये।

(ख) गाँधीजी प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति पर विश्वास करते थे। इस प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से रोगियों को काफी लाभ मिला।

(ग) गाँधीजी जानते थे कि प्राकृतिक चिकित्सा से सभी लोग अच्छे नहीं हो सकते, फिर भी वे प्राकृतिक चिकित्सा का प्रचार इसलिए करना चाहते थे क्योंकि वे मानते थे कि यह एक सस्ती, सरल और प्रभावी चिकित्सा पद्धति है तथा गरीब लोग आसानी से इलाज करा सकते हैं।

(घ) आश्रम में लोग मजाक में कहा करते थे कि 'यदि बापू को अपने पास बुलाना हो तो बस बीमार पड़ जाओ।'

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) पाठ के आधार पर गाँधीजी प्राकृतिक चिकित्सा में विश्वास रखते थे। उनके अनुसार व्यायाम, प्राणायाम, उपवास तथा शाकाहार द्वारा स्वास्थ्य लाभ लिया जा सकता है। वे अपने आश्रम में आने वाले रोगियों की देखभाल व सेवा सुश्रूषा स्वंय करते थे। प्रस्तुत पाठ में गाँधीजी का एक हकीम के रूप में वर्णन किया है।

(ख) एक बार गाँधीजी की पत्नी को गंभीर रक्तहीनता (एनीमिया) हो गई। डॉक्टर ने उन्हें मांस का शोरबा देने को कहा किंतु गाँधीजी और कस्तूरबा दोनों तैयार नहीं थे। डॉक्टर ने कस्तूरबा को दाल और नमक छोड़ने को कहा था। किंतु कस्तूरबा गाँधीजी से बोली—''कहना तो आसान है, लेकिन क्या तुम भी छोड़ सकते हो। बस इसी कारण उन्होंने अपनी पत्नी के साथ एक साल तक दाल और नमक छोड़ दिया।

(ग) गाँधीजी बड़े मनोयोग और स्नेह से रोगी की देखभाल करते थे। इससे उनको इलाज में काफी सफलता मिलती थी।

इसका उदाहरण इस प्रकार है—एक बार उनके दस बरस के बेटे को टाइफाइड हो गया। डॉक्टर ने उसे मुर्गी का शोरबा और अंडे खिलाने को कहा। गाँधीजी आमिष आहार नहीं देना चाहे थे, अत: उन्होंने स्वयं ही बालक की चिकित्सा करने का फैसला किया। वह रोगी को केवल पानी और संतरे का रस पिलाते थे और उसके शरीर पर गीली चादर लपेट कर ऊपर से कंबल ढक देते थें इस प्रकार उस बालक उन्होंने स्वस्थ किया तथा ऐसे कई रोगियों को उन्होंने स्वस्थ किया।

(घ) गाँधीजी ने पहले दिन उनसे बहस करने के लिए एक व्यक्ति को भेजा और बहस के पहले और फिर बाद का रक्तचाप लिया। अगले दिन उन्होंने तख्ते पर एक लकीर खींची और उनसे उसी लकीर पर आरी से सीधा चीरने को कहा तथा इस काम के पहले और बाद में फिर उनका रक्तचाप लिया। तीसरे दिन उन्हें दो फर्लांग दौड़ाने के बाद जब उनका रक्तचाप लिया गया तो पता चला कि रक्तचाप कम हो गया है। पहले दो दिन रक्तचाप बढ़ा था। गाँधीजी ने उन्हें सला दी कि जब भी तुम्हारा रक्तचाप बढ़े, तुम थोड़ा-सा घूम-फिर कर उसे कम कर सकते हो।

(ङ) अब्दुल गफ्फार खाँ के सिर में चर्म रोग हो गया था। गाँधीजी ने जो घरेलू दवाई बताई वह इस तगड़े पठान को रोग से जयादा तकलीफ देने लगी। एक बार बल्लभ भाई पटेल के पैर में काँटा चुभ गया। गाँधीजी ने उन्हें आइडीन के बदले उस पर भिलावाँ

जलाकर लगाने को कहा। बल्लभ भाई ने कहा कि इस दवा की जलन से तो काँटे की चुभन ही अच्छी थीं।

पाठ से आगे

छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) × (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) × (ङ) ✓
2. (क) (vi), (ख) (v), (ग) (iv), (घ) (i), (ङ) (iii)

व्याकरण-बोध

1. (क) अनिश्चय (ख) शत्रु
   (ग) सहायक (घ) प्रेम
   (ङ) अमृत (च) कठिन
   (छ) सुफल (ज) सबल
2. (क) भविष्यकाल (ख) भूतकाल
   (ग) वर्तमान काल (घ) भूतकाल
   (ङ) भूतकाल (च) वर्तमान काल

रचनात्मक गतिविधियाँ

छात्र स्वयं करें।

10 वर्षा समीर

पाठ बोध

मौखिक प्रश्न

(क) हरिवंश राय बच्चन

(ख) बरसात की हवा की अठखेलियों का।

(ग) कोयल, पपीहा (मादा), मोरनी और मोर हैं।

लिखित प्रश्न

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) खुले आकाश में शून्य से।

(ii) हवा हर्षित होकर आगे की ओर झपटती है और हर अंग से लिपटती हुई बहती है।

(iii) आनंद और उत्साह का अनुभव करते हैं।

(iv) वायु, पवन।

(ख) (i) (क), (ii) (घ), (iii) (ख), (iv) (क)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) बरसाती हवा का।

(ख) हवा।

(ग) बादलों को एक स्थान से दूसरे स्थान पहले जाती है तथा मौसम में ठंडक तथा ताजगी बनाती है।

(घ) सूर्य की किरणों के जल की बूँदों से टकराने पर दिखाई देता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) 'मधु सिक्त मदमाती हवा' से तात्पर्य है, ''बरसात की हवा मधुरता के लिए हुए है और वह मस्त होकर बह रही है।''

(ख) हवा पर्वतों के ढालों, ऊँचे-ऊँचे शिखरों की चोटियों, आकाश-पाताल, वृक्षों की पंक्तियों और वृक्षों की हर डाल व लताओं के साथ खेलती है।

(ग) बरसात की हवा अंगों से लिपटकर नदी और झरनों की धाराओं के साथ खेलती है। वह तालाब, नदी, निर्झरों इन सबके इस पार से उस पार तक आनन्द के साथ बहती है।

(घ) बरसात की हवा लाल और पीले बादलों के साथ रंगों की रेल बनाकर बहती हुई आती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) बरसाती हवा सबको खुशी प्रदान करती है। यह एकदम से नयी खुशी के साथ सबसे लिपटती हुई आनंद देती है। बरसात की ठंडी-ठंडी और सुगंध भरी हवा सभी को बहुत अच्छी लगती है। बरसात की हवा मनुष्यों के साथ-साथ पशु-पक्षियों को भी बहुत प्रिय है, तभी तो इस ऋतु में कोयल और पपीहा गाने लगते हैं और मोर-मोरनी बोलने लगते हैं बरसात के बाद ही इंन्द्रधनुष दिखायी देता है और कभी-कभी चंद्रमा के साथ बादल दिखायी देते हैं। बरसात की हवा लाल और पीले बादलों के साथ रंगों की रेल भी बनाती है।

(ख) बरसात की हवा ऊँचे-ऊँचे पर्वतों के मस्तक से होकर ढलान तक खेलती है, साथ-ही-साथ आकाश से लेकर पाताल तक जोर-जोर से लहराती हुई खेलती जाती है। बरसात की हवा तालाब के जल से और नदियों और झरनों की धाराओं के साथ खेलती हुई इस पार से उस पार तक खुशी के साथ झूमती हुई आती-जाती रहती है। हवा पेड़ों की पंक्तियों में जाकर उसकी हर डाल के साथ खेलती है। मुलायम घनी बेलों के साथ खुशियों के साथ इतराती हुई खेलती हैं।

(ग) जब सूरज की किरणें वर्षा की बूँदों से टकराती है, तब वह बूँदे एक पारदर्शी शीशे का काम करती हैं। इसलिए जब सफेद किरणें बूँद के पार निकलती हैं, तब वह सात रंगों में बँट जाती हैं। इसका आकार धनुष जैसा बन जाता है। इसे ही इंद्रधनुष कहते हैं। यही कारण है कि इंन्द्रधनुष वर्षा के पश्चात् सूर्य निकलने पर ही दिखायी देता है इसलिए यह वर्षा ऋतु में ही संभव हैं।

कविता से आगे

वर्षा धुले आकाश से या चंद्रमा के पास से या बादलों की साँस से।

यह खेलती है ढाल से ऊँचे शिखर के भाल से, आकाश से पाताल से।

विविध प्रश्न

1. (क) बादलों (ख) झकझोर
   (ग) हर्ष (घ) ढाल

2. (क) (iv), (ख) (i)।

भाषा सौन्दर्य

छात्र स्वयं करें।

व्याकरण-बोध

1. (क) शीतल (ख) उच्च
   (ग) नीला (घ) हरी-भरी
   (ङ) अपार (च) सुशील
2. (क) पवन समीर
   (ख) शशि चाँद
   (ग) गगन नभ
   (घ) तालाब सरोवर
   (ङ) वृक्ष पेड़
   (च) कोयल काकली
   (छ) मयूर मोर
   (ज) बादल मेघ
3. (क) तालाब बाण
   (ख) किनारा बाण
   (ग) शहद मदिरा
   (घ) घी स्थान का नाम

रचनात्मक गतिविधियाँ

छात्र स्वयं करें।

11 हमवतन-सा मॉरिशस

पाठ बोध

मौखिक प्रश्न

(क) मॉरिशस।

(ख) हिंद महासागर का मोती।

(ग) गन्ना तथा दूसरा पर्यटक है।

(घ) दो प्रकार की।

लिखित प्रश्न

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) सर शिव सागर रामगुलाम अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर।

(ii) हरी-भरी वनस्पतियाँ दिखाई दीं।

(iii) हिंद महासागर का मोती कहा जाता है।

(iv) अंतर + राष्ट्रीय।

(ख) (i) (क), (ii) (ख), (iii) (घ), (iv) (ग)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) प्राकृतिक, सौन्दर्य का दृश्य।

(ख) बारह लाख।

(ग) चार लोग।

(घ) व्यापार करते थे अथवा स्वयं की खेती करते थे।

(ङ) पोर्टलुई।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) मॉरिशस की सड़के बहुत बेहतरीन थीं।

(ख) मॉरिशस में अफ्रीकी, चीनी, भारतीय, यूरोपीय, पुर्तगाली आदि संस्कृतियों का अद्‌भुत सामंजस्य देखने को मिलता है।

(ग) रास्ते में उन्होंने आम का वृक्ष, छितवन, गूलर, पाकड़, नीम, इमली, चीड़, गुलमोहर आदि के वृक्ष देखें

(घ) मौरिशस का एक रुपया हमारे ढाई रुपया (2.50) के बराबर है। यानी भारतीय रुपयों में एक केले की कीमत साढ़े सात (7.50) रुपये होगी।

(ङ) भारतीय हिंदी अध्यापक सुरेश ऋतुपर्ण ने मुझे सलाह दी कि मैं वहाँ किसी दुकान पर अपना चश्मा ठीक करने को न दूँ, बहुत महँगा पड़ेगा। अंत में सदानंद शाही ने भारत की अप्रतिम टेक्नॉलॉजी से उसे ठीक कर दिया।

(च) मौरिशस में पाँच शहर तथा नब्बे गाँव हैं तथा शहरों के नाम इस प्रकार है— पोर्टलुई बोवासाँ, क्वात्रे बोर्नस, बाक्वा व क्यूर्पिप।

(छ) मॉरिशस में सबसे गरीब हैं—अफ्रीकी मूल के क्रियोल। इनके पूर्वजों को डच और फ्रैंच लोग गुलामों के रूप में यहाँ लाए थे। फ्रैंच क्रियोल अपेक्षाकृत सम्पन्न हैं। मॉरिशस की खेती का अधिकांश भाग इनके और मुसलमानों के हाथ में है। यही कारण है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) मॉरिशस, हिंद महासागर में स्थित एक खूबसूरत द्वीप देश है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है। यहाँ के समुद्र तट, हरे-भरे पहाड़ और विविध समुद्री जीवन पर्यटकों को अपनी और आकर्षित करते हैं। मॉरिशस अपने तटीय उपहारों के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें प्राचीन समुद्र तट और विस्तृत प्रवाल भित्तियाँ हैं, जो मूर्तिकला ज्वालामुखी पर्वत दृश्यों की पृष्ठभूमि में स्थित हैं। मकर रेखा पर स्थित, मॉरिशस को ''हिंद महासागर का मोती'' कहा जाता है।

(ख) **मॉरिशस के गाँव**—गाँव में छोटे-छोटे घर साफ-सुथरे और भली-भाँति सुसज्जित हैं जिनमें टेलीफोन और कम्प्यूटर की भी व्यवस्था है। बैठकों की परम्परा यहाँ शुरू से रही है। गिरमिटियों ने अपने-आप को एकजुट रखने और अपने सुख-दु:ख को बाँटने के लिए ऐसी बैठकों की शुरूआत की थी। यहाँ के अधिकांश लोग स्वयं की खेती-किसानी या व्यापार करते हैं। यहाँ गन्ना की खेती अधिकतर होती है।

मॉरिशस की सड़कें—मॉरिशस की सड़कें भी बहुत बेहतरीन हैं। यहाँ की सड़कों के किनारे पर पेड़-पौधे तथा साफ-सफाई बहुत होती है।

(ग) यहाँ की सरकार की ओर से यहाँ के प्रत्येक नागरिक के लिए दवाई और इंटरमीडिएट तक की शिक्षा का नि:शुल्क प्रबंध किया है। यहाँ उच्च शिक्षा भी सस्ती है।

नागरिकों के लिए किए गये प्रमुख कार्य—

1. **शिक्षा का विकास**—मॉरिशस सरकार ने मुफ्त शिक्षा की व्यवस्था की है तथा प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय तक अच्छी शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध की है।
2. **स्वास्थ्य सेवाएँ**—सरकार ने नागरिकों के लिए सरकारी अस्पतालों में इलाज नि:शुल्क की व्यवस्था की है।
3. **रोजगार और सामाजिक सुरक्षा**—बेरोजगारी को कम करने के लिए सरकार ने बुजुर्गों, विधवाओं और विकलांगों को पेंशन भी देने की योजना बनायी है।
4. **सड़क और यातायात सुविधा एवं पर्यावरण संरक्षण**—ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में अच्छी सड़कें तथा सरकार ने पेड़ लगाने, समुद्री तटों की सफाई और कचरा प्रबंधन के लिए अभियान चलाए हैं।

(घ) मॉरिशस के समुद्र तट चारों दिशाओं में बहुत ही सुंदर हैं। उनका सफेद बालू तथा

नीला, काला और हरा जल पर्यटकों को अपनी और आकर्षित करता है। समुद्र तटों पर झौवा वृक्ष और आस-पास मनोरम वन हैं। इन वनों में न ही हिंसक पशु और न ही साँप-बिच्छू पाए जाते हैं।

(ङ) मॉरिशस की आय का पहला स्रोत गन्ना की खेती है। यहाँ अधिकांश (90%) जमीन पर गन्ना बोया जाता है। अत: यह आय का स्रोत है तथा आय का दूसरा स्रोत पर्यटन है। मॉरिशस का नैसर्गिक सौंदर्य है ही इतना आकर्षक कि उसे निहारने के लिए सारी दुनिया से पर्यटक यहाँ आते हैं।

(च) मॉरिशस हिंद महासागर से दक्षिण पश्चिम भाग में मकर रेखा के उत्तर में स्थित है। मॉरिशस में लगभग सभी सामान बाहर से आता है। मॉरिशस हिंद महासागर के दक्षिण-पश्चिम में स्थित एक प्राकृतिक द्वीप माना जाता है। यहाँ का निकटतम भूखंड मेड़ागास्कर है जो यहाँ से 500 मील पश्चिम में है। अफ्रीका का पूर्वी समुद्र तट 1265 मील, मुम्बई 2875 मील और ऑस्ट्रेलिया का समुद्र तट 3625 मील की दूरी पर है। यहाँ खाने-पीने का सामान भारत, अफ्रीका और यूरोप से आता है।

पाठ से आगे

छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) ✓ (ख) × (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓ (च) ✓ (छ) × (ज) ×
2. (क) (iii), (ख) (v), (ग) (i), (घ) (vi), (ङ) (ii), (च) (iv)

व्याकरण-बोध

1. (क) वनस्पतियाँ (ख) सड़कें
   (ग) पहाड़ियाँ (घ) संस्कृतियाँ
   (च) गाँवों (च) गुलामों
   (छ) बैठकें (ज) पर्यटकों
2. (क) भारत + ईय (ख) अफ्रीका + ई
   (ग) पुर्तगाल + ई (घ) हरी + आली
   (ङ) सिंदूर + ई (च) प्रकृति + इक

रचनात्मक गतिविधियाँ

छात्र स्वयं करें।

12 महान खोज : पौधों में जीवन

पाठ बोध

मौखिक प्रश्न

(क) रविवार के दिन।

(ख) क्योंकि इनमें पानी डाल दिया था इसलिए वह खुश लग रही थीं।

(ग) अयान और सानवी के बीच।

(घ) 30 नवम्बर, 1858 को बंगाल प्रांत के ढाका जिले में।

लिखित प्रश्न

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) अयान ने।

(ii) भला कभी पेड़ पौधों को भी दर्द होता है।

(iii) पेड़-पोधे।

(iv) दुख दर्द की बात सोचकर परेशान थी।

(ख) (i) (ग), (ii) (ख), (iii) (घ), (iv) (क)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) भाई और बहन हैं।

(ख) महान वैज्ञानिक थे।

(ग) माँ ने जानकारी दी।

(घ) पेड़-पौधों तथा जीव-जन्तुओं को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाऊँगा।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) पौधों की डालियाँ तोड़ने पर सानवी ने मना किया कि पौधों को भी दर्द हो रहा है। इस बात पर दोनों के बीच बहस छिड़ गई।

(ख) गुड़हल की आड़ी-टेड़ी डालियों को लेकर अयान के मन में विचार आया कि अगर इन डालियों को तोड़ दिया जाए तो पौधे और सुंदर लगने लगेंगे।

(ग) डॉ. जगदीश चंद्र बसु के मन में पेड़-पौधों और जानवरों के प्रति आकर्षण उनके वैज्ञानिक शोध और प्रयोगों के कारण उत्पन्न हुआ।

(घ) बसु को डॉक्टर ऑफ साइंस की उपाधि तथा भारत सरकार ने 'सर' की उपाधि से सम्मानित किया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) गाँव की पाठशाला में शिक्षा प्राप्त करते समय आसपास के प्राकृतिक सौंदर्य के कारण उनमें बचपन से ही पेड़-पौधों तथा जीव-जंतुओं के प्रति आकर्षण उत्पन्न हुआ। हरे-भरे खेतों और बगीचों के काम करना, जंगलों में घूमना, तरह-तरह के जीव जंतुओं को पालना और घुड़सवारी करना उनके प्रमुख शौक थे। अत: गाँव में शिक्षा प्राप्त करते समय ज्ञान, कौशल और सामाजिक गुणों का विकास हुआ।

(ख) बसु ने 1901 में अपने प्रयोगों से यह सिद्ध किया कि पेड़-पौधों में भी जीवन होता है, उन्होंने पौधों को काटने या जलाने पर उनकी प्रतिक्रियाओं को देखकर यह महसूस किया कि पेड़-पौधे भी हमारी तरह सुख-दुख का अनुभव करते हैं। पेड़-पौधों में भी चेतना होती है। इन्हें भी दर्द का अनुभव होता है। उन्होंने यह भी पाया कि पौधे अपने आस-पास के वातावरण में होने वाले बदलावों के प्रति भी संवेदनशील होते हैं, जैसे कि प्रकाश, तापमान और आर्द्रता। उन्होंने अपने प्रयोगों में पौधों की प्रतिक्रियाओं को मापने के लिए 'क्रेस्कोग्राफ' नामक एक उपयोग का प्रयोग किया। अत: उन्होंने यह सिद्ध किया कि पेड़-पौधों को हानि पहुँचाने से उन्हें पीड़ा होती है। इनके अंदर प्रेम, भय, शौक आदि के भाव भी होते हैं।

(ग) बसु महोदय ने सन् 1906 में एक पुस्तक 'वृक्षों में जीव हैं' प्रकाशित कराई। जिसमें पेड़-पौधे की प्रकृति और विकास के बारे में जानकारी दी गई थी। उन्होंने पेरिस में एक महत्वपूर्ण भाषण दिया और जंतु तथा वनस्पतियों में समानता बताई। अमेरिका, फ्रांस, इंग्लैण्ड, ऑस्ट्रेलिया, जापान आदि देशों में उन्होंने अपनी खोज पर भाषण दिए। वे जहाँ भी जाते विज्ञान प्रेमी उनके भाषण सुनने के लिए उनको घेर लेते। लोग उनके कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते। उत्कृष्ट वैज्ञानिक अनुसंधानों के लिए लंदन विश्वविद्यालय ने उनको 'डॉक्टर ऑफ साइंस' की उपाधि तथा भारत सरकार ने 'सर' की उपाधि से सम्मानित किया। अपार धैर्य, दृढ़ संकल्प शक्ति, दयालुता, स्वाभिमान और राष्ट्रप्रेम जैसे गुण उनके चरित्र की विशेषताएँ थीं।

पाठ से आगे

छात्र स्वयं करें।

व्याकरण-बोध

1.
- राजू को मोहन का मारकर चैन मिला।
- सीता की चेन खो गई।
- गेंदा का फूल पीला होता है।
- उसने मुझे अमृत पिला दिया।
- आज सोमवार का दिन है।
- मोहन दीन-दु:खियों की सहायता करता है।
- राम और श्यामू भाई-भाई हैं।
- मैं आगरा की ओर जा रहा हूँ।

3. निम्नलिखित वाक्यों को तोड़कर अलग-अलग सार्थक वाक्य बनाइए—

(क) मैं आया।
वह चला गया।

(ख) आप नहीं जानते।
पेड़ों को भी दर्द होता है।

(ग) उसने परिश्रम किया।
वह उत्तीर्ण हो गया।

(घ) मैं अवश्य आता।
आपने कहा ही नहीं।

विविध प्रश्न

1. (क) × (ख) ✓ (ग) × (घ) ✓ (ङ) × (च) ✓

2. (क) ठंडी-ठंडी हवा बह रही थी।
(ख) भला कहीं पेड़-पौधों कोभी दर्द हो सकता है।

(ग) पेड़-पौधों को भी दर्द होता है, इन्हें भी दुख का एहसास होता है।

(घ) जगदीश चंद्र बसु का जन्म 30 नवम्बर, 1858 को हुआ था।

(ङ) उन्होंने पेरिस में एक महत्वपूर्ण भाषण दिया और जन्तुओं तथा वनस्पतियों में समानता बताई।

(च) उत्कृष्ट वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए भारत सरकार ने उन्हें 'सर' की उपाधि से सम्मानित किया।

(छ) अयान के मन पर इन बातों का गहरा प्रभाव पड़ा।

व्याकरण-बोध

2. क्यारी — क्यारियाँ
   चेतावनी — चेतावनियाँ
   डाली — डालियाँ
   पौधा — पौधे
   खिलौना — खिलौने
   भौंरा — भौंरे

रचनात्मक गतिविधियाँ

छात्र स्वयं करें।

13 अशोक का शस्त्र-त्याग

पाठ बोध

मौखिक प्रश्न

(क) मगध साम्राज्य का।

(ख) कलिंग में बनी थी क्योंकि कलिंग एक स्वतन्त्र राज्य था।

(ग) कलिंग महाराज की पुत्री राजकुमारी पद्मा

(घ) बौद्धधर्म को ग्रहण किया।

लिखित प्रश्न

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) सैनिकों को।
(ii) कलिंग को जीत नहीं पाए।
(iii) कलिंग।
(iv) ध्वज, झंडा।

(ख) (i) (ग), (ii) (ख), (iii) (क), (iv) (ख)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) मगध की विजय हुई! कलिंग जीत लिया गया। इस प्रश्न पर दूत चुप्पी साध लेता है।

(ख) चार साल से कलंग के साथ युद्ध चल रहा था।

(ग) मैं कल युद्ध में सेना का संचालन स्वयं करूँगा। जाओ कलिंग के फाटक खोल दो।

(घ) क्योंकि वह स्त्रियों पर शस्त्र नहीं चलायेंगे।

(ङ) राजकुमारी पदमा।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) सम्राट अशोक के दूत को आज्ञा दी कि जाओ, जाकर सेनापति से कह दो कि कल युद्ध में सेना का संचालन मैं करूँगा।

(ख) मगध की सेना कलिंग पर अधिकार करने में असफल इसलिए पाई गई क्योंकि कलिंग एक मजबूत और शक्तिशाली राज्य था। जिनकी सेना कुशल थी और अन्त में कलिंग के राजा मारे जाने पर राजकुमारी पद्मा को देखकर अशोक ने हार मान ली।

(ग) युद्ध भूमि में पद्मा को सामने देखकर अशोक के मन में यह विचार उठे कि क्या साक्षात् दुर्गा कलिंग की रक्षा करने के लिए युद्ध भूमि में उतर आई हैं? क्या अशोक को स्त्रियों का भी वध करना होगा? ना! ना! मैं स्त्री-वध नहीं करूँगा। मुझे विजय नहीं चाहिए मैं पाप नहीं करूँगा। मुझे नहीं चाहिए मैं पाप नहीं करूँगा। मैं शस्त्र नहीं चलाऊँगा।

(घ) सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध के दौरान अपनी तलवार फेंकने का आदेश सैनिकों को दिया क्योंकि सम्राट अशोक ने युद्ध में लाखों लोगों सिर काटे हैं और वह कभी किसी के सामने झुका नहीं है। आज वह राजकुमारी पद्मा के आगे नत है। सम्राट अशोक ने कहा अब हथियार नहीं उठाऊँगा यह मेरी अटल प्रतिज्ञा है क्योंकि युद्ध में

बहुतेतर नरसिंहियों की हत्या करने के बाद मुझे अत्यन्त पछतावा था और अब मैं अब बौद्ध धर्म अपनाऊँगा तथा अहिंसा मार्ग अपनाने का निर्णय लेता हूँ।

(ङ) राजकुमारी पद्मा के ललकारने पर भी अशोक युद्ध के लिए सज्ज नहीं हुये क्योंकि वह स्त्रियों पर शस्त्र नहीं चलाते थे।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) प्रस्तुत नाटक में सम्राट अशोक सबसे अधिक प्रभावशाली लगे हैं। इस युद्ध में उन्होंने भविष्य में कभी भी शस्त्र न उठाने की दृढ़ प्रतिज्ञा की थी।

तर्क सहित स्पष्टकीरण–

1. **अहंकार का त्याग–** वे अपने अहंकार का त्याग करके राजकुमारी पदमा के सामने नत मस्तक हो गये।
2. **आत्मबोध का प्रतीक**—उन्होंने अपने युद्धों में हुई हिंसा और हत्याओं को समझा और स्वीकार किया।
3. **विनम्रता की चरम सीमा**—एक सम्राट का इस तरह झुकना यह दिखाता है कि सच्ची महानता ताकत में नहीं, बल्कि विनम्रता और करुणा में हैं।

अत: सम्राट अशोक के चरित्र परिवर्तन की झलक इस पाठ में प्रस्तुत की गई है।

(ख) राजकुमारी पद्मा एक साहसी, बुद्धिमान और स्वतंत्र विचार वाली महिला हैं। वह महिलाओं के प्रति समाज के रूढ़िवादी रवैये से क्षुब्ध है और अपने अधिकारों के लिए खड़ी होती है।

राजकुमारी पद्मा का चरित्र-चित्रण–

1. **सौंदर्य की मिसाल**—राजकुमारी पद्मा अत्यन्त रूपवती थी।
2. **बुद्धिमान और विवेकशील**—वह अत्यन्त बुद्धिमान व विवेकशील थी। उन्होंने अपने जीवन के हर निर्णय में विवेक और धैर्य का परिचय दिया।
3. **वीरांगना और आत्म सम्मानी**—वह एक निडर व आत्म-सम्मानी थी। उन्होंने मृत्यु को गले लगाया, परंतु अपने सम्मान को ठुकराने नहीं दिया।
4. **प्रेरणा स्त्रोत**—राजकुमारी पद्मा का चरित्र आज भी नारी सम्मान, आत्मबल, और बलिदान का प्रतीक माना जाता है। अत: वह साहसी, निडर व आत्म सम्मानी थी।

(ग) उन्होंने बौद्ध धर्म अपनाया और अपने राज्य में 'धम्म' नामक नीति लागू की। 'धम्म' नीति का मुख्य उद्देश्य था प्रजा के कल्याण, आपसी प्रेम, सहिष्णुता और अहिंसा को बढ़ावा देना। उन्होंने प्रतिज्ञा ली कि मेरे शरीर में जब तक प्राण रहेंगे तब तक अहिंसा ही मेरा धर्म है और मैं अपनी प्रजा की भलाई करूँगा। सब प्राणियों को सुख और शान्ति पहुँचाने का प्रयत्न करूँगा। सब धर्मों को समान दृष्टि से देखूँगा। उन्होंने धर्म वाक्य में बोला, ''सत्यंवद, धर्मं चर'' (सत्य बोलो, धर्म का पालन करो और उन्होंने बौद्ध धर्म को अपनाया तब बौद्ध भिक्षु बोले–

बुद्धं, शरणं गच्छामि।
धर्मं, शरणं गच्छामि।
संघ, शरणं गच्छामि।

(घ) सम्राट अशोक का स्त्रियों के प्रति व्यवहार बहुत ही सम्मानजनक और समानतापूर्ण था। वे प्रथम शासक थे जिन्होंने स्त्री-पुरुष समानता की बात की थी। उन्होंने स्त्रियों को विशेष स्थान दिया। उन्होंने पाठ के आधार पर जब राजकुमारी पद्मा ने युद्ध के लिए ललकारा तो उन्होंने कहा, स्त्रियों का वध नहीं करेगा। क्योंकि मैं यह पाप नहीं करूँगा। मैं स्त्रियों पर शस्त्र नहीं चलाऊँगा। तब से वह स्त्रियों के प्रति व्यवहार कुशल बने।

पाठ से आगे

छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ×
(ङ) ✓ (च) ✓ (छ) ×

2. (क) सम्राट अशोक का चिंतित होकर शिविर के बाहर टहलना।
(ख) अचानक कलिंग के दुर्ग का फाटक खुलना।
(ग) पद्मा का सम्राट अशोक को युद्ध के लिए ललकारना।
(घ) युद्धभूमि में स्त्री-सेना को देखकर अशोक का चौंक जाना।
(ङ) राजकुमारी पद्मा के समक्ष सम्राट अशोक का सिर झुकाकर खड़े हो जाना।
(च) अपने सैनिकों को तलवार फेंकने की आज्ञा देना।
(छ) सम्राट अशोक का बौद्ध धर्म ग्रहण करना।

व्याकरण-बोध

1. (क) निर + अपराधी : स्वर सन्धि
(ख) पूर्ण + आहुति : गुण सन्धि
(ग) सदा + आवर्त : स्वर सन्धि
(घ) आत्मा + उत्सर्ग : स्वर सन्धि

2.

समास-विग्रह	**समास का नाम**
(क) महान है जो राजा	कर्मधारय समास
(ख) सेना का पति	तत्पुरुष समास
(ग) शस्त्र से सज्जित	तत्पुरुष समास
(घ) युद्ध के लिए भूमि	तत्पुरुष समास
(ङ) कलिंग देश का दुर्ग	तत्पुरुष समास
(च) राजा की कुमारी	तत्पुरुष समास
(छ) सस्त्र से खाली हाथ	तत्पुरुष समास
(ज) हिंसा से रहित	तत्पुरुष समास

3. (क) मुकाबला करना— स्वतंत्रता सेनानियों ने डटकर अँग्रेजों से लोहा लिया।
(ख) मृत्यु होना —(अनदेखा करना) सरकार ने गरीबों की समस्या पर आँखे बंद कर लीं।
(ग) पति की मृत्यु होना — युद्ध मैं सैनिक शहादत ने उसकी पत्नी के माँग का सिन्दूर पौंछ दिया।
(घ) बदला देना — दुश्मनों ने राजा को मारकर खून की प्यास बुझाई।

4. (क) (प्रसन्नता पूर्वक) मारे गए हैं। तो मगध की विजय हुई है! कलिंग जीत लिया गया है।
(ख) सामने कलिग दुर्ग है, जिसके फाटक बंद हैं।
(ग) उनकी तलवारें खिंची-की-खिंची रह जाती हैं।
(घ) बहनों! तुम वीर कन्या, वीर भगिनी और वीर-पत्नी हो।
(ङ) ना! ना! मैं स्त्री वध कदापि नहीं करूँगा।
(च) क्यों! सिर क्यों झुका लिया सम्राट!

रचनात्मक गतिविधियाँ

छात्र स्वयं करें।

14 रसखान के सवैये

पाठ बोध

मौखिक प्रश्न

(क) रसखान।
(ख) रीतिकाल के।
(ग) कृष्ण भगवान के।
(घ) कौआ को।

लिखित प्रश्न

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) बालकृष्ण के बालरूप का।
(ii) उनके सिर पर सुंदर चोटी है, शरीर धूल से सना हुआ है। वे खेलते-खेलते घूम रहे हैं।
(iii) कौआ को।
(iv) विष्णु, कृष्ण, सूर्य।

(ख) (i) (घ), (ii) (ख), (iii) (घ), (iv) (क)।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) कृष्ण की महिमा का।

(ख) पक्षी बनकर बसेरा करना चाहता है।

(ग) क्योंकि कौआ भगवान श्रीकृष्ण के हाथ से माखन रोटी छीनकर ले गया।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) कामदेव बाल कृष्ण की उस चंचल, बाल स्वरूप छवि पर सभी कलाएँ न्योछावर करते है, जब वे छोटे बालक के रूप में सिर पर सुंदर चोटी, मुख पर मोहन मुस्कान लेकर गोकुल के आँगन में खेलते हैं।

(ख) कवि ब्रज और गोकुल में ग्वालों के रूप में तथा मानव, पशु, पत्थर और पक्षी जैसे विभिन्न रूप में निवास करना चाहते हैं।

(ग) रसखान आठो सिद्धियों और नौ निधियों को श्रीकृष्ण के प्रेम के सुख तथा नंद की गायों को चराने के लिए त्यागना चाहते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) प्रथम सवैये में रसखान कहते हैं कि श्रीकृष्ण जब गोकुल में खेलते-खाते आँगन में घूमते हैं तब उनके शरीर पर धूल लगी होती है फिर भी वे बहुत सुंदर लगते हैं। उनके सिर पर एक सुंदर सी चोटी बंधी होती है। वे पीले रंग का पजामा ओर कच्छोट पहने होते हैं। इस मनोहर रूप को देखकर करोड़ों कामदेव भी अपनी समस्त कलाएँ न्योछावर कर देते हैं। रसखान भाव-विभोर होकर कहते हैं कि ''हे सखी! कितना सौभाग्यशाली होगा वह, कौआ जो श्रीकृष्ण के हाथ से माखन-रोटी ले गया।''

(ख) इस कृष्ण को गोकुल की ग्वालिन नहीं जान पाई और श्रीकृष्ण गोपियों के वशीभूत होकर नृत्य करने लगे। श्रीकृष्ण, जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के स्वामी हैं, वहीं गोकुल की ग्वालिन के प्रेम में ऐसे बँध जाते हैं कि छाजियाँ भरकर छाछ के सामने नाचते हैं, यानी ग्वालिनें उन्हें प्रेमपूर्वक नचाती हैं, और वे हर्षपूर्वक नाचते भी हैं। अतः नारद, शुकदेव और व्यास जैसे महाज्ञानी श्रीकृष्ण को पूर्ण रूप से नहीं जान सके, लेकिन ग्वालिनों के निष्कलंक प्रेम ने श्रीकृष्ण जैसे परमब्रह्म को भी अपने वश में कर लिया और उन्होंने ममता और प्रेम से भरकर नृत्य किया।

(ग) प्रस्तुत सवैयों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि रचयिता की श्रीकृष्ण के प्रतिभावना अत्यंत गहरी, प्रेममयी और भक्ति से परिपूर्ण है। वे श्रीकृष्ण को केवल एक ईश्वर या ब्रह्म नहीं मानते, बल्कि एक ऐसे प्रेमास्पद बालक के रूप में देखते हैं जो जन-जन के हृदय में रमे है, और जिनकी बाल लीलाएँ भक्तों के मन को मोह लेती हैं।

रसखान की भावनाएँ श्रीकृष्ण के प्रति—

1. **अद्भुत प्रेम ओर वात्सल्य—**श्रीकृष्ण के अद्भुत प्रेम और वात्सल्य को देखकर रसखान जी भाव-विभोर हो जाते हैं।
2. **भक्ति भाव की पराकाण्ठा—**इतने बड़े-बड़े देवता भी जनका तत्व नहीं जान पाए, वही श्रीकृष्ण साधारण गोपियों के प्रेम में बंधकर नाचते हैं—यह भाव श्रीकृष्ण के प्रतिपूर्ण समर्पण को दर्शाता है।
3. **आश्चर्य और चमत्कार का भाव—**ब्रह्म स्वरूप श्रीकृष्ण का छाछ पर नाचना, रचयिता को आश्चर्य चकित करता है।

निष्कर्ष—रचयिता की भावना श्रीकृष्ण के प्रति न केवल आदर और भक्ति की है, बल्कि उसमें वात्सल्य, प्रेम और आत्मीयता का अद्भुत संगम है।

(घ) इस पंक्ति में रसखान कह रहे हैं कि जो व्यक्ति (कृष्ण) नारद तथा महर्षि व्यास जैसे योगी जनों द्वारा भी नहीं जाना जा सका उसका पार (भेद) कौन पा सकता है? नारद और व्यास जैसे महान साधु भी सुख और दुख से ऊपर उठकर भगवान के प्रति

समर्पित हैं, तो फिर ऐसा कौन है जो भगवान की कृपा से वंचित रह सकता है।

कविता से आगे

छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

(क) लाठी—वह अपनी लकुटी लेकर जंगल में सो गया।

(ख) छोटा कंबल—विश्राम के समय वह अपनी कामरिया ओढ़कर सो गया।

(ग) मानव (आदमी)—मानुष की बुद्धि अद्‌भुत है।

(घ) पक्षी—मैंने एक खग देखा।

(ङ) लड़कियाँ—मैंने कल चार छोहरियाँ देखीं।

भाषा-सौन्दर्य

देखि सुदामा की दीन दशा
करुना करिकै करुनानिधि रोए
पानी परात को हाथ छुओ नहिं
नैनन के जल सौं पग धोए।

व्याकरण-बोध

1. (क) पशु (ख) धूल
   (ग) गाय (घ) चराना
   (ङ) गणेश (गनेश) (च) दिनेश
2. (क) अनुप्रास अलंकार
   (ख) अनुप्रास अलंकार
   (ग) अनुप्रास अलंकार
   (घ) अनुप्रास अलंकार
3. (क) चरण पद
   (ख) जंगल अरण्य
   (ग) बगीचा उपवन
   (घ) नेत्र लोचन
   (ङ) गौ सुरभि
   (च) विनायक गजानन
   (छ) शिव शंकर
   (ज) पक्षी विहग

रचनात्मक गतिविधियाँ

छात्र स्वयं करें।

15 तीन शर्तें

पाठ बोध

मौखिक प्रश्न

(क) मजबूरी (पेट भरने के लिए)।

(ख) बारिश होने के कारण।

(ग) सौ रुपये।

(घ) कर्मठ माँ की।

लिखित प्रश्न

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) कार से टक्कर हो गई।
(ii) माँ की दोनों टाँगे कट गईं।
(iii) लेखक का जीवन बदल गया उसे अपना और माँ का पेट भरने के लिए भीख माँगनी पड़ी।
(iv) जननी, माता।

(ख) (i) (ग), (ii) (घ), (iii) (क), (iv) (ख)।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) बीमार होने पर।

(ख) कार से टक्कर होने पर माँ की दोनों टाँगें काटनी पड़ीं।

(ग) दस रुपये।

(घ) बाबू के साथ भीतर जाना था।

(ङ) मेहनत सदैव रंग लाती है। यदि समय का निर्धारण करके काम करोगे तो सफलता अवश्य मिलेगी।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) जब वह दो वर्ष का था तब उसके पिता की मृत्यु हो गई थी। उसकी माँ उसका लालन-पोषण करती थी। एक दिन उसकी माँ काम से लौट रही थी, उनकी एक कार से टक्कर हो गई और उसकी माँ की दोनों टाँगे कट गई, तभी से लेखक को अपना

और माँ का पेट भरने के लिए भीख माँगने के लिए विवश होना पड़ा।

(ख) पहली शर्त पूरी करने के लिए लेखक को तेज बारिश में भीगते हुए एक सफेद मकान तक बाबू के साथ जाना था।

(ग) जब बाबू ने कहा, ''तुम्हें मेरे साथ इस घर के भीतर चलना होगा तब लेखक का शक यकीन में बदल गया। बाबू सच में ही पागल है।

(घ) दरवाजा खोलने पर सड़ी हुई हवा को झोंका, सूटिड बूटिड बाबू का कमरा तथा मकड़ी के बड़े-बड़े जाले, कोनों में धूल व कबाड़ खाना देखकर लेखक सहम गया।

(ङ) बाबू लेखक से बोले, ''यह कमरा देख रहे हो, काफी बड़ा और गंदा हैं अगर आधे घंटे में तुम इसे चकाचक कर दो तो मैं तुम्हें सौ रुपये दूँगा।

(च) कमरें में एक छोटी-सी अलमारी, दीवार पर लटकी एक घड़ी, दीवार के सहारे चारपाई, मेज तथा दो उल्टी पड़ी हुई कुर्सियाँ थीं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) बात तब की है जब वह आठ वर्ष का अपनी माँ के साथ झोपड़ी में रहता था। लेखक के बाबू नहीं थे। जब वह दो वर्ष का था तब उसके बापू किसी बीमारी के कारण चल बसे तब लेखक की माँ ने उसका लालन-पालन किया। एक दिन की बात है उसकी माँ काम से लौट रही थी तभी एक कार से उनकी टक्कर हो गई और उनके दोनों पैर कट गये थे। इसी हादसे ने लेखक का जीवन बदल दिया। लेखक का स्कूल जाना छूट गया। माँ और अपना पेट भरने के लिए लेखक को भीख माँगनी पड़ी।

(ख) बाबू का कमरा कबाड़खाने की तरह अव्यवस्थित था। कमरें में धूल व मकड़ी के बड़े-बड़े जाले। कोने में धूल में सनी मेज, दो उलटी पड़ी हुई कुर्सियाँ थीं। कमरे के बीचों-बीच एक छोटी-सी अलमारी। दीवार पर लटकी एक घड़ी जिस पर इतनी धूल थी कि उसकी सूइयाँ और आँकड़े तक ठीक से दिखाई नहीं दे रहे थे। दीवार के सहारे एक चारपाई खड़ी हुई थी।

अत: यह वर्णन केवल कमरे की भौतिक दशा वर्णन करता है बल्कि यह बाबू के स्वभाव और उनकी मानसिक स्थिति को भी दर्शाता है। यह उनकी उदासीनता अव्यवस्थित जीवनशैली और संभवत: उनकी कुछ मानसिक समस्याओं का भी संकते है।

(ग) बालक एक स्वतंत्र व्यक्ति है जो अपने रास्ते खुद तय करना चाहता है। वह साहसी व्यक्ति है जो नई चीजें करने से नहीं डरता। वह सामाजिक है दूसरों के साथ संबंध बनाने में खुशी महसूस करता है। वह जिम्मेदारी का एहसास करता है और अपनी जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए तैयार रहता है। वह अपने जीवन में खुशी और संतुष्टि महसूस करता है। अत: भीख माँगने की समस्या के हल हेतु बालक को एक बाबू ने परिश्रम और समय के महत्व का ऐसा पाठ पढ़ाया जो बालक की समझ में आ गया और सफलता प्राप्त की।

(घ) **बाबू की तीनों शर्त—**

1. **पहली शर्त का मतबल है**—चाहे कैसी भी परिस्थिति हो पर जीवन में आगे बढ़ते जाओ। मंजिल तक जरूर पहुँचोगे।
2. **दूसरी शर्त का मतलब है**—मंजिल पर रूको मत, कुछ नया करने की कोशिश करते रहो। जिससे डर लगे उसे तो जरूर करो। हर बार एक नया अनुभव मिलेगा।
3. **तीसरी शर्त का मतलब है**—मेहनत सदैव रंग लाती है। यदि समय का निर्धारण करके काम करोगे तो सफलता अवश्य मिलेगी।

अत: तीनों शर्तों का रहस्य है जो समय की कद्र करना सीख गया, वह सफलता का

रहस्य समझ गया तथा इन तीनों शर्तों ने लेखक की पूरी जिंदगी बदल दी।

(ङ) ''बाबू दो शर्तें जीती हैं, तीसरी हारना नहीं चाहता'' इस कथन से बालक में धैर्य और आत्मविश्वास के गुण प्रकट होते हैं।
यह कथन दर्शाता है कि बालक को पहले दो शर्तों को पूरा करने में सफलता मिली है, जिससे उसे आत्मविश्वास मिला है। तीसरी शर्त को हारना नहीं चाहता, यह दर्शाता है कि वह हार मानने को तैयार नहीं है और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं।

(च) यह कहानी बताती है कि सही अवसर को पहचानना और उसका उपयोग करना सफलता की कुंजी है। जिस प्रकार लेखक का बाबू से मिलना और वह तीन शर्तें रखना, लेखक के जीवन में बदलाव का सबसे महत्वपूर्ण क्षण था कि उनकी तीन शर्तों ने लेखक की पूरी जिंदगी ही बदल दी। मुझे लगता है कि कभी-न-कभी सबके जीवन में ऐसा विलक्षण क्षण अवश्य आता है। बस, उसे समझने और पहचानने की जरूरत होती है। उस दिन से लेखक ने भीख नहीं माँगी तथा कभी होली के रंग बेचकर, गली के नुक्कड़ पर रेहड़ी लगाकर माँ और अपना पेट भरा।
अत: जो सही अवसर को पहचान जाता है, वही सफल होता है।

पाठ से आगे

छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) ✓ (ख) × (ग) ✓ (घ) × (ङ) × (च) ✓ (छ) ✓
2. (क) उनकी एक कार से टक्कर हो गई।
   (ख) भूख से मेरा बुरा हाल हो रहा था।
   (ग) बाबू बारिश में भीगते हुए रुके।
   (घ) मैं उनका रास्ता रोककर खड़ा हो गया।
   (ङ) उन्होंने ताला खोला।
   (च) मैंने सोचा शर्त तो सुन लेनी ही चाहिए।
   (छ) मंजिल पर रुको मत, कुछ और नया करने की कोशिश करते रहो।

व्याकरण-बोध

1. (क) वज़ह (ख) तेज़
   (ग) ज़ाहिर (घ) साफ़
   (ङ) आवाज़ (च) ज़िद
   (छ) फ़ैसला (ज) मंज़िल
2. (क) स्वस्थ (ख) बेशर्म
   (ग) बुरा (घ) बद्दुआ
   (ङ) आसान (च) मूर्ख
   (छ) मधुर (ज) असफल
3. (क) भय या ठंड के कारण बहुत अधिक काँपना।
   (ख) प्रशंसा करना।
   (ग) बहुत अधिक आश्चर्यचकित होना
   (घ) कोई बात अच्छे से याद रखना।
   (ङ) अपनी कही हुई बात से पलट जाना।
   (च) घबरा जाना।

रचनात्मक गतिविधियाँ

छात्र स्वयं करें।

16 भारत माँ के वीर सपूत : चन्द्रशेखर आज़ाद

पाठ बोध

मौखिक प्रश्न

(क) चन्द्रशेखर आजाद की।

(ख) आजाद।

(ग) 15 बेंत (पन्द्रह बेंत)।

(घ) पुलिस के हाथों मरना या बंदी नहीं बनना चाहते थे इसलिए स्वयं को गोली मार ली।

लिखित प्रश्न

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) गाजीपुर के महंत।

(ii) रामकृष्ण खत्री।
(iii) कोई सुशील, विश्वसनीय लड़के की माँग का।
(iv) विश्वसनीय

(ख) (i) (क), (ii) (ग), (iii) (घ), (iv) (ख),

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) 14 वर्ष की आयु।
(ख) स्वाधीन बताया।
(ग) महंत जी से।
(घ) उनके कुछ साथी।
(ङ) नॉट बावर।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) मजिस्ट्रेट ने आजाद को छः महीने कारावास तथा पंद्रह बेंत मारने की सजा सुनाई।

(ख) गाजीपुर के महंत रामकृष्ण ने खत्री से सहायता के लिए अनुरोध करते हुए कहा—''यदि आपकी दृष्टि में कोई सुशील, विश्वनीय लड़का हो तो, उसे अपना शिष्य बनाकर इस मठ की व्यवस्था उसके सुपुर्द करना चाहता हूँ।

(ग) आजाद सदैव अपने पास गीता इसलिए रखते थे क्योंकि वह कहते थे कि गीता मेरी प्रेरणा स्रोत है जो हर घड़ी मुझे प्रोत्साहित करती है और यह गीता मुझे कर्म करने का संदेश देती है।

(घ) महात्मा गाँधी जी द्वाराचलाए जा रहे असहयोग आंदोलन में धरना देने के अपराध में चन्द्रशेखर को पकड़कर मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया था। जब मजिस्ट्रेट ने इनका नाम पूछा तो इन्होंने अपना नाम 'आजाद', पिता का नाम स्वाधीन और माता का स्वतंत्रता बतलाया। इससे मजिस्ट्रेट ने इन्हें पन्द्रह बेंत मारने की सजा सुनाई। चंद्रशेखर हर बेंत की चोट के साथ 'भारत माता की जय' और महात्मा गाँधी जय बोलते रहे। इसी घटना के बाद उनका नाम 'आजाद' पड़ गया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) जब महात्मा गाँधी के नेतृत्व में देशभर में 'असहयोग आंदोलन' चल रहा था। उस समय इस आंदोलन से जुड़ने के कारण चंद्रशेखर आजाद को ब्रिटिश सरकार द्वारा गिफ्तार कर लिया गया। जब उन्हें मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया तो उनके जवाब ने सबको चौका दिया। जब उनसे उनका नाम पूछा गया, तो उन्होंने अपना नाम आजाद अपने पिता का नाम स्वाधीन और माता का नाम स्वतंत्रता बताया। तब मजिस्ट्रेट ने उन्हें छः महीने कारावास तथा पंद्रह बेंत की सजा सुनाई। चंद्रशेखर हर बेंत की चोट के साथ 'भारत माता की जय' और 'महात्मा गाँधी की जय' बोलते रहे। इसी घटना के बाद से उनका नाम 'आजाद' पड़ गया।

(ख) चंद्रशेखर आजाद एक महान देशभक्त और स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने देश की आजादी के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया और अपने साहस, त्याग और देशभक्ति से लाखों लोगों को प्रेरित किया और वह रामकृष्ण खत्री का शिष्य बनने को तैयार हुए। चन्द्रशेखर जी ने उनसे कहा, ''तब तो हम और सुरक्षित हो जाएँगे। मठ में काफी संपत्ति है और हमारी पार्टी को धन की आवश्यकता है। यदि धन होगा तो अपने देश का अंग्रेजों की गुलामी से आजाद करवाने के लिए कुछ भी कर सकते हैं। इस तरह देश-प्रेम की भावना के वे जीवंत प्रमाण थे।

(ग) बात सन् 1931 की है 27 फरवरी को आजाद अपने कुछ साथियों के साथ इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में बैठे थे। तभी दो पुलिस अधिकारियों ने उन्हें देख लिया और नॉट बावर को इसकी खबर दी। नॉट बावर बिना समय गँवाए वहाँ पहुँचा। दोनों ओर से गोलियाँ चलने लगीं। एक गोली आजाद की जाँघ में लगीं। वहीं आजाद की गोली

नॉट बावर की कलाई पर लगी। अन्त में आजाद की पिस्तौल में एक गोली रह गई। यह देखकर आजाद ने अंतिम गोली स्वयं पर चला दी और इस प्रतिज्ञा को निभाया कि वह जीते जी कभी पकड़े नहीं जाएँगे। उनका ऐसा साहस देखकर अंग्रेज दंग रह गए। भारत माँ के वे अद्‌भुत सपूत थे।

पाठ से आगे

छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) ✓ (ख) × (ग) × (घ) ✓ (ङ) ✓ (च) ×

व्याकरण-बोध

1. (क) क्षमा क्षण क्षत्रिय
   (ख) त्रासदी त्रिखंड त्रिशूल
   (ग) ज्ञानी ज्ञाता ज्ञान
2. (क) स्त्रीलिंग एकवचन
   (ख) पुल्लिंग एकवचन
   (ग) पुल्लिंग एकवचन
   (घ) स्त्रीलिंग एकवचन
   (ङ) स्त्रीलिंग बहुवचन

रचनात्मक गतिविधियाँ

छात्र स्वयं करें।

17 अपराजिता

पाठ बोध

मौखिक प्रश्न

(क) गौरा पन्त।

(ख) क्योंकि उन्होंने विकलांगता को मात देकर जीवन में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया।

(ग) माइक्रोवायोलॉजी में।

(घ) इलाहाबाद।

(ङ) माँ का।

लिखित प्रश्न

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) लेखिका शिवानी।
(ii) एक प्रौढ़ा (माँ) उतरी और एक व्हील चेयर निकाली।
(iii) डा. चन्द्रा का।
(iv) निर्जीव।

(ख) (i) (क), (ii) (ख), (iii) (घ), (iv) (घ)।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) अपंग बालिका की कहानी सुनकर दंग रह गई।

(ख) चलती ट्रेन में चाय के कुल्हड़ सहित चढ़ने के प्रयास में गिर गया।

(ग) उसकी माँ।

(घ) निचला हिस्सा अपंग कर दिया।

(ङ) मेरी वर्गीज के सफल जीवन की।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) लेखिका ने अपनी शानदार कोठी से पहली बार उस अपंग लड़की को कार से उतरते देखा, तो आश्चर्यचकित इसलिए रह गई क्योंकि उसका निचला हिस्सा निर्जीव होते हुए भी वह स्वयं ही अपना कार्य कर रही थी।

(ख) लेखिका ने बित्तेभर की लकड़ी (डॉ. चन्द्रा) को देवांगना कहा क्योंकि डॉ. चन्द्रा का निचला हिस्सा सुन्न था फिर नियति के प्रत्येक कठोर आघात को अति मानवीय धैर्य एवं साहस के साथ उसने झेला।

(ग) डॉ. चन्द्रा जन्म के अठारहवें महीने में ही पोलियों की चपेट में आ गई तथा उनके शरीर का नीचला हिस्सा पोलियों ने निर्जीव कर दिया था।

(घ) डॉ. चन्द्रा नहीं चाहती थी कि कोई भी मुझे सामान्य-सा भी सहारा न दे। इसलिए डॉ. चन्द्रा ने एक ऐसी कार का नक्शा बनाया जिसे वह स्वयं चला सके।

(ङ) डॉ. चन्द्रा की सफलता का श्रेय अपनी माँ श्रीमती टी. सुब्रहमण्यम् को जाता है।

(च) डॉ. चन्द्रा ने अपनी माँ के साथ मिलकर मैक्समूलर भवन से जर्मन भाषा में विशेष योग्यता प्राप्त की।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) लेखिका ने डॉक्टर चंद्रा की तुलना मशीन से इसलिए की है क्योंकि वे पोलयो के कारण अपने शरीर के निचले हिस्से से लकवाग्रस्त थीं और वे बिना किसी बाहरी सहायता के अपनी जीवनशैली को सामान्य रूप से जीने में सक्षम थीं।

लेखिका ने देखा बिना किसी सहारे के, कार से एक युवती ने अपने निर्जीव निचले धड़ को बड़ी दक्षता से नीचे उतारा, बैसाखियों के सहारे उस व्हीलचेयर तक पहुँच, उस पर बैठ गई और बड़ी तटस्थता से उसे स्वयं चलाती कोई के भीतर चली गई। मैं फिर नित्य नियत समय पर उसका यह विचित्र आवागमन देखती और आश्चर्यचकित रह जाती, जैसे कोई मशीन अपना काम किए चली जा रही हो।

(ख) 'अपराजिता' कहानी में डॉ. चंद्रा के चिरत्र की विशेषताएँ–

1. **अदम्य साहसी**—निचला धड़ अपंग होने पर भी चन्दा अदम्य साहसी थी और अपना सारा काम करती थी।
2. **जिजीविषा**—अपंग होने पर भी उसमें प्रबल जिजीविषा थी।
3. **प्रतिभाशाली**—चन्द्रा की विलक्षण प्रतिभा थी। वह प्रत्येक परीक्षा में सर्वोच्च स्थान पाती रही।
4. **प्रसन्न हृदय**— अभिशप्त जीवन होने पर भी वह प्रसन्न रहती थी।
5. **स्वावलम्बी**— चन्द्रा अपना सारा काम स्वयं करना चाहती थी। वह स्वयं कुर्सी के सहारे सब काम कर लेती थी।
6. **परिश्रमी**— चन्द्रा काफी परिश्रमी एवं मेहनती थी।

अत: उनकी अदम्य इच्छाशक्ति, साहस और आत्मनिर्भरता थी। शारीरिक रूप से अपंग होने के बावजूद उन्होंने अपनी शारीरिक सीमाओं को कभी अपनी प्रगति में बाधक नहीं बनने दिया। विज्ञान के प्रति उनका समर्पण और ज्ञानार्जन की लालसा भी उनकी विशिष्ट विशेषता है।

(ग) कभी-कभी अचानक ही विधाता हमें ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व से मिलवा देता है, जिसे देख स्वयं अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है। तब लगता है कि भले ही उस अंतर्यामी ने हमें जीवन में कभी अकस्मात् अकारण ही दंडित कर दिया हो, किंतु हमारे किसी अंग को हमसे विच्छिन्न कर हमें उससे वंचित तो नहीं किया। फिर भी हममें से कौन ऐसा मानव है जो अपनी विपत्ति के क्षणों में विधाता को दोषी नहीं ठहराता? अभी पिछले ही महीने मैंने एक ऐसी अभिशप्त काया देखी है, जिसे विधाता ने कठोरतम दंड दिया है, किंतु वह विधाता को कोसने के स्थान पर, वह उसे भी नतमस्तक आनंदी मुद्रा में झेल रही है, विधाता को कोसकर नहीं।

(घ) डॉ. चंद्रा अपनी विकलांगता को बाधा बनने से रोकने में अपने दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास के कारण सफल हुई। उन्होंने अपनी विकलांगता को स्वीकार किया और उसे अपनी जीवन यात्रा का हिस्सा बनाया, ना कि अपनी राह में एक बाधा। उनके अंदर यह प्रेरणा थी और उन्होंने कड़ी मेहनत की, अपनी विकलांगता के बावजूद भी उन्होंने अपने धैर्य, परिश्रम और उत्साह से डॉक्टरेट की डिग्री प्राप्त की। उसकी इसी अदम्य क्षमता ने उसे अपंग स्त्री-पुरुषों में माइक्रोबायोलॉजी विषय में डॉक्टरेट पाने वाली पहली भारतीय बना दिया। उनके दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास ने उन्हें बाधक सिद्ध नहीं होने दिया।

(ङ) डॉ. चंद्रा की माँ श्रीमती टी. सुब्रह्मण्यम को जे. सी. बंगलौर द्वारा 'वीर जननी' पुरस्कार दिया गया था। यह पुरस्कार उन्हें उनी बेटी डॉ. चन्द्रा के लिए एक अनुकूल वातावरण बनाने और उनको निरंतर सहयोग देने के लिए दिया गया था।

डॉ. चन्द्रा की माँ की विशेषताएँ–

डॉ. चन्द्रा की माँ अपने सारे सुख त्यागकर नित्य छाया बनी पुत्री की पहिया लगी कुरसी के पीछे चक्र-सी घूमती थीं। नाक के दोनों ओर हीरे की दो जगमगाती लौंगों, अधरों पर विजय का उल्लास, जूड़े में पुष्पवेणी थी तथा उन्होंने बड़े साहस के साथ कहा, ''ईश्वर सब द्वार एक-साथ बंद नहीं करता। यदि एक द्वार बंद करता भी है तो दूसरा द्वार खोल देता है। उन्होंने अपनी बेटी की हर छोटी से छोटी जरूरत का ध्यान रखा। जब सभी लोग चन्द्रा के जीवन की आशा छोड़ चुके थे, तब भी श्रीमती सुब्रह्मण्यम ने अपनी बेटी को साहस और सहनशीलता के साथ जीवन की हर कठिनाई से लड़ने का मार्ग दिखाया। पच्चीस वर्ष तक इस सहिष्णु महिला ने अपनी पुत्री के साथ कठिन साधना की।

(च) परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर भी मुझे मेडिकल में प्रवेश नहीं मिला। कहा गया, मेरा निचला धड़ निर्जीव है, अत: मैं एक सफल शल्य-चिकित्सक नहीं बन पाऊँगी।'' किंतु डॉ. चंद्रा के प्रोफेसर के शब्दों में, ''मुझे यह कहने में रचमात्र भी हिचकिचाहट नहीं होती कि डॉ. चन्द्रा ने विज्ञान की प्रगति में महान योगदान दिया है। अत: चिकित्सा ने जो खोया है, वह विज्ञान ने पाया है। भाव यह है कि विज्ञान प्रयोग के आधार पर प्रगति कर रहा है।

पाठ से आगे

छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) ✓ (ख) × (ग) × (घ) ✓ (ङ) ✓ (च) ✓
2. (क) अहाता, अहाते।
   (ख) कष्ट साध्य उपचार।
   (ग) भारतीय, पाश्चात्य।
   (घ) चिकित्सा, विज्ञान।
   (ङ) द्वार।
3. (क) अप्सरा–यह मंदिर देवांगना को समर्पित है।
   (ख) माँ – यह मातृभूमि मेरी जननी है।
   (ग) विश्वास– भारत में 'जापान' शब्द निष्ठा का एक बेंच मार्क है।
   (घ) गले में आना– उसे गले में दर्द हो रहा था ऐसा लग रहा था जैसे कोई चीज कंठगत हो गई है।
   (ङ) माला– उसने अपनी माँ को पुष्प वेणी भेंट की।

व्याकरण-बोध

1. (क) व् + य् + क् + ति + त् + व
   (ख) आ + व् + आ + ग + म + न
   (ग) ज्+इ+ज्+ई+व+इ+ष+आ
   (घ) प् + र + ओ + फ् + ए + स + अ + र् + अ
   (ङ) क् + ष् + ट + सा + ध् + य
   (च) प् + आ + श् + चा + त् + य्
2. (क) हार मान लेना– लगातार असफलताओं के बावजूद उसने हथियार नहीं डाले।
   (ख) अचानक बड़ी मुसीबत आना– सोहन की अचानक मृत्यु के बाद उसके पिता के सिर पर आकाश टूट पड़ा।
   (ग) सहायता करना–परीक्षा के समय मेरी बहिन ने मेरा हाथ बँटाया।
   (घ) मना करना– जब मैंने अपनी बहिन से मदद माँगी तो उसने मुझे अँगूठा दिखाया।
3. (क) अपराजित (ख) अकारण
   (ग) असंतुलन (घ) असामान्य
   (ङ) असहिष्णु (च) अचल
4. (क) विलक्षण (ख) अभिशप्त
   (ग) विछन्न (घ) संबंधित कुछ
   (ङ) अपने

रचनात्मक गतिविधियाँ

छात्र स्वयं करें।

18 प्लास्टिक : जरूरत जो बन गई मुसीबत

पाठ बोध

मौखिक प्रश्न

(क) प्लास्टिक।

(ख) 2009 में बारिश के कारण।

(ग) इस बहु उपयोगी चीज के प्रति लोगों, संस्थानों, व्यवस्थाओं का।

(घ) दूसरा पक्ष क्योंकि प्लास्टिक के निर्माण में जहरीले पदार्थों का प्रयोग किया जाता है।

(ङ) थैलेट्स।

लिखित प्रश्न

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) प्लास्टिक के।

(ii) प्लास्टिक के कचरे को ढोने वाले नाले।

(iii) सस्ता, हल्का, टिकाऊ, मजबूत, कम जगह घेरने वाला, सामान को ले जा सकने वाला तापरोधी जैसी विशेषताओं के कारण।

(iv) पॉलिथीन से अटी पड़ी नालियाँ और नाले जिम्मेदार थे।

(ख) (i) (क), (ii) (घ), (iii) (ग), (iv) (ख)।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) प्लास्टिक को

(ख) जहरीले रसायन का जिसका नाम थैलेट्स है।

(ग) खिलौनों को नरम बनाने के लिए।

(घ) प्लास्टिक के पाइपों द्वारा पानी का प्रयोग किया जाता है।

(ङ) प्लास्टिक सर्जरी, खून का निर्माण आदि है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) सस्ता, हल्का, टिकाऊ, मजबूत, कम जगह घेरने वाला, लोचदार, हर तरह के सामान को ले जा सकने वाला, तापरोधी जैसी विशेषताओं के साथ प्लास्टिक एक बहुउपयोगी और बहुउद्देशीय वस्तु की तरह जहन में आता है।

(ख) प्लास्टिक पर्यावरण को कई तरह से हानि पहुँचाती है। प्लास्टिक के कचरे से मिट्टी और पानी दूषित हो जाते हैं, जिससे जीव-जंतुओं को नुकसान होता है और प्लास्टिक के कचरे को जलाने से जहरीले रसायन और सूक्ष्म प्लास्टिक हवा में निकलते हैं, जिससे वायु प्रदूषण होता है। प्लास्टिक लैंडफिल में भी मिट्टी और पानी को दूषित करता है।

(ग) थैलेट्स नामक रसायन को प्लास्टिक के खिलौनों को नरम तथा मुलायम बनाने में प्रयोग किया जाता है। इस रसायन के इस्तेमाल से बने खिलौने प्रयोग करने पर असमय जन्म, समय पूर्व प्रौढ़ता, दाँत सम्बंधी बीमारी या फिर मस्तिष्क पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

(घ) पॉलीथिन के कई सफल प्रयोग किये जा चुके हैं। न गलने और न सड़ने वाले प्लास्टिक के स्वस्थ विकल्प के तौर पर (फोटो डिग्रेडेबल) सूर्य की रोशनी में गलने वाले (बायोडिग्रेडेबल) जैविक रूप से सड़ने वाले और रासायनिक रूप से गलाकर दोबारा प्रयोग में लाए जा सकने वाले पॉलिथीन के सफल प्रयोग हो चुके हैं। सूर्य के प्रकाश के खत्म होने वाली पॉलिथीन की उम्र एक से तीन वर्ष है।

(ङ) प्लास्टिक का अन्य विकल्प कागज, जूट तथा कपड़े के थैले हैं।

(च) अलेगजेंडर पार्वस ने 1862 में लंदन में एक प्रदर्शनी में पहली बार मानव निर्मित प्लास्टिक का प्रदर्शन किया था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) जरूरत बन गई मुसीबत पाठ में प्लास्टिक के उपयोग से होने वाली हानियाँ निम्नलिखित हैं—

1. **पर्यावरण प्रदूषण**—प्लास्टिक का कचरा जमीन, पानी और हवा को प्रदूषित करता है, जिससे पर्यावरण को नुकसान होता है।
2. **जल प्रदूषण**— प्लास्टिक कचरा जल स्त्रोत में जाकर पानी को दूषित करता है, जिससे जल संकट पैदा होता है।
3. **भूमि प्रदूषण**—प्लास्टिक कचरा जमीन में मिलकर उसे प्रदूषित करता है, जिससे मिट्टी की उर्वरता कम हो जाती है।
4. **वन्य जीवों को खतरा**—प्लास्टिक कचरा वन्य जीवों के लिए खतरनाक होता है, वे इसे खाना समझकर खा लेते हैं, जिससे उनकी जान को खतरा होता है।
5. **स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ**—प्लास्टिक के उपयोग से बनी वस्तुओं में हानिकारक रसायन होते हैं, जो मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।

अत: प्लास्टिक का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि यह नष्ट नहीं होता और वर्षों तक पर्यावरण में बने रहते हुए जीवन और परिस्थितिकी तंत्र के लिए खतरा उत्पन्न करती है।

(ख) प्लास्टिक के उपयोग को कम करने के लिए दुनिया भर में किए जा रहे प्रयास—

1. **प्लास्टिक की थैलियों पर प्रतिबंध**—कई देशों ने प्लास्टिक की थैलियों के इस्तेमाल पर रोक लगा दी है।
2. **जुर्माना और कड़े कानून**—प्लास्टिक का इस्तेमाल करने पर जुर्माना लगाया जाता है और कई जगह कड़े कानून भी बनाए गए हैं ताकि लोग इसका उपयोग न करें।
3. **पुनर्चक्रण**—प्लास्टिक को रिसाइकल करने की व्यवस्था की जा रही है ताकि पुराना प्लास्टिक दोबारा उपयोग में लाया जा सके।
4. **जैव अपघटनीय (Biodegradable) विकल्पों को बढ़ावा**—प्लास्टिक की जगह ऐसे पदार्थों का प्रयोग बढ़ाया जा रहा है जो जैविक रूप से नष्ट हो जाते हैं, जैसे कपड़े, कागज, पत्तों से बनी थैलियाँ आदि।
5. **जन जागरूकता अभियान**— लोगों को प्लास्टिक से होने वाले नुकसान के बारे में बताया जा रहा है।
6. **री-यूज और री-सायकल की आदतें**— लोगों को प्लास्टिक वस्तुओं को दोबारा उपयोग करने और सही तरीके से नष्ट करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

(ग) प्लास्टिक के प्रयोग को कम करने के लिए दुनिया भर में कोशिशें चल रही हैं। एशिया में बांग्लादेश पहला देश है जिसने 2002 में प्लास्टिक बैग के प्रयोग पर प्रतिबंध लगाया था। 2002 में डब्लिन में प्लास्टिक बैग पर कर लगाकर इसके प्रयोग को 95 फीसदी तक कम किया है। वही 2009 में अमेरिका ने भी प्लास्टिक के नरम खिलौनों पर प्रतिबंध लगाया। इसी प्रकार यूरोपीय संघ और डेनमार्क ने भी अनुत्पाद रसायनों, से बनी बच्चों की दूध की बोतलों को प्रतिबंधित किया। राजस्थान और असम जैसे कुछ राज्यों को छोड़कर बाकी जगहों पर भी अभी धड़ल्ले से पॉलिथीन की बिक्री और प्रयोग जारी है। हम अपने सुविधाजनक वर्तमान के लिए अपने भविष्य को भयावहता की तरफ धकेल रहे हैं।

(घ) प्लास्टिक खून प्लास्टिक के अणुओं से बनता है, जिसमें लौह अणु है जो कि लाल रक्त कोशिकाओं की तरह शरीर में ऑक्सीजन ले जाने का काम करेगा। वैज्ञानिकों का कहना है कि ये प्लास्टिक खून, एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए हल्का है, ज्यादा समय तक चलता है और इसे ठंडी जगह में रखने की जरूरत भी नहीं है। साथ ही इस खून के एच. आई. वी. से मुक्त होने की सौ प्रतिशत गारंटी है।

(ङ) प्लास्टिक आज हमारे जीवन के कई क्षेत्रों में उपयोगी सिद्ध हो रही है—

1. **पैकेजिंग**—खाने-पीने की चीजों, दवाइयों

और अन्य उत्पादों को पैक करने में प्लास्टिक का खूब उपयोग होता है।

2. **चिकित्सा क्षेत्र**—इंजेक्शन, दवाओं की बोतलें, मेडिकल उपकरण जैसे सीरिंज कैथेटर आदि प्लास्टिक से बनाए जाते हैं।
3. **निर्माण क्षेत्र**—पाइप, टाइल्स, तारों की कोटिंग, खिड़की और दरवाजों की फ्रेम आदि में प्लास्टिक का प्रयोग किया जाता है।
4. **इलेक्ट्रॉनिक्स**—टी.वी., कम्प्यूटर, मोबाइल और अन्य इलेक्ट्रॉनिक सामानों में प्लास्टिक का इस्तेमाल होता है।
5. **कपड़ा उद्योग**—पॉलिएस्टर, नायलॉन जैसे सिंथेटिक कपड़े प्लास्टिक से ही बनते हैं।
6. **गृह उपयोग**—बाल्टी, डिब्बे, बोतलें, ब्रश, कुर्सियाँ आदि रोजमर्रा की चीजें प्लास्टिक से बनी होती हैं।
7. **वाहन उद्योग**—गाड़ियों के कई हिस्से जैसे डेशबोर्ड, बम्पर, इंटीरियर आदि प्लास्टिक से बनाए जाते हैं।

पाठ से आगे

छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) ✓ (ख) × (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓
2. (क) बाढ़।
   (ख) 2002 में डब्लिन
   (ग) परिवहन, प्लास्टिक
   (घ) खून, अणुओं
   (ङ) एच.आई.वी.
3. (क) विनाश—प्राकृतिक आपदाओं से कई गाँवों में तबाही मच गई।
   (ख) पाबंदी—सरकार ने हानिकारक उत्पादों पर प्रतिबंध लगा दिया है।
   (ग) मूल्य—इस परियोजना की लागत पचास लाख है।
   (घ) प्रतीक—देश के खिलाड़ियों ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर परचम लहराया।
   (ङ) सरल—कठिन प्रश्नों को भी उसने सहज रूप से हल कर लिया।

व्याकरण-बोध

1. (क) महँगा (ख) विपक्ष
   (ग) मरण (घ) असली
   (ङ) ज्यादा (च) गरम
2. (क) बहु + उपयोगी
   (ख) बे + हद
   (ग) प्रति + बंध
   (घ) सु + विधा
   (ङ) दुर् + घट
   (च) प्र + साधन
3. (क) लोच + दार
   (ख) ताप + रोधी
   (ग) खतरा + नाक
   (घ) जहर + ईला
   (झ) निर्भर + ता

रचनात्मक गतिविधियाँ

छात्र स्वयं करें।

19 एक सुनहली किरण

पाठ बोध

मौखिक प्रश्न

(क) कीर्ति चौधरी।
(ख) दलित, पीड़ित, निर्धन एवं शोषित।
(ग) शोषित पीड़ित को जो पिंजरे में बंद हैं।
(घ) दलित पीड़ित लोगों को।

लिखित प्रश्न

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) दलित-पीड़ित व्यक्ति के लिए।
(ii) सुनहली किरण।
(iii) दु:ख व्यक्त करने वाली भाषा।
(iv) कर्म में लगा रहता है।
(ख) (i) (घ), (ii) (घ), (iii) (क), (iv) (ख)।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) दलित, पीड़ित, निर्धन एवं शोषित वर्ग के लोगों को।

(ख) अंधकार में रोशनी की तरह है, जो दुखी आत्मा को राह दें।

(ग) दलित, पीड़ित, निर्धन को।

(घ) अंधकार में।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) शोषित-पीड़ित व्यक्ति को एक सुनहरी किरण देने का आशय है उसे आशा, सहारा और प्रेरणा देना।

(ख) कवयित्री चाहती है कि समाज पीड़ित वर्ग की पीड़ा को समझे और उन्हें सहारा दें। उन लोगों तक भी आशा और रोशनी पहुँचाएँ, जो अब तक उपेक्षित और बंधनों में जकड़े हुए हैं।

(ग) ''दुख जतलाने वाली भाषा'' वह भाषा है जिससे कोई व्यक्ति अपने दुख, पीड़ा और वेदना को व्यक्त करता है। ''पिंजरे में व्याकुल बद्ध'' (पीड़ित, शोषित व्यक्ति) इसे भूल गया क्योंकि वह मौन (चुपचाप) है।

(घ) कवयित्री ने पिंजरे में बंद उस व्यक्ति को कर्म में लगे होने पर भी व्याकुल कहा है जो व्यक्ति मौन रूप से अपने कर्म में लगा हुआ है, परंतु फिर भी अंदर से बेचैन और व्याकुल है, क्योंकि वह अपनी पीड़ा और भावनाएँ प्रकट नहीं कर पा रहा है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) कविता 'एक सुनहली किरण' में समाज के पीड़ित, शोषित, मौन और उपेक्षित वर्ग के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की है। ऐसे लोग, जो दु:ख, बंधन और अभावों में घिरे हुए हैं, वे अब अपने दुख को भी कह पाने की भाषा भूल चुके हैं।

अत: कवयित्री समाज से आग्रह करती है कि जैसे सूरज की किरण अंधकार को मिटा देती है, वैसे ही हमें भी अपने व्यवहार, सहानुभूति और सहयोग की एक ''सुनहली किरण'' उन लोगों तक पहुँचानी चाहिए जिससे उनका जीवन भी प्रकाशित और आशावान हो सकें।

(ख) 'सोए मन' से कवयित्री का तात्पर्य है कि कुछ करने की इच्छा और आगे बढ़ने की आशा रखने वाले मन, अब बिना किसी मंजिल के हैं।

वह उसमें आगे बढ़कर कुछ करने के और भविष्य में सफल होने के स्वप्न जाग्रत करने के लिए कह रही है।

(ग) कविता में मजदूर वर्ग को सूरज की किरणों की तरह बताया गया है, जो अपने श्रम और परिश्रम से पृथ्वी पर सोना बिखेरता है। मजदूर दिन-रात मेहनत करता है, रास्ते बनाता है और अपने पसीने से धरती को चमकाता है अर्थात् मजदूर वर्ग को भी मान-सम्मान और, उज्ज्वल भविष्य मिलना चाहिए।

कविता से आगे

छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

मौन, कर्म में निरत,
बद्ध पिंजर में व्याकुल,
भूल गया जो दु:ख जतलाने वाली भाषा
उसको भी वाणी के कुछ क्षण दे दो।

व्याकरण-बोध

1.	(क)	सुनहली	किरण
	(ख)	ऊँची	फुनगी
	(ग)	नव	पल्लव
	(घ)	राशि-राशि	सोना
2.	(क)	मयूख	अंशु
	(ख)	जंगल	अरण्य
	(ग)	नूतन	नवीन
	(घ)	पंकज	सरोज

रचनात्मक गतिविधियाँ

छात्र स्वयं करें।

20 शह में मात

पाठ बोध

मौखिक प्रश्न

(क) पास के नगर में।

(ख) गाड़ी और बैल के।

(ग) सेठ ने बूढ़े चौधरी को।

(घ) चौधरी के चौथे बेटे ने।

लिखित प्रश्न

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

(क) (i) लकड़ियाँ।

(ii) पाँच रुपये।

(iii) अपनी हवेली पर क्योंकि उसने बैल-गाड़ी खरीदे थे।

(iv) गाड़ी को खाली किया।

(ख) (i) (ख), (ii) (घ), (iii) (क), (iv) (ख)।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) बूढ़ा चौधरी।

(ख) चालाक आदमी।

(ग) गाड़ी शब्द पर इसलिए जोर दिया क्योंकि सेठ ने गाड़ी और बैलों साहित मोल-भाव किया था।

(घ) गाड़ी का दाम।

(ङ) झट से उसका हाथ पकड़ लिया।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) सेठ ने 'गाड़ी' शब्द को अपना आधार बनाकर चौधरी को पूरी गाड़ी छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया।

(ख) सेठ ने चौधरी को बैलों और गाड़ी से हाथ लगाने के लिए मना कर दिया।

(ग) चौधरी के बैलों और गाड़ी को सेठ ने चालाकी से ले लिया। इसलिए चौधरी शहर से पैर रगड़ता हुआ आया।

(घ) अपने पिता से पूरा वृतांत सुनकर चौधरी के बेटों की आँखों में खून उतर आया।

(ङ) चौधरी का छोटा बेटा सबसे होशियार था। वह जो कहता है करके दिखाता है। वह बड़ी समझदारी के साथ सेठ से अपनी बैलगाड़ी और पाँच सौ रुपये लेकर अपने गाँव लौटकर आ गया।

(च) अपनी जान बचाने के लिए सेठ ने चौधरी के लड़के को पाँच सौ रुपये तथा उसकी बैल-गाड़ी देने का लालच दिया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) सेठ एक लालची, चालाक और स्वार्थी व्यक्ति था।

सेठ के चरित्र की विशेषताएँ–

1. **लालची**–सेठ ने बूढ़े चौधरी का फायदा उठाकर बैलगाड़ी हड़पने के लिए चाल चली।
2. **चालाक**–उसने अपनी बात को आधे सच की तरह कहा ताकि बाद में उसका मनचाहा अर्थ निकाला जा सके।
3. **स्वार्थी**–सेठ केवल अपने लाभ के बारे में सोचता था। चौधरी की मेहनत और सच्चाई की कोई कद्र नहीं थी।
4. **अन्यायी**–उसने चौधरी को धोखा देकर ठगने का अन्याय किया।

(ख) चौधरी गाँव से शहर में लकड़ी बेचने गया तो एक सेठ ने बड़ी चालाकी से चौधरी से पूछा, ''बाबा, गाड़ी का क्या लेगा?

तब चौधरी ने कहा,'' एक ही दाम लूँगा, पूरे पाँच रुपये।

सेठ ने कहा, ''ठीक है पूरे दाम दूँगा। चल, जल्दी कर!

मेरी हवेली तक चल।'' वहाँ पहुँचकर चौधरी ने लकड़ियाँ निकाल कर आँगन में रख दीं। सेठ ने खुशी-खुशी चौधरी को पाँच रुपए दिए। जैसे ही चौधरी अपने बैलों को फिर से गाड़ी में जोतने लगा तो सेठ गरजकर बोला, ''खबरदार, गाड़ी और बैलों को हाथ मत लगाना! मैंने गाड़ी और बैलों की पूरी कीमत चुकाई है। सेठ ने 'गाड़ी' शब्द पर जोर देकर चौधरी को ठगा।

(ग) चौधरी का छोटा बेटा सबसे होशियार था। वह जो कहता है, वह करके दिखाता है। चौधरी का बेटा सेठ के नगर में दोबारा एक गाड़ी लकड़ी लेकर गया और उसकी कीमत

दो मुट्ठी टके बताया। जब सेठ अपनी दोनों मुट्ठियों में एक-एक टके लेकर आया तो लड़के ने उसकी मुट्ठी पकड़ ली और उसकी मुट्ठी पर हसिएँ रगड़ने लगा जैसे वह उसे काट लेगा। यह देखकर सेठ डर गया। तब उसने सेठ को याद दिलाई, उसने उससे कहा कि तुम्हारे शहर में जब लकड़ियों के साथ-साथ गाड़ी-बैल बिकते हैं तो टके के साथ तुम्हारी मुट्ठियाँ भी जाएँगी। उसने को अपनी गलती पर पछतावा हुआ। उसने सेठ से अपनी बैलगाड़ी, पाँच सौ रुपये के साथ उसकी पगड़ी पैर पर रखवाकर सात बार नाक रगड़वाकर सेठ से बदला लिया।

(घ) इस पाठ में बताया गया है कि ''लालच बुरी बला होती है। यह शीर्षक हमारे जीवन में अत्यन्त उपयुक्त है। इस पाठ में यह भी दर्शाया गया है कि सेठ ने चौधरी को चालाकी से ठगा तथा उसके छोटे बेटे ने सेठ को सबक सिखाया। जिस प्रकार उसने चौधरी से गाड़ी और बैल को ठगा उसी प्रकार उसके बेटे ने दो मुट्ठी टका के साथ उसके हाथों को काटने की बात कही तब सेठ को अपनी गलती पर पछतावा हुआ अर्थात् यह पाठ से हमें प्रेरणा मिलती है कि हमें कभी किसी के साथ गलत व्यवहार नहीं करना चाहिए क्योंकि लालच बुरी बला है।

कविता से आगे

छात्र स्वयं करें।

विविध प्रश्न

1. (क) × (ख) ✓ (ग) × (घ) × (ङ) ✓ (च) ×
2. (क) चौधरी।
   (ख) आँकड़ी, आदमी।
   (ग) तराजू, बाँट, हिसाब।
   (घ) लकड़ियाँ, मुँह।
   (ङ) बैलगाड़ी, पाँच सौ रुपये।
3. (क) गाँव का एक बूढ़ा चौधरी अपनी बैलगाड़ी में लकड़ियाँ लादकर पास के नगर में बेचेन के लिए आया।
   (ख) सेठ के साथ चौधरी उसकी हवेली गया।
   (ग) अब चुपचाप चलता बन या धक्के मारकर निकलवाऊँ।
   (घ) दूसरे दिन वह घड़ी-रात रहते ही घर से रवाना हुआ और नगर के उसी चौक में गाड़ी खड़ी की।
   (ङ) सेठ त्वरित गति से हवेली के भीतर गया और दोनों मुट्ठियों में एक-एक टका बंद करके चौधरी के बेटे के पास आया।
   (च) कल के गाड़ी-बैल भी वापस ले जा।
   (छ) उसे काँपते देखकर चौधरी के बेटे को हँसी आ गई।
   (ज) चौधरी का समझदार छोटा लड़का दोनों बैलगाड़ियों और पाँच सौ रुपयों के साथ अपने गाँव लौट गया।

व्याकरण-बोध

1. (क) अत्यधिक डर या घबराहट के कारण अवाक रहना—परीक्षा का परिणाम सुनते ही उसकी हालत ऐसी हो गई कि काटो तो खून नहीं।
   (ख) अत्यंत मानसिक पीड़ा या दु:ख होना—बेटे की मौत की खबर सुनकर उसकी माँ के कलेजे पर आरा चल गया।
   (ग) समझाने पर कोई असर ना होना—माता-पिता ने कई बार समझाया पर उसके कान पर जूँ न रेंगी।
   (घ) तबही मचाना—अगर उसने हमें नुकसान पहुँचाया, तो हम उसकी ईंट से ईंट बजा देंगे।
   (ङ) गुस्सें में आना—जब उसने सुना कि उसके दोस्त को धोखा दिया गया है, तो उसकी आँखों में खून उतर आया।
2. (क) गाड़ियाँ, बैल (ख) लकड़ी
   (ग) गाड़ियों (घ) बेटा
   (ङ) मुट्ठी

रचनात्मक गतिविधियाँ

छात्र स्वयं करें।

●●

1 स्वतंत्रता का दीपक

मौखिक प्रश्न

(क) कविता के रचनाकार गोपाल सिंह 'नेपाली' हैं।

(ख) 'स्वतंत्रता का दीपक' से कवि का भाव है– स्वतंत्रता एक दीपक के समान है, जो अंधेरे में जलता रहता है। यह जीवन के लिए आवश्यक है और इसकी ज्योति हमें अंधकार से निकालती है।

(ग) बाँस, बबूल और घास दीपक को बुझाने वालों के प्रतीक हैं।

(घ) शहीद के कार्यों को पुण्यदान कहा गया है क्योंकि उनकी ही शहादत के कारण यह दीपक जल पाया है।

लिखित प्रश्न

(क) (i) स्वतंत्रतारूपी दीपक शहीदों की शहादत के माध्यम से प्राप्त हुआ है।

(ii) शक्ति से दीपक को प्रज्वलित रखने को कहा गया है।

(iii) यह दीपक अज्ञान और निराशा को दूर करके ज्ञान और आशा लेकर आ रहा है।

(iv) विहान–प्रभात, प्रातःकाल।

(ख) (i) (क) स्वतंत्रता का

(ii) (ग) प्राणों की आहुति देकर

(iii) (घ) प्राणों के समान

(iv) (ख) गंगा की धारा

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) प्रस्तुत कविता में दीया स्वतंत्रता का प्रतीक है।

(ख) 'स्वतंत्रता के दीपक' से कवि का तात्पर्य है कि यह दीपक जीवन के लिए आवश्यक है। इसकी ज्योति अंधेरे को दूर करती है।

(ग) कवि दीपक को घनघोर बारिश, बिजली, हवा और शत्रु पक्ष की शक्ति से बचाना चाहता है।

(घ) यह स्वतंत्रता शहिदों के बलिदान का परिणाम है।

(ङ) यह स्वतंत्रता का गान है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) दीपक अपने प्रकाश से अंधेरे को दूर करता है। इसमें अज्ञान को नष्ट करने की शक्ति है। अतः दीपक ही एक ऐसा माध्यम है जो प्रकाश और ज्ञान दूसरों तक पहुँचता है। यह दूसरों को सही मार्ग दिखाता है। इसलिए दीपक को 'शक्ति का दिया हुआ शक्ति को दिया हुआ कहा गया है।

(ख) कवि दीपक की रक्षा प्रत्येक नकारात्मक शक्ति, कड़कती बिजलियों, घनघोर बारिश, तेज आँधी से करना चाहता हैं कवि चाहता है कि शत्रु पक्ष की शक्ति कितनी ही प्रबल क्यों न हो, हमें प्रत्येक परिस्थिति का सामना करके इस दीपक की रक्षा करनी होगी।

(ग) कवि ने बाँस, बबूल और घास को दीपक को बुझाने वाले प्रतीकों के रूप में प्रयोग किया है।

(घ) ये कब्र और मजारें स्वतंत्रता रूपी दीपक को जलाने के लिए बलिदान देने वाले शहीदों की हैं इसलिए उनकी कब्र और मजार पर यह दीपक जल रहा है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) स्वतंत्रता इस दीपक को बहुत से बलिदानों के बाद जलाया जा सका है। यह दीपक शहादत का प्रतीक है। अतः पानी का बहाव कितना ही तेज क्यों न हो। आज गंगा की धारा में यह दीया बुझना नहीं चाहिए। आजादी का यह दीया हम भारतीयों के लिए जीवन की तरह है।

(ख) स्वतंत्रता का यह दीपक शक्ति से परिपूर्ण है। स्वयं शक्ति ने ही इसे हमें प्रदान किया

है। अत: इस दीए को हम शक्ति को ही अर्पित करेंगे। इस स्वतंत्रता के दीपक में शक्ति समाहित है।

(ग) जिस प्रकार प्राण हमारे जीवन का आधार है, वैसे ही स्वतंत्रता भी हमारे जीवन का आधार है। स्वतंत्रता के बिना जीवन का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। यह हमें जीवन जीने की प्रेरणा देती है। यह प्राणों के समान ही अनिवार्य है।

(घ) यह कविता एक प्रेरणादायी गीत है, जिसके माध्यम से कवि ने भारतीयों में राष्ट्रप्रेम, त्याग व बलिदान की भावना को जीवंत रखने का प्रयास किया है। कवि ने यहाँ स्वतंत्रता को दीपक का प्रतीक बताते हुए उसे सदैव प्रज्वलित रखने के लिए कहा है। स्वतंत्रता का दीपक हमारे स्वाभिमान एवं आजादी का प्रतीक है। इस दीपक के प्रति प्रत्येक भारतीय के मन में सम्मान एवं निष्ठा की भावना होनी चाहिए। इस दीपक से प्रेरणा लेकर प्रत्येक देशवासी अपने देश की रक्षा हेतु तत्पर हो जाना चाहिए।

कविता से आगे

- स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए हमारे महापुरुषों ने अनेक प्रकार की प्रताड़नाएँ और यातनाएँ झेलीं हैं। अंग्रेजों ने उन पर अनेक अत्याचार किए। उन्हें लाठियों से पीटा गया। छोटी-छोटी सी जेलों में पशुओं की भाँति रखा गया। भूखा-प्यासा रखकर कोल्हू चलवाया। गोलियाँ से अनेकों को मार डाला गया। कईयों को फाँसी पर चढ़ा दिया गया।
- वर्तमान समय में आतंकवाद, महँगाई, बेरोजगारी, भुखमरी जैसा विषम परिस्थितियों से हम अपने देश को बचाना चाहेंगे।

विविध प्रश्न

1. (क) यह अतीत कल्पना, यह विनीत प्रार्थना
यह पुनीत भावना, यह अनंत साधना,
शांति हो, अशांति हो, युद्ध संधि, क्रांति हो,

(ख) झूम-झूम बदलियाँ, चूम-चूम बिजलियाँ
आँधियाँ उठा रहीं, हलचलें मना रहीं
लड़ रहा स्वदेश हो, शांति का न लेश हों,
क्षुद्र जीत-हार पर, यह दिया बुझें नहीं।

व्याकरण बोध

1. (क) दिया— (i) राम ने पत्र लाकर मुझे दिया।
(ii) मैंने पूजा करके मंदिर में दिया जलाया।

(ख) पर— (i) दीवार से टकराकर कबूतर का पर टूट गया।
(ii) मैंने अपने सिर पर मटका रखा।

(ग) तीर— (i) कल मैं यमुना के तीर पर घूमने गया।
(ii) देवदत्त के तीर से एक हंस घायल हो गया।

2. (क) निशीथ-प्रभात
(ख) स्वदेश-परदेश
(ग) अतीत- वर्तमान
(घ) शांति - अशांति
(ङ) पुण्य - पाप
(च) जीत - हार
(छ) स्वतंत्रता - परतंत्रता
(ज) अंधकार - प्रकाश

3. (क) बयार - हवा, पवन
(ख) निशीथ - रात्री, रात
(ग) विहान - प्रभात, प्रात:काल
(घ) नाव - नैया, नौका
(ङ) गंगा - सुरसरि, देवनदी
(च) ज्योति - प्रभा, दीप्ति
(छ) फूल - पुष्प, प्रसून

रचनात्मक गतिविधियाँ

- छात्र स्वये करें।
- देश प्रेम का गुण मानव हृदय में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहता है। मनुष्य चाहे विश्व के किसी भी कोने में रहे, वहाँ सारे सुख भोगते हुए भी उसका हृदय देश की मिट्टी के लिए तरसता है। मातृभूमि के आँचल की छाँव में उसे जो आनंद मिलना है, वह कही और नहीं है। इसीलिए स्वदेश को स्वर्ग से भी बढ़कर बताया गया हैं। देश ने हमें जीवन दिया, पालन-पोषण किया, उस देश की सेवा करना हमारा परम कर्त्तव्य है। भारत के लोग अपने देश के प्रति गहरी निष्ठा रखते हैं। देश प्रेम की यह भावना सभी लोगों को एकजुट करती है, चाहे वह किसी भी धर्म या जाति का हो। स्वतंत्रता सेनानियों का बलिदान इस बात का प्रमाण है उन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अपनी सारी शक्तियों और संसाधनों को समर्पित कर दिया। सभी भारतीय अपने देश पर गर्व महसूस करते हैं। यह गहरा प्रेम एकता और सामंजस्य की भावना को बढ़ावा देता है।
- शहीदों को सम्मान देने के लिए दिल्ली को इंडिया गेट के नजदीक नेशनल वॉर मेमोरियल का निर्माण किया गया है। यह वॉर मेमोरियल करीब 22,600 जवानों के प्रति सम्मान का सूचक है।

  विशेषताएँ—इस स्मरक की कुल लागत 176 करोड़ रुपये है। एके वैश्विक प्रतिस्पर्धा के माध्यम से इसका डिजायन चुना गया था। चक्रव्यूह की संरचना से प्रेरणा लेते हुए इसे बनाया गया है। इसमें चार वृत्ताकार परिसर और एक ऊँचा स्मृति स्तंभ है, जिसके तले में अखंड ज्योति दीप्तमान रहती है। स्मारक में आजादी के बाद शहीद हुए 25,942 भारतीय सैनिकों के नाम इन पत्थरों पर लिखे गए हैं।

2 जामुन का पेड़

मौखिक प्रश्न

(क) सेक्रेटेरिएट के लॉन में जामुन का पेड़ गिर पड़ाथा।

(ख) पेड़ के नीचे दबा हुआ व्यक्ति एक कवि था।

(ग) मनचले ने सुझाव दिया, आप जानते नहीं है, आजकल प्लास्टिक सर्जरी कितनी उन्नति कर चुकी है। मैं तो समझता हूँ कि यदि इस आदमी को बीच से काटकर निकाल लिया जाए फिर भी इसे पुनः जोड़ा जा सकता है।

(घ) अंत में वह व्यक्ति उसी जामुन के पेड़ के नीचे दबा-दबा मर गया।

लिखित प्रश्न

(क) (i) पेड़ के नीचे दबे हुए व्यक्ति के चारों ओर भीड़ जमा हो गई थी।

(ii) जहाँ पेड़ गिरा था, वह व्यापार विभाग था।

(iii) सुपरिटेंडेट के अनुसार यह पेड़ कृषि विभाग के अन्तर्गत आता है।

(iv) पेड़-वृक्ष, पादप।

(ख) (i) (क) पेड़ के नीचे दबे हुए व्यक्ति का।

(ii) (ग) वन विभाग के।

(iii) (घ) विदेश विभाग के।

(iv) (ख) प्रधानमंत्री का

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) जोरदार आँधी के कारण जामुन का पेड़ गिर गया।

(ख) जामुन का पेड़ व्यापार विभाग में गिरा था।

(ग) झक्कड़ की अगली सुबह माली ने देखा कि एक व्यक्ति गिरे हुए जामुन के पेड़ के नीचे दबा पड़ा है।

(घ) पेड़ के नीचे दबा हुआ व्यक्ति 'ओस' उपनाम से रचनाएँ लिखता था।

(ङ) वह व्यक्ति तीन दिन तक पेड़ के नीचे दबा रहा।

(च) अंतिम फैसला आने तक उस व्यक्ति की मृत्यु हो चुकी थी।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) पेड़ के नीचे दबे हुए व्यक्ति को निकालने के लिए माली ने सुझाव दिया कि हम सबको मिलकर पेड़ को हटाकर इसे जल्दी निकाल लेना चाहिए।

(ख) हार्टिकल्चर डिपार्टमेंट की ओर से जबाव आया ''आश्चर्य है, हम लोग पेड़ लगाओ स्कीम चला रहे हैं और देश के सरकारी अफसर पेड़ काटने का सुझाव दे रहे है, वह भी फलदार जामुन के पेड़ को। हमारा विभाग इस पेड़ को काटने की इजाजत नहीं दे सकता।

(ग) दबे हुए व्यक्ति की रचना 'ओस के फूल' अभी हाल में ही प्रकाशित हुई थी।

(घ) माली ने दबे हुए व्यक्ति की देखभाल दाल-भात और खिचड़ी खिलाकर की।

(ङ) विदेश विभाग के हुक्म से पेड़ काटने का फैसला रोक दिया गया क्योंकि इस पेड़ को दस साल पहले पिटोनिया के प्रधानमंत्री ने सेक्रेटेरिएट के लॉन में लगाया था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) 'जामुन का पेड़' पाठ कार्यालयी तौर-तरीकों में पाए जाने वाले विस्तार की निरर्थकता और पदों क्रम संख्या की हास्यास्पद दशा पर करारी चोट की गई है। सरकारी कार्यालयों में मानवीय संवेदना की उपेक्षा की जाती है इस बात पर व्यंग्य किया गया है वर्तमान समय में भी एक मामूली सी बात के लिए सरकार दफ्तरों में कई-कई दिन लग जाते हैं।

(ख) पेड़ के नीचे दबे व्यक्ति को निकालने के लिए फाइल व्यापार विभाग, कृषि विभाग, बागवानी विभाग, मेडिकल-विभाग, कल्चरल विभाग, फॉरेस्ट विभाग और विदेश विभाग में पहुँची।

परन्तु इनमें से एक भी विभाग सही ढंग से अपना काम नहीं कर रहा है। किसी भी सरकारी विभाग में संवेदना नहीं हैं। सभी विभाग केवल फाइल इधर से उधर घुमाकर अपनी औपचारिका दिखा रहे हैं। उन्हें किसी मनुष्य के जीने-मरने का भी ध्यान है। सभी उस व्यक्ति को निकाल कर बचाने के स्थान पर एक विभाग से दूसरे विभाग में फाइलें घुमाते रहे और वह व्यक्ति मर गया।

(ग) पेड़ काटने की बात सुनकर हार्टीकल्चर डिपार्टमेंट के सेक्रेटरी ने जवाब दिया कि इस समय जब देश में 'पेड़ लगाओ' स्कीम ऊँचे स्तर पर चल रही है तो ऐसे सरकारी अफसर भी मौजूद हैं जो एक फलदार वृक्ष को काटने का सुझाव दे रहे हैं, और वह भी जामुन के पेड़ को जिसके फल जनता बड़े चाव से खाती है। उनका विभाग इस पेड़ को काटने की इजाजत नहीं दे सकता।

(घ) उसके जीवन की फाइल पूर्ण हो चुकी थी इसका अर्थ है कि जो व्यक्ति जामुन के पेड़ के नीचे दबा हुआ था उसकी जिन्दगी समाप्त हो चुकी थी।

यह पंक्ति 'कृशचंद्र' द्वारा लिखित 'जामुन का पेड़' नामक व्यंग्यात्मक कहानी से ली गई है जिसमें लेखक ने सरकारी बाबूओं और सरकारी दफ्तरों में व्याप्त भ्रष्टाचार, लेटलतीफी और कुव्यवस्था पर कटाक्ष

किया है कि किस तरह सरकारी दफ्तर संवेदनहीन होकर कार्य करते हैं। उनके सामने मानवीय जिंदगी का कोई महत्व नहीं होता वे केवल अपनी खानापूर्ति में लगे रहते है। वे फाइलों की खानापूर्ती में इतना समय निकाल देते है कि उस आदमी के प्राण निकल जाते है।

पाठ से आगे

यदि मेरे समस्त ऐसी कोई घटना घटित हो जाए, उस स्थिति में, मैं पहले उस दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को बचाने का प्रयास करूँगा। क्योंकि जीवन महत्वपूर्ण है। वह व्यक्ति अकेला नहीं है, उसके साथ उसका पूरा परिवार इस दुर्घटना का शिकार होगा। इसलिये मैं पहले उस व्यक्ति को बचाऊँगा उसके बाद यदि आवश्यक होगी, तब ही कोई कार्यवाही करूँगा, अन्यथा नहीं। क्योंकि उसके जीवन से जरूरी कोई फाइल नहीं हैं।

विविध प्रश्न

1. (क) × (ख) × (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) × (च) ×
2. (क) सेक्रेटेरियट के लॉन में जामुन का पेड़ गिर पड़ा।
   (ख) जामुन का पेड़ फलदार पेड़ है।
   (ग) अगर पेड़ नहीं काटा जा सकता तो इस आदमी को ही काटकर निकाल लिया जाए।
   (घ) मेडिकल डिपार्टमेंट ने तुरंत एक्शन लिया।
   (ङ) उसके जीवन की फाइल पूर्ण हो चुकी थी।
3.

'अ'		'ब'
(क) व्यापार विभाग	(i)	बिजनेस डिपार्टमेंट
(ख) कृषि विभाग	(ii)	एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट
(ग) चिकित्सा विभाग	(iii)	मेडिक्ल डिपार्टमेंट
(घ) साहित्य विभाग	(iv)	कल्चरल डिपार्टमेट
(ङ) वन्य विभाग	(v)	फॉरेस्ट डिपार्टमेंट
(च) विदेश विभाग	(vi)	फॉरेन डिपार्टमेंट

4. (क) झक्कड़—आँधी—झक्कड़ के कारण जामुन का पेड़ गिर गया।
   (ख) हुक्म—आदेश—फॉरेस्ट डिपार्टमेंट के हुक्म पर पेड़ काटना रोक दिया गया।
   (ग) इजाजत—आज्ञा—प्रधानमंत्री ने पेड़ काटने की आज्ञा दे दी।
   (घ) व्यंग्यपूर्ण – मजाकिया – फॉरेस्ट डिपार्टमेंट की ओर से व्यंग्यपूर्ण जवाब आया।
   (ङ) वारिस—उत्तराधिकारी—उसके पिता की मृत्यु के बाद, वह सम्पत्ति का वारिस बन गया।

व्याकरण बोध

1.

	उपसर्ग	मूलशब्द	प्रत्यय
(क)	दौड़कर	दौड़	कर
(ख)	रसीली	रस	ईली
(ग)	वजनी	वजन	ई
(घ)	विभाग	वि	भाग
(ङ)	फलदार	फल	दार
(च)	गुमनामी	गुमनाम	ई

2. (क) रात – दिन
   (ख) निर्जीव – सजीव
   (ग) मुश्किल – आसान
   (घ) वारिस – लावारिस
   (ङ) जीवित – मृत
   (च) स्वस्थ – अस्वस्थ
   (छ) खुशी – गम
   (ज) पूर्ण – अपूर्ण

3. (क) पेड़ – पेड़ों
   (ख) आदमी – आदमियों
   (ग) बच्चा – बच्चों
   (घ) लोग – लोगों
   (ङ) फाइल – फाइलें
   (च) कवि – कवियों
4. (क) माली – मालिन
   (ख) चपरासी – चपरासिन
   (ग) आदमी – औरत
   (घ) मनचला – मनचली
   (ङ) शायर – शायरा
   (च) कवि – कवियत्री

रचनात्मक गतिविधियाँ

- छात्र स्वयं करें।
- छात्र स्वयं करें।
- पिता–बेटा, आज मैंने देखा कि सरकारी अस्पताल में कितना भ्रष्टाचार हो रहा है। मरीजों का इलाज के लिए रिश्वत देनी पड़ती हैं।

पुत्र– हाँ पापा, मुझे पता है। आजकल सरकारी विभागों में भ्रष्टाचार बहुत बढ़ गया है। यहाँ तक कि स्कूल के एडमिशन के लिए डॉनेशन देना पड़ता है।

पिता– ये सब बहुत गलत है। हमारे देश का विकास तभी हो सकता है, जब लोग ईमानदारी से काम करें। भ्रष्टाचार हमारे देश के लिए बहुत बड़ी समस्या है।

पुत्र– जी, पापा! भ्रष्टाचार से देश का बहुत नुकसान होता है। इसके कारण गरीब और गरीब होता जा रहा है।

पिता– हमें भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठानी पड़ेगी। साथ ही लोगों को भी इसके लिए जागरूक करना पड़ेगा।

पुत्र– हाँ, पापा। मैं आपकी बात से सहमत हूँ। मैं अपने दोस्तों को भी इसके बारे में जागरूक करूँगा।

3 आदमी और खच्चर

मौखिक प्रश्न

(क) प्रस्तुत पाठ में आदमी और खच्चर के मध्य संबंध दर्शाया गया है।

(ख) लाहौल घाटी में दस सदस्यों की टीम गई थी।

(ग) भूख से बेहाल खच्चर रात भर अपने तंबू में हिनहिनाते रहे।

(घ) सर्वे टीम के सदस्यों ने अपना खाना खच्चरों को इसलिए नहीं खिलाया क्योंकि उनके भोजन से एक भी खच्चर का पेट नहीं भरता।

लिखित प्रश्न

(क) (i) सूर्य का प्रकाश रहते उसे स्थान को समझने और उसे अपने अनुकूल बना लेने की सुविधा रहती है।

(ii) ग्रुप लीडर ने खच्चरों पर यंत्र, राशन और तंबू लदवा दिया।

(iii) शेरपाओं के मुखिया ने तय किया कि वह खच्चरों का दाना मिल जाने पर बड़ी बरमा मशीन का ईंधन लेकर हमारे पीछे आ जाएगा।

(iv) ''पौ फटना'' – प्रात:काल होना– शेरपा पौ फटने के साथ ही अपने लक्ष्य की ओर चल पड़े।

(ख) (i) (ख) ओले

(ii) (क) चाँदी के थाल में

(iii) (घ) 'क', 'ख' ओर 'ग' तीनों

(iv) (ग) नीची।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) घाटी में आयुध महत्व के एक पदार्थ के अनुमान में बरमा चलाने के लिए सर्वे टीम लाहौल घाटी गई थी।

(ख) टीम के सदस्यों ने खूँटे गाड़ने और तंबू बाँधने में शेरपाओं की सहायता की।

(ग) इस अभियान में कुल बाहर खच्चर और उन्नीस शेरपा सम्मिलित थे।

(घ) ऊँचाई पर फँसी सर्वे टीम के सामने माँसाहारी खच्चर की समस्या खड़ी हो गई।

(ङ) छठे दिन जब थोड़ी धूप दिखाई दी, तब टीम के सदस्यों को उमीद की किरण दिखाई दी।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) कूच-पड़ाव के लोगों ने सलाह दी कि खच्चरों के लिए ऊपर दाना पानी ले जाना बेकार है। वहाँ इस मौसम में उनके खाने के लिए वहाँ अच्छी घास मिलेगी।

(ख) तंबू लगाते ही वहाँ भयंकर गरजन के साथ ओले बरसने लगे। ओले इतनी तेजी से और इतने परिमाण में गिरे कि दस मिनट में घनी, ऊँची घास से ढका मैदान चाँदी के विराट थाल में परिवर्तित हो गया।

(ग) तंबू मे बंधे खच्चर भूख और सर्दी से बेहाल थे। वे अपने तंबू में और अधिक हिनहिनाकर और सरदी की शिकायत कर रहे थे। खच्चरों की दयनीय अवस्था, उनकी चारा माँगती कातर दृष्टि टीम के सदस्यों को दुखी कर रही थी।

(घ) एक शेरपा ने आकर बताया कि कनकटा खच्चर लड़खड़ाकर गिर पड़ा है। किंतु अभी जिंदा है और उसका कान खा जाने वाला खच्चर उसे खाने के लिए लपक रहा है। उसे रोकते है तो वह हमें काटता है। यह सुनकर टीम के सदस्य विस्मय के साथ उस खच्चर को देखने गए।

(ङ) माँसाहारी बन जाने वाला खच्चर सर्वे टीम के लिए समस्या का कारण बन गया था। माँसाहारी खच्चर अब तक सभी कमजोर खच्चरों को मार कर खा चुका था और अब भूख से व्याकुल होकर आदमियों पर झपट रहा था।

(य) ग्रुप लीडर ने माँसाहारी खच्चर को गोला मारने की अनुमति नहीं दी क्योंकि यदि उन्हें खराब मौसम के कारण दो-तीन और वहाँ रुकना पड़ जाए तो उस स्थिति में वह खच्चर उनके लिए भोजन का साधन बनेगा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) कम राशन और खराब मौसम की मार से बचने के लिए ग्रुप लीडर ने आदेश दिया कि राशन इस तरह खर्च किया जाए कि कम से कम चार दिन और चल सके। पैराफीन भी कम जलाया जाए, शाम की चाय बंद कर दी जाए। डिब्बों में बंद राशन को गरम करने की जरूरत नहीं हैं केवल नाश्ते के समय एक-एक प्याला कॉफी बनाए जाए।

(ख) लेखक व उसके अन्य साथियों को खराब मौसम, सरदी, भूख और माँसाहारी बन चुके खच्चर जैसे समस्याओं का सामना करना पड़ा। दर्रे से मैदान में उतरते ही मौसम एकदम से बदल गया। भयंकर गर्जन के साथ ओले पड़ने लगे जिसके कारण घास का मैदान चाँदी के थाल में बदल गया, लगातार पाँच दिन बरफ के कारण उनके पास राशन की कमी होने लगी। इसी बीच भूख से बेहाल खच्चर कमजोर होकर गिरने लगे जिन्हें एक माँसाहारी बन चुके खच्चर ने अपना आहार बना लिया। खच्चरों के समाप्त हो जाने पर वह अब उन पर भी झपटने लगा था। लगातार होती बर्फबारी के कारण तापमान शून्य से बहुत नीचे जा चुका था। जिसके

कारण लेखक और उसके साथियों की नाक से पानी बहने लगा और कनपटियो में दर्द होने लगा था। छठे दिन जब धूप निकली तब लेखक और उसके साथियों ने राहत की साँस ली।

(ग) लगातार होती बर्फबारी के कारण घास का मैदान बर्फ से पूरी तरह पट चुका था। टीम के सदस्य भी अपने साथ खच्चरों के लिए पर्याप्त भोजन नहीं लाए थे। भूख से व्याकुल खच्चर से जब भूख बर्दास्त नहीं हुई तो वह दूसरे खच्चरों को खाने के लिए झपटने लगा। एक दिन उसने दूसरे खच्चर का कान काट कर खा लिया। इस प्रकार भूख की व्याकुलता के कारण वह खच्चर माँसाहारी बन गया।

(घ) समय पर भोजन न मिल पाने के कारण एक खच्चर दूसरे खच्चरों को खाने के लिए झपटने लगा। उसे रोकने के कोशिश करने पर वह रोकने वाले को काटने के दौड़ पड़ता था। उसे ऐसा करते देख लेखक के एक साथी ने ऐसा इसलिए कहा कि कहीं भोजन के अभाव में वे लोग भी एक-दूसरे को मारकर अपनी भूख मिटाने के लिए झपटने न लगें।

पाठ से आगे

मोहन एक समझदार और ईमानदार आदमी था। वह एक दुकान पर काम करता था। उसका मालिक उसकी ईमानदारी शारीरिक क्षमता और सही समय पर सोच सकने की सार्मथ्य से भली-भाँति परिचित था। यही कारण था कि वह उसके रात के समय अपने गोदाम की पहरेदारी करने के लिए अकेला छोड़ देता था। गोदाम तक जाने का रास्ते जंगल के बीच से होकर गुजरता था। उस जंगल में अनेक प्रकार के जहरीले और हिंसक जीव जन्तुओं के साथ-साथ डाकुओं का भी बसेरा था। वे डाकू निरन्तर मोहन पर नजर रखते थे साथ ही वे गोदाम भी लूटना चाहते थे। मोहन को भी उन डाकुओं पर संदेह था कि वह कभी भी गोदाम पर उसे अकेला पाकर गोदाम लूटने आ सकते हैं। एक दिन जब मोहन गोदाम पर पहरा दे रहा था, तभी उसे कुछ आहट महसूस हुई वह समझ गया कि डाकुओं ने उसे घेर लिया है। थोड़ी देर चुप रहने के बाद मोहन बोलना शुरू करता है—सुनो रे! भाइयों, ओ मेरे साथियो! मुझे जो सब कुछ देख सकने की शक्ति प्राप्त है ना। उससे मुझे अभी-अभी पता चला है कि हमें डाकुओं ने घेर लिया है वे मुझे मारकर सारा माल लूटकर ले जाएँगे। इससे पहले मेरी यह बात सच हो उससे पहले ही तुम यह बात मालिक को बता दो। मोहन को इस प्रकार अकेले में बड़बड़ाते सुनकर डाकुओं के सरदार ने अपने दो साथियों के चारों ओर मोहन के साथियों को ढूँढ़कर लाने के लिए कहा। वे दोनों सब ओर जाकर देख आए परंतु उन्हें न कोई दिखाई दिया न ही किसी ओर के बोलने की आवाज सुनाई दी। उन्होंने आकर यह बात सरदार को बताई। इधर मोहन लगातार ऐसे ही बड़बड़ाए जा रहा था— अच्छा तो तुमने मालिक को सूचना दे दी। क्या-क्या कहा तुमने वह अपने साथ पुलिस भी ला रहे है। अच्छा मालिक उन डाकुओं से पहले आ जाएँगे और पुलिस भी। और जब डाकू मुझे मारने आएँगें तो खुद ही मारे जाएँगे। इस प्रकार मोहन की बातें सुनकर डाकू द्वारा जाते है। वे उल्टे पैर बिना गोदाम लूटे लौट जाते हैं। उनके जाते ही मोहन राहत की साँस लेता है। अगले दिन सुबह वह अपने मालिक सारी बात बताता है। मालिक उसकी सूझ-बूझ से बहुत खुश होता है। साथ ही मोहन के साथ चार और लोगों को भी गोदाम की पहरेदारी और मोहन की सहायता के लिए भेजने लगता है।

पहला दिन-हम सभी टीम के सदस्य द्वारा शेरपाओं और छह: खच्चरों के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़े। अभी हम मैदान तक पहुँचे भी थे कि मौसम अचानक बदल गया। हम लोगों ने तंबू लगाने मे शेरपाओं सहायता की। कुछ ही समय बाद भयंकर गर्जन के साथ ओले पड़ने लगे। पूरी

रात ओले पड़ते रहे। दूसरे तंबू में हमारे खच्चर भी ठंड और भूख से हिनहिनाते रहे।

दूसरा दिन—आज भी पूरे दिन बर्फबारी होती रही। हम सभी अपने तंबू में रजाई ओढ़े पड़े रहे।

तीसरा दिन—आज भी बर्फ पड़ती रही। तापमान शून्य से कई अंश नीचे था। दूसरे तंबू से खच्चरों के हिनहिनाने की आवाज आने बंद हो गई थी।

चौथा दिन—आज खच्चरों के तंबू से शेरपा ने एक विचित्र समाचार सुनाया कि एक खच्चर भूख से व्याकुल होकर दूसरे खच्चरों को काटने की कोशिश कर रहा है। उसने अपने पास खड़े एक खच्चर का कान काट कर खा लिा। यह सुनकर हम सभी उत्सुकता से उसे देखने गए।

पाँचवा दिन—आज उस माँसाहारी खच्चर ने कनकटे खच्चर को खाकर अपना पेट भर लिया था। यह देखकर हमारे ग्रुप लीडर ने मजाकिया अंदाज में कहा कि कहीं हम लोगों को भी यही स्थिति न हो जाए।

छठा दिन—गनीमत है, आज धूप तो निकली, किंतु बर्फ के कारण दर्रा लाँघना अभी भी पार नहीं किया जा सकता था।

सातवाँ दिन—धूप के कारण बर्फ कुछ तो पिघली किंतु घास अभी तक दिखाई नहीं दे रही थी। आज खच्चर वाले तंबू में एक और खच्चर लड़खड़ाकर गिर पड़ा और माँसाहारी बने खच्चर ने उसे भी अपना आहार बना लिया।

आठवें दिन—बिना भोजन के शेष खच्चर भी धीरे-धीरे गिरने लगे। माँसाहारी खच्चर उन खच्चरों से अपना पेट भरता रहा। इन छह दिनों में निकली धूप के कारण कुछ हद तक तो बर्फ पिघल गई। एक दिन शाम के समय एक ओले का बादल दिखा लेकिन हवा ने उसे उड़ा दिया।

ग्यारह से पन्द्रहवाँ दिन—आज तो हद ही हो गई खच्चरों को खा जाने वाला खच्चर अब हमारी सर्वे के टीम के सदस्यों को खा जाने की लिए लपक रहा था ग्रुप लीडर ने उसे बाँधकर रखने की सलाह दी, जिससे कि भोजन के अभाव में इसी खच्चर को मारकर इसके माँस से पेट भरा जा सके। हम सभी ने अपना खाना गरम करके खाना बंद कर दिया और नाश्ते के समय एक कप कॉफी पीकर रहने लगे।

सोलहवाँ दिन—सोलहवें दिन ग्रुप लीडर ने दो दिन रूककर दर्रा लाँघने का प्रयास करने की सलाह दी। उसके अनुसार पीछे रह गए लोगों ने उन्हें मरा हुआ समझ लिया होगा। फिर भी वह चाहता था कि हम दोदिन और इंतजार करने के लिए बोल रहा था। यह सुनकर हमारे एक साथी ने अपनी शंका व्यक्त करते हुए कहा कि हम दो दिन क्या खाएँगे ? तब ग्रुप लीडर ने उस माँसाहारी खच्चर को मारने, उसके माँस से अपना पेट भरने की सलाह दी वह अपनी रिवॉल्वर लाने के लिए जैसे ही अन्दर तभी हमें दर्रे की ढाल पर दो शेरपा हमारी ओर आते दिखे। इस प्रकार वह खच्चर और हम सभी बच गए।

विविध प्रश्न

1. (क) ✓ (ख) × (ग) × (घ) ✓ (ङ) ✓
2. (क) खच्चरों के लिए ऊपर दाना-पानी ले जाना बेकार है।
   (ख) यंत्र, राशन और तंबू, छह खच्चरों पर लदवा दिए।
   (ग) ओले धार की ढलानों और दर्रे में भी गिरे थे।
   (घ) खच्चरों की हिनहिनाहट सुनाई नहीं दे रही थी।
   (ङ) कनकटा खच्चर लड़खड़ाकर गिर पड़ा है।
   (च) इसका माँस पकाने के लिए पर्याप्त ईंधन की जरूरत पड़ेगी।
   (छ) दर्रे के पास दो शेरपा दिखाई दे गए।

व्याकरण बोध

1. (क) अनुकूल – प्रतिकूल
   (ख) सूर्यास्त – सूर्योदय
   (ग) गरम – ठंडा
   (घ) साधारण – असाधारण
   (ङ) माँसाहारी – शाकाहारी
   (च) अलंघ्य – लंघ्य
   (छ) निर्बलता – सबलता
   (ज) निराहार – आहार

2.

शब्द	उपसर्ग	मूलशब्द	प्रत्यय
(क) अलंघ्य	अ	लंघ्य	.....
(ख) निराहार	निर्	आहार	.....
(ग) पौष्टिक	.....	पौष्ट	इक
(घ) दुस्साध्य	दुः	साध्य	.....
(ङ) अप्रत्याशित	अ	प्रत्याशित	.....
(च) हिनहिनाहट	.....	हिनहिनाना	आहट
(छ) निर्बलता	निः	बल	ता
(ज) प्रलोभन	प्र	लोभ	न

3. (क) सूर्य – रवि, सूरज।
   (ख) प्रकाश – रोशनी, ज्योति
   (ग) अंधेरा – अंधकार, तम
   (घ) पानी – जल, नीर
   (ङ) बादल – पयोधर, जलध
   (च) चाँदी – रजत, सौध।

4. (क) माँस खाने वाला – माँसाहारी
   (ख) जिसका कान कटा हुआ हो – कनकटा
   (ग) जिसकी आशा न रही हो – निराशा
   (घ) जिसे लाँघा न जा सके – अलंघ्य
   (ङ) जो पहाड़ों पर चढ़ने-चढ़ाने में निपुण हो–शेरपा।

रचनात्मक गतिविधियाँ

- छात्र स्वयं करें।
- पशुओं का मानव सभ्यात में योगदान (अनुच्छेद)

मानव सभ्यता की शुरूआत से ही पशु मानव के जीवन का एक अभिन्न हिस्सा रहे है। चाहे वह कृषि कार्य हो, परिवहन हो, या भोजन, पशुओं ने हमेशा मानव की आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं पशु मानव जीवन में आर्थिक सहयोगी रहे हैं। आज भी इन पशुओं का महत्व कम नहीं हुआ है। पालतू पशु मानव के जीवन में विशेष स्थान रखते हैं। ये पशु न केवल हमारे साथी होते है, बल्कि हमारी भावनात्मक स्थिति को भी बेहतर बनाते है और हमारे जीवन में खुशियाँ भरते हैं।

पशु पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जंगली पशु खाद्य शृंखला का भी महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। जो मानव जीवन के अत्यंत आवश्यक है।

पशु और मानव का संबंध बहुआयामी और गहरा है। पशुओं ने हमेशा मानव सभ्यता के विकास में विभिन्न रूपों में योगदान दिया है और आगे भी देते रहेंगे। इसलिए, हमारी भी जिम्मेदारी है कि हम उनके प्रति संवेदनशील और जिम्मेदार रहे हैं।

प्रिय मित्र

शुभम्

आशा करता हूँ तुम सपरिवार कुशल होंगे। मैं तुम्हारे साथ ट्रैकिना की भोजना के बारे में बताना चाहता हूँ। मैंने सोचा है कि हम दोनों इस गर्मी के मौसम में पहाड़ी इलाके में ट्रैंकिंग करें। मैं तुम्हें एक अच्छी जगह के बारे में बता सकता है, जिसका नाम है शिमला।

मुझे पता है कि तुम भी ट्रैकिंग को शौकीन हो मुझे आशा है शिमला की पहाड़ियों पर ट्रैकिंग करके तुम्हें भी आनन्द आएगा। तुम

इस योजना से सहमत हो तो हमें अभी से अपनी यात्रा के साधन जुटाने होंगे। यदि आपके मन में किसी अन्य स्थान पर जाने का विचार हो, तब भी मुझे अवश्य अवगत करना।

तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा रहेगी।

तुम्हारा मित्र।

4 शीतल छाया

मौखिक प्रश्न

(क) लेखक मंदिर के पास वैसे प्रसाद लेते हुए एक व्यक्ति को कौतूहलवश देख रहा था।

(ख) मन्दिर के बाहर नीलिमा जिन वृद्ध को प्रसाद दे रही थी, वास्तव में वे नाथूखेड़ी के भैरूलाल पटेल जी थे।

(ग) लेखक ने वृद्ध से उसके घर चलकर रहने का अनुरोध किया।

(घ) खाने में नमक कम होने की बात कहने के कारण उनकी छोटी बहु ने उनके सामने से भोजन की थाली खींच ली थी। इस घटना के बाद वृद्ध अपना घर छोड़ आए थे।

लिखित प्रश्न

(क) (i) लेखक का तबादला हो जाने के बाद पटेल जी की पत्नी का देहान्त हो चुका था।

(ii) पटेल जी को यह संसार, जर, जमीन, जायदाद, कुटुंब, कबीला आदि सब निस्सार लगने लगा।

(iii) विरक्त - उदासीन — पटेल जी का मन सांसारिक मोह-माया से विरक्त हो गया था।

(ख) (i) (ग) दो

(ii) (क) भोजन खिलाने के नाम पर

(iii) (ख) छोटी बहू ने

(iv) (क) थल।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) पटेल जी से लेखक की पहली मुलाकात नाथूखेड़ी में हुई थी।

(ख) पत्नी की मृत्यु की दुखद घटना ने पटेल जी का जीवन बदल दिया।

(ग) जायदाद पाने के कुछ समय बाद पटेल जी के दोनों बेटे उन्हें भोजन खिलाने के नाम पर झगड़ने लगे।

(घ) पटेल जी के विषय में जानकर नीलिमा को बहुत दु:ख हुआ।

(ङ) किसी जरूरी ट्रेनिंग के लिए दूसरे शहर जाने की बात बोलकर लेखक पटेल जी को अपने घर ले आया।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) लेखक और पटेल जी की मुलाकात नाथूखेड़ी में हुई थी। लेखक वहाँ स्टेशन मास्टर था। पटेल जी रोजाना लेखक को अपने सरसों के खेत पर घुमाने ले जाते। रोजाना उसके लिए भोजन भेजते थे। इस प्रकार कुछ ही दिनों की भेंट में लेखक की पटेल से अत्यधिक घनिष्ठता हो गई थी।

(ख) पत्नी की मृत्यु के बाद पटेल जी को यह संसार, जर, जमीन, जायदाद, कुटुंब, कबीला आदि निस्सार लगने लगे। उन्हें रिश्ते-नाते, मोह-माया जीव के लिए झूठा प्रपंच जैसे अनुभव होने लगे।

(ग) एक दिन जब उनकी छोटी बहू ने साग में नमक ही नहीं डाला और जब उन्होंने उसे

यह बात बताई तो उसने पटेल जी के सामने से भोजन की थाली खींच ली। इस घटना ने पटेल जी को घर छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया।

(घ) पटेल जी पंचमुखी मंदिर के दालान के एक कोने में बिस्तर लगाकर सोते थे। रात के समय जब ठंड ज्यादा लगती थी तो उठकर बैठ जाते थे।

(ङ) नीलिमा की सेवा-सुश्रूषा से उनकी बिगड़ी खाँसी ठीक हो गई थी। साथ ही उनके झुर्रीदार सूखे चेहरे पर भी आभा झलकने लगी थी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) पटेल जी एक व्यावहारिक व्यक्ति हैं। वे जल्द ही लोगों से घुल-मिल जाते हैं। लेखक से घनिष्ठता भी उनकी बहुत जल्दी हो गई। वे बहुत ही सरल हृदय के व्यक्ति हैं। उनके मन में त्याग और प्रेम की भावना है। वे लेखक के साथ पुत्रवत् व्यवहार करते हैं। उसे अपने खेतों पर घुमाने ले जाते थे। उसके लिए भोजन भी बनाकर ले जाते थे। अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद उन्हें सांसारिक मोह माया से विरक्ति हो गई थी। वे एक स्वाभिमानी व्यक्ति है। एक दिन छोटी बहू ने उनके सामने से भोजन की थाली खींच ली। जिससे उनके स्वाभिमान को ठेस पहुँचा, उन्होंने अपमान की रोटी खाने से भूखे पेट रहकर स्वाभिमान से मरना पसंद किया और अपना घर छोड़ दिया।

जब लेखक ने उन्हें अपने घर ले जाना चाहा तो उन्होंने मना कर दिया। किंतु लेखक ने युक्ति लगाकर उन्हें अपने घर रहने का मना लिया। वे फिर भी अपने स्वाभिमान के कारण वहाँ से जाना चाहते थे। किन्तु लेखक और उनकी पत्नी के प्रेम और समर्पण को देखकर वे वहीं रह गए।

(ख) नीलिमा बुजुर्गों के प्रति दयालु और संवेदनशील है। लेखक ने जब उसे पटेल जी की स्थिति के विषय में बताया तो वह बहुत दु:खी हुई और सहर्ष उनकी सहायता के लिए तैयार हो गई। नीलिमा ने प्रेम और अपनेपन के साथ पटेल जी की खूब सेवा की। उसकी इसी सेवा से पटेल जी की खाँसी पूरी तरह से ठीक हो गई और उनके झुर्रीदार चेहरे पर चमक आ गई। नीलिमा ने पटेल जी को अपने पिता के समान सम्मान दिया।

(ग) लेखक ने पटेल जी को अपनी ट्रेनिंग का झूठा बहाना करके अपने घर रहने का निमन्त्रण दिया। उसने पटेल जी से कहा कि उसे ट्रेनिंग के लिए दूसरे शहर जाना है ओर घर पर नीलिमा अकेली रहेगी। यदि आप मेरे घर पर नीलिमा के पास रहते तो मेरा ट्रेनिंग का समय आराम से निकल जाता। यह सुनकर पटेल जी पहले तो असमंजस में पड़ गए। फिर कुछ सोचकर लेखक से बोले कि यदि लेखक उन्हें ट्रेनिंग से लौटने के बाद वापस मंदिर छोड़ देगा, तब वह उसके घर चलकर रहने को तैयार हैं। लेखक के स्वीकृति देने पर वह उसके साथ उसके घर पहुँच गए। घर पर नीलिमा ने उनकी अपने पिता के समान खूब सेवा कि जिसका उनकी सेहत पर सकारात्मक प्रभाव दिखा। लगातार दवा देने के कारण उनकी बिगड़ी खाँसी ठीक हो गई। समय पर भोजन मिलने के कारण उनके स्वास्थ्य में भी सुधार हुआ। उनके झुर्रीदार सूखे चेहरे पर अब आभा झलकने लगी थी। लेखक ने पटेल जी को अपने परिवार का अभिन्न सदस्य बताया। उसने उन्हें समझाया कि वह उन पर बोझ नहीं है। इस प्रकार लेखक और नीलिमा ने पटेल जी हृदय जीता।

लेखक का यह प्रयास लेखक के चरित्र की संवेदनशीलता सहानुभूति और सम्मान की विशेषताओं को प्रकट करता है। उसने अपने स्नेह और सम्मान से पटेल जी को घर के सदस्य के रूप में स्वीकार किया।

(घ) पटेल जी ने अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद अपनी सारी सम्पत्ति अपने दोनों बेटों में आधी-आधी बाँट दी। सम्पत्ति मिलने के कुछ समय बाद तक तो दोनों बेटों ने बहुत अच्छे से देखभाल की। किंतु कुछ समय पश्चात् उन्हें वे बोझ के समान लगने लगे। उनको भोजन खिलाने को लेकर उनमें आपस में झगड़ा होने लगा। गाँव वालों के समझाने पर उन्होंने मुझे भोजन खिलाने की बारी बाँध ली। लेकिन यह स्थिति भी ज्यादा दिन नहीं चली। एक कहता कि उन्हें तू भोजन करवाएगा, मेरे पास इंतजाम नहीं है तो दूसरा कहता, नहीं खिलाना तो तुझे ही पड़ेगा, तेरी ही बारी है। ऐसे ही एक दिन उनकी छोटी बहू ने साग में नमक ही नहीं डाला, यह बात जब उन्होने बहू को बताई तो अपने उनके सामने से थाली ही खींच ली। इस घटना ने उनके सम्मान को बहुत ठेस पहुँचाई। उन्होंने ऐसे अपमान को सहकर भोजन करने के स्थान पर सम्मान के साथ भूखा मरना पसंद किया और मान सहित मारेबो भलो कहकर अपना घर छोड़ दिया।

पाठ से आगे

- छात्र स्वयं करें।
- हमें बुजुर्गों को ढेर सारा प्यार और आदर-सम्मान देना चाहिए। उनकी आज्ञा माननी चाहिए। यदि वे किसी बात पर अपनी सलाह देते है तो उसे स्वीकार करना चाहिए। उन्हें समय पर पौष्टिक और स्वास्थ्यवर्धक भोजन और फल देने चाहिए। बीमार होने पर उनी भलीभाँति देखभाल करनी चाहिए। उनके साथ समय बिताना चाहिए।

विविध

1. (क) ✓ (ख) × (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓ (च) ×
2. (क) नीलिमा ने मेरा ध्यान भंग किया।
   (ख) आपका तबादला होने के बाद मेरी घरवाली मर गई थी।
   (ग) छोटी बहू ने साग में नमक ही नहीं डाला।
   (घ) वे परिवार के सिर पर शीतल छाया होते है।
   (ङ) काकासा ही मेरे बाबूजी हैं।
3. (ग) पटेल जी रोजाना अपने खेतों में घुमाने ले जाते।
   (क) पत्नी के मरने के बाद विरक्त होकर पटेल जी ने अपने बेटों में संपत्ति का बँटवारा कर दिया।
   (ङ) साग में नमक न डालने की बात कहने पर छोटी बहू ने उनके सामने से थाली खींच ली।
   (छ) वैसे भी इस बुढ़ापे में अब कम ही नींद आती है।
   (घ) ठंड के मारे उनके दाँत बज रहे थे और शरीर काँप रहा था।
   (च) स्कूटर की आवाज सुनकर नीलिमा फुर्ती से बाहर निकली।
   (ख) चौखट की आड़ में खड़ी नीलिमा की आँखों में भी आँसू थे।
4. (क) निस्सार—अर्थहीन—पटेल जी को अपनी पत्नी के बिना यह संसार निस्सार लगने लगा।
   (ख) घनिष्ठता—गहरी दोस्ती—कुछ ही समय में मुझमें और मीरा में घनिष्ठता हो गई।

(ग) विषाद—गहरा दु:ख— पिता की मृत्यु के बाद सोहन विषाद में डूब गया।

(घ) परिचित — जान-पहचान वाला— रेलवे स्टेशन पर कोई न कोई परिचित अवश्य नजर आ जाता है।

(ङ) कौतूहलवश — उत्सुकता के कारण — मौहल्ले में जमा भीड़ को देखकर मैं भी कौतूहलवश वहाँ जा पहुँचा।

व्याकरण बोध

1. (क) नीलिमा के द्वारा लड्डू का प्रसाद बाँटा गया।

(ख) पटेल जी के द्वारा रोजाना अपने खेतों पर घुमाने ले जाया गया।

(ग) लड़कों द्वारा रोटी-पानी दिया गया।

(घ) नीलमा के द्वारा काकासा को स्कूटर से नीचे उतारा जाता है।

(ङ) नीलिमा के द्वारा मेरा ध्यान भंग हुआ।

2. (क) मान सहित मरिबो भलो-मान-सम्मान के साथ मरना बेहतर है।

वाक्य प्रयोग—रहीम दास जी कहते है कि मान सहित मरिबो भलो।

(ख) हाथ-पाँव पसारना—किसी किसी से मदद माँगना।

वाक्य प्रयोग—राम को किसी के सामने हाथ-पाँव पसारना पसंद नहीं है।

(ग) पानी का सैलाब उमड़ना—बहुत अधिक आँसू आना।

वाक्य प्रयोग—जब उसने अपनी माँ को खोया, तो उसकी आँखों में पानी का सैलाब उमड़ आया।

(घ) कंठ अवरूद्ध होना—भावुक होकर बोल न पाना, भावुकता के कारण आवाज भारी होना।

लेखक की बात से पटेली जी का कंठ अवरूद्ध हो गया।

3. (क) परिचित — अपरिचित

(ख) घनिष्ठता — दूरस्थता

(ग) विषाद — हर्ष

(घ) विरक्त — संयुक्त

(ङ) सम्मान — अपमान

(च) शीतल — तप्त

4. (क) रिश्ते और नाते

(ख) मोह और माया

(ग) जमीन और जायदाद

(घ) हाथ और पाँव

(ङ) साफ और सुथरे

(च) सुखी और संतुष्ट

5. वह चलते-चलते रूक गए, ''आप कौन हैं, भैया जी ? मैं कोई पटेल-वटैल नहीं हूँ। आप मुझे गलत समझ रहे है। आप मुझे देख नहीं रहे मैं तो....''

रचनात्मक गतिविधियाँ

- वर्तमान समय में बुजुर्गों की समस्या अकल्पनीय है। वृद्धावस्था अभिशाप बनती जा रही है। बुजुर्गों का जीवनयापन बहुत कठिन होता जा रहा है। आज के समय में समाज का स्वरूप से परिवर्तित हो रहा है। वर्तमान में संयुक्त परिवार की परंपरा टूट रही है और एकल परिवारों का प्रचलन हो गया है। इन परिवारों में घर के बुजुर्गों का कोई स्थान नहीं रहता है। आज माँ-बाप और बड़े-बुजुर्ग बाहरी व्यक्ति हो गए हैं। यदि वे परिवार के किसी कार्य में हस्तक्षेप या अपनी सलाह देते है, तो उनकी बातों को नजरंदाज कर दिया जाता है या उन्हे पलट कर जवाब दे दिया जाता है। परिवार एवं समाज में उनकी उपेक्षा और तिरस्कार की घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं।

- अध्यापक के निर्देशन में छात्र स्वयं करें।
- (i) गुडफेलोग—यह एक स्टर्टिअप भी है जो बुजुर्गों को सामाजिक रूप से जोड़ने के लिए नाम कर है। रतन टाटा ने इसमें निवेश किया है।

  (ii) वृद्धाश्रम—इनमें बुजुर्गों के रहने, खाने और स्वास्थ्य देखभाल की सुविधा प्रदान की जाती है।

  (iii) NMH (राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन)—इसमें बुजुर्गों के लिए विशेष कार्यक्रम, बुजुर्गों के स्वास्थ्य की नियमित निगरानी और मूल्यांकन करते हैं और उन्हें देखभाल के बारे में शिक्षित करते है।

  (iv) हैल्पएज इंडिया।

  (v) दादा-दादी संस्था।

  (vi) डिजिटल प्लेटफॉर्म।

5 मुरझाया फूल

मौखिक प्रश्न

(क) कवयित्री ने मानव जीवन की तुलना फूल से की है।

(ख) प्रस्तुत कविता की कवयित्री महादेवी वर्मा है।

(ग) बालपन में पुष्प कली के रूप में था।

(घ) मुरझाने पर पुष्प को हवा के एक तेज झोंके ने डाली से जमीन पर गिरा पर बिखरा दिया।

लिखित प्रश्न

(क) (i) फूल कली के रूप में शैशव (बाल) अवस्था में था।

(ii) कली की अवस्था में पवन उसे गोद में खिलता था।

(iii) रस के पीने के लालच के कारण भँवरे आकर फूल पर मँडराने लगते थे।

(iv) भ्रमर-भौंरा।

(ख) (i) (क) भौंरा।

(ii) (ग) सूरज के लिए

(iii) (ख) पवन ने

(iv) (ग) मेघ।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) प्रस्तुत कविता में मुरझाये फूल की चर्चा की गई है।

(ख) भौंरा रस के लालच में फूल की ओर आता था।

(ग) अंत में हवा ने फूल को जमीन पर बिखेर दिया।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) फूल के पूरी तरह खिल जाने पर भँवरे फूल की सुंदरता एवं उसकी सुगंध की ओर आकृष्ट होकर उसका रस पीने के लिए उसके चारों ओर मँडराते रहते थे।

(ख) फूल धरती पर बेजान अवस्था में पड़ा हुआ हैं आज उसमें पहले जैसी सुगंध और कोमलता नहीं रही है। यही कारण है कि कोई उसे अपनाना नहीं चाहता है। आज वह मुरझाकर जमीन पर बेजान पड़ा है।

(ग) फूल के मुरझा जाने पर हवा ने अपने तेज झोंकों से उसे जमीन पर गिरा दिया।

(घ) फूल ने इस संसार को अपना मधु, सुगंध और सौंदर्य सब कुछ दिया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) फूल जब शैशव अवस्था में तब पवन उसे अपनी गोदी में लेकर झूला झुलाता था, उसके साथ खेलता था। यौवन अवस्था में जब फूल पूर्ण विकसित हो जाता है तो उसकी शोभा बढ़ाने के लिए चन्द्रमा अपनी रोशनी से उसे हँसाता है। पवन पंखा बनकर

उसे सुलाने की कोशिश करता है। ओस की बूँदे मुक्त जल से उसका शृंगार करती हैं। फूल की सुंदरता और मधुरता देखकर रस के लोभी भँवरे उसके चारों ओर घुमने लगते हैं।

(ख) जब फूल धीरे-धीरे मुरझाने लगता है तो उसके प्रति दूसरों का ध्यान घटने लगता है कभी जिस पवन ने उसे गोदी में लेकर झुलाया करता था आज उसी पवन ने अपने तेज झोंके से उसे जमीन पर गिरा दिया। जो चन्द्रमा उसे अपनी रोशनी से हँसाया करता था, उसका ध्यान अब मुरझाए फूल पर नहीं जाता है। अब भौंरे भी उसके चारों नहीं मँडराते है। जिस माली ने उसकी प्यार से देखभाल की अब वह भी उसे देखता नहीं है। मुरझाने के बाद अब कोई भी उससे प्यार नहीं करता है।

(ग) इस कविता में मानव जीवन की तुलना एक फूल से की गई हैं जिस प्रकार कली से लेकर खिले फूल की मात्रा के दौरान फूल सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है। ठीक उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में उसके शैशव काल से युवावस्था तक सभी लोग एक-दूसरे के साथ मिल-जुलकर रहते है। विभिन्न क्षेत्रों में एक-दूसरे का सहयोग करते है।

जब फूल मुरझाने लगता है तो उसके पास कोई नहीं आना चाहता है, यहाँ तक कि माली भी उसकी देखभाल नहीं करता है। इसी प्रकार मनुष्य जीवन में भी मुरझाए हुए फूल की तरह स्थिति आती है, जिसे बुढ़ापा कहते हैं। जब मनुष्य बुढ़ापे में कदम रखता है, वह अपना आदर सम्मान खोने लगता है। उसके प्रति परिवार के अन्य सदस्य उपेक्षा का भाव दिखाने लगते हैं। उसके अंत में कोई साथ नहीं देता है। एक समय बाद वह महत्वहीन हो जाता है।

(घ) इस कविता के माध्यम से यह संदेश दिया गया है जिस प्रकार खिले फूल के प्रति सभी आकर्षित होते है। पवन उसे सहलाता है। भौंरे उसके चारों ओर मँडराते है। ओस की बूँदें उसका शृंगार करती है। चन्द्रमा की किरणें उसे हँसाती है। माली उसे ध्यान से सँवारता है। और मुरझाए जाने के बाद उसे भुला दिया जाता है। ठीक इसी प्रकार मनुष्य जीवन में भी लोग सफलता और समृद्धि के समय आकर्षित होते हैं। लेकिन असफलता या जीवन के अंत में सभी उस व्यक्ति को भूल जाते हैं मनुष्य का जीवन भी स्वार्थपूर्ण समाज में एक समय बाद महत्वहीन हो जाता है।

(ङ) खिले फूल को पवन अपनी गोद में लेकर हँसाता है, खिलाता है, लेकिन उस पवन ने ही एक दिन उस मुरझाए हुए फूल को अपनी तीव्र झोंके से धरती पर गिरा देता है।

कविता से आगे

- मानव जीवन में वृद्धावस्था ऐसा समय है, जब मनुष्य दूसरों पर निर्भर हो जाता है। उसके अपने परिवारिजन ही उसका सम्मान नहीं करते हैं। वह अपने घर और समाज में उपेक्षित हो जाता है। लोग उसका अनादर करने लगते हैं।
- कविता में जिस प्रकार फूल अपनी कली और फूल की अवस्था में सबका ध्यान और प्यार पाता है। ठीक उसी प्रकार मनुष्य भी अपने बालकाल और युवावस्था में सबका ध्यान अपनी और आकर्षित करता है। जैसे-जैसे उसकी युवावस्था ढलकर वृद्धावस्था आती है वह भी उपेक्षित होता जाता है।

विविध प्रश्न

1. (क) लोरियाँ गाकर मधुप, निद्रा विवश करते
तुझे।

यत्न माली कारव आनंद से भरता तुझे॥

(ख) विश्व में हे फूल तू सबके हृदय भाता रहा।
दान कर सर्वस्व फिर भी हाय! हरषात रहा॥

2. (क) अंक—गोद—पवन फूल को अपने अंक में झुलाता था।

(ख) लुब्ध—लालची—भँवरे रस के लुब्ध होते हैं।

(ग) संपदा—सम्पत्ति—रमेश को अपनी संपदा पर बहुत घमंड था।

(घ) प्राप्त—उपलब्ध—संसार में सभी को सबकुछ प्राप्त नहीं होता है।

(ङ) व्यथित—दु:खी—माँ की मृत्यु होने पर उमेश बहुत व्यथित था।

व्याकरण बोध

1. फूल—सुमन, पुष्प, कुसुम।

2. (क) अंक— गोद, नंबर।

(ख) लाल—बेटा, रंग।

(ग) राग—संगत, प्रेम।

3. (क) भौंरा—भ्रमर, मधुप।

(ख) चन्द्रमा—शशि, चाँद।

(ग) पवन—हवा, अविल।

(घ) ईश्वर—परमात्मा, भगवान।

(ङ) संसार—जगत, विश्व।

(च) मनुष्य—मानव, नर।

(छ) धरा—धरती, वसुधरा।

4. (क) सूखे—गीले

(ख) सुकोमल—कठोर

(ग) रात-दिन

(घ) आनंद-शोक

(ङ) धरा—अंबर

(च) स्वार्थमय—परमार्थमय।

रचनात्मक गतिविधियाँ

मुरझाया हुआ फूल (सुभद्रा कुमारी चौहान)

यह मुरझाया हुआ फूल है, इसका हृदय दुखाना मत
स्वयं बिखरने वाली इसकी, पंखुड़िया बिखराना मत
गुजरो अगर पास से इसके इसे चोट पहुँचाना मत
जीवन की अंतिम घड़ियों में, देखो इसे रूलाना मत
अगर हो सके तो ठंडी-बूंदे टपका देना प्यारे
जल न जाय संतप्त हृदय, शीतलता ला देना प्यारे

डाल पर वे मुरझाये फूल! हृदय में मत कर वृथा गुमान
नहीं हैं सुमनकुंज में अभी इसी से है तेरा सम्मान
मधुप जो करते अनुनय विनय ने तेरे चरणों के दास
नई कलियों को खिलती देख नहीं आवेगे तेरे पास
सहेगा वह कैसे अपमान? उठेगी वृथा हृदय में शूल
भुलावा है, मत करना गर्व, डाल पर के मुरझाये फूल

6 मेहमान की वापसी

मौखिक प्रश्न

(क) घर के बरामदे मे बैठे एक बड़े से अल्सेशियन कुत्ते को देखकर अजय की साँसें अटककर रह गईं।

(ख) राय अंकल के पिता की तबीयत खराब होने के कारण उन्हें अपने पिता के पास जाना पड़ा इसलिए वे जॉली को अजय के घर छोड़कर गए।

(ग) उन्हें जॉली के लिए खाना बनाना पड़ेगा, इसलिए जॉली के आने पर मम्मी नाराज थी।

(घ) राय अंकल और आंटी को याद करके जॉली रो रहा था।

(ङ) जॉली आकर जैसे ही अजय के पैरों से लिपटा, उसकी सारी शिकायतें दूर हो गईं।

लिखित प्रश्न

(क) (i) जॉली के रोने पर अजय ने सोचा कि उसे अंकल आंटी की याद आ रही है।

(ii) अजय जॉली का रोना सहन नहीं कर सका।

(iii) जॉली देखने में एक नन्हें से बच्चे की तरह असहाय लग रहा था।

(iv) 'रुलाई' शब्द में कोई उपसर्ग नहीं हैं यह शब्द 'रूआ' धातु ओर 'आई' प्रत्यय से मिलकर बना है।

(ख) (i) (ग) राय अंकल ने

(ii) (क) जॉली

(iii) (ख) अजय की

(iv) (क) बाण

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) जॉली एक अल्शेशियन कुत्ता था।

(ख) राय अंकल आंटी अपने अल्सेशियन कुत्ते को छोड़ने के लिए अजय के घर आए थे।

(ग) अजय को जॉली के रोने की आवाज सुनकर पिछली छुट्टियों की बात याद आयी जब वह अपनी मौसी के घर गया था। वहाँ पर रात के समय अपनी मम्मी को याद करके खूब रोया था।

(घ) राय अंकल-आंटी के आने पर जॉली ने उन्हें खूब प्यार किया।

(ङ) नहीं, जॉली अजय को नहीं भूला था।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) जॉली के घर रहने की बात सुनकर अजय बहुत नाराज हुआ। उसे लगने लगा कि जॉली के रहते ना उसके कोई दोस्त घर आ पाएँगे और ना ही वह मम्मी से छुपकर बाहर खेलने जा पाएगा।

(ख) राय अंकल ने जॉली को प्यार से बुलाकर अजय से उसका हैंड शेक कराकर, उन्होंने अजय से जौली को दोस्ती कराई।

(ग) जॉली रात के समय रॉय अंकल-आंटी को याद करके रो रहा था। उसकी आवाज से मम्मी की नींद खराब हो रही थी और वे बार-बार जॉली को चुप कराने के लिए बोल रही थी। इसलिए देर रात अजय के पापा झल्ला उठे।

(घ) अजय ने बड़े प्यार से जॉली के गले में हाथ डालकर उसे दुलारते ओर पुचकारते हुए खाना खिलाने की कोशिश की। अजय के स्नेह भरे स्पर्श ने जादू का काम किया। जॉली ने धीरे-से कटोरे में अपना मुँह डाल दिया। अजय तब तक जॉली के पास बैठा रहा, जब तक जॉली ने अपना पूरा खाना खा नहीं लिया।

(ङ) जॉली के घर से चले जाने पर अजय बहुत दु:खी हुआ। उसकी तो भूख ही लापता हो गयी थी। सामने रखी प्लेट को वह यो ही घूरता रहा। उसे लग रहा था, अभी कही से जल्दी से जॉली आएगा और उससे बिस्कुट माँगेगा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) अजय को जॉली के रूप में एक साथी मिल गया था। उसने जॉली के पास ही अपनी छोटी-सी मेज लगा ली थी। वह वहीं बैठकर अपना छुट्टियों का होमवर्क पूरा करता था। घर से बाहर जाते समय वह जॉली को टा-टा करके जाता और आने के समय जॉली अपनी पूँछ हिलाकर उसकी उठावानी करता। अब तो यह नियम हो गया था, अजय जब भी बाहर जाता, जॉली उसे सड़क तक छोड़ने जाता। दोनों देर शाम तक प्ले ग्रांउण्ड पर खेलते। अपने इस साथी के बिना अजय को न तो खाना अच्छा लगता था ना ही खेलना अपने दोस्तों के यहाँ तो वह मजबूरी में जाता था। इस तरह अजय ने जॉली को अपनी दिनचर्या में सम्मिलित कर लिया था।

(ख) अजय एक भावुक लड़का है। वह जॉली के रातभर रोने-चिल्लाने पर दु:खी हो उठता है। उसे आपबीती याद आ जाती है। तो वह जॉली के प्रति सहानुभूति दिखाने से स्वयं को रोक नहीं पाता है। वह प्यार से थपथपाकर उसे खाना खिलाता है। वह एक सच्चे मित्र की तरह जॉली की परवाह करता है। बाल सुलभ व्यवहार के कारण अजय धीरे-धीरे समझने लगता है और उसे अपनी दिनचर्या में सम्मिलित कर लेता है। जॉली के चले जाने पर वह बहुत दु:खी होता है। उसकी भूख गायब हो जाती है। फिर भी उसे आशा थी कि जॉली लौटकर आएगा। जॉली के उससे मिलने के लिए आने पर उसकी सारी शिकायतें दूर हो गई। इस प्रकार अजय एक भावुक और सच्चा मित्र था साथ ही उसमें बाल सुलभ व्यवहार भी था।

(ग) 'मेहमान की वापसी' कहानी एक सोद्देश्यपरक कहानी है। इस कहानी में मनुष्य और पशु में परस्पर प्रेम दर्शाया गया है। इसके माध्यम से लेखिका ने मनुष्य के प्रति पशुओं की वफादारी, कृतज्ञता और नि:स्वार्थता को प्रेरक के रूप में प्रस्तुत करने के साथ-साथ बाल सुलभ व्यवहार का भी सजीव वर्णन किया है।

(घ) जॉली एक बड़ा सा अल्सेशियन कुत्ता था। वह शेर के जैसा दिखता था। फिर भी वह बहुत समझदार और वफादार था। वह अपने स्वामी के द्वारा उसे अजय के परिवार को सौंप देने पर अपने मालिक को याद करके रातभर रोता और चिल्लाता है। जॉली प्यार और स्नेह की भाषा समझता है। अजय के द्वारा दुलारे और पुचकारे जाने पर शांत हो जाता है और अपना भोजन खत्म कर लेता है। वह अपने स्वभाव के कारण जल्द ही अजय से दोस्ती कर लेता है। वह अजय से इतना घुल-मिल जाता है कि अपने वास्तविक मालिक के पास वापस पहुँचने पर, वह अजय के लिए व्याकुल हो उठता है। उसके मालिक को मजबूरन जॉली को अजय के पास छोड़ने आना पड़ता है।

(ङ) 'मेहमान की वापसी' कहानी 'मालती जोशी' जी के एक लोकचर्चित कहानी है। इस कहानी में लेखिका ने मूक पशुओं और मानवों में परस्पर प्रेम को बड़े भावपूर्ण शब्दों में चित्रित किया है। यह कहानी दर्शाती है कि यदि मनुष्य पशुओं के प्रेम की अनुभूति करता है, उनके दु:ख-दर्द और भावनाओं को समझता है तो पशु भी उसके प्रति अपने प्रेम को किसी-न-किसी रूप से अवश्य प्रकट करता है।

पाठ से आगे

- कुत्ते की विशेषता होती है कि वह प्यार और स्वामी भक्ति को भलीभाँति समझता है। यही कारण है कि वह अपने प्यार करने वालों और अपने मालिक पर अपने प्राण तक न्यौछावर कर देता है।
- कुछ साल पहले मेरे बेटे ने एक तोता पाला था। मेरा बेटा बहुत छोटा था और बाहर ज्यादा किसी से बात नहीं करता था। इसलिए उसे तोते से खेलना बहुत पसंद था। वह तोता भी मेरे बेटे के जैसे मम्मी-पापा बोलना सीख गया था। जब मेरा बेटा हँसता या रोता तब वह भी वैसा ही करने लगता था। एक बार जब हमें किसी फंक्शन के लिए लोकल में ही एक रिश्तेदार के घर जाना पड़ा। हम उस तोते के खाने-पीने का पूरा प्रबंध करके गए चूँकि हमें रात को वहाँ रुकना था, इसलिए अचानक देर रात को हमारे पड़ोसी का फोन आता है और वे हमारे बेटे की तबीयत के विषय में पूछने लगे। उनके ऐसा पूछने का कारण जानने पर पता चला कि उन्हें हमारे घर से किसी बच्चे के रोने की और पापा-पापा की आवाजें आ रही थी। इसलिए वे फोन करके मेरे बेटे का हाल पूछ रहे थे। उनकी बात सुनकर हम हैरान रह गए क्योंकि हम सभी यहाँ थे। घर पर केवल तोता था। मेरे पति और मेरे भाई रात को हमारे घर आए, तब उन्हें पता चला कि वह तोता मेरे बेटे को याद कर रहा था, इसलिए उसकी तरह आवाज निकाल रहा था। तब से हम उस तोते को घर पर अकेला छोड़कर कहीं नहीं जाते हैं।

विविध

1. (क) × (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ×
2. (क) जॉली एक आज्ञाकारी बच्चे की तरह उठकर भी कटोरे की तरफ नहीं देखा।
   (ख) जॉली ने आँख उठाकर भी कटोरे की तरफ नहीं देखा।
   (ग) अजय के स्नेह भरे स्पर्श का जादू काम कर गया था।
   (घ) जॉली ने दोनों पंजे उठाकर उसका स्वागत किया तो अजय की बाछें खिल गई।
   (ङ) जॉली तीर की तरह घर में घुसा और अजय के पैरों से ऐसे लिपट गया, जैसे बरसों बाद उससे मिला हो।
3. (ज) अजय ने दरवाजे पर खड़े होकर मम्मी को आवाज दी।
   (घ) जॉली के आज्ञाकारी बच्चे की तरह उठकर उनके पास आ गया।
   (ग) उनके जाने के बाद मम्मी बड़बड़ाती रहीं।
   (छ) जॉली को अंकल और आंटी की याद आ रही थी।
   (च) शाम को अजय के वापस लौटने पर जॉली ने दरवाजे में ही पूँछ हिलाकर उसकी अगवानी की।
   (क) वे लोग दोपहर में ही आकर उसे ले गए।
   (ङ) वह हजरत वहाँ मजे से अंकल और आंटी के हाथ से माल खा रहे होंगे।
   (ख) अजय की सारी शिकायतें आँसुओं में बह गईं।

व्याकरण बोध

1. (i) रोज – प्रतिदिन
   (ii) कम हियर – निकट आओ
   (iii) मुसीबत – संकट
   (iv) अंकल – चाचा
   (v) आंटी – चाची
   (vi) आवाज – ध्वनि
   (vii) दोस्ती – मित्रता
   (viii) मजा – आनन्द

(ix) मिनट – क्षण

(x) नजर – दृष्टि

2. (i) जान निकलना – बरामदे में बहुत बड़ा कुत्ता बैठा देखकर अजय की जान निकल गई।

(ii) गल पड़ना – आज तो जॉली नाम की मुसीबत घर बैठ गले पड़ गई।

(iii) आँख उठाकर न देखना – मोहन इतना ईमानदार है कि वह दूसरे की किसी भी वस्तु को आँख उठाकर नहीं देखता है।

(iv) राग अलापना –वह किसी की नहीं सुनता उसे तो बस अपना राग अलापने से मतलब है।

(v) कान खाना – रमेश बिना सर-पैर की बातें करके मेरे कान खाता रहता है।

(vi) जी भर आना – उसका रोना देखकर मेरा तो जी भर आया।

(vii) बाँछें खिलना – जॉली ने जब अजय के अभिवादन का जवाब दिया, यह देखकर अजय की बाँछें खिल गईं।

(viii) जमीन पर पैर न पड़ना–जॉली से मित्रता हो जाने पर अजय के पाँव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे।

(ix) फूलकर कुप्पा होना – अपनी तारीफ सुनकर सोहन तो फूलकर कुप्पा हुआ जा रहा था।

(x) मुँह उतरना – पापा ने पिकनिक पर जाने से मना कर देने पर शालिनी का मुँह उतर गया।

(xi) धाक जमाना – अपने पैसे के बल पर वह समाज में अपनी धाक जमाता रहता है।

3. पीछे-पीछे, मोटी-मोटी, वैसा-वैसा, बैठे-बैठे, दूर-दूर।

4. (क) वह दरवाजे के बाहर खड़ा हुआ और जोर की आवाज दी।

(ख) अंकल-आँटी से बहुत सारी हिदायतें दी और चले गए।

(ग) पापा ने रोटियाँ मीड़ीं और उसके कटोरे में डाल आए।

(घ) उसने तकिए में मुँह छिपाया और देर तक सोता रहा।

(ङ) जॉली ने अपने दोनों पंजे उठाए और उसका स्वागत किया।

रचनात्मक गतिविधियाँ

- वर्तमान समय में जीव-जंतुओं का संरक्षण अति आवश्यक है। संरक्षण ही एकमात्र ऐसा साधन है जिसके माध्यम से जीव-जंतुओं की प्रजातियों के अस्तित्व को सुनिश्चित किया जा सकता है। अब धीरे-धीरे कई पौधों और जीव-जंतुओं की कई प्रजातियाँ लुप्त होती जा रही हैं। इनकी प्रजातियों और उनके प्राकृतिक निवास स्थान के साथ रक्षा करना भी जरूरी है। सबसे प्रमुख चिंता का विषय यह है कि जीव-जंतुओं के निवास स्थान की सुरक्षा किस प्रकार की जाए जिससे भविष्य में जीव-जंतुओं की पीढ़ियाँ सुरक्षित रखी जा सकें।
- छात्र स्वयं करें।
- मानव और पशुओं का संबंध सदियों पुराना है और यह संबंध अनेक पहलुओं से भरा हुआ है। मानव सभ्यता की शुरूअता से ही पशु मानव के जीवन का अभिन्न हिस्सा रहे हैं। चाहे वह कृषि कार्य हो, परिवहन हो, या भोजन पशुओं ने मानव की आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

  इसके अलावा पालतू पशुओं के रूप में इनका साथ मानव को मानसिक और भावनात्मक सहयोग भी प्रदान करता है। पशु पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका

निभाते है। इनके संरक्षण से पारिस्थितिकीय संतुलन बना रहता है।

मानव के जाति पशुओं का वफादारी और सहयोग असीमित है, लेकिन इसके बदले में मानव की भी जिम्मेदारी बढ़ती है। हमें पशुओं के प्रति संवेदनशील और जिम्मेदार होना चाहिए। पशु क्रूरता रोकने, वन्यजीव संरक्षण और पालतू पशुओं की देखभाल में हमें सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

पशु और मानव का संबंध बहुआयामी और गहरा है। हमें इस संबंध को और भी सशक्त बना सकते हैं।

- बी-56, 4th फ्लोअर

  सिद्द अपार्टमेंट्स

  प्रतापगंज, दिल्ली-110092

  26, मार्च 2025

  प्रिय नेहा

  मैं आशा करती हूँ कि तुम परिवार के साथ सकुशल होंगी। मैं भी यहाँ भली प्रकार हूँ।

  आज मैं तुम्हें अपने पालतू कुत्ते के विषय में कुछ रोचक बातें बताना चाहती हूँ। कुछ दिन पहले मेरे पिता गोल्डन रिट्राइवर नस्ल का एक पालतू कुत्ता मेरे लिए लाए। वह एक साल का है। उसकी मस्ती भरी हरकतें हम सभी को बहुत हँसाती है। उसका नाम जेक है। जेक को बॉल से खेलना बहुत पसंद है। मुझे उसे प्रतिदिन सैर पर ले जाना अच्छा लगता है। मुझे भी जेक के खेलने और सैर करने में आनंद आता है।

  जेक कुछ समय पहले ही हमारे घर में आया था और आज वह हमारे परिवार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है।

  आप भी जेक से मिलने मेरे घर अवश्य आना। मैं जेक और आपकी मित्रता करवा दूँगी फिर मैं, आप और जेक तीनों मिलकर खूब मस्ती करेंगे।

  तुम्हारी प्रिय मित्र

  गौतमी

7 गाँधी और गाँधीगिरी

मौखिक प्रश्न

(क) गाँधीजी की तीन पीढ़ियाँ दीवानगिरी का काम करती आई थीं।

(ख) गाँधीजी वकालत की शिक्षा लेने इंग्लैंड गए।

(ग) गिरगिट का अर्थ होता है—पाँचवर्ष का इकरारनामा या एग्रीमेंट।

(घ) गाँधीजी को बिना उनके सामान और ओवरकोट के धक्का देकर रेल के डिब्बे से नीचे उतारा गया।

लिखित प्रश्न (अर्थ ग्रहण संबंधी)

(क) (i) गाँधीजी अप्रैल 1893 में दक्षिण अफ्रीका गए।

(ii) वहाँ पहुँचने पर सेठ अब्दुल्ला ने उनकी अगवानी की।

(iii) दक्षिण अफ्रीका में गाँधीजी सेठ अब्दुल्ला के पास रूके।

(iv) अगवानी-आने पर स्वागत करना।

(ख) (i) (ख) भारतीयों के साथ।

(ii) (क) रोमन कैथोलिक।

(iii) (ख) सुमान गाड प्रे।

(iv) (घ) ईय

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) गाँधीजी का विवाह 13 वर्ष की अवस्था में कस्तूरबा से हुआ था।

(ख) गाँधीजी दक्षिण अफ्रीका सेठ अब्दुल्ला के निमन्त्रण पर गए थे। वहाँ उनके मुकदमे की पैरवी गाँधीजी को करनी थी।

(ग) दक्षिण अफ्रीका पहुँचने पर गाँधीजी ने यह महसूस किया कि वहाँ हिंदुस्तानियों को अपेक्षित सम्मान नहीं मिलता है।

(घ) गाँधीजी फ्रॉककोट पहनते थे। उनके सिर पर बंगाली पगड़ी रहती थी।

(ङ) गाँधीजी ने रेलवे के अंग्रेज कर्मचारियों के विरूद्ध जनरल मैनेजर से शिकायत की।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) दक्षिण अफ्रीका में हिन्दुस्तानियों के चार गिरोह थे पहला गिरोह मुस्लिम व्यापारियों का था, जो अपने को अरब कहते थे। दूसरा गिरोह हिन्दुओं और पारसी किरानियों, मुनीम गुमाश्तों का था। तीसरा भाग हिन्दू किरानियों का था, जो अधर में लटके रहते थे। चौथा और सबसे बड़ा गिरोह था तमिल-तेलुगू और उत्तर की ओर के गिरमिटियों का था।

(ख) गिरमिट का अर्थ है—इकरारनामा, जो पाँच वर्ष का होता है। जो भी गरीब हिन्दुस्तानी उस समय नेटाल में मजदूरी करने जाते थे, वे इकरार अथवा 'एग्रीमेंट' पर जाते थे। वही एग्रीमेट बिगड़कर बोलचाल की भाषा में गिरमिट बन गया था और एग्रीमेंट पर आए मजदूर 'गिरमिटिया' कहलाने लगे थे।

(ग) गिरमिटियों को अंग्रेज कुली कहते थे और उनकी तादाद ज्यादा होने के कारण दूसरे हिन्दुस्तानियों को भी कुली ही कहकर बुलाते थे। इसलिए गाँधी जी को भी कुली बैरिस्टर की उपाधि मिली।

(घ) रेलवे अधिकारी के अनुसार गाँधी जिस डिब्बे में बैठे थे उस डिब्बे में गोरो के सिवा कोई यात्रा नहीं बैठ सकता।

(ङ) महात्मा गाँधी को प्रथम श्रेणी का टिकट होने के बावजूद ट्रेन से इसलिए उतार दिया गया क्योंकि वे गोरे नहीं थे। दक्षिण अफ्रीका में उस समय नस्लवाद का एक मजबूत प्रभाव था और अश्वेत लोगों को प्रथम श्रेणी के डिब्बों में यात्रा करने की अनुमति नहीं थी।

प्रवासी भारतीयों के हितों की रक्षा के लिए गाँधीजी ने मई 1894 में 'नेटात इंडियन कांग्रेस' की स्थापना की गई।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) महात्मा गाँधी जिन्हें भारत का राष्ट्रपिता भी कहा जाता है, एक महान स्वतंत्रता सेनानी और विचारक थे। उनका जन्म 2 अक्टूबर 1869 को हुआ था। उन्होंने भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

न केवल भारत अपितु दक्षिण अफ्रीका में भी भारतीयों को रंगभेद से मुक्ति दिलाई। वहाँ उन्होंने 21 साल बिताए।

गाँधीजी ने भारत के आजादी के लिए अहिंसक सविनय अवज्ञा ओर असहयोग आंदोलन जैसे आंदोलनों का नेतृत्व किया। गाँधीजी ने गरीबों और दलितों के उत्थान के लिए अथक प्रयास किए और उन्हें सामाजिक न्याय दिलाने की कोशिश की। गाँधीजी को 30 जनवरी 1948 को नाथूराम गोडसे ने गोली मार दी थी।

(ख) गाँधीजी उस समय दक्षिण अफ्रीका में दादा अब्दुल्ला के लिए एक उन्होंने एक प्रथम श्रेणी का टिकट खरीदा था। यात्रा के दौरान एक गोरे यात्री ने गाँधी को प्रथम श्रेणी के डिब्बे में देखकर आपत्ति जताई और उन्हें 'कूली' कहकर डिब्बे से उतरने को कहा। गाँधीजी ने डिब्बे से उतरने से इनकार कर दिया क्योंकि उनके पास प्रथम श्रेणी का वैध टिकट था रेलवे अधिकारियों ने भी गाँधी को डिब्बे से बाहर निकलने का आदेश दिया और उन्हें पीटरमारिट्जबर्ग स्टेशन पर धक्का देकर ट्रेन से उतार दिया।

(ग) गाँधीजी ने प्रिटोरिया में डरबन से एक ट्रेन यात्रा के दौरान एक अपमानजनक घटना का अनुभव किया। उन्हें प्रथम श्रेणी के डिब्बे से इसलिए निकाल दिया गया था क्योंकि वे अश्वेत थे। इस घटना ने उनके अंदर एक नई शक्ति जगाई और उन्होंने रंगभेद के खिलाफ संघर्ष करने का निश्चय किया। उन्होंने सत्याग्रह का उपयोग किया, जो अहिंसक प्रतिरोध की एक रणनीति है, जिसमें उन्होंने रंगभेद के खिलाफ संघर्ष करने और भारतीयों के अधिकारियों के लिए आवाज उठाने का निश्चय किया। अपने इस उद्देश्य में गाँधीजी सफल रहे।

विविध

1. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) × (ङ) ✓ (च) ×
2. (क) नेटाल उर्फ डरबन बंदरगाह पर उनकी अगवानी के लिए अब्दुल्ला सेठ आए हुए थे।
   (ख) वे फ्राक कोट पहनते थे और उनके सिर पर बंगाली पगड़ी रहती थी।
   (ग) गाँधीजी को भी कुली बैरिस्टर का खिताब मिला।
   (घ) वे ऐसे पहले भारतीय बन गए, जिन्होंने रेलवे के अंग्रेज कर्मचारियों के विरुद्ध मैनेजर से शिकायत की।
   (ङ) दक्षिण अफ्रीका में प्रवासी भारतियों के हितों की रक्षा के लिए गाँधी जी द्वारा मई 1894 में नेटाल इंडियन की स्थापना की गई।
3. (क) प्रतिष्ठित – प्रसिद्ध – राम अपने नगर का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति है।
   (ख) न्योता – निमन्त्रण – हमारे यहाँ सपरिवार दावत का न्योता आया है।
   (ग) खिताब – उपाधि – गाँधी जी को कुली बैरिस्टर का खिताब मिला।
   (घ) दुभाषिया – जो दो भाषाएँ बोल सकता हो – रमेश एक दुभाषिया के रूप में कार्यरत है।
   (ङ) गिरोह – समूह – प्राचीनकाल में लोग गिरोह बनाकर यात्रा करते थे।
   (च) पक्षपात – किसी की तरफदारी करना – वह गलत होने पर भी अपने भाई का पक्षपात लेता है।

व्याकरण

1. (क) वहाँ हिन्दुस्तानियों को अपमान मिलता था।
   (ख) तुम्हें प्रथम डिब्बे में आना चाहिए।
   (ग) वहाँ प्रकाश था।
   (घ) वह अन्यायपूर्ण कानूनों का साथ नहीं देंगे।
   (ङ) सरकारी अधिकारी अनुचित पक्षपात करने पर मजबूर होने लगे।
2. (क) साथ-साथ, धीरे-धीरे, वैसे-वैसे।
   (ख) नहाना-धोना, तड़के-सवेरे, उठना-बैठना।
   (ग) गर्म-ठंडा, पूर्ण, अपूर्ण, सही/गलत।
   (घ) पानी-वानी, खाना-वाना, रंग-वंग।

रचनात्मक गतिविधि

- रमेश – महेश! कैसे हो मित्र?
  महेश – मैं ठीक हूँ। आप कैसे हो? और कहाँ से आना हो रहा है?
  रमेश – कहीं नहीं, यहीं पार्क में बैठकर स्वतंत्रता से पहले का अखबार पढ़ रहा था।
  महेश – क्या कहा? स्वतंत्रता से पहले का अखबार! वह कहाँ मिला तुम्हें?
  रमेश – (मजाकिया स्वर में) गूगल पर।
  महेश – तो क्या पढ़ा उसमें आपने?
  रमेश – मैंने वह घटना पढ़ी जब महात्मा गाँधी को रेल वेक डिब्बे से अपमानित करके उतार दिया था।

महेश – क्या कहा! अपमानित करके, कब?

रमेश – जब गाँधी जी किसी मुकदमे के सिलसिले में प्रथम श्रेणी के डिब्बे में टिकट लेकर यात्रा कर रहे थे।

महेश – मुझे उत्सुकता हो रही है, जानने की। कृपया जल्दी बताओ आगे क्या हुआ?

रमेश – बताता हूँ। थोड़ा धैर्य तो रखो। तभी एक अंग्रेज यात्री उसी डिब्बे में आया। वह गाँधी के रंग का मजाक उड़ाते हुए वहाँ से चला गया।

महेश – फिर क्या हुआ?

रमेश – वह अंगेज एक रेलवे अधिकारी के साथ आया। उसने उस अधिकारी से गाँधी जी की शिकायत की थी। उस अधिकारी ने उन्हें उस डिब्बे से उतर कर पीछे वाले डिब्बों में यात्रा करने को कहा।

महेश – क्या गाँधी जी उतर कर दूसरे डिब्बे में चले गए।

रमेश – नहीं, वे नहीं गए। तब अधिकारी ने सिपाही बुलाकर गाँधीजी को डिब्बे से धक्का देकर उतार दिया।

महेश – तो गाँधीजी ने कुछ नहीं कहा? उनकी जगह शायद कोई क्रांतिकारी होता तो उसी समय उस तीनों को वहीं ढेर कर देता।

रमेश – अरे किया ना! गाँधीजी ने भी अपने अहिंसा के द्वारा उन्हें सबक सिखाया।

- छात्र स्वयं करें।
- छात्र स्वयं करे।

8 नींव की ईंट

मौखिक प्रश्न

(क) प्रस्तुत निबंध के लेखक रामवृक्ष बेनीपुरी हैं।

(ख) कोई भी इमारत नींव की ईंट पर टिकी रहती है।

(ग) नींव की ईंट हिलाने पर इमारत ढह जाएगी।

(घ) आज समाज को नींव की ईंट के समान मौन शहादत करने वालों की आवश्यकता है

लिखित प्रश्न (अर्थ ग्रहण संबंधी)

(क) (i) सत्य कठोर होता है।

(ii) कठोरता और भद्दापन साथ-साथ जन्मते और जीते हैं।

(iii) हम सदैव कठोरता से दूर भागते है।

(iv) कठोरता-कोमलता।

(ख) (i) (क) ईसा

(ii) (घ) क और ग दोनों

(iii) (घ) उपर्युक्त सभी

(iv) (घ) द्वन्द्व समास

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) कोई इमारत नींव की ईंट पर टिकी होती है।

(ख) दुनिया चमकीली, सुंदर सुघड़ इमारत देखती है।

(ग) कंगूरे की ईंट और नींव की ईंट में से नींव की ईंट अधिक धन्य है।

(घ) समाज को सुन्दर बनाने के लिए अनाम लोगों का बलिदान और त्याग आवश्यक है।

(ङ) वृत्रासुर का असुर था।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) लोग अक्सर समाज में मान-सम्मान और प्रतिष्ठा पाने के लिए समाज सेवा का कार्य करते है। बिना दिखावे के यदि वे कोई कार्य करेंगे तो समाज में कोई उनकी बढ़ाई नहीं करेगा। इसलिए वे कंगूरे के समान देखना चाहते हैं।

(ख) वर्तमान समय में लोग कठोरता, भद्देपन और सत्य से भागते हैं क्योंकि ये सभी समाज के सामने उनकी वास्तविकता को प्रकट कर देंगे। कठोरता और भद्दापन साथ पनपते हैं। इसी कारण मनुष्य कठोरता से बचने और भद्देपन से मुख मोड़ने के लिए सत्य से भागता है।

(ग) ईसाई धर्म को अमर बनाने का श्रेय उन अनान एवं अज्ञात धर्म प्रचारकों को हैं जिनके कारण ईसाई धर्म फला-फूला। जिन्होंने ईसा के सन्देश को जन-जन तक पहुँचाने में अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। उनमें से अनेक जंगलों में भटकते हुए जंगली जानवरों का शिकार बन गए। कुछ भूख-प्यास से मर गए और कुछ ने क्रूर यातनाओं के कारण अपने प्राण त्याग दिए।

(घ) ईसाई धर्म को अमर बनाने के लिए लोगों ने अनेक प्रताड़नाएँ झेलीं। उन्होंने ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार में स्वयं को बलिदान कर दिया। बिना स्वार्थ के हँसते-हँसते सूली पर चढ़ गए। कई जंगलों में भटकते हुए जंगली जानवरों का शिकार हो गए। कुछ भूख-प्यास से तड़प कर मर गए और न जाने कितने ने क्रूर विरोधियों को क्रूर यातनाओं के कारण अपने प्राण त्याग दिए।

(ङ) आज समाज को मजबूत बनाने के लिए हमें बिना किसी स्वार्थ और प्रसिद्धि के बलिदान देने वाले, अनाम लोगों की आवश्यकता है। हमें नीवं की ईंट बनाने की प्रेरणा लेनी चाहिए, ताकि हम एक सुंदर और स्थायी समाज का निर्माण कर सकें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) इमारत पर लगे कंगूरे को देखकर लोग प्रसन्न हो जातें हैं और उसकी प्रशंसा करने लगते है। अर्थात् लोग प्रसिद्ध होने या प्रशंसा पाने या अन्य किसी स्वार्थ के लिए समाज में लालच में आकर अपना योगदान बनाए रखना चाहते है। लेकिन समाज के लिए वह त्याग या बलिदान देने के लिए तैयार नहीं हैं, क्योंकि उसे पता है नींव की ईंट बनने पर उसका कोई लाभ या वजूद नहीं रहेगा। इसीलिए लोग नींव की ईंट बनने की बजाए कंगूरे की ईंट बनना पसंद करते हैं।

(ख) नींव की ईंट कमजोर होने पर इमारत ढह कर नीचे गिर सकती है। यही स्थिति हमारे देश की भी है। हमारा देश उन बलिदानों के कारण आजाद हुआ जिन्होंने बिना किसी स्वार्थ एवं लोभ के अपने देश के नाम खुद को बलिदान कर दिया। इस यात्रा के अनेकों ऐसे गुमनाम बलिदानी भी है जिनका इतिहास में कोई गवाह नहीं है। वे हजारों तो बेनाम रहकर भी देश के लिए मर मिटे।

आज एक बार फिर हमें अपने देश में नव-निर्माण के लिए अपने स्वार्थ की पूर्ति करने वाले शासकों की नहीं अपितु ऐसे देशवासियों की आवश्यकता है जो लोभ, प्रशंसा तथा नाम के चक्कर में ना फँसें। तब ही हमारा देश प्रगति की राह पर चल पाएगा।

(ग) नींव की ईंट समाज के अनाम शहीदों का प्रतीक है, जो बिना किसी यश या पहचान के लिए अपने बलिदान के लिए तैयार होते हैं। ये वे लोग हैं जो समाज के वास्तविक विकास के लिए अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। उनका योगदान अक्सर अदृश्य रहता है परन्तु वास्तविक्ता में वहीं समाज की ईंट बनते हैं।

कंगूरे की ईंट उन लोगों का प्रतिनिधित्व करती है जो प्रसिद्धि और नाम की चाह में काम करते हैं। ये लोग समाज के काम करने का दिखावा मात्र करते है, लेकिन उनका मुख्य उद्देश्य यश और प्रशंसा प्राप्त करना होता है। ऐसे लोग केवल बाहरी आडंबर के प्रतीक होते हैं।

(घ) आशय—यह वाक्य उस विचार को व्यक्त करता है कि समाज समाज के निर्माण के लिए कुछ लोगों को अपने बलिदान को चुपचाप स्वीकार करना होता है। ये लोग अक्सर अनाम होते हैं। इनकी शहादत ही समाज की नींव को मजबूत बनाती है। लेखक इस प्रकार के शहादत को सम्मानित करने का आह्वान कर रहे हैं।

पाठ से आगे

प्रिय मित्र

कमल

आशा करता हूँ कि तुम स्वस्थ और कुशल होंगे। इस पत्र को लिखने का उद्देश्य आपसे साथ देश और समाज की उन्नति में बलिदान के महत्व को साझा करना है।

यह सत्य है कि देश और समाज की उन्नति बिना बलिदान के संभव नहीं हो सकती है। इतिहास गवाह है कि प्रत्येक महान परिवर्तन और प्रगति के लिए बलिदान की आवश्यकता होती है। चाहे वह स्वतंत्रता संग्राम हो या सामाजिक सुधार हर जगह लोगों ने बलिदान दिया है।

मेरा मानना है कि हम सभी को अपने-अपने क्षेत्र में कुछ न कुछ बलिदान देना चाहिए। अगर हम अपने कर्तव्य को सही ढंग से नहीं निभाते है, तो हमारे देश और समाज की उन्नति नहीं हो सकती है। अत: मेरा आपसे अनुरोध है कि हमें स्वयं को, अपने परिवार और मित्रगणों को अपने देश और समाज की उन्नति के लिए बलिदान देने के लिए तैयार करना होगा। चाहे यह बलिदान किसी भी रूप में क्यों न हो।

आशा करता हूँ कि आप मेरा मंतव्य समझ गए होंगे और इस दिशा में प्रयास अवश्य करेंगे।

आपका अभिन्न मित्र

शुभम्

विविध प्रश्न

1. (क) × (ख) × (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) × (च) ✓
2. (क) सत्य कठोर होता है, कठोरता और भद्दापन साथ-साथ जन्मा करते है।

   (ख) वह ईंट, जिसने अपना अस्तित्व इसलिए विलीन कर दिया कि संसार एक सुंदर सृष्टि देखें।

   (ग) कुछ तपे-तपाए लोगों में मौन-मूक शहादत का लाल सेहरा पहनना पड़ता है।

   (घ) देश का शायद कोई ऐसा कोना हो, जहाँ कुछ ऐसे दधीचि नहीं हुए हो, जिनकी हड्डियों के दान ने ही विदेशी वृत्रासुर का नाश किया।

   (ङ) जरूरत है ऐसे नौजवानों की जो इस काम में स्वयं को चुपचाप खपा दें।

3. (क) आवरण-परदा

- कुछ धातुओं पर आवरण चढ़ाकर उन्हें सुंदर बनाया जाता है।

(ख) बेतहाशा-बुरी तरह

- राम बेतहाशा दौड़ता हुआ अपने घर वापस आया।

(ग) शहादत-बलिदान

- हमारी स्वंत्रता अनेक बेनाम शहादतों का भी परिणाम है।

(घ) शोहरत-प्रसिद्धि

- राम कुछ काम करके समाज में शोहरत प्राप्त करना चाहता है।

  (ङ) निर्माण-बनाना

- हमारे पड़ोस में एक बहुत ऊँची इमारत का निर्माण हो रहा है।

  (च) सत्य-सच

- सत्य बहुत कठोर होता है।

व्याकरण बोध

1. (क) कठोरता – सरलता

   (ख) ठोस – मुलायम

   (ग) सत्य – असत्य

   (घ) सुंदर – बद्सूरत

   (ङ) आजाद – गुलाम

   (च) विदेशी – स्वदेशी

2. (क) प्रश्नवाचक वाक्य

   (ख) इच्छावाचक वाक्य

   (ग) विस्मयवाचक वाक्य

   (घ) निषेधवाचक वाक्य

   (ङ) विस्मयावाचक वाक्य

3. (क) सत्य कठोर होता है, कठोरता और भद्दापन साथ-साथ जन्मा करते हैं, जिया करते हैं।

   (ख) कंगूरे के गीत गाने वाले हम, आइए, अब नींव के गीत गाएँ।

   (ग) सुंदर समाज बने, इसलिए कुछ तपे-तपाये लोगों को मौन-मूक शहादत का लाल सेहरा पहनना पड़ता है।

   (घ) किंतु, ईसाई धर्म उन्हीं के पुण्य-प्रताप से फल-फूल रहा है।

   (ङ) हमारी नींव की ईंट कहाँ हैं?

रचनात्मक गतिविधियाँ

- **कंगरे की ईंट—** वाह! क्या सुंदर दीवार है! मेरे स्थान पर होने के कारण इसकी सुंदरता और बढ़ गई।

  नीवं की ईंट— हाँ बहन, तुम्हारी जगह निश्चित रूप से प्रभावशाली है। किंतु मैं ही हूँ जिसके कारण यह दीवार इतनी मजबूत है। मैं इस पूरे ढाँचे का आधार हूँ।

  कंगूरे की ईंट—इसके कोई प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि लोगों को दिखाई तो मैं देती हूँ।

  नींव की ईंट—सत्य कहा तुमने कि तुम दिखाई देती हो, किंतु तुम और यह पूरी की पूरी इमारत सब कुछ मुझ पर ही टिका हुआ है।

  कंगूरे की ईंट—पर सम्मान, प्रसिद्धि और प्रशंसा सब मुझे मिलते हैं।

  नींव की ईंट—मुझे इन सबसे कोई फर्क नहीं पड़ता, मैं बिना किसी दिखाये के अपना काम करती रहती हूँ।

  कंगूरे की ईंट—समझ गई। किंतु सत्य यह भी है कि हम दोनों ही अपनी-अपनी जगह महत्वपूर्ण है।

  नींव की ईंट—हाँ, हम दोनों एक दूसरे के लिए आवश्यक हैं।

- दधीचि एक महान तपस्वी थे, जो भगवान शिव के भक्त थे। वे अपने तप और ज्ञान के लिए प्रसिद्ध थे। वहीं वृत्रासुर एक शक्तिशाली असुर था। जिसने इंद्र को युद्ध के लिए चुनौती दी थी। इंद्र ने सभी देवताओं से मदद माँगी लेकिन कोई भी वृत्रासुर का सामना नहीं कर सकता था। सभी ओर से निराश देवराज इंद्र ब्रह्मा, विष्णु और शिव के पास सहायता के लिए जा पहुँचे। तब भगवान शिव ने उन्हें बताया कि वृत्रासुर का वध केवल महर्षि दधिचि की हड्डियों से बने व्रज से ही संभव है। तब इंद्र ने महर्षि के पास जाकर सारी घटना बताई। महर्षि सहर्ष अपनी अस्थियों का त्याग करने को तैयार हो गए। उन्होंने अपने तपोवल से अपनी देह त्याग दी। उनकी हड्डियों से व्रज तैयार करके इंद्र ने वृत्रासुर को पराजित किया।

9 क्या मैंने गलत कहा

मौखिक प्रश्न

(क) अप्रैल माह के प्रथम दिवस को मूर्ख दिवस के रूप में मनाया जाता है।

(ख) साधना ने बताया दोनों भाई बहन हैं।

(ग) शिक्षिका ने सूरज से 'दुनिया गोल है' इस बात का सबूत माँगा।

(घ) शिक्षिका ने लिखा अप्रैल फूल बनाया।

लिखित प्रश्न (अर्थ ग्रहण संबंधी)

(क) (i) पृथ्वी और चन्द्रमा ग्रह है।

(ii) शिक्षिका ने 'दुनिया गोल है' इसका सबूत माँगा।

(iii) सूरज ने तर्क दिया जिसने दावा किया है। उसी से सबूत माँगिए। मैंने ऐसा कोई दावा नहीं किया।

(iv) चन्द्रमा– शशि, चाँद।

(ख) (i) (ग) फिरोज।

(ii) (ख) भारत का।

(iii) (क) शिवाजी पार्क में।

(iv) (घ) मानचित्र

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) शिक्षिका ने सामान्य ज्ञान के अभ्यास के लिए भूगोल विषय चुना।

(ख) 'चश्मा लगाकर देखा'–यह निशि तकिया कलाम है।

(ग) शिक्षिका दुनिया गोल होने का सबूत माँग रही थी।

(घ) फिरोज ने भारत का नक्शा नहीं बनाया था।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) जस्ट लाइक ए गुड गर्ल। इसे कहते हैं। 'स्पोर्टसमैन स्पिरिट' तुमने जलने-कुढ़ने की बजाय इसे खेल-खेल में लेकर बहुत अच्छा किया।

(ख) भूगोल की दृष्टि से शम्मी ने शिक्षिका को उत्तर दिया कि वह सीधे नया नक्शा से बनाएगा।

(ग) गंगा भगवान शंकर की जटाओं से निकलती है।

(घ) आज पहली अप्रैल अर्थात् मूर्ख दिवस था, इसलिए सभी छात्र शिक्षिका के प्रश्नों का विचित्र उत्तर दे रहे थे।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) निशि ने अपनी नाक पर चश्मा ठीक करते हुए उत्तर दिया चश्मा लगाकर देखो तो रोटी भी गोल है। चश्मा लगाकर देखो तो थाली भी गोल है। चश्मा लगाकर देखो तो फुटबॉल भी गोल है। चश्मा लगाकर देखों तो चूड़ी भी गोल है। चश्मा लगाकर देखों तो दुनिया भी गोल है।

(ख) शम्मी ने इस प्रश्न का भूगोल के आधार पर उत्तर दिया कि गंगा हिमालय से निकलती है। किंतु जब शिक्षिका ने उससे धर्म के आधार पर इस प्रश्न का उत्तर माँगा तब शम्मी ने कहा कि उसके पापा कहते हैं कि बच्चों को धर्म-कर्म के झंझट में नहीं पड़ना चाहिए।

पाठ से आगे

किसी गाँव में एक गरीब किसान रहता था। वह हमेशा अपने खेतों पर मेहनत और ईमानदारी से काम करता था। किंतु एक समय ऐसा आया जब उसकी कड़ी मेहनत के बादभी उसके खेत में फसल नहीं उगी। उनका परिवार भूखे रहने पर विवश हो गया।

एक दिन एक साधु उस किसान के पास आए। किसान ने उन्हें अपनी समस्या बताई। साधु ने किसान को बताया कि भाग्य कर्मों पर निर्भर होता है। साधु किसान को दूसरों की सहायता बिना किसी स्वार्थ के करने की सलाह देता है। अब वह किसान मेहनत करने के साथ-साथ दूसरों की सहायता भी करने लगा।

कुछ समय बाद किसान के भाग्य ने करवट ली। उसके खेतों में इस बार बहुत अच्छी फसल हुई, जिससे उस किसान के सभी कष्ट दूर हो गए। फिर भी किसान ने दूसरों की मदद करने का कार्य नहीं छोड़ा। वह अब और मन लगाकर दूसरों की मदद करने लगा। इन कहानी से हमें यह पता चलता है कि धर्म और कर्म दोनों ही महत्वपूर्ण हैं।

विविध प्रश्न

1. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓
2. (क) भूगोल मेरा प्रिय विषय है।
   (ख) पृथ्वी और चन्द्रमा दोनों ग्रह हैं।
   (ग) गंगा नदी हिमालय से निकलती है।
   (घ) मैंने भारत का नक्शा बनाकर लाने को कहा था।
   (ङ) मैडम, मैंने नक्शा नहीं बनाया।

व्याकरण बोध

1. (क) चन्द्रमा – शशि, चाँद।
   (ख) पृथ्वी – धरा, वसुन्धरा।
   (ग) शिक्षिका – अध्यापिका, आचार्या।
   (घ) गंगा – देवनदी, सुरसरी।
   (ङ) हिमालय – पर्वतराज, हिमगिरी
2. (क) शिक्षिका – शिक्षक
   (ख) छात्र – छात्रा
   (ग) लड़की – लड़का
   (घ) भाई – बहन
   (ङ) मैडम – सर
   (च) आज्ञाकारी – आज्ञाकारिणी
   (छ) बच्चा – बच्ची
   (ज) नेता – नेत्री

रचनात्मक कार्य

- छात्र स्वयं करें।
- छात्र स्वयं करें।
- शनिवार का दिन था। आज विद्यालय में सामान्य ज्ञान का पीरियड होना था। सभी छात्र कक्षा में बैठे हुए थे। तभी एक शिक्षिका कक्षा में आती है। सभी छात्र शिक्षिका का अभिवादन करते है। शिक्षिका ने आज कक्षा में सामान्य ज्ञान के अध्ययन के अन्तर्गत भूगोल विषय को चुनकर छात्रों से प्रश्न पूछना शुरू करती है। किंतु शिक्षिका यह नहीं जानती थीं कि छात्र आज कुछ अलग ही सोचकर पढ़ने के लिए बैठे हैं।

शिक्षिका पूछती है—साधना! तुम बताओ पृथ्वी और चन्द्रमा में क्या समानता है तब साधना कहती है कि वे दोनों भाई बहन है। अपने इस उत्तर का तर्क देते हुए वह कहती है कि पृथ्वी हमारी माँ है और हम चन्द्रमा को अपना मामा कहते है तो हुए न दोनों भाई-बहन। कोई अन्य समानता पूछे जाने पर साधना जानते हुए भी शिक्षिका को सही उत्तर नहीं बताती है अंत में शिक्षिका कहती हैं कि वे दोनों ग्रह हैं।

आगे शिक्षिका एक अन्य छात्र सूरज से 'दुनिया गोल है' इस बात का सबूत माँगती है? तब वह कहता है कि उसने ऐसा कोई दावा पेश नहीं किया तो वह सबूत क्यों पेश करे। जिसने दावा किया है आप उससे सबूत माँगिए? तभी निशि कहती है कि मैडम यदि आप कहें तो आपके इस प्रश्न का उत्तर मैं दे सकती हूँ। यह सुनकर शिक्षिका खुश हो जाती है कि शायद निशि उन्हें सही उत्तर बताएगी किन्तु वह भी उन्हें गोल-मोल ही जबाव देती है। इसी प्रकार शिक्षिका कक्षा के अन्य छात्रों से भी भिन्न-भिन्न प्रश्न करती है। किंतु सभी छात्र सही उत्तर पता होने पर भी शिक्षिका को हर प्रश्न का विचित्र उत्तर देते हैं। इस पर शिक्षिका ने उनसे ऐसा करने का कारण पूछा तब वे सभी बोले कि आज पहली अप्रैल है, मूर्ख दिवस। ऐसा कहकर सभी हँसने लगते है शिक्षिका भी हँसते हुए बोर्ड पर 'अप्रैल फूल बनाया' लिखकर कक्षा से विदा लेती हैं।

10 उनको प्रणाम

मौखिक प्रश्न

(क) कवि कर्मठ, मेहनती और प्रयत्नशील लोगों को प्रणाम कर रहा है।

(ख) कविता के कवि का नाम नागार्जुन हैं

(ग) स्वतंत्रता प्राप्त होने से पहले ही जो फाँसी पर झूलकर मृत्यु को प्राप्त हो गए, दुनिया उन्हें भूल गई।

लिखित प्रश्न (अर्थ ग्रहण संबंधी)

(क) (i) जो सफल नहीं हो सके, कवि उन्हें प्रणाम कर रहा है।

(ii) जो मेहनत करने पर भी असफल हो गए, ये विशेषण उनके लिए प्रयुक्त हुए हैं।

(iii) 'अभिमंत्रित तीर' का भाव उन लोगों के संघर्ष और प्रयासों को दर्शाता है जो अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पूरी कोशिश करते हैं, लेकिन किसी कारण से असफल हो जाते है।

(iv) तूणीर – तरकस।

(ख) (i) (घ) बर्फ के नीचे दबकर मृत्यु को प्राप्त होना।

(ii) (ख) असफल होकर।

(iii) (क) नए उत्साह से भरकर

(iv) (ग) सफल।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) कविता में ऐसे लोगों का वर्णन है जिन्होंने अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अथक प्रयास किया, लेकिन सफलता नहीं पाई।

(ख) समुद्र को पार न कर पाने वाले लोग, अपनी छोटी सी नाव लेकर उमंग के साथ समुद्र में उतरे थे।

(ग) स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्ष करने वाले अनाम लोगों को दुनिया भूल गई।

(घ) छोटी-सी नैया से कवि का आशय है- संसाधनों की कमी।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) आशय—इस वाक्यांश का प्रयोग कवि ने उन लोगों के लिए किया है, जिन्होंने संघर्ष किया, परिश्रम किया, लेकिन किन्हीं कारणों से अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सके।

(ख) समुद्र पार करने की इच्छा मन में ही रह गई क्योंकि लोग अपनी छोटी नौका लेकर समुद्र पार करने चले थे। ये लोग समय से पहले ही काल में जाल में फँसकर मृत्यु को प्राप्त हो गए, इसलिए वे अपनी मनोकामना पूरी नहीं कर पाए।

(ग) 'कुंठित' विशेषण का प्रयोग उन लोगों के लिए किया गया है जो अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम होने के बावजूद, समाज में व्याप्त अन्याय और शोषण के कारण निराश और हतोत्साहित हो जाते है। 'लक्ष्य भ्रष्ट' विशेषण का प्रयोग उन लोगों के लिए हुआ है, जो अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं, या अपने लक्ष्यों को भूल जाते हैं।

(घ) भाव—कवि ऐसे साहसी यात्रियों को नमन करता है जो अपनी छोटी सी नाव लेकर उमंग के साथ सागर पार करने गए। वे सागर की उत्ताल तरंगों से संघर्ष करते हुए सागर में ही समा गए, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी।

(ङ) बहुत से ऐसे देशभक्त थे, जिन्होंने देश को स्वतंत्र कराने के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए, लेकिन वे आजादी का सुख नहीं ले पाए। ऐसे त्यागी और बलिदानी लोगों को दुनिया में बहुत जल्दी भुला दिया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) कविता के अंतिम अंश में कवि ने सार्थक प्रयासों को प्रणाम किया है। जिनके ऊपर पूरी इमारत होती है। इसलिए कवि ने प्रत्येक पद के बाद उन्हें प्रणाम संबोधन का प्रयोग किया है। कवि उन लोगों के

प्रति सम्मान प्रकट कर रहा है, जिन्होंने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए परिश्रम और संघर्ष तो बहुत किया, परन्तु किन्हीं कारणों से उनको सफलता नहीं मिली। कवि ऐसे लोगों के संघर्ष के प्रति आदर का भाव प्रकट करते हुए उन्हें प्रणाम कर रहा है।

(ख) कवि ने सफल और असफल दोनों शहीद देशभक्तों को सम्मान देता है। वह उन लोगों को भी याद करता है जो देश के लिए संघर्ष करते हुए अपने प्राणों की बाजी लगा देते हैं, लेकिन सफल नहीं हो पाते, कवि इन लोगों के संघर्ष और बलिदान को भी महत्पूर्ण मानता है। उन्होंने देश को स्वतंत्र कराने में अपने प्राण तक न्यौछावर कर दिए किंतु आजादी का सुख नहीं ले पाए।

(ग) जीवन में सफलता से अधिक महत्व उसके लिए किए गए प्रयासों का अधिक है क्योंकि जब तक हम प्रयत्न नहीं करेंगे, तब तक हम सफल नहीं हो पाएँगे। प्रयत्नों से हमें अनुभव प्राप्त होता है। इसलिए सफलता अथवा असफलता पर विचार किए बिना हमें सदैव अपनी पूरी कोशिश, मेहनत और विश्वास के साथ प्रयास करते रहना चाहिए।

कविता से आगे

- एक बार विद्यालय से मुझे एक विज्ञान का एक प्रोजेक्ट तैयार करने को मिला। अध्यापिका के द्वारा कक्षा में बताया गया था कि जिसका प्रोजेक्ट सबसे अच्छा होगा, उसे विद्यालय की वार्षिक प्रदर्शिनी में स्थान मिलेगा। यह सुनते ही हम सभी छात्र अपने-अपने प्रोजेक्ट की तैयारी में जुट गए। मैंने एक ज्वालामुखी मॉडल बनाने का निश्चय किया। इसके लिए मैंने पहले एक हार्ड बोर्ड पर ज्वालामुखी की संरचना बनाने का प्रयास किया, किंतु यह बार-बार बिगड़ रहा था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैंने कैसे इसकी संरचना तैयार करूँ। जब कई प्रयासों के बाद भी मुझसे यह नहीं बना तब मेरे बड़े भाईया ने इस कार्य में मेरी सहायता की। अंततः मेरा प्रोजेक्ट तैयार हो गया और अध्यापिका को यह बहुत पसंद भी आया।

विविध प्रश्न

1. (क) ✓ (ख) × (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓
2. (क) जो छोटी-सी नैया लेकर
   उतरे करने को उदधि पार;
   मन की मन में ही रही, स्वयं
   हो गए उसी में निराकार!

   (ख) जिनकी सेवाएँ अतुलनीय
   पर विज्ञापन से रहे दूर
   प्रतिकूल परिस्थिति ने जिनके
   कर दिए मनोरथ चूर-चूर!

   —उनको प्रणाम

व्याकरण बोध

2. (क) पूर्ण – अपूर्ण
   (ख) वीर – कायर
   (ग) छोटी – बड़ी
   (घ) निराकार – साकार
   (ङ) असफल – सफल
   (च) नव – पुराना, प्राचीन
   (छ) अंत – आरंभ
   (ज) प्रतिकूल – अनुकूल
2. (क) पूर्ण – अपूर्ण, पूर्णित, पूर्णाकार
   (ख) आकार – निराकार, साकार
   (ग) काम – सकाम, कामना
   (घ) कूल – प्रतिकूल, अनुकूल, कूलना
3. तीर – बाण, शर
   नाव – नौका, नैया
   शिखर – चोटी, शिरा, पर्वतश्रृंग
   समुद्र – उद्धि, सागर
   दुनिया – संसार, विश्व

रचनात्मक गतिविधियाँ

- कुछ लोग असफलता को अपनी यात्रा का हिस्सा मानते हैं और उससे सीखकर आगे

बढ़ते हैं। ऐसे ही व्यक्तियों ने असफलता से निराश होने के स्थान पर, दूसरों को सफलता की राह पर चलने की प्रेरणा दी है। उन्होंने अपनी असफलताओं से ज्ञान हासिल किया और उसे दूसरों के साथ साझा किया, जिससे वे स्वयं भी सफल हो सके ओर दूसरों को भी सफलता तक पहुँचाया। उदाहरण—

(i) थामस एडिसन—उन्होंने 10,000 असफल प्रयासों के बाद, आखिर में इस दुनिया को बिजली से चलने वाला बल्ब दिया।

(ii) हेनरी फोर्ड— वह अपनी पहली कार कम्पनी से दिवालिया हो गए लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और फिर से नई फोर्ड मोटर कम्पनी शुरू की, जो सफल रही।

- छात्र स्वयं करें।

11 वह अपना

मौखिक प्रश्न

(क) गोकुल बाल मजदूरी के उद्देश्य से शहर आया है।

(ख) गोकुल के बरामदे में सोने के कारण, अंकित और अंकिता अनमना-सा महसूस कर रहे थे।

(ग) गोकुल ने गाँव में कभी ऐसे खिलौने नहीं देखे थे, इसलिए गोकुल सभी खिलौनों को आश्चर्य से देख रहा था।

(घ) गोकुल के चेहरे की मासूमियत के दो अर्थ लिए जा सकते हैं—पहला मूर्ख और दूसरा शहर में आने से भयभीत।

(ङ) अंकित से पूरा सच जानकर गोकुल के प्रति स्नेह के कारण मिसेज खन्ना का गला रुँध गया।

लिखित प्रश्न (अर्थ ग्रहण संबंधी)

(क) (i) ऑफिस से लौटते समय खन्ना साहब के साथ एक 10-12 साल का लड़का था।

(ii) देखने में वह लड़का शक्ल-सूरत से मासूम ओर फटे-मैले कपड़ों में काफी गरीब लग रहा था।

(iii) उस लड़के को देखकर अंकित ने सोचा कि चलो एक साथी मिल गया।

(iv) राहत—चैन, आराम।

(ख) (i) (क) काँच का मर्तबान

(ii) (घ) पैर फिसलने के कारण

(iii) (क) भय से उसकी तो जैसे साँस ही रूक गई।

(iv) (क) जड़ना या मारना।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) खन्ना साहब के साथ आए लड़के का नाम गोकुल था।

(ख) गोकुल देखने में बहुत दुबला-पतला था, इसलिए मिसेज खन्ना के मन में भाव उठे, ''क्या इतना दुबला-पतला लड़का घर के सारे काम कर भी पाएगा या नहीं।''

(ग) खन्ना साहब के दो बच्चे थे—अंकित और अंकिता।

(घ) अंकित ने गोकुल को समझाया था, अब इन्हीं साहब को अपने माँ-बाप समझना।

(ङ) गोकुल के हाथ से कौन का मर्तवान गिरकर टूट गया था।

(च) अंकित और अंकिता ने झूठे-झगड़े का बहाना करके एक बार फिर से गोकुल को डाँट पड़ने से बचा लिया था। इसलिए गोकुल भीगी आँखों से अंकित और अंकिता को धन्यवाद दे रहा था।

(छ) अंकित के मुँह से सारा सच जानकर मिसेज खन्ना खाना नहीं खा सकीं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) गोकुल को देखकर खन्ना साहब की पत्नी आश्चर्यचकित थी, वहीं उनके दोनों बच्चे एक साथ मिल जाने के कारण प्रसन्न थे।

(ख) गोकुल देखने में मासूम लगता था। लेखक ने उसकी मासूमियत के दो अर्थ लिए थे—पहला यह लड़का मूर्ख है और दूसरा यह कि एक महानगर में पहली बार काम करने के लिए आने के कारण यह कुछ भयभीत है।

(ग) गोकुल का पैर फिसलने के कारण काँच का मर्तवान जमीन पर गिरकर छोटे-छोटे टुकड़ों में बदल गया था।

(घ) गोकुल के हाथ से दूध का गिलास गिरने पर उसे अपनी माँ के क्रोध से बचाने के लिए झूठे झगड़े का बहाना किया। अंकित ने कहा कि अंकिता के धक्के के कारण उसके हाथ से दूध का गिलास छूटकर गिर गया।

(ङ) सब्जी लेकर लौटते समय गोकुल ने देखा कि अंकित का अपने किसी साथी के साथ लड़ाई झगड़ा हो गया। अंकित के साथी ने उसके मुँह पर मुक्का दे मारा, इससे गुस्सा होकर अंकित ने अपने साथी के सिर पर अपना बैट घुमाकर दे मारा। जिसके कारण उसके सिर से खून निकलने लगा।

(च) गोकुल का सच जानकर मिसेज खन्ना का सारा गुस्सा काफूर हो गया। उन्हें गोकुल के लिए दु:ख होने लगा कि उन्होंने बिना सच जाने उसके साथ बुरा व्यवहार किया। उन्होंने सोते हुए गोकुल के सिर पर प्यार से हाथ फेरा, फिर उसे उठाकर अपने गले से लगा लिया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) पाठ के आधार पर गोकुल के चरित्र की विशेषताएँ—

मासूमियत—गोकुल एक छोटा मासूम-सा बच्चा है। वह दुनिया को सरल और सकारात्मक तरीके से देखता है।

दयालुता—गोकुल दूसरे बच्चों और जानवरों के प्रति दयालु हैं वह उनकी मदद के लिए सदैव तैयार रहता है।

जिम्मेदार—गोकुल अपनी छोटी-सी उम्र से अधिक जिम्मेदार बालक है।

संवेदनशील—गोकुल एक बहुत ही संवेदनशील बालक है। जब पहली बार मिसेज खन्ना उसे डाँटती हैं, तब वह अपने घर वापस लौट जाना चाहता है।

डरपोक—गोकुल डरपोक प्रवृत्ति का भी है। उसे मिसेज खन्ना और शहर में नए वातावरण से डर लगता है।

(ख) खन्ना साहब के बच्चे गोकुल के प्रति संवेदनशील थे। वे उसे अपना एक साथी मानते थे। वे उससे बहुत स्नेह रखते और उसके साथ खेलना चाहते थे। यहाँ तक कि वह अपनी माँ मिसेज खन्ना की डाँट से भी उसे बचाने का पूरा प्रयास करते थे। इसके विपरीत मिसेज खन्ना गोकुल का केवल एक घरेलू नौकर समझती थीं। वे उसे बच्चों के साथ अधिक घुलने-मिलने भी नहीं देना चाहती थी। वे छोटी-छोटी बातों पर भी उसे बहुत डाँटती थी। बिना सच जाने ही वह गोकुल को दोषी ठहरा कर उसे घर से भी निकालना चाहती थी।

(ग) गोकुल अपने गाँव से शहर काम करने के लिए आया था। शहर में काम आने वाले बच्चों को उनके स्वयं के नाम से नहीं बुलाया जाता था। किंतु जब अंकित ने उसे गोकुल कहकर बुलाया तो उसे बहुत अच्छा लगा। गोकुल ने देखा था कि पंडित जी के यहाँ कैंटीन में उसके गाँव, उसके जैसे जितने भी लड़के आए थे, उन सबका नाम कहीं खो गया था। सब छोटू, मोटू,

कालू बगैरा हो गए थे। उन सभी को देखकर गोकुल के दिल में भी अपनी पहचान खो जाने का डर बैठ गया था।

(घ) अपने साथी से झगड़ा होने पर अंकित ने अपना बैट घुमाकर उसके सिर पर दे मारा था। जिसके कारण उस लड़के के सिर से खून वह निकला और वह रोता-चिल्लाता अपने घर जा पहुँचा। गोकुल ने स्थिति की नाजुकता को भाँपकर, उस लड़के के पिता के आने से पहले और अंकित को इस सबसे बचाने के लिए उसने अंकित के हाथ से बैट अपने हाथ में ले लिया।

(ङ) अंकित के लिए किए गए कार्य के फलस्वरूप पहले तो गोकुल को उस लड़के के पिता ने खूब पीटा और फिर घसीटते हुए उसे मिसेज खन्ना के पास ले गए। खन्ना साहब ने उसे रात का खाना देने से मना कर दिया और अगली सुबह उसे पंडित जी के पास छोड़कर आने का फैसला सुना दिया।

किन्तु, जैसे ही अंकित ने उन सभी को सच बताया, तब सभी गोकुल के इस त्याग को देखकर आश्चर्यचकित रह गए। मिसेज खन्ना तो भोजन भी नहीं कर सकीं। वे गोकुल के पास गई और उसे उठाकर अपने गले से लगाकर खूब सारा प्यार और दुलार किया।

(च) लेखक ने पाठ को 'वह अपना सा' एक सार्थक शीर्षक दिया है। पाठ का नायक गोकुल खन्ना साहब के परिवार में एक नौकर के रूप में आता है। किंतु वह धीरे-धीरे खन्ना साहब के बच्चों के साथ अपनत्व महसूस करने लगता है। इसी अपनेपन के कारण बिना परिणाम सोचे वह अंकित को बचाने के लिए उसका बैट अपने हाथ में ले लेता है। वह उस कार्य का दंड भुगतता है जो उसने किया ही नहीं है। अंत में जब अंकित सभी को सच बताता है, तब वह खन्ना साहब के परिवार का हिसाब बन जाता है। इसलिए यह शीर्षक 'वह अपना सा' एकदम सार्थक है।

पाठ से आगे

- आज ग्वालियर से झाँसी जाते समय हम खाना खाने के लिए एक ढाबे पर रूके। मैंने देखा कि ढाबे पर मेरी जैसे उम्र के तीन-चार लड़के काम कर रहे थे। कोई मेज साफ कर रहा था। तो कोई झूठे बरतन। कोई खाना परोस रहा थे। ढाबे का मालिक बहुत ही खडूस था। वह उन लड़कों से गाली देकर बात कर रहा था। वह उन्हें जल्दी-जल्दी हाथ चलाने के लिए बोल रहा था। इसी हड़बड़ी में एक लड़के के हाथ से भोजन की थाली छूटकर गिर गई। ढाबे के मालिक ने उस लड़के को लात-घूँसों से बहुत मारा। वह कहता जा रहा था कि उसके एक दिन की पगार काटेगा और आज रात उसे खाना भी नहीं देगा। मुझे उस लड़के के लिए बहुत बुरा लगा।
- गाँव में एक बहुत बड़ा मेला लगा हुआ था। सभी छोटे-बड़े उस मेले में सजधज कर जा रहे थे। बड़ी भीड़ उस मेले की ओर चली जा रही थी। इस चकाचौंध में एक चीज खटक रही थी। उस मेले के प्रवेश द्वार पर एक बड़ा-सा पत्थर पड़ा हुआ था। आने-जाने वाले कुछ लोग उससे टकरा रहे थे। कुछ तो टकराकर गिर भी पड़े थे। तो अनेक उससे बचकर निकल रहे थे, लेकिन कोई भी उस पत्थर को हटाने का प्रयास नहीं कर रहा था। एक दस-बारह साल का लड़का यह सब बहुत देर से देख रहा था अंततः उसने उस पत्थर को हटाने का कार्य शुरू किया, कोई भी उसकी मदद के लिए नहीं आया। बहुत मेहनत के बाद आखिरकार वह लड़का उस पत्थर को हटाने में सफल रहा। जैसे ही उसने पत्थर को वहाँ से हटाया उसे वहाँ एक चिट्ठी पड़ी मिली, जिसमें लिखा था कि मेले के भीतर सरपंच आपकी प्रतीक्षा कर रहे है।

यह पढ़कर वह लड़का सरपंच के पास जा पहुँचा। सरपंच ने उस लड़के की नि:स्वार्थ भावना की बहुत प्रशंसा की और उसे एक साइकिल भी ईनाम में दी।

विविध प्रश्न

1. (क) ✓ (ख) × (ग) ✓ (घ) × (ङ) ✓ (च) × (छ) ✓
2. (क) उसके चेहरे की मासूमियत के दो अर्थ लिए जा सकते थे।
   (ख) जल्दी ही तीनों बच्चे आपस में बहुत घुल-मिल गए थे।
   (ग) उसके नन्हें-नन्हें हाथों को चुस्ती से चलते हुए देखा।
   (घ) उसे सुबकता देखकर अंकिता का दिल धक्क से रह गया था।
   (ङ) उसके साथी ने अंकित के मुँह पर एक घूँसा मारा।
   (च) गोकुल ने अपने नन्हें-नन्हें हाथों से उनके आँसू पोंछे।

व्याकरण बोध

1. (क) मासूम – कुटिल
   (ख) मैला – साफ
   (ग) बचपन – बुढ़ापा
   (घ) विश्वास – अविश्वास
   (ङ) कर्कश – मधुर
   (च) मूर्ख – विद्वान
2. (क) लड़का – लड़की
   (ख) पंडित – पंडिताइन
   (ग) मिसेज – मिस्टर
   (घ) छोटा – छोटी
   (ङ) बहन – भाई
   (च) बेटा – बेटी
   (छ) बच्चा – बच्ची
   (ज) पिता – माता
3. (क) कपड़े – कपड़ा
   (ख) गाँव – गाँवों
   (ग) चप्पलें – चप्पल
   (घ) लड़का – लड़के
   (ङ) खिलौने – खिलौना
   (च) पतीला – पतीले
   (छ) कमरे – कमरा
   (ज) मुसीबतें – मुसीबत
4. (क) गोकुल के सिर पर हाथ रखकर धीरे से हिलाया।
   (ख) गोकुल धीरे-धीरे सुबकने लगा।
   (ग) अंकित और अंकिता ने उसके नन्हें-नन्हें हाथों को चुस्ती-से चलते हुए देखते।
   (घ) गोकुल चुपचाप बरामदे में बैठा अपनी चोंटे सहला रहा था।
   (ङ) वह फूट-फूटकर रोने लगा।

रचनात्मक गतिविधियाँ

- वर्तमान समय में गरीब बच्चे ही बाल मजदूरी के रूप में सबसे अधिक शोषित हो रहे है। छोटे-छोटे गरीब बच्चे पढ़ाई-लिखाई छोड़कर बालश्रम के लिए मजबूत है। बाल मजदूरी बच्चों के मानसिक, शरीरिक, बौद्धिक एवं सामाजिक हितों के प्रभावित करती हैं। वे बच्चे जो बाल मजदूरी करते हैं वे मानसिक रूप से अस्वस्थ हो जाते हैं। बाल मजदूरी से उनके शारीरिक और बौद्धिक विकास बाधक होते हैं। बाल मजदूरी करते हुए बच्चे कैंसर, टी.वी. जैसी भयंकर बीमारियों का शिकार हो जाते हैं।
- भारत में बालश्रम पर रोक के लिए ''बाल श्रम (निषेध और जनसंख्या) अधिनियम, 1986'' और बच्चों के लिए आवश्यक और अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009'' कानून की तरह लागू है।

सरकार 'सर्वशिक्षा अभियान'', मिड डे मील भोजन'' और राष्ट्रीय बाल श्रम परियोजना जैसी योजनाओं के माध्यम से बाल श्रम को समाप्त करने का प्रयास कर रही है।

वही समाज सुधार संस्थानों ने भी बालश्रम को रोकने के लिए कई प्रयास किए हैं, जिनमें बाल श्रम को निषिद्ध करने के लिए कानून बनना, बालश्रम से मुक्त बच्चों को शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना और जागरूकता कार्यक्रम चलाना शामिल है। इसके साथ ही उनके माता-पिता के लिए आजीविका के अवसरों ने बढ़ावा देने के लिए भी कार्य किया है।

- — सभी बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराना; ताकि वे काम करने की बजाय पढ़ाई कर सकें।

  — माता-पिता को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराकर और उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाना।

  — लोगों को बालश्रम के दुष्परिणामों के बारे में जागरूक करें और उन्हें बालश्रम के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित करें।

  — बालश्रम में निकाले गए बच्चों को शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण और स्वास्थ्य देखभाल जैसी सुविधाएँ उपलब्ध कराएँ।

  — इस दिशा में समाज को भी अपनी सोच में बदालव लाने की आवश्यकता है।

- **विद्यार्थी**—तुम यहाँ क्या कर रहे हो? मुझे लगता है कि तुम्हें स्कूल जाना चाहिए।

  बाल-श्रमिक—मैं भी पढ़ने जाना चाहता हूँ। लेकिन मुझे काम करना पड़ता है। मेरे परिवार को मेरी जरूरत है।

  विद्यार्थी—लेकिन, काम करने से तुम्हारा भविष्य बर्बाद हो जाएगा। तुम्हें शिक्षित होने का मौका नहीं मिलेगा।

  बाल श्रमिक—मैं जानता हूँ, किन्तु मेरे पास काम करने के अतिरिक्त अन्य उपाय नहीं है।

  विद्यार्थी—तुम किसी गैर-सरकारी संगठन या सरकार से मदद माँग सकते है।

  बाल श्रमिक—मुझे इन सभी की कोई जानकारी नहीं हैं।

  विद्यार्थी—चलों, मैं तुम्हारी मदद करता हूँ। मैं तुम्हें ऐसे व्यक्ति से मिलवाऊँगा जो तुम्हारी सहायता करेगा।

  बाल श्रमिक—धन्यवाद! आपका।

12 ठेले पर हिमालय

मौखिक प्रश्न

(क) लेखक बर्फ देखने कौसानी गए थे।

(ख) कौसानी एक छोटा-सा उजड़ा हुआ सा गाँव है, जहाँ बर्फ का नामोनिशान नहीं है।

(ग) खानसामे ने हमें बताया कि आप लोग खुश किस्मत हैं। आपसे पहले 14 टूरिस्ट आए थे। बरफ देखने की आस में यहाँ हफ्ते भर पड़े रहे, बरफ नहीं दिखी।

(घ) लेखक ने गोमती नदी के जल में हिमालय की छाया देखी।

लिखित प्रश्न (अर्थ ग्रहण संबंधी)

(क) (i) पर्वतमाला ने अपने अंचल में कापूर की रंग-बिरंगी घाटी को छिपा रखा था।

(ii) लेखक के अनुसार इस घाटी में यक्ष और किन्नर वास करते होंगे।

(iii) रास्ते सुंदर गेरू की शिलाओं को काटकर बने हुए हैं।

(iv) पर्वतमाला—पर्वतें की माला-तत्पुरुष समास।

(ख) (i) (क) बर्फ के दर्शन न कर पाने के कारण।

(ii) (ग) बर्फ से ढके हिमालय के शिखर को देखकर।

(iii) (क) पुनः बर्फ से ढके हिमालय को देखने के लिए।

(iv) (घ) आवट।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) लेखक और उसके साथी नजदीक से बर्फ देखने के उद्देश्य से कौसानी की यात्रा कर रहे थे।

(ख) कत्यूर घाटी को देखकर लेखक को वहाँ किन्नर और यक्षों के रहने का आभास हुआ।

(ग) बर्फ से ढके शिखर को देखकर लेखक को लगा कि उस एक क्षण के हिम दर्शन ने उसके अन्दर जान भर दी और उसे लगा कि वह किसी दूसरे लोक में चले आए हों।

(घ) दो रचनाओं के नाम—गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) लेखक का सफर अत्यंत कष्टप्रद और चुनौतीपूर्ण थां मार्ग में भयानक मोड़ और ऊबड़-खाबड़ सड़कें थी। रास्ता सूखा और कुरूप था, जहाँ पानी का कहीं नाम-निशान नहीं था। सूखे भूरे पहाड़ और हरियाली को कमी ने यात्रा को और भी कठिन बना दिया था। लेखक ने इस मार्ग को ''शैतान की आँत'' जैसा बताया है।

(ख) कौसानी के बस अड्डे पर उतरते समय लेखक को ऐसा लगा कि जैसे वह ठगा गया हो, क्योंकि कौसानी पहुँचने पर लेखक को पहले एक उजड़ा-सा गाँव दिखा, जहाँ बर्फ को कोई निशान नहीं था। जिससे वह निराश हो गया।

(ग) बस से उतरते ही लेखक, सामने की घाटी में बिखरे अपार सौंदर्य को देखकर वह स्तब्ध रह गया। कत्यूर घाटी के मनमोहक दृश्य, हरे मखमली खेत, लाल-लाल रास्ते और सफेद पत्थरों की कतारों ने लेखक को स्तब्ध कर दिया।

(घ) लेखक को दूर क्षितिज के पास कुछ धुंधले छोटे पर्वतों का आभास हुआ। अकस्मात् उसे बादलों के बीच कुछ दिखाई दिया। बादलों के बीच उसे अटल-सी चीज दिखाई दी। उसका रंग न नीला था, न रूपहला, न सफेद। वह इन तीनों का मिल-जुला रंग था। उसे देखकर लेखक के मन में विचार उठा, क्या वह बर्फ है। अचानक उसे याद आया की, इसी घाटी के पार हिमालय पर्वत है, जो पर्वतों से ढका है। वह समझ गया कि उसने बर्फ से ढके किसी छोटे शिखर को देखा है। यह समझ आते ही लेखक हर्षातिरेक से चीख उठा, ''बर्फ! वह देखो!''

(ङ) लेखक के एक मित्र जो अल्मोड़ा के निवासी है, वह एक दिन ठेले पर रखी बर्फ को देखकर भावुक हो जाते हैं। वे उस बर्फ से उठती भाप को देखकर बोलते हैं, ''यही बर्फ तो हिमालय की शोभा है।'' बर्फ के ऊपर उनकी इस टिप्पणी को सुनकर लेखक के मन में अपने यात्रा-वृत्तांत के ''ठेले पर हिमालय'' यह शीर्षक सूझता है।

(च) लेखक हँसकर बर्फ से ढके हिमालय की याद के दर्द को भुलाने का प्रयास करता है। वह ठेले पर लदे बर्फ को ही देखकर अपना मन बहला लेता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) कोसी तक का रास्ता अच्छा नहीं था। कोसी से बस चली तो रास्ते का दृश्य बदल गया, पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसो बह रही थी। उसके किनारे छोटे-छोटे गाँव और हरे-भरे खेत थे। सोमेश्वर की घाटी बहुत सुन्दर थी। मार्ग में कोसी नदी तथा उसमें गिरने वाले नदी नालों के पुल थे। एक के बाद एक बस स्टेशन, पहाड़ी, डाकखाने, चाय की दुकानें आदि भी रास्ते में मिले।

कहीं-कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरी। सड़क टेढ़ी-मेढ़ी, ऊँची-नीची तथा कंकरीली थी। उस पर बस धीरे-धीरे चल रही थी। रास्ता सुहाना था।

(ख) लेखक जब कौसानी के बस अड्डे पर बस से उतरा तो वह अत्यंत दुख: था। जहाँ वह बस से उतरा था, वहाँ से उसी निगाह एक ओर पड़ी। उसने देखा कि सामने की घाटी अपार प्राकृतिक सौन्दर्य से भरी पड़ी थी। पचासों मील चौड़ी इस घाटी के रास्ते लाल-लाल थे। ये गेरू की शिलाओं के काटने से बने थे। उनके किनारे सफेद थे। उसमें अनेक नदियाँ बह रही थीं। उसमें हरे-भरे खेत थे। पूरी घाटी अत्यन्त सुन्दर थी। लेखक उस ाघटी की सुन्दरता को देखकर मूर्ति के समान खड़ा रह गया।

(ग) कौसानी के बस-अड्डे से लेखक ने कत्यूर की सुन्दर घाटी को देखा। दूर क्षितिज के पास कुछ धुंधले छोटे पर्वतों का उसे आभास-सा हुआ। उसके बादल थे। अकस्मात लेखक को बादलों को बीच कुछ दिखाई दिया। बादल के टुकड़े जैसी कोई अटल वस्तु थी। उसका रंग न नीला था, न रूपहला और न ही पूरी तरह सफेद था। वह उन तीनों का मिलाजुला रंग था। लेखक ने सोचा यह है क्या? बर्फ नहीं है तो क्या है? अचानक उसको ध्यान आया कि इसी घाटी के पार हिमालय पर्वत है, जो बादलों से ढका है। वह समझ गया कि उसने बर्फ से ढके किसी छोटे-से शिखर को देखा है। यह समझते ही, वह प्रसन्नता के साथ चिल्ला उठा, 'बर्फ, वह देखो।'

(घ) सूरज डूबने पर, उसकी पीली-पीली किरणें हिमालय पर पड़ने लगी। ऐसा होते ही ग्लेशियरों के श्वेत हिम का रंग बदलने लगा। ऐसा लग रहा था जैसे उनमें पीली केसर बह रही हो। बर्फ का रंग सफेद से लाल हो गया था। ऐसा लग रहा था जैसे उस पर लाल कमल खिले हुए हों। पूरी घाटी पीले रंग में रंग गई थीं।

(ङ) लेखक हिम से ढके पर्वत शिखरों को देखने कौसानी गया था। उसके साथ उसके मित्र उपन्यासकार जी और चित्रकार सेन भी थे। कौसानी पहुँचने पर उन्होंने विस्तृत और बहुत सुन्दर कत्यूर की घाटी को देखा। कत्यूर की घाटी में क्षितिज के पास एक लेखक ने एक छोटी बर्फ से ढकी पर्वत श्रेणी को देखा। बादलों के एक क्षण के लिए वहाँ से हटने पर वे उसे एक ही क्षण के लिए ही देख पाए। लेखक को हिम शिखर को देखने के बाद हल्का-सा विस्मय हुआ। फिर यह निश्चय होने पर कि वह बर्फ ही थी, वह हर्षतिरेक से चिल्ला उठा। उसकी खिन्नता, निराश, तथा थकावट सब छूमंतर हो गई। वह व्याकुल हो उठा और उसका दिल बुरी तरह धड़कने लगा।

(च) लेखक अपने एक साथी के साथ नैनीताल से कौसानी के लिए बस से चला। उनको कोसी में उतरना था। जहाँ से उन्हें शुक्ल जी को अपने साथ लेकर कौसानी जाना था। कोसी तक का रास्ता बहुत ऊबड़-खाबड़, सूखा तथा कष्टप्रद था। बस का नौसिखिया ड्राइवर लापरवाही से बस चला रहा था। रास्ते में न पानी था, न ही हरियाली। मार्ग के इस दृश्य के कारण लेखक तथा अन्य यात्रियों के चेहरे थकावट और परेशानी से पीले पड़ गए थे।

कोसी उतरकर वे शुक्ल जी तथा चित्रकार सेन के साथ दूसरी बस से कौसानी के लिए निकल पड़े। कोसी से अठारह मील चले आने के बाद भी उन्हें बर्फ के दर्शन नहीं हुए। कौसानी यहाँ से छह मील ही दूर था। लेखक के एक मित्र ने कौसानी की प्रशंसा करते हुए उनसे कहा था कि कौसानी में स्वीटजरलैण्ड का सा आभास मिलता

है। किन्तु लेखक को कौसानी में प्राकृतिक सौंदर्य का कोई लक्षण ही दिखाई नहीं दिया। जिसके कारण वह दुखी हो गया। कौसानी के बस स्टैण्ड पर वह अन्य मनस्कता की मनस्थिति में बस से उतरा।''

पाठ से आगे

- प्रकृति का स्वरूप अत्यन्त रमणीय होता है। नदी, वन, पर्वत, आकाश, समुद्र सभी सुन्दर लगते हैं, किन्तु पर्वतीय क्षेत्रों की सुन्दरता अधिक मनोहारिणी होती है। प्रकृति के विविध स्वरूप पर्वतों पर दिखाई देते है। एक साथ जुड़ी हुई पर्वत श्रृंखलाएँ, और उन पर बने पथरीले और घुमावदार रास्ते अनायास ही हमारा ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेते है। कहीं मजबूत तो कहीं कमजोर चट्टाने भी होती है। ये चट्टाने एक-दूसरे के साथ जुड़कर पहाड़ी शिखरों का रूप ले लेती हैं। लाल-लाल चट्टाने देखने में बहुत सुन्दर लगती है। इन चट्टानों पर सीढ़ीनुमा खेत भी बने होते हैं। जो इनकी सुन्दरता को और बढ़ा देते हैं। इन पर्वतों पर कहीं घने जंगल तो कहीं-कहीं झाड़ियाँ भी पाई जाती हैं। इन वनस्पतियों से ढके होने के कारण पर्वत शिखरों को शोभा दुगनी हो जाती है। उनका ऊँचा माथा आकाश को छूता हुआ प्रतीत होता है। इन पर्वतीय वनों में अनेक जीव-जन्तु रहते है। छोटे-छोटे कीट-पतंगों से लेकर हाथी, शेर, चीता आदि के बड़े पशु-पक्षी इन वनों में पाए जाते हैं। पर्वतों पर बहती नदियाँ अपने कल-कल नाद से हमें आनन्दित करती है। वहाँ के जलाशयों में स्वच्छ दर्पण जैसा जल भरा होता है। जिनमें पर्वतों की मनोहर छवि दिखाई पड़ता है। पर्वतें की ऊँची चोटियाँ सदैव बर्फ से ढकी रहती है। पर्वतें पर हिमपात का दृश्य बहुत ही मनोहर होता है।
- **अमित** — राम, आज मौसम कितना सुहाना है। इस समय हवा में एक अलग सी ताजगी है।

राम— हाँ अमित, तम सही कह रहे हो। शायद ऐसा हमारे पर्वतराज हिमालय के कारण ही संभव है।

अमित—राम, क्या तुम्हें लगता है, हिमालय का हमारे जीवन पर प्रभाव पड़ता है।

राम— हाँ अमित, बिल्कुल पड़ता है। हिमालय हमारे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है।

अमित—अच्छा!

राम—हाँ, तुम जानते हों, हिमालय हमारे देश का मध्य एशिया से आनेवाली ठंडी हवाओं से बचाता है, जिसके कारण हमारे देश की जलवायु हमेशा अनुकूल रहती है।

अमित—राम, और भी महत्वपूर्ण जानकारियाँ, मुझे भी बताओ, हिमालय के बारे में।

राम—हिमालय हमारे देश की सुन्दरता, संस्कृति और अर्थव्यवस्था का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह पर्यटन को भी बढ़ावा देता है।

अमित—अब समझा, हिमालय हमारे जीवन में कितना महत्पूर्ण है। धन्यवाद राम।

विविध प्रश्न

1. (क) × (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓
2. (क) यही बर्फ तो हिमालय की शोभा है।
   (ख) ढालों को काटकर बनाए हुए टेढ़े-मेढ़े रास्ते।
   (ग) इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे।
   (घ) मैं हर्षातिरेक से चीख उठा, बरफ! वह देखो!।
   (ङ) गोमती की उज्ज्वल जलराशि में हिमालय की बर्फीली चोटियों की छाया तैर रही थी।
3. (क) भयानक—डरावना।

अंधेरे के कारण वह स्थान और अधिक भयानक लग रहा था।

(ख) स्तब्ध—सुन्न, सन्न

कत्यूर घाटी को सुन्दरता देखकर लेखक स्तब्ध रह गया।

(ग) हर्षातिरेक—अत्यधिक प्रसन्नता

अपना परीक्षा परिणाम देखकर मोहन हर्षातिरेक से चीख पड़ा।

(घ) रोमांचक—रोमांच, उत्तेजना या उत्साह पैदा करने वाला

यह एक रोमांचक यात्रा सिद्ध हो सकती है।

(ङ) उज्जवल—सफेद, स्वच्छ

गोमती की उज्जवल धारा में हिमालय की परछाई दिखाई दे रही थी।

व्याकरण बोध

1. (क) हिमालय — हिम का आलय
— तत्पुरुष समास

(ख) जलराशि — जल की राशि
— तत्पुरुष समास

(ग) शीर्षासन — सिर है आसन जिसका
— बहुव्रीहि समास

(घ) पर्वतमाला — पर्वतों की माला
— तत्पुरुष समास

(ङ) तन्द्रालस — तंदरो से पूर्ण आलस
— कर्मधारय समास

(च) प्रसन्नवदन — प्रसन्न है जिसका वदन
— कर्मधारय समास

2. (क) कष्टप्रद — कष्ट + प्रद

(ख) मखमली —मखमल + ई

(ग) धुँधलेपन — धुँधला + पन

(घ) खिन्नता — खिन्न + ता

(ङ) थकावट — थकान + आवट

3. (क) एहम — हम पुरुषवाचक सर्वनाम का भेद है, बहुवचन, उत्तम पुरुष और वाक्य का कर्त्ता।

(ख) धीरे-धीरे — क्रिया विशेषण, ''पार किया' क्रिया की विशेषता बता रहा है।

(ग) मैं — पुरुष वाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, बहुवचन, वाक्य का कर्त्ता।

(घ) हिमालय — व्यक्तिवाचक संज्ञा, अन्यपुरुष पुल्लिग, एकवचन, कर्ता कारक।

(ङ) ठंडा, किकनी — विशेषण।

रचनात्मक गतिविधियाँ

- आज शिमला के खूबसूरत हिल स्टेशन की मेरी यात्रा का पहला दिन था। मैंने अपने बैग में गर्म कपड़े, एक कैमरा, कुछ स्नैक्स और अपनी पसंदीदा किताब रखी। मैं अपने परिवार के साथ वहाँ गई थी। हमने सुबह करीब छः बजे अपनी यात्रा शुरू की। हम कार से यात्रा कर रहे थे। यह ड्राइव रोमांच से भरी हुई थी, क्योंकि हम शहर की भीड़-भाड़ और शोर खराबे को पीछे छोड़कर सुंदर पहाड़ियों में प्रवेश कर रहे थे।

  मौसम एकदम सही था, ठंडा और तरोताजा, हल्की हवा के साथ, जिसने इस यात्रा का और भी मजेदार बना दिया। कुछ घंटों के सफर के बाद हम शिमला पहुँच गए। मैं पहाड़ों के शानदार नजारों ओर चारों और फैली हरियाली को देखकर दंग रह गई थी।

  हम पूरे दिन स्थानीय बाजारों में घूमें, वहाँ स्वादिष्ट स्ट्रीटफेल का आनंद भी लिया। हमने रिज और जाखू मंदिर जैसे प्रसिद्ध स्थलों पर भी गए। मैंने हर पल का आनंद लिया। वहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता को तस्वीरें ली और उसकी सुन्दरता में खो गई। यह दिन हँसी और खुशी से भरा था।

- छात्र अध्यापक के निर्देशन में आयोजन करवाएँ।

13 पंचलाइट

मौखिक प्रश्न

(क) महतो टोली के लोग प्रतिस्पर्धा में पेट्रोमैक्स खरीद लाए।

(ख) गाँव वाले पैट्रोमैक्स को पंचलाइट कहते थे।

(ग) पंचलाइट को खरीदने के बाद बचे हुए पैसों से गाँव वालों ने पूजा सामग्री खरीदने का निश्चय किया।

(घ) गोधन मुनरी को देखकर सलीमा का गाना गाकर आँखों से इशारा करता था, इसलिए पंचों ने गोधन का हुक्का पानी बंद कर दिया था।

(ङ) कीर्तनियाँ लोगों ने महावीर स्वामी की जय ध्वनि के साथ कीर्तन शुरू किया।

लिखित प्रश्न (अर्थ ग्रहण संबंधी)

(क) (i) महतो टोली के पास दंड-जुरमाने से पैसे जमा हुए थे।

(ii) पंचों ने राम नवमी के मेले में पेट्रोमैक्स खरीदा।

(iii) गाँव वाले पैट्रोमैक्स को पंचलाइट कहते हैं।

(iv) धोखे से अपने भाई की जमीन हड़प लेने पर कोर्ट ने उस पर बहुत बड़ा जुर्माना लगाया।

(ख) (i) (ग) गोदान पंचलाइट जलाना जानता है।

(ii) (क) गोधन का।

(iii) (घ) उपर्युक्त सभी

(iv) (ख) जलाना।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) महतो टोली के लोग रामनवमी के मेले से पंचलाइट खरीदकर लाए।

(ख) पंचलाइट गाँव लाते समय ब्राह्मण टोले के फुटंगी झा ने सरदार को टोका।

(ग) गोधन, मुनरी का प्रेमी और टोले का एक मनमौजी युवक था।

(घ) गोधन ने पंचलाइट जलाने के लिए स्पिरिट की जगह गरी का तेल प्रयोग किया।

(ङ) कहानीकार-फणीश्वरनाथ रेणु।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) गाँव में कुल आठ पंचायतें हैं; जिनमें सात पंचायतों के पास अपने-अपने पेट्रोमैक्स हैं; केवल मेहतो टोली की पंचायत के पास ही अपना पेट्रोमैक्स नहीं था। किंतु इस बार जब सरदार ने रामनवमी के मेले से अपनी टोली के लिए पेट्रोमैक्स खरीद लिया। उस पेट्रोमैक्स को देखकर गाँव वाले उत्साहित थे।

(ख) सूरज डूबने से पहले सभी लोग सरदार के दरवाजे पर आकर जमा हो गए। आज उनके टोले में पहली बार पंचलैट का उजाला होने वाला था। सभी लोग पंचलैट के पूजन में सम्मिलित होने के लिए वहाँ उपस्थित थे।

(ग) मूलगैन ने अपनी भगतिया पच्छकों को समझा दिया, ''देखो, आज पंचलैट की रोशनी में कीर्तन होगा। बेताले लोगों से पहले ही कह देता हूँ आज यदि आखर धरने में तभी टेढ-बेढ़ हुआ, तो दूसरे दिन से एकदम बैकार!''

(घ) मुनरी गोधन के विषय में यह जानती थी कि वह अकेला ही पेट्रोमैक्स जलाना जानता है।

(ङ) गोधन पंचों की परवाह नहीं करता था, उसे अब तक टोले के पंचों को पान-सुपारी खाने के लिए कुछ भी नहीं दिया था। वह पंचों की निगाह पर बहुत दिनों से चढ़ा हुआ था। एक दिन जब गुलुरी काकी ने पंचों से शिकायत की, कि गोधन उनकी बेटी मुनरी को आँखों से इशारे करके सलीमा का गाना गाता है। बस उसी दिन पंचों को मौका मिल गया और उन्होंने गोधन का हुक्का-पानी बंद कर दिया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) गाँव में रहने वाली विभिन्न जातियाँ अपनी अलग-अलग टोली बनाकर रहती है। उन्हीं में से महतो टोली के पंचों ने पिछले 15 महीने से दण्ड-जुर्माने के द्वारा जमा किए पैसों से रामनवमी के मेले से इस बार पेट्रोमैक्स खरीदा। पेट्रोमैक्स खरीदने के बाद बचे 10 रुपये से पूजा की सामग्री खरीदी गई। पेट्रोमैक्स यानी पंचलैट को देखने के लिए महतो टोली के सभी बालक, औरतें एवं पुरुष सरदार के दरवाजे पर इकट्ठे हो गए। सरदार ने पंचलैट की पूजा-पाठ का इंतजाम करने का आदेश अपनी पत्नी को दिया।

महतो टोली के लोग 'पंचलैट' आने से अत्यधिक उत्साहित हैं, लेकिन उनके सामने एक बड़ी समस्या यह आ गई कि पंचलैट जलाएगा कौन टोली का कोई भी व्यक्ति पंचलैट जलाना नहीं जानता था। महतो टोली के किसी भी घर में अभी तक ढिबरी नहीं जलाई गई थी, क्योंकि सभी लोग चारों ओर बस पंचलैट की ही रोशनी फैली देखना चाहते थे। पंचलैट न जलने से पंचों के चेहरे उतर गए। पंचलैट न जल पाने पर राजपूत टोली के लोग महतो टोली का मजाक बनाने लगे। इसके बावजूद पंचों ने यह तय किया कि दूसरी टोली के व्यक्ति की मदद लेकर वे पंचलैट नहीं जलाएँगे। चाहे वह बिना जले ही पड़ा रहे।

गुलरी काकी की बेटी मुनरी, जो गोधन से प्रेम करती थी। वह जानती थी कि गोधन पंचलैट जलाना जानता है लेकिन पंचायत ने गोधन का हुक्का-पानी बन्द कर रखा था। मुनरी ने अपनी सहेली कनेली को यह बात सरदार को बताने के लिए कहा। कनेली ने धीरे से टोली के सरदार को बताया कि गोधन पंचलैट जलाना जानता है। अत: सभी पंचों ने मिलकर गोधन को बुलाकर उससे ही पंचलैट जलवाने का निश्चय किया।

किन्तु गोधन छड़ीदार के कहने पर नहीं आया, तब गोधन को मनाने गुलरी काकी गई। तब जाकर गोधन आया। उसने आकर पंचलैट में पहले तेल भरा, फिर उसे जलाने के लिए 'स्पारेट' माँगा। स्पिरिट न मिलने पर उसने गरी (नारियल) के तेल से ही पंचलैट जला दिया। पंचलैट जलते ही महतो टोली के सभी सदस्यों में खुशी की लहर दौड़ गई। कीर्तनिया लोगों ने एक स्वर में महावीर स्वामी की जय ध्वनि की और कीर्तन शुरू हो गा। गोधन ने जिस होशियारी से 'पंचलैट' जला दिया था, उससे सभी लोग प्रभावित हो गए। गोधन के प्रति सभी लोगों के दिल का मैल दूर हो गया। गोधन ने सभी का दिल जीत लिया। सरदार ने गोधन को बड़े प्यार से अपने पास बुलाकर कहा-तुमने जाति की इज्जत रखी हैं। तुम्हारे सात खून माफ हैं। खूब गाओ सलीमा का गाना।'' अन्त में गुलरी काकी ने गोधन को रात के खाने पर निमन्त्रित किया।

(ख) रेणुजी की आंचलिक कहानी 'पंचलाइट' में ग्रामवासियों की मन:स्थिति की वास्तविक झलक दिखाई देती है। इस कहानी का मुख्य पात्र गोधन है। गोधन के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

(i) **एक अल्हड़ ग्रामीण युवा**—गोधन युवा है, अत: उसमें भी युवा वर्ग की कुछ स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ हैं। वह अल्हड़ प्रवृत्ति का मनचला और लापरवाह युवक हैं वह दूसरे गाँव से आकर इस गाँव में बसा है, फिर भी वह यहाँ के पंचों के प्रति सम्मान नहीं दिखाता है। वह मुनरी से प्रेम करता है और उसे देखकर फिल्मी गाने गाता है।

(ii) **गुणवान व्यक्ति**—महतो टोली में एक गोधन ही ऐसा व्यक्ति है, जो पंचलाइट जलाना जानता है। वह बड़ी होशियारी से स्पिरिट न मिलने पर गरी (नारियल) के तेल से ही पंचलैट जला देता है। इससे उसकी बौद्धिकता का भी पता चलता है।

(iii) स्वाभिमानी—गोधन स्वाभिमानी हैं हुक्का-पानी बन्द करने के बाद जब सरदार छड़ीदार के माध्यम से उसे बुलावा भेजते है, तो वह आने से इनकार कर देता है।

(iv) संवेदनशील—गोधन बहुत ही संवेदनशील युवा है। वह जानता है कि पंचलैट के न जलने से पूरे गाँव में उसके टोले की बदनामी होगी। अत: अपने समाज की प्रतिष्ठा बचाने के लिए पंचलैट को जलाने का निश्चय करता है।

(v) निर्भीक—गोधक निर्भीक स्वभाव वाला है। भले ही वह दूसरे गाँव से आया है, फिर भी वह पंचों की परवाह नहीं करता, उन्हें पान-सुपारी भी खाने को नहीं देता है। वह मुनर के प्रति अपने प्रेम को भी निर्भीकता से व्यक्त करता है और उसे देखकर फिल्मी गाने गाता है।

(ग) 'पंचलाइट' कहानी में लेखक श्री फणीश्वरनाथ रेणु बदलते ग्रामीण परिवेश की झाँकी प्रस्तुत करना चाहते है। भारत का ग्रामीण समाज आज भी टोलों और कबीलों में बँटा है। लेखक की उद्देश्य गाँव की अशिक्षा, अज्ञानता तथा रूढ़िवादिता को प्रकट करना है, इसके साथ ग्रामीण समाज किस प्रकार अति महत्वहीन रूढ़ियों और परम्पराओं में उलझा हुआ है, इस तथ्य को भी उजागर करना रेणु जी का उद्देश्य है।

ग्रामीणों की अपनी समस्याएँ हैं। गाँवों में एकता नहीं है, वहाँ के लोग टोलों में बँटे हुए है, लोगों में परस्पर ईर्ष्या और द्वेष है, वर्णवाद, जाति बिरादरीवाद और ऊँच-नीच की भावना ग्रामीणों में बसी हुई है। अन्धविश्वास ने उनके मन में गहरी जड़ जमा ली हैं ग्रामीण जीवन की इन सभी समस्याओं को इस कहानी में उठाया गया है और शिक्षा का प्रचार कर तथा ग्राम सुधार की भावना को जगाकर इन समस्याओं का समाधान खोजने के लिए पाठकों को प्रेरित करना इस कहानी का मूल उद्देश्य है।

प्रस्तुत कहानी में लेखक अपने उद्देश्य को मार्मिकता से पाठकों के मन:स्थल पर अंकित देता है। इसमें ग्रामीण अँचलों में पहुँचना तथा ग्राम-सुधार की भावनाओं को जगाना इस कहानी का मुख्य उद्देश्य है। अपने उद्देश्य की पूर्ति मे कहानीकार को पर्याप्त सफलता मिली है।

पाठ से आगे

(●) रेणु जी ने अपनी इस कहानी में ग्रामीण अंचल का वास्तविक चित्र खींचा हैं यह बिहारके ऐसे विशेष भाग से संबंधित है, जो अभी अशिक्षित है। रूढ़िवादी और बौद्धिक चेतनाहीन है। इस कहानी में बिहार के ग्रामीण भू-भाग की सामाजिक परिस्थितियों पर प्रकाश डाला गया है। कहानी में हम देखते है कि गाँव में आठ पंचायतें है। सभी की अलग-अलग जातियों की टोलियाँ हैं। सभी टोलियाँ एक-दूसरे को नीचा दिखाने के लिए झूठी शानों-शौकत का दिखावा करती हैं। ऐसा ही दिखावा करने के लिए महतो टोली लोग भी मेले से पेट्रोमैक्स खरीद लाते हैं। किन्तु उसे जलाने में असफल रहते हैं। वे अपने शान बचाने के लिए गाँव से बहिष्कृत किए गए, एक युवक गोधन को वापस गाँव में बुला लेते है। गोधन के द्वारा पेट्रोमैक्स जलाने पर उसकी सभी गलतियाँ माफ कर दी जाती हैं तथा उसे मनोनुकूल आचरण करने की भी छूट मिल जाती है। जिससे पता चलता है कि आवश्यकता बड़े-से-बड़े रूढ़िगत परम्परा को व्यर्थ साबित कर देती है।

विविध प्रश्न

1. (क) × (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓ (च) ✓
2. (क) बामन टोली के लोग ऐसे ही ताब करते हैं।
   (ख) औरतों की मण्डली में गुलरी काकी गोसाई का गीत गुनगुनाने लगी।
   (ग) कीर्तनिया लोग ढोल-करताल खोलकर बैठे हैं।

(घ) उधर जाति का पानी उतर रहा है।

(ङ) सलीमा का गीत गाकर आँख का इशारा मारने वाले गोधन से पूरे गाँव के लोग नाराज थे।

(च) पंचलैट की रोशनी में सभी के मुसकराते हुए चेहरे स्पष्ट हो गऐ।

3. (क) दिन-दहाड़े-खुले आम, किसी भी बात को छुपाए बिना।
दिन-दहाड़े ही बीच सड़क पर रोककर राम का मोबाइल और पर्स छीन लिया।

(ख) आखर-अक्षर—राधा अनपढ़ है, वो क्या जाने आखर किसे लिखे जाते हैं।

(ग) जुरमाना—किसी अपराध या नियम का उल्लंघन के लिए कानून के तहत निर्धारित किया गया दंड, जिसे धन के रूप में भुगतान करना होता है।

(घ) बालना—जलाना
गोधन पंचलाइट बोलना जानता था।

(ङ) नखरा—खुशामद कराने की भावना
वह अच्छा गाना, गाना जानता हे, यदि गाने की कहो, तो नखरा दिखाने लगता है।

व्याकरण बोध

1. (क) पंचलैट — पेट्रोमैक्स
(ख) बैकार — बहिष्कार, बायकॉट
(ग) साँझ — शाम
(घ) आखर — अक्षर
(ङ) किरासन — केरोसिन
(च) जुरमाना — जुर्माना
(छ) परतीत — विश्वास
(ज) इसपिरिट — स्पिरिट

2. (क) किए-कराए पर पानी फिरना—किसी योजना का पूरी तरह से विफल हो जाना।

(ख) हुक्का-पानी बंद करना—किसी को समाज या जाति से बहिष्कृत करना।

(ग) निगाह पर चढ़ना—किसी चीज पर बहुत ध्यान देना।

(घ) पानी उतरना — अपमानित होना।

(ङ) दिल का मैल दूर होना—किसी के मन से गलत विचार, घृणा, या किसी भी प्रकार की नकारात्मक भावना को हटा देना।

(च) दिल जीतना—किसी व्यक्ति के मन में अपने प्रति प्रेम या लगाव उत्पन्न करना।

(छ) सात खून माफ होना—बड़े-से बड़ा अपराध माफ होना।

3. (क) दंड — सजा
(ख) साँझ — शाम
(ग) रोशनी — प्रकाश
(घ) उत्साह — जोश
(ङ) श्रद्धा — विश्वास
(च) उदासी — मायूसी
(छ) चालाकी — बुद्धिमानी
(ज) पुलकित — प्रकाशित

4. पंच — मुक्का, पंचायत के सदस्य
पानी — जल, सम्मान
कल — बीता हुआ दिन, मशीन का पुर्जा
बाल — बालक, केश
कर — हाथ, टैक्स

5. (क) सरदार — सरदारनी
(ख) ब्राह्मण — ब्राह्मणी
(ग) औरत — आदमी
(घ) बूढ़ा — बुढ़िया
(ङ) बच्चा — बच्ची
(च) दुकानदार — दुकानदारनी
(छ) काकी — काका
(ज) स्वामी — स्वामिनी

रचनात्मक गतिविधियाँ

1. वैदिक काल में पंचायती राज प्रणाली बहुत लोकप्रिय थी, और ऐसी सभाओं को सभा के रूप में जाना जाता था जो निर्णय लेने के मामले मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी।

- **संवैधानिक प्रावधान—**73वां सविधान संशोधन अधिनियम 1992 भारतीय संविधान

का एक हिस्सा था और इससे पंचायती राज संस्थाओं के संवैधानिक दर्जा दिया।

- **त्रि-स्तरीय संरचना**—त्रि-स्तरीय संरचना प्रणाली में गाँव स्तर पर ग्राम पंचायतें, ब्लॉक स्तर पर पंचायत समितियाँ और जिला स्तर पर जिला परिषदें होंगी; जिससे विकेन्द्रीकरण सुनिश्चित होगा।
- **कार्य और जिम्मेदारियाँ**—जैसा कि जिम्मेदारी मान ली गई है, पीआरआई के सभी कार्य जमीनी स्तर पर विकास और स्थानीय स्वशासन प्राप्त करने के लिए कृषि विकास ग्रामीण विकास, स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक कल्याण के क्षेत्रों में भूमिका निभाते है।
- **वित्त पोषण और वित्त**—पंचायती राज संस्थाओं को केन्द्र और राज्य सरकारों के अनुदान स्थानीय करों और महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी अधिनियम (MGNREGA) जैसे योजनाओं जैसे विविध स्रोतों से वित्त पोषण प्राप्त होता है। वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने के मामले में अभी एक चुनौती है।
- **महिलाओं और कमजोर वर्गों का प्रतिनिधित्व**— 73वाँ संशोधन अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियाँ और महिलाओं को भी सीटों की गारंटी देता है—कुल सीटों और कुर्सियों के एक तिहाई से कम नहीं। इससे पंचायतों में वंचितों और महिलाओं का प्रतिनिधित्व और भागीदारी बढ़ती है।
- **समस्याएँ एवं चुनौतियाँ**—पंचायती राज संस्थाओं को प्रभावित करने वाले सबसे प्रमुख मुद्दे है—अपर्याप्त वित्तपोषण, उचित बुनियादी ढाँचे का अभाव, सीमित तकनीकी और प्रशासनिक क्षमता, राजनीतिक हस्तक्षेप और कई राज्यों में अल्प शक्तियाँ।
- **सुधार और पहल**—पंचायती राज संस्थाओं को मजबूत बनाने के लिए प्रशिक्षण कार्य्रक्रम डिजिटल गवर्नेंस उपकरण, ई-पंचायत और क्षमता निर्माण के रूप में निरंतर सुधार और पहल की जा रही है, ताकि सार्वजनिक सेवाएँ प्रदान करने और विकास को बढ़ावा देने में उन्हें अधिक प्रभावी बनाया जा सके।

2. यह पुराने जमाने में प्रचलित एक सामाजिक प्रथा थी जो कहीं-कहीं गाँवों में आज भी है।

   हुक्का-पानी बंद करने का अर्थ है—किसी व्यक्ति या परिवार को सामाजिक बहिष्कार कर देना। जिसका हुक्का-पानी बंद कर दिया जाता है, समाज को कोई व्यक्ति उसके दु:ख दर्द यहाँ तक की मृत्यु होने पर भी साथ नहीं देता न ही कोई उसकी सहायता करता है। उसे खाने-पीने से लेकर अन्य सुविधाओं से वंचित कर दिया जाता है। यदि कोई व्यक्ति उस परिवार या व्यक्ति की सहायता करता है तो उसे भी यही सजा दी जाती है।

3. साक्षी – अरे प्रिया, आज गाँव में शादी की तैयारियाँ चल रही है ना? (कितनी भीड़ है।)

   प्रिया – हाँ साक्षी, गाँव के इन्हीं आयोजनों में ही तो यहाँ के रीति-रिवाजों को देखने को मिलते हैं।

   साक्षी—सही कहा प्रिया, ऐसे रीति-रिवाज शहरों में कहाँ?

   प्रिया—गीता, ढोलक, नाच, झाँझ-करताल, गीतों में किस्से और न जाने कितने ही रीति-रिवाज हैं, जो केवल गाँवों में सदियों से चले आ रहे हैं।

   साक्षी—शहर के एकाकी जीवन में तो ये सब रीति-रिवाज मुश्किल ही हो पाते हैं।

   प्रिया—यही कारण है कि मुझे गाँव की संस्कृति बहुत अच्छी लगती है। यहाँ की संस्कृति, रीति-रिवाज और यहाँ की परम्पराएँ ये सब बहुत खास है।

   साक्षी—बिल्कुल, हमें अपनी इस ग्रामीण संस्कृति और रीति-रिवाज को गर्व से आगे ले जाना चाहिए।

14 कबीर की साखियाँ

मौखिक प्रश्न

(क) आवत गारी एक है, उलटत होई अनेक।
कह कबीर नहिं उलटिए, वही एक की एक॥

(ख) तलवार का मूल्य तय करना चाहिए।

(ग) मनुष्यको अहंकार का त्याग कर देना चाहिए।

लिखित प्रश्न (अर्थ ग्रहण संबंधी)

(क) (i) साधु से उसकी जाति नहीं पूछनी चाहिए।
(ii) साधु से सदैव ज्ञान को बातें पूछनी चाहिए।
(iii) तलवार का मूल्य तय करना चाहिए।
(iv) साधु-सज्जन

(ख) (i) (घ) ये सभी
(ii) (घ) ये सभी
(iii) (घ) 'क' और 'ग' दोनों
(iv) (ख) पवन

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) सखियों के रचयिता कबीरदास जी हैं।

(ख) कबीरदास का जन्म सन् 1938 ई. के आस-पास वाराणसी में हुआ था।

(ग) कबीरदास पहली साखी में तलवार का मूल्य ज्ञात करने को कह रहे है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) घास को पैरों के नीचे समझकर उसे दबाया जाता है, किन्तु जब उसी घास का एक छोटा-सा तिनका, उड़कर आँख में गिर जाता है, तब यही घास कष्टप्रद बन जाती है।

(ख) ''या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय।''—में 'आपा' अहंकार के अर्थ में प्रयोग हुआ है। व्यक्ति को सबसे पहले अपने अहंकार का त्याग करना चाहिए, ऐसा करने पर कोई भी उसका दुश्मन नहीं रहता है।

(ग) कबीर हाथ में लेकर माला फेरने और जीभ से नाम पते रहने को सुमिरन नहीं मानते हैं।

(घ) जग में बैरी कोई नहीं, जो मन शीतल होय।
या आपा को डारि दे, दया करें सब कोय॥

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) संत कबीर ने घास की निंदा करने से इसलिए मना किया है क्योंकि निंदा करना एक प्रकार का घमंड है, और किसी भी वस्तु को तुच्छ समझना गलत है। कबीर दास जी अहंकार और दूसरों का कन आंकने के खतरे पर जोर देते हुए कहते है कि जब हम घास की पैरों तले रौंदते है, तो हमें लगता है कि वह हमें कोई नुकसान या कष्ट नहीं पहुँचा सकती, किन्तु यदि उसी घास का एक छोटा-सा तिनका उड़कर हमारी आँख में पड़ जाए तो हमें कितना दर्द और कष्ट होता है।

ठीक इसी प्रकार हमें किसी भी व्यक्ति को कमजोर या छोटा नहीं समझा चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति में कोई न कोई गुण अवश्य होता है। इसलिए हमें किसी की भी निंदा नहीं करनी चाहिए।

(ख) मनुष्य अपने अहंकार के कारण दूसरों को अपना विरोधी बना लेता है। उदाहरण के लिए जो व्यक्ति सदैव अपनी बात मनवाने की कोशिश करता, दूसरों की बात नहीं सुनता, दूसरों को नीचा दिखाने का प्रयास करता रहता है। दूसरों को ठगने की कोशिश करता है। ऐसा व्यक्ति अपने इन्हीं अवगुणों के कारण दूसरों को अपना विरोधी बना लेता है।

(ग) कबीरदास जी मनुष्य को यह सबक दे रहे हैं कि भीतरी गुणों का महत्व बाहरी चीजों से अधिक होता है, जिस प्रकार तलवार अपने गुणों के आधार पर खरीदी जाती है न कि म्यान अर्थात् बाहरी आवरण के आधार पर। बाहरी साज-सज्जा का कोई मोल नहीं होता, भीतर का सौन्दर्य और ज्ञान ही मनुष्य का सत्य पक्ष होता है और इसे कभी नहीं भूलना चाहिए।

(घ) कबीर के दोहों को साखी इसलिए कहा जाता है क्योंकि इनमें कबीर ने अपनी वाणी को ईश्वर को साक्षी मानकर व्यक्त किया है। साखी का अर्थ है—साक्षी अर्थात् गवाह/कबीर ने अपनी आँखों से देखा हुआ सत्य, समाज ओर धर्म की बुराइयों को अपनी साखियों में व्यक्त करके लोगों को और समाज को सुधारने का प्रयास किया है।

कविता से आगे

- हाँ, आपा और आत्मविश्वास में बहुत बड़ा अंतर हैं आपा का अर्थ है घमंड, अहंकार, जबकि आत्मविश्वास का अर्थ है स्वयं पर विश्वास। आपा दूसरों को नीचा दिखाने और अपनी श्रेष्ठता को प्रदर्शित करने की भावना से जुड़ा है, वहाँ आत्मविश्वास दूसरों के प्रति सम्मान और अपने आप को सही ढंग से जानने का भावना से जुड़ा होता है।

  आपा एक नकारात्मक भावना है जो हमें दूसरों को नीचा दिखाने और स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ साबित करने की कोशिश करने पर मजबूर करती है, जबकि आत्मविश्वास एक सकारात्मक भावना है जो हमें अपने आप पर भरोसा करने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करती है।

विविध

(क) जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥

(ख) जग में बैरी कोई नहीं, जो मन सीतल होय।
या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय॥

2. (क) साधु-सज्जन—हमें साधु से केवल ज्ञान की बातें ही पूछनी चाहिए।

   (ख) तरवार-तलवार—म्यान से अधिक तलवार उपयोगी होती है।

   (ग) नींदिए-निंदा करना—हमें कभी किसी की निंदा नहीं करनी चाहिए।

   (घ) दुहेली-सुख देने वाली—कभी-कभी छोटी-सी वस्तु भी दुख देने वाली होता है।

   (ङ) बैरी-शत्रु—हमें अपने बैरी से सचेत रहना चाहिए।

व्याकरण बोध

1. (क) साधु — सज्जन
   (ख) कर — हाथ
   (ग) मुख — मुँह
   (घ) मनुवाँ — मन
   (ङ) बैरी — दुश्मन
   (च) दया — करुणा
2. (क) सज्जन — दुर्जन
   (ख) ज्ञान — अज्ञान
   (ग) एक — अनेक
   (घ) निंदा — प्रशंसा
   (ङ) कष्ट — सुख
   (च) बैरी — मित्र
   (छ) शीतल — उष्ण
   (ज) दया — निर्दयता

रचनात्मक गतिविधियाँ

1. मैं घमण्डों में भरा ऐंठा हुआ।
   एक दिन जब था मुण्डेरे पर खड़ा।
   आ अचानक दूर से उड़ता हुआ।
   एक तिनका आँख में मेरी पड़ा।
   मैं झिझक उठा, हुआ बेचैन-सा।
   लाल होकर आँख भी दुखने लगी।
   मूँठ देने लोग कपड़े की लगे।
   ऐंठ बेचारी दबे पाँवों भागी।
   जब किसी ढव से निकल तिनका गया।
   तब 'समझ' ने यों मुझे ताने दिए।
   ऐंठता तू किसलिए इतना रहा।
   एक तिनका है बहुत तेरे लिए।
   (छात्र चित्र स्वयं बनाएँ)
2. प्रिय मित्र
   स्नेहिल
   नमस्ते! आशा है, तुम कुशल मंगल हो।
   आज मैं अपने इस पत्र के माध्यम से तुम्हें शीतल वाणी के गुणों के बारे में बताना चाहता हूँ।

शीतल वाणी हमें दूसरों के साथ बेहतर संबंध बनाने में सहायता करती है। यह हमें तनाव और चिंता से भी दूर रखती है। शीतल वाणी ही हमें समाज में मान और सम्मान दिलाने में सहायता करती है।

इसलिए हमें सदैव शांत और मधुरवाणी का उपयोग करना चाहिए। दूसरों की भावनाओं को समझना और उनका सम्मान करना चाहिए। अत: मैं अपने पत्र के द्वारा तुम्हें हमेशा शीतल वाणी का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ। शांति और मधुर वाणी का उपयोग करके, तुम अपने जीवन को बेहतर बना सकते हो, और दूसरों के साथ भी अच्छे संबंध स्थापित कर सकते हो।

शुभकामनाओं सहित,

आपना अभिन्न मित्र

हृदयांश

पथौली गाँव, आगरा

21 मई 20— —

15 भारत में सिनेमा के जनक

मौखिक प्रश्न

(क) दादा साहब फालके भारत में सिनेमा के जनक थे।

(ख) फालके का पूरा नाम घुंडिराज गोविंद फालके है।

(ग) फिल्म देखने के बाद उनकी पत्नी ने उनसे पूछा 'ये तसवीरें चल कैसे रही थीं?'

(घ) दादा साहब अपने साथ लंदन से एक विलियम्सन कैमरा, फिल्म धोने और मुद्रित करने के उपकरण, कच्ची फिल्म और एक परफोरेटर लेकर आए।

(ड.) दादा साहब ने गंगावतरण फिल्म बनाकर अपनी फिल्म यात्रा को विराम दिया।

लिखित प्रश्न (अर्थ ग्रहण संबंधी)

(क) (i) मुंबई में सिनेमाघर सैंडहर्स्टन रोड पर था।

(ii) फालके उत्सुकतावश 'क्राइस्ट का जीवन' नामक फिल्म देखने गए।

(iii) फिल्म के आरंभ में पाथे कंपनी का प्रतीक चिह्न मुर्गा दिखाया गया।

(iv) उत्सुकता - तीव्र इच्छा।

(ख) (i) (ख) उनके परिवार के सदस्य

(ii) (ग) घुप्प अँधेरे में

(iii) (क) डार्क रूम में

(iv) (क) भार्या

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) दादा साहब फालके का जन्म 30 अप्रैल, 1870 को नासिक जिले के त्र्यंबकेश्वर गाँव में हुआ था।

(ख) दादा साहब ने मुंबई के सुप्रसिद्ध कला विद्यालय 'जे०जे० स्कूल ऑफ आर्टस' में प्रवेश लिया।

(ग) 'क्राइस्ट का जीवन' नामक फिल्म ने उन्हें बाँध लिया।

(घ) तारामति की भूमिका के लिए फालके ने एक रेस्तराँ के बावर्ची के सहायक सालुंके को चुना।

(ड) राजा हरिश्चन्द्र फिल्म का नियमित प्रदर्शन 21 अप्रैल, 1913 को मुबंई के ओलिंपिया सिनेमा में आरंभ हुआ।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) बड़ौदा कला-भवन से फालके साहब ने छायांकन का विधिवत प्रशिक्षण लिया और फिल्म प्रोसेसिंग की तकनीक से परिचित हुए।

(ख) फिल्म के विषय में पूछने पर फालके साहब ने उनके प्रश्न का उत्तर मौखिक रूप से देने के बजाय, उन्हें सिनेमा के प्रक्षेपण कक्ष के पास ले जाकर समझाया कि इस मशीन के द्वारा ही सब कुछ होता है।

(ग) फालके साहब लगातार अपने प्रयोगों में जुटे रहे। अगले छह महीने में उन्हें केवल तीन घंटे सोना ही नसीब हुआ। लगातार फिल्में देखने, अनिद्रा और प्रयोगों में जुटे रहने के कारण उनकी आँखें थकने लगी और दिखना लगभग बंद हो गया। उनकी आँखें के कार्निया में अल्सर हो जाने के कारण उनकी दृष्टि चली गई।

(घ) उस समय फिल्म की जो पट्टी मिलती थी, उसमें एक ओर छेद स्वयं ही करने होते थे। आधे इंच को इस फिल्म पट्टी को घुप्प अँधेरे में रखकर छेद करना आसान काम नहीं था। प्रकाश की एक भी किरण फिल्म पट्टी को खराब कर सकती थी और एक भी छेद गलत हो जाने पर फिल्म पट्टी कैमरे में या प्रोजेक्टर में फँस सकती थी। इस फिल्म पट्टी में छेद करने के कार्य के लिए रसोईघर को रात में डार्क रूम में बदल दिया जाता था।

(ड) राजा हरिश्चंद्र कथा में रोहिताश्व की साँप के काटने से मृत्यु हो जाती है। अत: इस प्रसंग के लिए कोई भी माँ अपना सात-आठ का बेटा देने को तैयार नहीं थी। दादा साहेब ने धन का लालच दिया, यश का मोह दिखाया, यह भी बताया कि यह फिल्म है, लेकिन इन सब से कोई लाभ नहीं हुआ। अंतत: उन्हें अपने ही पुत्र को रोहिताश्व की भूमिका में लेना पड़ा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) भारत में सिनेमा के जनक और दादा साहब फालके के नाम से विख्यात घुंडिराज गोविंद फालके का जन्म 30 अप्रेल, 1870 को नासिक जिले के त्र्यंबकेश्वर गाँव के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। पारिवारिक परंपरा के अनुसार ही उन्हें संस्कृत और पुरोहिताई की शिक्षा दी गई। किन्तु घुंडिराज का रुझान चित्रकला, नाट्य अभिनय और जादूगरी में था। किशोर घुंडिराज की रुचियों को विकसित होने का सुनहरा अवसर तब मिला, जब उनके पिता मुंबई के एलफिंस्टन कॉलेज में अध्यापक नियुक्त होकर आए। दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद घुंडिराज ने मुंबई के ही सुप्रसिद्ध कला विद्यालय जे०जे० स्कूल ऑफ आर्ट्स में प्रवेश लिया। यहाँ उन्होंने ललित कलाओं का प्रशिक्षण लिया। इस दौरान छायांकन की कला ने उन्हें विशेष रूप से आकर्षित किया।

(ख) सन् 1910 में मुंबई के सैंडहर्स्टन रोड पर एक तंबू सिनेमाघर हुआ करता था। जिसका नाम था 'दि अमेरिका इंडिया सिनेमैटोग्राफ'। इसमें विदेशों में बनी फिल्में दिखाई जाती थीं। क्रिसमस के आसपास वहाँ 'क्राइस्ट का जीवन' नामक फिल्म दिखाई जा रही थी। उत्सुकता के कारण फालके भी यह फिल्म देखने गए। फिल्म शुरू होने पर पाथे कंपनी का प्रतीक चिह्न मुर्गा दिखाया गया और एक लघु फिल्म के बाद मुख्य चित्र शुरू हुआ।

(ग) दादा साहेब फालके को अपनी पहली फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, वे चाहते थे कि उनकी फिल्म में अभिनेत्री का किरदार एक महिला ही निभाए, लेकिन उन दिनों भारत में महिलाओं का फिल्म उद्योग में काम करना सामाजिक रूप से स्वीकार्य नहीं था। लोगों को यह भी लगता था कि महिलाओं का कैमरे के सामने काम करना उचित नहीं है। वे महिलाओं को फिल्म उद्योग में काम करते हुए देखना पसंद नहीं करते थे। दादा साहेब ने कई जगह खोजबीन की, लेकिन कोई भी महिला फिल्मों में काम करने के लिए तैयार नहीं हुई।

(घ) 1917 में फालके द्वारा निर्मित फिल्म 'लंकादहन' थी। इस फिल्म का मुख्य आकर्षण था, हनुमान की समुद्र पर उड़ान। हनुमान उड़ता हुआ आकाश में पहले बहुत ऊँचाई तक जाता है और फिर धीरे-धीरे छोटा होता जाता है। उस समय यह एक देखने लायक दृश्य था। यह फिल्म रामायण के लंका दहन की कथा पर आधारित थी, इस कारण फिल्म ने दर्शकों के बीच अच्छा प्रदर्शन किया। लंका दहन ने कम समय में अच्छी कमाई की, जो उस समय के लिए महत्त्वपूर्ण सफलता थी। फिल्म ने केवल दस दिनों में वेस्टएंड सिनेमा में बत्तीस हजार रुपए की आय हुई। मद्रास में लंकादहन की टिकटों की बिक्री से जमा हुए सिक्कों को तो बैलगाड़ी में लादकर लाना पड़ा था।

(ड.) फालके साहब की रुचि फिल्मों के रचनात्मक पक्ष में थी, यह उनकी कलात्मक दृष्टि, फिल्म निर्माण में उनकी

गहरी रुचि और उन्होंने जो फिल्में बनाई उनकी सामग्री और शैली से स्पष्ट होता है। फालके को भारत की पहली स्वदेशी फिल्म बनाने का श्रेय दिया जाता है, जो उनके रचनात्मक दृष्टिकोण को दर्शाती है।

(i) फालके साहब ने अपनी फिल्मों में भारतीय संस्कृति, पौराणिक कथाओं और सामाजिक विषयों को शामिल किया, जो उनकी रचनात्मक प्रतिभा को दर्शाता है।

(ii) उन्होंने फिल्मों में दृश्य कला, संगीत और नृत्य जैसे तत्त्वों का उपयोग करके अपनी रचनात्मकता को व्यक्त किया।

(iii) उन्होंने अपनी फिल्मों में भारतीय संस्कृति और मूल्यों को दर्शाने के लिए नए दृष्टिकोण अपनाए जो उनकी रचनात्मक सोच को दर्शाते हैं।

(iv) फालके साहब की फिल्में जैसे 'राजा हरिश्चन्द्र', 'नटराज' और 'इंद्र सभा' उनकी रचनात्मक प्रतिभा और फिल्म निर्माण में उनकी गहरी रुचि को दर्शाती हैं।

इन सभी बिन्दुओं से स्पष्ट होता है कि फालके साहब की रुचि फिल्मों के रचनात्मक पक्ष में भी थी।

(च) दादा साहेब फालके को फिल्म निर्माण की अपनी यात्रा में निम्नलिखित कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

(i) वित्तीय कठिनाइयाँ – शुरुआती दौर में फालके को फिल्म निर्माण के लिए धन जुटाने में काफी संघर्ष करना पड़ा। इस कार्य में धीरे-धीरे उनकी घर की चीजें भी बिक गईं थीं।

(ii) शारीरिक कष्ट – इस कार्य की शुरुआत में ही उन्हें छह महीने तक केवल तीन घंटे ही सोने के लिए मिला। अनिद्रा और लगातार प्रयोग के कारण उन्हें दिखना लगभग बंद ही हो गया था। उनकी आँखों के कार्निया में अल्सर हो गया था। जो एक वर्ष के इलाज के बाद ठीक हुआ।

(iii) तकनीकी बाधाएँ– उस समय फिल्म निर्माण के लिए तकनीक वर्तमान समय जैसी विकसित नहीं थी, जिससे फालके को तकनीकी समस्याओं का भी सामना करना पड़ा।

(iv) सामाजिक रूढ़िवादिताएँ – उस दौर में फालके चाहते थे कि उनकी फिल्म में अभिनेत्री का किरदार एक महिला कलाकार ही करे, किन्तु उस समय भारत में महिलाओं का फिल्म उद्योग में काम करना उचित नहीं माना जाता था। लोग महिलाओं को फिल्मों में काम करते देखना पसंद नहीं करते थे। फालके को ऐसे अभिनेताओं को ढूँढ़ने में काफी संघर्ष करना पड़ा जो महिला किरदार के लिए उपर्युक्त हो।

(v) प्रचार – फालके को अपने फिल्मों के प्रचार करने में भी कठिनाई हुई, क्योंकि उस समय फिल्म उद्योग अभी अपनी शुरुआत में ही था।

इन सभी कठिनाइयों के बावजूद, फालके ने हार नहीं मानी और उन्होंने भारतीय सिनेमा के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

पाठ से आगे

1. दादा साहेब फालके के समय की फिल्मों की प्रमुख विशेषताएँ थीं –

(i) पौराणिक कथाएँ – उनके समय की फिल्मों में मुख्य रूप से पौराणिक कथाओं, धार्मिक विषयों और भारतीय संस्कृति को दर्शाया गया था। उनकी पहली फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' भी एक पौराणिक कथा पर आधारित थी।

(ii) मूक फिल्में – दादा साहब फालके द्वारा बनाई गई फिल्में मूक फिल्में थीं, जिनमें संवाद नहीं होते थे।

(iii) पुरुष कलाकारों द्वारा महिला कलाकारों का अभिनय किया जाना – भारत में उस समय महिलाओं को फिल्मों में कार्य करने की अनुमति नहीं थी, अतः पुरुष कलाकारों को ही महिला कलाकारों की भूमिका निभानी पड़ती थी।

(iv) **धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव** – उनकी फिल्मों में भारतीय धार्मिक मान्यताओं और सांस्कृतिक मूल्यों को प्रमुखता दी गई थी।

(v) **स्टिक फोटोग्राफी का प्रयोग** – दादा साहब फालके ने अपनी फिल्मों में स्टिक फोटोग्राफी का प्रयोग किया था, जिससे उन्हें अपनी कहानी को और अधिक प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने में मदद मिली।

(vi) **प्रौद्योगिकी का सीमित उपयोग** – उस समय फिल्म निर्माण के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग सीमित था।

2. उन दिनों फिल्मों में महिला और पुरुष दोनों की भूमिकाएँ पुरुष ही इसलिए निभाया करते थे क्योंकि उस समय समाज में महिलाओं को घरेलू भूमिकाओं तक ही सीमित माना जाता था। उन्हें फिल्मों में कार्य करने की अनुमति नहीं थी। लोग उन्हें फिल्मों में काम करते हुए देखना पसंद नहीं करते थे। उस समय की मान्यता थी कि पुरुषों के संरक्षण और नियंत्रण के बिना महिलाओं की सम्मानजनक या स्वतंत्र स्थिति नहीं हो सकती।

विविध

1. (क) ✓ (ख) × (ग) × (घ) ✓ (ङ) ×
2. (क) प्रक्षेपण – जहाँ से प्रोजेक्टर से फिल्म रिले की जाती है।
   ➧ दादा साहब अपनी पत्नी को प्रक्षेपण कक्ष तक ले गए।
   (ख) अवसर – मौका
   ➧ अंतत: उसे विदेश जाने का अवसर मिल ही गया।
   (ग) अंबार – ढ़ेर/बहुत अधिक मात्रा में किसी वस्तु का होना।
   ➧ उसके पास तो पुराने सिक्कों का अंबार है।
   (घ) उर्वरता – ऊपजाऊपन
   ➧ मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाने के लिए उसमें खाद डाली जाती है।
   (ड) विराम – रोक/रुकावट
   ➧ एक बोलती हुई फिल्म बनाकर दादा साहब ने अपनी फिल्म यात्रा को विराम दिया।

व्याकरण बोध

1. (क) वे तस्वीरें नहीं चल रही थीं।
   (ख) देखो, वे तस्वीरें नहीं चल रही थीं।
   (ग) वे तस्वीरें कैसे चल रहीं थीं?
   (घ) अरे वाह! वे तस्वीरें चल रही थीं।
   (ड) वे तस्वीरें चल रही थीं।
2. (क) परिचित – अपरिचित
   (ख) मुख्य – गौण
   (ग) भविष्य – भूत
   (घ) अनिद्रा – निद्रा
   (ड.) निर्माण – विध्वंस
   (च) अँधेरा – उजाला
   (छ) कठोर – कोमल
   (ज) लघु – वृहत्
3. (क) उन्होंने ललित कलाओं का प्रशिक्षण लिया।
   (ख) इस फिल्म ने उनको बाँध लिया।
   (ग) अगले छह महीने में उनको केवल तीन घंटे सोना नसीब हुआ।
   (घ) युवक दिखाई दिया जो बावर्ची का सहायक था।
   (ड.) दादा साहब के मस्तिष्क की उर्वरता का ज्ञान होता है।

रचनात्मक गतिविधियाँ

1. **भारतीय फिल्म उद्योग में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाली हस्तियाँ** –

(i) **दादा साहब फालके** – दादा साहब फालके को भारतीय सिनेमा का पिता माना जाता है। उन्होंने 1913 में भारत की पहली फीचर फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' बनाई थी। इसके अतिरिक्त अनेक फिल्म और बनाई जैसे – लंकादहन, लीला, श्याम सुंदर।

(ii) **राजकपूर** – राजकपूर एक महान निर्देशक, अभिनेता और निर्माता थे। उन्होने 'अवारा', 'श्री 420', 'मेरा नाम जोकर' जैसी कई सफल फिल्में बनाई।

(iii) **अमिताभ बच्चन** – अमिताभ बच्चन हिंदी सिनेमा जगत के एक महान अभिनेता हैं। उन्होंने 'शोले', 'दीवार',

'शक्ति' जैसी कई हिट और सुपरहिट फिल्मों में काम किया है।

(iv) **सत्यजीत राय** – सत्यजीत राय एक महान फिल्म निर्माता और निर्देशक थे। उन्होंने 'अपरिचित', 'पेटलई', 'आधे रास्ते' जैसी कई प्रसिद्ध फिल्में बनाई।

(v) **लता मंगेशकर** – लता जी एक प्रसिद्ध पार्श्व गायिका थीं। उन्होंने हिंदी फिल्म उद्योग में अनेक लोकप्रिय गाने गाए।

(नोट – चित्र छात्र स्वयं लगायें।)

2. **'फिल्मों का बाल अथवा युवा मन पर प्रभाव' विषय के सकारात्मक पक्ष**

(i) **शैक्षिक** – फिल्में शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। वे विभिन्न विषयों के बारे में जानकारी प्रदान करके, बच्चों को नई चीजें सीखनें में मदद करती हैं।

(ii) **सामाजिक** – फिल्में बच्चों एवं युवाओं को सामाजिक मूल्यों और व्यवहार के बारे में सिखाती हैं। वे बच्चों और युवाओं को एक दूसरे के साथ सहानुभूति रखने में मदद कर सकती हैं।

(iii) **रचनात्मकता** – फिल्में बच्चों को रचनात्मकता और कल्पना को प्रोत्साहित करती हैं। वे बच्चों को नई चीजें सोचने और करने के लिए प्रेरित करती हैं।

इस विषय के नकारात्मक पक्ष

(i) **आक्रामकता** – फिल्में युवाओं और बच्चों में आक्रामकता और हिंसा को बढ़ावा दे सकती हैं, जो परिवार और समाज दोनों के लिए घातक सिद्ध हो सकता है।

(ii) **मानसिक स्वास्थ्य** – फिल्में बच्चों और युवाओं में चिंता, अवसाद और अन्य मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को बढ़ा सकती है।

(iii) **अनावश्यक वस्तुओं के प्रति लालच** – फिल्में उन्हें विभिन्न अनावश्यक उत्पादों को खरीदने के लालच को बढ़ावा दे सकती हैं, जो उनके स्वास्थ्य और विकास के लिए हानिकारक हो सकते हैं।

निष्कर्ष – यह एक जटिल और बहुआयामी विषय। फिल्मों के दोनों के ही मन पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही प्रभाव हो सकते हैं। महत्त्वपूर्ण यह है कि माता-पिता और शिक्षक उन्हें फिल्मों के दोनों पहलू सकारात्मक और नकारात्मक के बारे में समझाएँ और उन्हें फिल्मों का चयन करने के लिए प्रोत्साहित हो।

16 मंगर

मौखिक प्रश्न

(क) मंगर देखने में हट्टा कट्टा था।

(ख) मंगर लेखक के पिता के अच्छे स्वभाव और बुढ़ापे के कारण उनकी इज्जत करता था।

(ग) मंगर के बुजुर्ग होने पर बच्चे अपनी छोटी छड़ियाँ लेकर उसे छेड़ते थे।

(घ) मंगर की पत्नी का नाम मकोलिया था।

(ड.) रचनाओं के नाम – चिता के फूल, माटी की मूरतें, गेहूँ और गुलाब, दीदी और सात दिन आदि।

लिखित प्रश्न (अर्थ ग्रहण संबंधी)

(क) (i) बुढ़ापे में मंगर के शरीर का मांस और मांसपेशियाँ ही नहीं गलीं बल्कि उसकी हड्डियाँ तक सूख गईं थीं।

(ii) आज मंगर का शरीर केवल व्यंग्य चित्र के समान रह गया था।

(iii) मंगर ने कभी अन्न और धन का संग्रह नहीं किया।

(iv) लाठी बनना – सहारा होना।

(ख) (i) (क) मंगर के

(ii) (ग) मकोलिया

(iii) (घ) मेरा सिर दर्द कर रहा है।

(iv) (ग) मनावने करना

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) मंगर एक मजदूर किसान था।

(ख) मंगर जब बच्चों को मारने के लिए अपनी लकुटिया खोजता या खीझकर गालियाँ बकने लगता, तब बच्चे खिलखिलाकर हँसते थे।

(ग) मंगर लेखक के पिता का सम्मान, उनके अच्छे स्वभाव के कारण करता था।

(घ) लेखक जैसे-जैसे बड़ा होता गया, उसका अपने घर से संबंध टूटता गया।

(ड.) हमारे देश में किसानों के लिए पेंशन की व्यवस्था नहीं है।

(घ) बूढ़ा मंगर गिरता-पड़ता लेखक के दरवाजे तक पहुँचा।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) मंगर के मन में बच्चों के प्रति वितृष्णा इसलिए थी क्योंकि उसे जो एक बच्चा नसीब भी हुआ, वह कमाऊ पूत बनने से पहले ही, मृत्यु को प्राप्त हो गया।

(ख) एक दिन लेखक चाचाजी और मंगर में कहासुनी हो जाने पर लेखक के चाचा ने दूसरा हलवाला रख लिया। किन्तु बीते चार दिनों में ही उन्हें मंगर की अहमियत पता चल गई। उन्हें पता चल गया कि मंगर के बिना उनका काम नहीं चल सकता, इसलिए वे मंगर को मनाने के लिए गए।

(ग) आधी रोटी की बचत से लेखक का तात्पर्य है - मंगर को आधी रोटी अतिरिक्त मिलती थी। जहाँ गाँव-भर के हलवाहे को एक रोटी मिलती, वहीं मंगर के लिए सुअन्न की और अच्छी पकी हुई डेढ़ रोटी, तरकारी के साथ मिलती थी।

(घ) हलवाहा - हल चलाने वाले को कहा जाता है। बुढ़ापे में मंगर के शरीर का मांस और मांसपेशियाँ गल गई। हड्डियाँ तक सूख गई। उसका यह शरीर उस पुराने शरीर का केवल व्यंग्य चित्र रह गया था। मंगर बुढ़ापे के कारण हल चलाने में असमर्थ हो गया।

(ड.) एक दिन मंगर को आधे सिर में दर्द उठा, वह दर्द से तड़पकर चिल्ला उठा, उसकी दर्द भरी चीख सुनकर मकोलिया से रहा नहीं गया। उसने पड़ोस से दालचीनी लाकर उसे बकरी के दूध से पीसकर लेप बनाकर, मंगर के सिर और एक आँख पर लगा दिया, किन्तु यह लेप घातक सिद्ध हुआ। इससे उसके जलन होने लगी। यह जलन जख्म में बदल गई। इसी जख्म से उसकी एक आँख चली गई और वह काना हो गया।

(च) मंगर दूसरे हलवाहों की अपेक्षा अधिक हल जोतता था। जितनी देर में लोगों का हल दस कट्टा जोतता था, मंगर पंद्रह कट्टा जोत लेता था। मंगर अपनी सूझ-बूझ के बिना बताये ही सारे काम कर लेता था, वहीं दूसरे हलवाहों के पीछे किसान लट्ठ लेकर पड़े रहते, तब भी वे काम से जी चुराते, ढिलाई करते, आज का काम कल पर छोड़ते, लेकिन यह आदत मंगर में नहीं थी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) मंगर का हट्टा-कट्टा शरीर और उससे भी अधिक उसका सख्त कमाऊपन जिसमें उसकी ईमानदारी ने चार चाँद लगा दिए थे। जितनी देर में दूसरे हलवाहे दस कट्टा जोतते थे, मंगर पन्द्रह कट्टा जोत लेता और वह भी इतना महीन जोतता कि पहली चास में ही सिराऊ मुश्किल से मिलती। मंगर को कभी यह बताने की जरूरत नही है कि कल किस खेत में हल जाएगा। वह शाम को ही सारे खेतों के आर-पार घूम आता और जिसकी ताक होती, वहाँ हल लिए तड़के ही पहुँच जाता था। जुताई के वक्त किसी की देखरेख की भी जरूरत नहीं। मंगर कभी काम से जी नहीं चुराता और न ही किसी प्रकार की ढिलाई करता। वह आज का काम कल पर नहीं छोड़ता था। मंगर इतना ईमानदार था कि उसके भरोसे हरी फसल हो, पका अनाज या अन्न का ढेर अथवा पकी फसल को रखने का स्थान सब कुछ उस पर छोड़कर निश्चिंत होकर सोया जा सकता था।

(ख) लेखक के चाचाजी को एक दिन मंगर से किसी बात पर बहस हो गई जिसके कारण मंगर नाराज होकर काम पर नहीं गया और न ही चाचाजी ने उसे बुलावाया। उन्होंने दूसरा हलवाहा काम पर रख लिया, किन्तु चार दिन में ही चाचाजी को पता चल गया कि मंगर क्या है। मंगर की अनुपस्थिति में उनके बैलों के कंधे छिल गए, उनके पैरों में फाल लग गया। खेत में हल तो चला, लेकिन ढेला न हुआ, न मिट्टी मिली।

(ग) मंगर के चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

(i) हष्ट-पुष्ट – मंगर एक संपूर्ण सुविकसित मानव पुतले का उत्कृष्ट नमूना था। लगातार की मेहनत ने उसकी मांसपेशियों को स्वाभाविक ढंग से उभाड़ रखा था।

(ii) ईमानदार – मंगर बहुत ईमानदार हलवाहा था। वह अपना काम पूरी ईमानदारी से करता था। उसके भरोसे किसान अपनी पूरी पकी फसल, खलिहान, अन्न के ढेर सब ऐसे ही छोड़ देते थे।

(iii) मेहनती – मंगर बहुत मेहनती था। वह दूसरे हलवाहों की अपेक्षा ज्यादा खेत जोत लेता था और इतनी सफाई से जोतता था कि पहली जुताई में ही कहीं भी सिराऊ नहीं मिलता था।

(iv) स्पष्टवादी – मंगर ने कभी भी खुशामद और चापलूसी नहीं की। बस दो टूक बातें और दो-टूक व्यवहार यही स्वभाव था उसका।

(v) स्वाभिमानी व्यक्ति – मंगर एक स्वाभिमानी व्यक्ति था। वह किसी की सख्त बात कभी बर्दाश्त नहीं करता था। यही कारण था कि मालिक भी मंगर से अन्य हलवाहों की तरह गाली-गलौच देकर बात नहीं करता था। अपने इसी स्वाभिमान के कारण, वह अपनी बेटी के घर से वापस आ गया था।

(घ) मकोलिया मंगर की अर्धांगिनी और एक आदर्श जोड़ी थी। वह जमुनिया रंग की काली औरत थी। वह अपने पति का बहुत आदर और सेवा करती थी। जब मंगर बूढ़ा हो गया तब वह किसी के बच्चे खिलाकर, किसी का कूटान-पिसान करके, किसी का गोबर पाथकर, या किसी का पानी भर जो कुछ मिलता, उसमें से पहले मंगर को खिलाकर फिर स्वयं खाती थी। मकोलिया अपने दिनों में वह भी तमककर बोलती, झपटकर चलती न किसी को मुँह लगाती और न किसी की हेठी बर्दाश्त करती।

(ङ.) लेखक माघ महिने में एक दिन जब अपने घर आया तो अपनी आदत के अनुसार वह देर तक रजाई ओढ़े अपने बिस्तर पर लेटा हुआ था। तब उसे अचानक थोड़ी-थोड़ी देर पर कुछ गिरने की सी धम्म-धम्म की आवाज सुनाई देती है। आवाज को सुनकर, लेखक रजाई से अपना मुँह निकालकर देखता है कि यह किसकी आवाज आ रही है। वह देखता है कि एक अस्थिपंजर के जैसा दिखता हुआ मंगर, बार-बार खड़ा होने की कोशिश करता है और गिर जाता है। लेखक उसकी स्थिति देखकर चौंक जाता है। उसे फालिस मार गई थी। मंगर की ऐसी स्थिति देखकर लेखक की आँखों में पानी आ गया। बुढ़ापे और फालिस ने मंगर के शरीर की सारी शक्ति नष्ट कर दी, जिसके कारण वह अंतिम बार उठकर धड़ाम से कभी न उठने के लिए गिर पड़ा, उसकी मृत्यु हो गई। इस दृश्य को लेखक ने कहा है- कैसा करुण दृश्य!

पाठ से आगे

1. युवावस्था में कर्मठ और स्वाभिमानी व्यक्ति वृद्धावस्था में असहाय और उपेक्षित हो जाता है, यह एक आम सच्चाई है, ऐसा कई कारणों से होता है। बुढ़ापे में लोग शारीरिक रूप से कमजोर हो जाते हैं। उनकी गतिशीलता, ताकत और सहनशीलता कम हो जाती है, जिससे वे दैनिक कार्य करने में भी असमर्थ हो जाते हैं।

   इसलिए परिवार और समाज में युवा और सक्रिय व्यक्तियों को अधिक महत्त्व दिया जाता है। वृद्धावस्था में लोग अक्सर अपने बच्चों के लिए बोझ बन जाते हैं। जिससे वे उपेक्षित महसूस करते हैं। आज के समाज में, बुढ़ापे को एक बोझ माना जाता है। लोगों को ऐसा लगता है कि वृद्ध व्यक्ति उत्पादन नहीं करते और केवल धन और संसाधनों को खर्च करते हैं। यह दृष्टिकोण वृद्धावस्था में लोगों को उपेक्षित और असहाय बनाता है।

   युवावस्था में लोग अपने जीवन के लिए प्रयास करते हैं, लेकिन वृद्धावस्था में अपनी आर्थिक

स्थिति में गिरावट महसूस करते हैं। इस स्थिति में वे असहाय और उपेक्षित महसूस करते हैं।

2. छात्र स्वयं करें -

विविध

1. (क) × (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) × (ङ) ×
2. (क) अशक्त - शक्तिहीन - बुढ़ापे में पहलवान भी अशक्त हो जाते हैं।
   (ख) लकुटिया - छड़ी - एक्सीडेंट के बाद से वह लकुटिया लेकर चलता है।
   (ग) अर्धांगिनी - पत्नी - मकोलिया मंगर की अर्धांगिनी है।
   (घ) इजाफा - वृद्धि - आज रमेश की तनख्वाह में इजाफा हुआ।
   (ड.) हेठी - अकड़ - थोडा पैसा क्या आ गया, उसकी हेठी को आसमान छूने लगी।

व्याकरण बोध

1. (क) होश - बेहोश
   (ख) सौभाग्य - दुर्भाग्य
   (ग) अशक्त - सशक्त
   (घ) ईमानदारी - बेइमानी
   (ड.) स्वाभाविक - अस्वाभाविक
   (च) आधी - पूरी
   (छ) कच्चा - पक्का
   (ज) बचपन - बुढ़ापा

2. (क) नसीब
   - भाग्य — उसका नसीब हुत शानदार है।
   - प्राप्त होना — ऐसा परिवार नसीब से ही मिलता है।

   (ख) ताक
   - अपलक देखना - वह तस्वीर इतनी सुंदर थी कि मैं ताकता ही रह गया।
   - अवसर की प्रतिक्षा - वह तो इसी ताक में था कि राम कब अकेला हो और कब वह उसे पकड़े।

   (ग) हल
   - समाधान - गणित के सवालों को हल करने में रमेश को पसीना आ गया।
   - खेत जोतने का संसाधन - वर्तमान में ट्रेक्टर ने हल की प्रासंगिकता को कम कर दिया है।

   (घ) रास
   - गेहूँ का ढेर - जाने पर खेत में रास के ढेर लगे हुए हैं।
   - पसंद आना - आजकल उसे गाने सुनना बहुत रास आने लगा है।

   (ड) सोता
   - झरना - गाँव के पास ही एक सुंदर मीठे पानी का सोता बहता है।
   - सोना (क्रिया) - गर्मियों की छुट्टियों में वह सारे दिन बस सोता ही रहता है।

3. (क) और - राधा और मोहन साथ में घूमने जाते हैं।
   (ख) या - रमेश ने, या मोहन ने यह काम किया है।
   (ग) तथा - यह एक पुस्तक है तथा एक पेन।
   (घ) एवं - उसने भूगोल एवं विज्ञान दोनों विषय याद किए।
   (ड.) इसलिए - उसकी पुस्तक यहाँ रह गई थी, इसलिए वह यहाँ आया था।
   (च) अतएव - वाणी से कुछ भी हो सकता है, अतएव हमें सोच समझकर बोलना चाहिए।
   (छ) कि - खानसामे ने हमें बताया कि आप लोग खुशकिस्मत हो।

(ज) अत: – नैनीताल में बर्फ न मिली अत: हमने कौसानी जाने का निर्णय लिया।

(ण) क्योंकि – सभी मंगर पर पूरा विश्वास करते थे क्योंकि वह ईमानदार हलवाहा था।

4. (क) अब जब मंगर अशक्त, जर्जर हो चुका था।

(ख) मंगर का स्वाभिमान, गरीबों में भी स्वाभिमान? लेकिन मंगर की खूबी यह भी रही है।

(ग) फिर क्यों न उसकी कद्र की जाए?

(घ) लेकिन, आज न वह देवी रही, न वह कड़ाह रहा।

(ड.) और विपदा अकेली कब रही?

रचनात्मक गतिविधियाँ

1. खेतीहर मजदूर वे लोग हैं जो अपनी आय का स्त्रोत मुख्य रूप से दूसरों के खेतों और जमीनों पर काम करके प्राप्त करते हैं। वे दैनिक मजदूरी के लिए काम करते हैं।

खेतीहर मजदूर के कार्यों में मिट्टी की जुताई, किसी भी फसल या बागवानी उत्पाद को उगाना या काटना, तथा पशुधन, मधुमक्खियों, गायों, बकरियों आदि का प्रबंधन शामिल है। खेतिहर मजदूरों को अल्परोजगार और बेरोजगारी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वे साल के कुछ समय के लिए ही काम करते हैं और बाकी समय वे बेकार रहते हैं। सरकार ने इनकी स्थिति सुधारने के लिए कई कदम उठाए हैं –

जैसे – बंधुआ मजदूरी का उन्मूलन, न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, भूमिहीन मजदूरों का वितरण, एवं विभिन्न रोजगार योजनाएँ।

2. किसान

हेमन्त में बहुत घनों से पूर्ण रहता व्योम है।
पावस निशाओं में तथा हँसता शरद का सोम है।।
हो जाए अच्छी भी फसल, पर लाभ कृषकों को कहाँ।
खाते, खवाई, बीज ऋण से हैं रंगे रक्खे जहाँ।।
आता महाजन के यहाँ, वह अन्न सारा अन्त में।
अधपेट खाकर फिर उन्हें हैं काँपना हेमंत में।।
बरसा रहा है रवि अनल, भूतल तवा सा जल रहा।
है चल रहा सन-सन पवन, तन से पसीना बह रहा।।
देखो कृषक शोषित, सुखाकर हल तथापि चला रहे।
किस लोभसे आँच में, वे निज शरीर जला रहे।।
घनघोर बर्षा हो रही, है गगन गर्जन कर रहा।
घर से निकलने को गरज कर वज्र वर्जन कर रहा।।
तो भी कृषक मैदान में करते निरंतर काम हैं।
किस लोभ से वे आज भी, लेते नहीं विश्राम हैं।।
बाहर निकलना मौत है, आधी अँधेरी रात है।
है शांत कैसा पड़ रहा, और थरथराता गात है।।
तो भी कृषक ईंधन जलाकर, खेत पर हैं जागते।
यह लाभ कैसा है, न जिसका मोह अब भी त्यागते।।
सम्प्रति कहाँ क्या हो रहा है, कुछ न उनको ज्ञान है।
है वायु कैसी चल रही, इसका न कुछ भी ध्यान है।।
मानो भुवन से भिन्न उनका, दूसरा ही लोक है।
शशि सूर्य है फिर भी 'कहीं' उनमें नहीं आलोक है।।

मैथिलीशरण गुप्त

3. केन्द्र सरकार किसानों के लिए कई योजनाएँ चला रही है, जिनमें प्रमुख हैं –
   - प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना।
   - प्रधानमंत्री किसान मान धन योजना।
   - प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना।
   - एग्रीकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर फंड।

   इसके अलावा
   - राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन और हनी मिशन।
   - 10000 एफपीओ का गठन।
   - खाद्य तेल योजनाएँ।

17 कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

मौखिक प्रश्न

(क) जो लोग निरन्तर प्रयास करते रहते हैं, ऐसे लोग कभी असफल नहीं होते।

(ख) कवि लोगों को लगातार कोशिश करने के लिए बोल रहा है।

(ग) मोती नहीं मिलने पर गोताखोर दुबारा डुबकी लगाता है।

लिखित प्रश्न (अर्थ ग्रहण संबंधी)

(क) (i) लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती।
(ii) कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।
(iii) नौका समुद्र एवं नदी दोनों में चलती है।
(iv) नौका – नाव, नैया।

(ख) (i) चींटी दाना लेकर चलती है।
(ii) नहीं, चींटी एक ही बार में दीवार पर नहीं चढ़ पाती है।
(iii) चींटी अपने मन में विश्वास भरकर दीवार पर चढ़ती है।
(iv) रग – नस, नाड़ी।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) निरन्तर प्रयास करने वाले व्यक्ति सफल होते हैं।

(ख) नन्हीं चींटी दीवार पर दाना लेकर चढ़ती है।

(ग) सोहनलाल द्विवेदी।

(घ) गोताखोर मोती पाने के लिए समुद्र में बार-बार गोता लगाता है।

(ड.) कुछ किए बिना जय-जयकार नहीं होती।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) कोशिश करने वालों ने अपनी असफलताओं से अनेक महत्त्वपूर्ण सीखें प्राप्त की। अपनी असफलताओं से उन्हें यह पता चला कि असफलता केवल एक कदम है, जो उन्हें सफलता की ओर ले जाता है। वे अपनी गलतियों से सीखते हैं, जिससे उन्हें आगे बढ़ने और सुधार करने में मदद मिलती है। असफलता उन्हें धैर्य, मेहनत और निरंतरता का महत्त्व समझाती है।

(ख) नहीं, चींटी अपने पहले प्रयास में सफल नहीं होती है। वह दीवार पर चढ़ने के क्रम में अनेक बार फिसलती है, किन्तु बार-बार गिरने पर भी चढ़ना बंद नहीं करती है और अंतत: वह दाना लेकर दीवार पर चढ़ जाती है।

(ग) पहली बार में मोती न मिलने पर, गोताखोर निराश होने के स्थान पर दुगने उत्साह के साथ और अधिक गहरे पानी में गोता लगाता है।

(घ) गोताखोर जब दुगने उत्साह के साथ डुबकी लगाता है तो वह गहरे पानी में जाकर मोती निकालने में सफल हो जाता है।

(ड) कवि ने असफलता को एक चुनौती के रूप में लेने की बात कही है। अपनी असफलता का कारण पता करके उसे दूर करने और उसमें सुधार करने के लिए कहता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) इस कविता में कोशिश करने से सफलता प्राप्त करने का संदेश मिलता है। जीवन संघर्ष का दूसरा नाम है हार जाना या हार जाने के भय से कोशिश करना नहीं छोड़ना चाहिए। जीवन में असफलताओं को एक चुनौती के रूप में लेकर, उनसे सीखते हुए और अपनी कमियों में सुधार करते हुए कोशिश करने की बात कही गई है। कविता का मूल भाव है कि जो व्यक्ति असफल होने पर भी प्रयास करना नहीं छोड़ता है, वह अंतत: सफल अवश्य होता है।

(ख) चींटी के माध्यम से कवि हमें यह सिखाना चाह रहा है कि एक नन्हीं सी चींटी अपने वजन से कई गुना ज्यादा वजन वाले दाने को लेकर दीवार पर चढ़ती है और अनेक बार फिसलती है, लेकिन हार नहीं मानती। अंतत: वह अपनी मंजिल तक पहुँच ही

जाती है। चींटी का कठोर परिश्रम और निरन्तर प्रयास उसे सफलता दिलाते हैं। इसी प्रकार मनुष्य को भी असफलता से निराश होने के स्थान पर निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। उसका कठिन परिश्रम बेकार नहीं जाएगा।

(ग) गोताखोर की सफलता का रहस्य निरंतर प्रयास करना और आत्मविश्वास है। गोताखोर बार-बार गहरे पानी में जाता है क्योंकि गोताखोर को विश्वास और मोती मिलने की संभावना है। उसे अनेक बार खाली हाथ वापस आना पड़ता है लेकिन वह अपनी असफलताओं से निराश नहीं होता और अपनी मेहनत जारी रखता है। गोताखोर असफलता से सीखकर अधिक प्रयास करता है और अंततः मोती लेकर ही लौटता है।

(घ) भाव- व्यक्ति के मन में यदि आत्मविश्वास और दृढ़ निश्चय है तब वह किसी भी मुश्किल और समस्या का सामना करने के लिए तैयार रहता है। यही विश्वास हमें असफलताओं के कारण उत्पन्न होने वाले नकारात्मक विचारों और शंकाओं से दूर रखता है। यह डर और झिझक को दूर करके, लक्ष्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है। जब हम विश्वास से भर जाते हैं, तो यह हमारे अंदर एक मजबूत भावना पैदा करता है, जिससे हम प्रत्येक मुसीबत का सामना करने के लिए तैयार हो जाते हैं और अपने जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं।

(ड) कविता में यह शिक्षा निहित है कि जीवन एक संघर्ष है। इस संघर्ष से हार मानकर मनुष्य को भागना नहीं चाहिए। जीवन में आने वाली असफलताओं का साहस के साथ सामना करना चाहिए। जब कभी किसी कार्य में असफलता प्राप्त हो तो उसे चुनौती समझकर उत्साह के साथ स्वीकार करना चाहिए। न कि उससे डरकर या हारकर कोशिश करना छोड़ देना चाहिए। इसके विपरीत जब तक हमें उस कार्य में सफलता न मिल जाए तब तक लगातार कोशिश करनी चाहिए। क्योंकि प्रयास करने वालों की कभी हार नहीं होती, उन्हें एक न एक दिन सफलता अवश्य मिलती है।

(च) सीख - व्यक्ति को असफलता से कभी घबराना नहीं चाहिए। असफलता को एक चुनौती के रूप में लेना चाहिए। जब तक सफलता नहीं मिल जाती सुख चैन नहीं लेना चाहिए। व्यक्ति को कभी भी संघर्ष करना नहीं छोड़ना चाहिए। दुनिया में उसी की जय होती है जो कुछ करके दिखाते हैं। कोशिश करने वाले कभी हारते नहीं हैं। उन्हें सफलता अवश्य मिलती है।

कविता से आगे

1. एक युवा चित्रकार था। वह बहुत प्रतिभाशाली था, किन्तु वह अपनी असफलताओं से जल्दी हार मान लेता था। वह कभी भी अपने बनाए चित्रों से संतुष्ट नहीं होता था। अच्छे चित्र न बना पाने के कारण उसे लगने लगा था कि वह शायद कभी अच्छा चित्रकार नहीं बन जाएगा। एक दिन उस चित्रकार के मन में विचार आया कि वह नए तरीके का प्रयोग करके अपने चित्र बनाएगा और एक सफल चित्रकार बनेगा। शुरू में जब उसने उस नए तरीके से चित्र बनाने की कोशिश की तो वह बहुत खराब बना। उसे शुरूआत में बहुत से संघर्षों का सामना करना पड़ा। किन्तु उसने हार नहीं मानी। उसने अपनी गलतियों से सीखा और उसमें सुधार करता चला गया। उसके दिन-रात प्रयास करने का परिणाम यह हुआ कि एक दिन उसने एक अद्‌भुत चित्र बनाया, जिसने उसे सर्वश्रेष्ठ चित्रकारों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया।
2. एक बार गणित विषय का सवाल हल करते हुए मुझे बहुत मुश्किलें आईं। यद्यपि अध्यापिका ने उसे हल करने का तरीका भी समझाया था, तदापि जब भी मैं उसे हल करने की कोशिश करता वह गलत हो जाता।

कहीं न कहीं कोई सूत्र रह जाता। किंतु मैंने ठान लिया था कि मैं बिना किसी सहायता के स्वयं ही कोशिश करके उस सवाल का हल करूँगा। मैंने अनेक बार प्रयास किया और अंततः उस सवाल को हल करने में सफल हो गया।

विविध

1. (क) × (ख) ✓ (ग) × (घ) × (ङ) ✓
2. (क) नन्हीं सी चींटी जब दाना लेकर चलती है, चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है।
   (ख) मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में, बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में।
   (ग) जब तक न सफल हो, नींद चैन की त्यागो तुम। संघर्ष का मैदान छोड़कर मत भागो तुम। कुछ किए बिना ही जय-जयकार नहीं होती, कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

व्याकरण बोध

1. (क) हार-जीत
   (ख) खाली - भरा
   (ग) सहज - असहज
   (घ) उत्साह - निरुत्साह
   (ङ) असफलता - सफलता
   (च) स्वीकार - अस्वीकार
2. (क) हार - पराजय
   (ख) कोशिश - प्रयास
   (ग) सिंधु - सागर
   (घ) नौका - नैया
   (ङ) असफलता - विफलता
   (च) सफलता - कामयाबी
   (छ) चुनौती - ललकार
   (ज) संघर्ष - द्वन्द्व
3. **(क) हार** -
   (i) गले में पहनने का आभूषण - सीता के गले में सोने का हार है।
   (ii) हारना (एक क्रिया) - पाकिस्तान आज भारत से फिर हार गया।

   (ख) मन -
   (i) वजन तौलने की इकाई - राम तो खा-खाकर मन भर का हो गया है।
   (ii) चित्त - आजकल नेहा का मन किसी काम में नहीं लगता।

   (ग) भाग -
   (i) सहयोग करना - कोई भी काम हो राघव बढ़-चढ़ कर हर काम में भाग लेता है।
   (ii) भागना (एक क्रिया) - पुलिस को देखकर चोर भाग गया।
4. (क) कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती
   (ख) नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है।
   (ग) चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है।
   (घ) जा-जाकर खाली हाथ लौटकर आता है।
   (ङ) कुछ किये बिना ही जय-जयकार नहीं होती।

रचनात्मक गतिविधियाँ

- 124, विकास नगर,
  लखनऊ - 75
  दिनांक : 09/03/20....
  प्रिय राजेश,
  कैसे हो, आशा करता हूँ कि तुम सशकुशल होंगे। कल ही चाचाजी का पत्र मिला, जिससे यह ज्ञात हुआ कि तुम वार्षिक परीक्षा में असफल हो गए हो और इस असफलता से तुम निराशा से घिर गए हो। मुझे भी तुम्हारी असफलता का दु:ख है। मित्र आज मैं तुम्हें बताता हूँ कि 'असफलता ही सफलता की कुंजी' है। असफलता एक ऐसा शब्द है जिसमें से अगर सिर्फ 'अ' हटा दिया जाए तो सफलता बन जाता है। यानि हमारी मेहनत जिसमें थोड़ी सी कमी रही गई थी, जिसका परिणाम हमारी असफलता बनी। इतिहास साक्षी है कि सफलता हमेशा उसी की सहभागी बनी है जिसने अनवरत प्रयास किए

हैं। हर सफल व्यक्ति कभी न कभी असफल जरूर हुआ होगा।

असफल हो जाने पर निराशावादी बन जाना ठीक नहीं है, अत: मैं चाहता हूँ कि तुम भी निराशा छोड़कर पुन: परीक्षा की तैयारी करो, साथ ही पहले जिन कमियों के कारण तुम्हें असफलता मिली, उन पर अच्छी तरह से प्रयास करो।

आशा है कि तुम मेरी सलाह अवश्य मानोगे।

तुम्हारा अभिन्न मित्र

राहुल

- मोहन: हैलो किशन! कैसी चल रही है तैयारी? लगता है ये परीक्षा बहुत कठिन होने वाली है।

  किशन: हाय मोहन! तैयारी तो ठीक-ठाक चल रही है, लेकिन थोड़ी चिन्ता भी है।

  मोहन: चिंता कैसी? यदि सफलता प्राप्त करनी है, तो इसके लिए कड़ी मेहनत जरूरी है।

  किशन: आपको लगता है कि बार-बार प्रयास से कैसी भी परीक्षा आसानी से पास की जा सकती है।

  मोहन: हाँ, बिल्कुल कड़ी मेहनत और लगातार प्रयास ही सफलता की कुंजी है। ये ही हमारे लक्ष्य तक पहुँचने का रास्ता सुगम बनाते हैं।

  किशन: किन्तु मैंने सुना है कि कुछ लोग बिना परिश्रम किए ही सफल हो जाते हैं।

  मोहन: ऐसा कुछ एक के साथ ही होता है, जिनका भाग्य मेहनत से ज्यादा उनका साथ दे देता है। अन्यथा कड़ी मेहनत और प्रयास के द्वारा ही सफलता प्राप्त की जाती है।

  किशन: ठीक है, लेकिन क्या हो अगर हम बहुत मेहनत और प्रयास करें, फिर भी हम असफल हो जाते हैं।

  मोहन: तब भी हमें धैर्य रखने और कोशिश करते रहने की जरूरत है। सफलता रातों-रात नहीं मिलती। सफलता न मिलने तक निरन्तर प्रयास करना चाहिए और अपनी असफलताओं से सीख लेनी चाहिए।

  किशन: धन्यवाद मोहन! मुझे प्रयास और असफलता का महत्त्व समझाने के लिए। अब मैं परीक्षा के तैयारी में बहुत अधिक प्रयास करूँगा और असफलता से डरूँगा नहीं।

  मोहन: यह हुई न बात। चलो अपनी-अपनी तैयारी करें।

- **वीर**

सच है, विपत्ति जब आती है,
कायर को ही दहलाती है,
सूरमा नहीं विचलित होते,
क्षण एक नहीं धीरज खोते,
विध्नों को गले लगाते हैं,
काँटों में राह बनाते हैं।

मुँह से न उफ कहते हैं,
संकट का चरण न गहते हैं,
जो आ पड़ता सब सहते हैं,
उद्योग-निरत नित सहते हैं?
शूलों का मूल नसाते हैं,
बढ़ खुद विपत्ति पर छाते हैं।

हे कौन विध्न ऐसा जग में,
टिक सके आदमी के मग में,
खम ठोंक ठेलता है जब नर,
पर्वत के जाते पाँव उखड़,
मानव जब जोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है।

गुन बड़े एक से एक प्रखर,
हैं छिपे मानवों के भीतर,
मेंहदी में जैसी लाली हो,
वर्तिका-बीच उजियाली हो,
बत्ती जो नहीं जलाता है,
रोशनी नहीं वह पाता है।

रामधारी सिंह 'दिनकर'

- **नर हो, न निराश करो मन को**

नर हो न निराश करो मन को,
कुछ काम करो, कुछ काम करो,

जग में रहकर कुछ नाम करो,
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो,
समझो जिससे यह व्यर्थ न हो,
कुछ तो उपयुक्त करो तन को,
नर हो, न निराश करो मन को।

सँभलो कि सुयोग न जाए चला,
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला,
समझो जग को न निरा सपना,
पथ आप प्रशस्त करो अपना,
अखिलेश्वर है अवलंबन को,
नर हो, न निराश करो मन को।

जब प्राप्त तुम्हें सब तत्त्व यहाँ,
फिर जा सकता वह सत्त्व कहाँ,
तुम स्वत्त्व सुधा रस पान करो,
उठके अमरत्व विधान करो,
दवरूप रहो भव कानन को
नर हो, न निराश करो मन को।

निज गौरव का नित ज्ञान रहे,
हम भी कुछ हैं यह ध्यान रहे,
मरणोत्तर गुंजित गान रहे,
सब जाय अभी पर मान रहे,
कुछ हो न तजो नित साधन को,
नर हो, न निराश करो मन को।

प्रभु ने तुमको कर दान किए,
सब वांछित वस्तु विधान किए,
तुम प्राप्त करो उनकी न अहो,
फिर है यह किसका दोष कहो,
समझो न अलभ्य किसी धन को,
नर हो, न निराश करो मन को।

किस गौरव के तुम योग्य नहीं,
कब कौन तुम सुख भोग्य नहीं,
जान हो तुम भी जगदीश्वर के,
सब हैं जिसके अपने घर के,
फिर दुर्लभ क्या उसके जन को,
नर हो, न निराश करो मन को।

करके विधि वाद न खेद करो,
निज लक्ष्य निरन्तर भेद करो,
बनता बस उद्यम ही विधि है,
मिलती जिससे सुख की निधि है
समझो धिक् निष्क्रिय जीवन को
नर हो, न निराश करो मन को।
कुछ काम करो, कुछ काम करो।

मैथिलीशरण गुप्त

18 साइकिल की सवारी

मौखिक प्रश्न

(क) उपर्युक्त पाठ में साइकिल को सीखने का वर्णन किया गया है।

(ख) लेखक साइकिल चलाने और हारमोनियम बजाने में फिसड्डी था।

(ग) श्रीमती जी ने कहा ''कपड़ों में अब जान ही कहाँ है जो मरम्मत करूँ। ये तो फेंक दिये थे, कहाँ से उठा लाए? वहीं जाकर डाल आइए।''

(घ) लेखक साइकिल सीखने की जल्दबाजी में उल्टा पजामा और अचकन पहनकर ही घर से निकल गए थे, मार्ग में जब उन्हें देखकर लोग हँसने लगे, तब वह बिना साइकिल सीखे ही घर वापस लौट गए।

(ङ) पाठ का नाम साइकिल की सवारी व पाठ के लेखक का नाम सुदर्शन है।

लिखित प्रश्न (अर्थ ग्रहण संबंधी)

(क) (i) लेखक जब भी किसी को साइकिल की सवारी करते या हारमोनियम बजाते देखता है, तो उसे स्वयं पर दया आती है।

(ii) भगवान ने ये दो विद्याएँ बनाई हैं पहली साइकिल चलाना, जिससे समय बचता है और दूसरी हारमोनियम बजाना, जिससे समय कटता है।

(iii) लेखक ने साइकिल चलाने और हारमोनियम बजाने को कलयुग की दो विद्याएँ कहा है।

(iv) लेखक के मन में यह धारणा घर कर गई कि वह सब कुछ कर सकता है लेकिन ये दोनों काम नहीं कर सकता है।

(ख) (i) (क) पुराने कपड़े
(ii) (ख) मिस्त्री से
(iii) (क) लारेंस बाग की ओर
(iv) (घ) 'ख' और 'ग' दोनों

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) लेखक साइकिल चलाने और हारमोनियम बजाने में पारंगत नहीं था।

(ख) लेखक के अनुसार साइकिल चलाना और हारमोनियम बजाना कलयुग की विद्याएँ हैं।

(ग) लेखक साइकिल सीखने के लिए उत्सुक था।

(घ) साइकिल सीखने के लिए बीस रुपये तय हुए।

(ङ) लेखक अपनी साइकिल में जिस ताँगे के नीचे आया था, उस पर लेखक की पत्नी और बच्चे सवार थे।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) लेखक के पुत्र ने उससे छुपकर साइकिल चलाना सीख लिया और उसके सामने साइकिल पर सवार होकर निकलने लगा, यह देखकर लेखक को अपने पुत्र से शर्म आ रही थी।

(ख) लेखक अपने पुत्र के सामने स्वयं को लज्जित महसूस नहीं करना चाहता था, अत: उसने साइकिल चलाना सीखने का निश्चय किया।

(ग) लेखक ने अपनी पत्नी को पुराने कपड़ों की मरम्मत करने के लिए तर्क दिया कि रोज-रोज ताँगे के किराए के पैसे बचाने के लिए उसने साइकिल सीखने का निश्चय किया है।

(घ) लेखक ने साइकिल सीखने से पहले फटे-पुराने कपड़े, मरहम के डिब्बे, साइकिल और एक खुले मैदान का प्रबंध किया।

(ङ) साइकिल सीखने के अंतिम दिन लेखक की साइकिल के सामने एक ताँगा आ गया, लेखक ने ताँगे वाले को बांयी ओर होने को कहा, लेकिन दुर्भाग्यवश ताँगा साइकिल के सामने ही आ गया और लेखक अपनी साइकिल सहित ताँगे के नीचे आकर बेहोश हो गया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) साइकिल चलाना सीखने के विषय में लेखक का विचार था कि वह कभी साइकिल चलाना नहीं सीख सकता है। लेखक के अनुसार साइकिल चलाना और हारमोनियम चलाना दो ऐसी विद्याएँ जो उसे नहीं आती हैं और न ही वह इन्हें सीख सकता है। वह सोचता है कि भगवान ने ये दो विद्याएँ भी खूब बनाई हैं एक से समय बचता है, दूसरी से समय कटता है। मगर दुर्भाग्य से कलयुग की ये दोनों विद्याएँ नहीं लिखी गईं। वह न तो साइकिल चला सकता है और न बाजा ही बजा सकता है।

(ख) लेखक की पत्नी, उसके साइकिल चलाना सीखने के विषय में सोचती थी कि लेखक साइकिल चलाना नहीं सीख सकता है, लेकिन फिर भी वह चाहती थी कि वह एक बार कोशिश भी अवश्य करके देखे। एक ओर उन्हें लेखक के इस नए लक्ष्य को लेकर उत्साह था, लेकिन दूसरी ओर उन्हें चिंता भी थी। वे डरती थीं कि लेखक को साइकिल चलाना सीखने के दौरान चोट भी लग सकती है। इसलिए वह लेखक को साइकिल चलाने से रोकने की कोशिश करती हैं क्योंकि उन्हें लगा था कि लेखक को साइकिल चलाना नहीं आएगा।

(ग) लेखक जब पहले दिन साइकिल सीखने के लिए घर से निकला ही था कि बिल्ली उसका रास्ता काट गई। कुछ दूरी पर आगे बढ़ते ही एक लड़के ने छींक दिया। इतना होने पर भी लेखक भगवान का नाम लेकर आगे निकल पड़ा। जैसे ही वह बाजार में पहुँचा, तो लोग उसे देखकर मुस्कुराने लगे,

यह देखकर लेखक का ध्यान अपने कपड़ों पर गया। उसने पाया कि वह जल्दबाजी में उल्टी अचकन और पजामा पहन आया है। यह देखकर वह पहले दिन बिना साइकिल सीखे उल्टे पैर घर आ गए।

दूसरे दिन रास्ते में उस्ताद साहब का मन लस्सी पीने का हुआ। वे साइकिल लेखक को थमाकर लस्सी पीने लगे। साइकिल हाथ में पकड़े-पकड़े लेखक का मन हुआ और वह साइकिल का हैंडल पकड़कर चलने लगा। अभी कुछ दूर चला ही था कि साइकिल असंतुलित होकर लेखक के पैर पर गिर पड़ी और लेखक दर्द से चिल्ला उठा। उसकी आवाज सुनकर कुछ लोगों ने मिलकर लेखक का पाँव साइकिल से निकाला। इस प्रकार लेखक दूसरे दिन भी बिना साइकिल सीखे और घायल होकर घर लौट आया।

(घ) कहानी में साइकिल लेखक के लिए सिर्फ एक कौशल नहीं बल्कि आत्मविश्वास और साहस की एक नई उपलब्धि है। वह अनेक कठिनाइयों के बावजूद हार नहीं मानता और अपनी कमजोरियों पर विजय प्राप्त करता है। साइकिल सीखने की शुरूआत में लेखक बिना योजना और संयम के साथ निकलता है जिसके कारण उसे पहले दिन हँसी का पात्र बनना पड़ता है और दूसरे दिन वह जल्दबाजी करने के चक्कर में स्वयं को चोट लगा बैठता है। वह साइकिल सीखने के लिए अनेक तैयारियाँ करता है। इन सभी बातों से हमें यह शिक्षा मिलती है कि बिना योजना और संयम के किसी भी कार्य में सफलता नहीं मिलती है और न केवल तैयारी से ही सफलता मिलती है, बल्कि धैर्य और सही समझ के साथ प्रयास करने से और योजना को सही तरीके से लागू करने पर ही सफलता मिलती है। साथ ही लेखक का साहस और प्रयास प्रेरणादायक है। यह पाठ हमें असफलता के बावजूद प्रयास करते रहने का संदेश देता है।

पाठ से आगे

जिसका काम उसी को साजे

पुराने समय की बात है काशीनगरी में कर्पूरपटक नामक धोबी ने एक कुत्ता और गधा पाल रखे थे। एक रात जब धोबी सुख की नींद सो रहा था कि उसे गहरी नींद में सोया देख आधी रात को एक चोर उसके घर में घुसा। गधे और कुत्ते दोनों ने चोर को अंदर घुसते देख लिया। जब कुत्ता चोर को देखकर भी नहीं भौंका तो गधे ने उससे कहा 'मित्र! हमारे मालिक के घर में चोर घुस आया है। तुम्हारा कर्त्तव्य है कि तुम जोर से भौंक कर मालिक को जगा दो। नहीं तो चोर उनका सामान लूट कर ले जाएगा। इस समय तुम अपना फर्ज निभाओ।' गधे की बात पर कुत्ते ने खीझकर उत्तर दिया, 'मित्र! तुम मुझे मेरा फर्ज मत समझाओ। मैं सब जानता हूँ। तुम्हें पता है न कि मैं दिन-रात मालिक के घर की रखवाली करता हूँ।'

गधा बोला, तो फिर अब क्यों नहीं कर रहे? कुत्ते ने जबाव दिया, इसलिए कि मालिक मेरा ध्यान नहीं रखता। मुझे कभी अच्छा खाना नहीं देता है और न ही समय पर खाना देता है। जब तक इसकी कोई हानि नहीं होगी यह मेरी कद्र नहीं जानेगा। नुकसान होने के बाद ही यह मेरी अहमियत समझेगा।

कुत्ते की बात पर गधा आग-बबूला होकर बोला, तुम बड़े मूर्ख और स्वार्थी हो! जो नौकर काम करने से पहले अपनी माँग रखता है, वह कभी भी अच्छा व वफादार नौकर नहीं माना जाता और जो मालिक अपने काम के लिए ही नौकर से मतलब रखे? कुत्ते ने तपाक से कहा, ''वह मालिक क्या अच्छा होता है? वह बहुत बुरा होता है जो मालिक अपने आश्रय में रहने वाले नौकरों का पेट पालन भी ढ़ंग से नहीं करता। केवल घर में रखने, टुकड़ा रोटी देने से कोई मालिक नहीं हो जाता। मालिक को भी अपने नौकर का पूरा ध्यान रखना होता है। समझे।

यह सुनकर गधा और भी नाराज होकर बोला, तुम मुसीबत के समय में अपने फर्ज से मुँह

मोड कर अपने स्वार्थ की पूर्ति करना चाहते हो। यदि तुम भौंक कर मालिक को नहीं जगाते हो, तो मुझे ही कुछ करना पड़ेगा। यह बोलकर गधा पूरे जोर से रेंकने लगा। आधी रात का रेंकना सुनकर धोबी की नींद खराब हो गई और वह जाग गया। धोबी को जागा हुआ देखकर चोर छिपकर भाग गया। गधा अभी भी लगातार रेंके जा रहा था। उसका रेंकना सुनकर धोबी को बहुत तेज गुस्सा आया। उसने एक डण्डा उठाया और गधे को जोर-जोर से पीटने लगा। इधर वह कुत्ता दूर बैठा गधे को पिटते देखकर उसकी मूर्खता पर मन ही मन हँस रहा था।

ठीक ही कहा गया है कि चाहे किसी के उपकार का ही काम क्यों न हो किसी पराये काम को अपने हाथ में लेने वाला मूर्ख ही होता है। इसलिए कहते हैं कि जिसका काम उसी को साजे दूजा करे तो डण्डा बाजे।

विविध

1. (क) × (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) × (ङ) ✓
2. (क) श्रीमती जी ने हमारी तरफ अचरज भरी दृष्टि से देखा।
   (ख) घर में किसी को कानों-कान खबर न हो और हम साइकिल सवार बन जाएं।
   (ग) पत्नी से झगड़ा तो नहीं हो गया?
   (घ) तिवारी जी और उस्ताद ने हमें तसल्ली दी।
   (ड) यह सब तिवारी जी की शरारत है।
3. (क) परमात्मा - ईश्वर - परमात्मा बड़ा ही दयालु है।
   (ख) झख मारना - विवश होकर - वह बड़ा शेखी बखारता हुआ गया था यहाँ से आखिर में झख मारकर वापस आना ही पड़ गया।
   (ग) मरहम - चोट पर लगाए जाने वाली दवा - लेखक ने मरहम के दो डिब्बे खरीदे।
   (घ) चेतावनी - सावधान करना - पुलिस ने चोर को पहले चेतावनी दी, फिर हवा में फायर किया।
   (ड) इलजाम - दोषारोपण - लेखक ने सारा इलजाम तिवारी जी पर लगा दिया।

व्याकरण बोध

1. (क) भाग्य - दुर्भाग्य
   (ख) क्रोधपूर्ण - क्रोधरहित
   (ग) धर्म - अधर्म
   (घ) वीर - कायर
   (ड) हार - जीत
   (च) बुरा - भला
2. (क) प्रिंसिपल - प्रधानाध्यापक
   (ख) प्रशिक्षण - क्रियात्मक अभ्यास
   (ग) फीस - शुल्क
   (घ) हैंडल - हत्था, जिसे पकड़कर साइकिल चलाते हैं।
   (ड) मास्टर - अध्यापक
3. (क) फिसड्डी - लड़का
   (ख) शरीफ - इंसान
   (ग) नरम - गद्दा
   (घ) पुराने - कपड़े
   (ड) खुला - मैदान
4. (क) कानों-कान खबर न होना - मोहन ने अपना मकान बेच दिया और घरवालों को कानों-कान खबर भी न हुई।
   (ख) झख मारना - शहर की परिस्थितियों से तालमेल न बैठा पाने के कारण रमेश को झख-मारकर गाँव वापिस आना पड़ा।
   (ग) आँखें फाड़कर देखना - वह इतनी तेज साइकिल चलाता है कि लोग उसे आँखें फाडकर देखते रह जाते हैं।
   (घ) मैदान मारना - परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर रमा ने तो मैदान मार लिया।
   (ड) प्राण सूखना - सरकस में शेर का पिजड़ा खुला देखकर दर्शकों के प्राण सूख गए।

रचनात्मक गतिविधियाँ

(क) छात्र स्वयं करें।

(ख) प्रिय मित्र

मुकेश

उम्मीद है आप ठीक होंगे। मित्र मैं अपने इस पत्र के माध्यम से अपनी साइकिल सीखने के विषय में बताना चाहता हूँ। मैंने हाल ही में साइकिल चलाना सीखा है। वास्तव में साइकिल चलाना अपने आप में एक अद्‌भुत प्रक्रिया है और इसे सीखना मेरे लिए अद्‌भुत अनुभव रहा।

आरंभ में तो मैं बहुत घबराया हुआ था। मुझे डर था कि मैं गिर जाऊँगा, हो सकता है गंभीर चोटें भी लग जाएँ, लेकिन कुछ अभ्यास और धैर्य के साथ मे लगातार प्रयास करता रहा। एक-दो बार गिरा भी किंतु मैंने डरकर साइकिल सीखना नहीं छोड़ा। अब मैं बिना गिरे और बिना डरे सहजता से साइकिल चला लेता हूँ।

मित्र साइकिल चलाना एक मजेदार गतिविधि के साथ-साथ बहुत ही फायदेमंद व्यायाम भी है। अत: मैं तुम्हें भी साइकिल चलाना सीखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता हूँ। तुम भी थोड़े से अभ्यास और धैर्य के साथ साइकिल चलाना सीख सकते हो।

मुझे उम्मीद है कि तुम भी साइकिल चलाना सीखोगे और इसका आनंद लोगे।

तुम्हारा मित्र

रूपेश

19 दान-बल

मौखिक प्रश्न

(क) दान-बल कविता के अन्तर्गत दान का महत्त्व प्रतिपादित किया गया है।

(ख) अपने दिए हुए दान को हम स्वत्व का त्याग मान लेते हैं।

(ग) कवि ने दान को प्रकृत धर्म माना है।

(घ) हमें जीवन में दान अवश्य करना चाहिए।

लिखित प्रश्न (अर्थ ग्रहण संबंधी)

(क) (i) जीवन का अभियान दान बल से चलता है।

(ii) किसी के प्रति प्रेम जितना अधिक जलता है, प्रेम उतना अधिक बढ़ता जाता है।

(iii) व्यक्ति हँसकर अथवा रोकर दान करता है।

(iv) व्यक्ति हँसकर अथवा रोकर जो दान करता है, उसे अहंकार के वशीभूत होकर अपना त्याग मान लेता है।

(ख) (i) (ग) प्रकृति का

(ii) (क) दान देने से

(iii) (ग) जो दान करने में संकोच नहीं करता है।

(iv) (क) रामधारी सिंह दिनकर

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) कवि - रामधारी सिंह दिनकर, कविता - दान-बल

(ख) ऋतु के बाद फलों का डाली पर ही लगे रहने को डाली का सड़ना माना गया है।

(ग) वृक्ष फलों का और नदी जल का दान करते हैं।

(घ) जिन्हें ऋतु का ज्ञान नहीं होता वह देकर भी मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

(ड) यदि व्यक्ति दान के भावों से खुद को मुक्त रखता है, तब वह मृत्यु से पहले मरा हुआ माना जाता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) व्यक्ति जब हँसकर या रोकर दान देता है तब वह अपनी अहंकार की भावना के कारण उसे स्वत्व का त्याग मान लेता है।

(ख) अनुकूल समय (ऋतु) के बीत जाने पर वृक्ष पर लगे फल सड़ जाते हैं, इसलिए वृक्ष अपने फलों का त्याग कर देते हैं, ताकि उसके रेशों में कीड़े न लग जाएँ, उसकी

डालियाँ स्वस्थ रहें और उस पर नए फल आते रहें।

(ग) नदियाँ और बादल एक-दूसरे को पानी देते रहते हैं। नदियों के जल से पत्ते हरे-भरे रहते हैं जिसके कारण जल भाप बनकर बादल के रूप में बरसकर नदी को पुन: जल से भर देता है। जिससे संसार को नया जीवन मिल सके।

(घ) भाव - कवि कहते हैं कि वृक्ष इसलिए अपने फलों का त्याग कर देते हैं जिससे उसकी डालियों में कीड़े न लगें और वे स्वस्थ रहें। जिससे उन पर समय-समय पर फल लगते रहें।

(ड) जीवन का झरना दान को कहा गया है क्योंकि झरना निरंतर बहने और गतिमान रहने का प्रतीक है, झरने के समान हमें भी जीवन को गतिमान करने के लिए दान करना चाहिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) दान अहंकार में जब बदल जाता है जब मनुष्य दान को अपना त्याग मान लेता है। किसी भी प्रकार का दान करते समय जब व्यक्ति को यह लगता है कि दान करना उसका त्याग है। इसी त्याग की भावना के कारण व्यक्ति में अहम की भावना आ जाती है। जबकि दान एक प्रक्रिया है जो जीवन में गतिशीलता लाती है। दान से जीवन रूपी ज्योति बढ़ती है परन्तु व्यक्ति अहंकार की भावना में पड़कर दान को अपना त्याग समझता है जबकि दान प्रकृति का धर्म है।

(ख) दान को जीवन का प्रकृत धर्म कहा गया है। कवि के अनुसार जिस प्रकार प्रकृति बिना किसी त्याग की भावना के अपना सर्वस्व दान कर देती हैं। जैसे - वृक्ष अपने फलों का दान कर देते हैं और नदियाँ अपना जल वनों को अर्पित कर देती हैं, जिससे वन हरे-भरे रहते हैं तथा वनों के हरियाली से ही बादल छाते हैं और वर्षा के द्वारा दुबारा नदियों को जल से भर देते हैं। इस प्रकार जैसे प्रकृति बिना किसी अहम की भावना के दान करती है, उसी प्रकार व्यक्ति को भी दान करना चाहिए क्योंकि दान प्रकृति से उत्पन्न धर्म हैं।

(ग) इस कविता में कवि ने दान के महत्त्व का वर्णन किया है। प्रकृति का कार्य-व्यापार दान पर चलता है। प्रकृति अपना सर्वस्व बिना किसी स्वार्थ के दान कर देती है। जैसे नदियाँ अपना जल वनों को दे देती हैं। यही जल भाप बनकर बादल के रूप में बरसकर पुन: नदियों को जल से भर देता है। वृक्ष अपने फलों का त्याग कर देते हैं जिससे उसके फलों के बीजों से नए पौधे उत्पन्न हो सकें और वृक्ष की डालियाँ भी स्वस्थ रहें। इसी प्रकार मनुष्य को भी त्याग की भावना को ग्रहण करके दान करना चाहिए। दान करना स्वाभाविक धर्म है, जिससे मनुष्य व्यर्थ में डरता है। अन्त में मरने पर भी सब दान कर दिया जाता है, अत: मनुष्य को अपने जीवन काल में ही दान करना चाहिए।

कविता से आगे

- दान करना एक बहुत ही अच्छा और लाभकारी कार्य है। यह आपको दूसरों की मदद करने और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के अवसर प्रदान करता है।

  दान करने से स्वयं को अच्छा महसूस होता है, आत्म-संतुष्टि की प्राप्ति होती है। दान करके हम दूसरों की सहायता करने के साथ-साथ उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव भी लाते हैं। दान करने से समाज में जागरूकता बढ़ती है। लोगों को दान के लिए प्रोत्साहित करके जरूरत मंद लोगों की अनेक प्रकार से सहायता हो सकती है। जिससे उनके जीवन में सुधार हो सकता है। हम धन, वस्त्र, अन्न, ज्ञान सभी का अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान कर सकते हैं।

विविध

1. सरिता देवी वारि की पाकर उसे सुपूरित वन हो,
   बरसे मेघ, भरे फिर सरिता, उदित नया जीवन हो।

आत्मदान के साथ जगजीवन का ऋजु नाता है,
जो देता जितना बदले में उतना ही पाता है।

2. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) × (घ) × (ङ) ✓

व्याकरण बोध

1. स्वत्व, वृक्ष, प्रकृत, सर्वस्व, मृत्यु
2. (क) अहंकार – दंप, घमंड
   (ख) वृक्ष – पेड़, पादप
   (ग) सरिता – नदी, तटिनी
   (घ) वन – जंगल, कानन
   (ङ) मेघ – बादल, पयोधर
   (च) वन – अख्य, विपिन
   (छ) मनुज – मानव, मनुष्य

रचनात्मक गतिविधियाँ

- **महादानी कर्ण**

सनातन धर्म में दान का विशेष महत्त्व है। कालांतर से वर्तमान समय तक चार पुरुषों की गिनती महादानी पुरुषों में की जाती है – ये क्रमश: राजा बलि, राजा हरिश्चंद्र, महर्षि दधीचि और सूर्यपुत्र कर्ण हैं। सूर्यपुत्र कर्ण के दान की चर्चा तीनों लोकों में थी। ऐसा कहा जाता है कि महादानी योद्धा और सूर्यपुत्र कर्ण प्रतिदिन सूर्य उपासना के बाद दान दिया करते थे। उस समय बिना किसी हित के कर्ण वचनानुसार दान देते थे। उनकी इसी महानता के श्रीकृष्ण उन्हें महादानी कहते थे। महाभारत के युद्ध के समय जब कर्ण को कौरवों का सेनापति बनाया गया तो यह बात जानकर स्वर्गाधिपति इन्द्र विचलित हो उठे। वे जानते थे कि जब तक कर्ण के पास कवच और कुण्डल हैं उन्हें कोई परास्त नहीं कर सकता है। यह जानकर इंद्र साधु का रूप धारण करके महादानी कर्ण के पास पहुँचे। उस समय कर्ण सूर्योपासना कर रहे थे। उपासना पूर्ण होने के बाद कर्ण ने साधु रूप धारण किए इंद्र से उनके पास आने का कारण पूछा। तब इंद्र ने उनसे कहा कि आप सबसे बड़े दानी हैं। आपकी राजा बली और राजा हरिश्चंद्र के समतुल्य माना जाता है। इस समय मुझ पर विपत्ति आन पड़ी है। मुझे आपसे आपके कवच और कुण्डल के दान की आवश्यकता है। यदि आप अपना कवच और कुण्डल मुझे दान कर दें, तो मेरा भला हो जाएगा। यह सुनकर कर्ण ने बिना यह विचार किए कि कवच और कुण्डल के बिना युद्ध में उनकी मृत्यु निश्चित है, उतारकर इंद्र को दान में दे दिए। सूर्यपुत्र कर्ण के दान से प्रसन्न होकर इंद्र अपने वास्तविक रूप में प्रकट हो गए और कर्ण से वरदान माँगने के लिए कहा। कर्ण ने इन्द्र से अमोघ अस्त्र माँगा, वह इस अस्त्र का प्रयोग अर्जुन पर करना चाहते थे। किंतु दुर्योधन के कहने पर उन्हें यह अस्त्र घटोत्कच पर करना पड़ा। यही युद्ध में उनकी हार और वीरगति का कारण बना। अन्य वरदान के अनुसार श्रीकृष्ण ने महादानी कर्ण का अंतिम संस्कार किया।

अथवा

राजा हरिश्चंद्र

सत्य की बात की जाए और राजा हरिश्चंद्र का नाम न लिया जाए, ऐसा तो हो ही नही सकता। ऐसा कहा जाता है कि स्वयं भगवान श्रीहरि ने राजा हरिश्चंद्र को सत्यवादी की उपाधि दी थी, लेकिन क्या आप उस कथा के बारे में जानते हैं जिसके कारण राजा हरिश्चंद्र के नाम के साथ महादानी जुड़ गया। कथा के अनुसार महर्षि विश्वामित्र ने राजा हरिशचंद्र के सत्यवादी और महादानी होने के बहुत चर्चे सुने थे। एक बार उन्होंने राजा के सत्य और दान की परीक्षा लेने का निश्चय किया। एक रात जब राजा हरिश्चंद्र सो रहे थे, तब महर्षि विश्वामित्र ने दान में राजा से उनका राज्य और सौ स्वर्ण मुद्राएँ दक्षिणा के रूप में माँगी, इस पर राजा ने स्वप्न में ही अपना राज्य और मुद्राएँ देने का वचन दिया। अगले दिन जब वह जागे तब अपना सपना भूल गए थे। महर्षि विश्वामित्र महल में आये तब उन्होंने राजा से उनका राज्य और अपनी दक्षिणा का दान माँगा। तब राजा ने सहर्ष

अपना राज्य उन्हें दान दे दिया जब दक्षिणा की बारी आई तो वे बोले मैं पहले ही आपको अपना राज्य दान कर चुका हूँ, कृपया दक्षिणा देने के लिए मुझे कुछ समय दें। तब राजा ने स्वयं को बेचने का निश्चय किया। राजा की पत्नी रानी तारामति और उनके पुत्र रोहिताश्व को एक व्यक्ति ने खरीद लिया। राजा के स्वयं को श्मशान के डोन को बेच दिया। हरिश्चंद्र की पत्नी उस व्यक्ति के घर पर बर्तन माँजन और चौका-चूल्हे का काम करने लगी। वहीं कभी सिंहासन पर बैठने वाले राजा हरिश्चंद्र श्मशान में आने वाले शवों का कर वसूलने और चिता जलाने का काम करने लगे। लेकिन तभी महर्षि विश्वामित्र की परीक्षा पूर्ण नहीं हुई थी। एक दिन राजा के पुत्र रोहिताश्व को साँप ने डस लिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। तारामति पुत्र का शव लेकर राजा के पास श्मशान पहुँची। किंतु राजा अपने पुत्र के शव को देखकर भी विचलित नहीं हुए और उन्होंने उनसे श्मशान का कर देने पर ही दाह संस्कार किए जाने की बात कही। तब तारामति अपनी साड़ी को फाड़कर कर के रूप में देने के लिए तैयार हुई, तभी वहाँ महर्षि विश्वामित्र प्रकट हो गए और बोले- हे राजा! तुम धन्य हो। यह सब तुम्हारी परीक्षा थी जिसमें तुम सफल हुए और तुमने सिद्ध कर दिया कि वास्तव में एक महान दानवीर और सत्यवादी हो। यह कहकर उन्होंने राजा हरिश्चंद्र के पुत्र को पुनः जीवित कर दिया और उनका पूरा राज्य भी लौटा दिया।

● **दो मित्रों के बीच वार्तालाप**

अनिल - हैलो संजय! कैसे हो?

संजय - हैलो अनिल! मैं ठीक हूँ, आप कैसे हो और कहाँ से चले आ रहे हो?

अनिल - अरे पिताजी ने आज मंदिर में दान करवाया था, बस वहीं से आ रहा हूँ।

संजय - यह तो बहुत अच्छा काम है, किन्तु वर्तमान में दान का स्वरूप कितना बदल गया है।

अनिल - हाँ, निश्चित रूप से पहले दान का मतलब सिर्फ पैसे या अनाज देना हुआ करता था, लेकिन अब बहुत सारे तरीके हैं।

संजय - बिल्कुल! अब तो लोग अपना समय, ज्ञान या कौशल का भी दान करते हैं।

अनिल - हाँ, आजकल बहुत से लोग एनजीओ के साथ जुड़कर अपना समय दान कर रहे हैं, लोगों को शिक्षित करने में मदद कर रहे हैं।

संजय - और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म भी दान को आसान बना रहे हैं। अब लोग अपने सामर्थ्य के अनुसार दान कर सकते हैं।

अनिल - मुझे लगता है कि ये बदलाव अच्छा है। लोग अब ज्यादा जागरुक हो गए हैं और अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों को समझ रहे हैं।

संजय - चलो हम भी किसी एनजीओ से जुड़कर इस नए बदलाव का हिस्सा बनें।

अनिल - हाँ, बिल्कुल! मैं भी इस बारे में सोच रहा हूँ।

संजय - ठीक है, फिर हम दोनों अपने-अपने स्तर से किसी विश्वसनीय एनजीओ को खोजते हैं और फिर मिलते हैं।

अनिल - ठीक है, बाय संजय।

● **पर्वत कहता शीश उठाकर,**
तुम भी ऊँचे बन जाओ।
सागर कहता है लहराकर,
मन में गहराई लाओ।
समझ रहे हो क्या कहती है,
उठ-उठ गिर-गिर तरल तरंग।
भर लो, भर लो अपने दिल में,
मीठी-मीठी मृदुल उमंग।
पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो,
कितना ही हो सिर पर भार।
नभ कहता है फैलो इतना,
ढक लो तुम सारा संसार।

सोहनलाल द्विवेदी

20 राबर्ट नर्सिंग होम में

मौखिक प्रश्न

(क) 'रॉबर्ट नर्सिंग होम में' पाठ के अन्तर्गत लेखक ने मदर टेरेसा के सेवाभाव की महानता को दर्शाया है।

(ख) मदर टेरेसा रॉबर्ट नर्सिंग होम में एक नर्स थीं।

(ग) लेखक की मेजबान के बीमार पड़ने पर उन्हें रॉबर्ट नर्सिंग होम ले जाया गया था।

(घ) नर्सिंग होम में मदर टेरेसा के साथ काम करने वाली क्रिस्ट हैल्ड जर्मनी की मूल निवासी थीं।

(ड) मदर की जन्मभूमि फ्रांस और कर्मभूमि भारत है।

लिखित प्रश्न (अर्थ ग्रहण संबंधी)

(क) (i) लेखक ने कहा – 'पर फ्रांस को हिटलर ने पददलित किया था, यह आप कैसे भूल सकती हैं।'

(ii) प्रस्तुत गद्यांश के अन्तर्गत जर्मनी के तानाशाह हिटलर का वर्णन है।

(iii) उपर्युक्त गद्यांश में 'इस लड़की' कहकर नर्स क्रिस्ट हैल्ड को संबोधित किया गया है।

(iv) मदर के जाने पर लेखक सोचता रहा— मनुष्य-मनुष्य के बीच मनुष्य ने ही कितनी दीवारें खड़ी की हैं – ऊँची दीवारें, मजबूत फौलादी दीवारें, भूगोल की दीवारें। कितनी मनहूस, कितनी नगण्य, पर कितनी अजेय।

(ख) (i) (क) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

(ii) (ग) मक्खियों से आदमी बनाने वाले जादू की

(iii) (क) मदर मार्गरिट को

(iv) (ग) जैसे मोतियों की बोरी खुल गई हो

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) इंदौर के रॉबर्ट नर्सिंग होम में लेखक की मुलाकात मदर टेरेसा से हुई।

(ख) जब मदर टेरेसा ने रोगी के गाल अपने हाथों से थपथपाए और उस रोगी के चेहरे पर मुस्कान आ गई, उस समय लेखक को नर्सिंग होम का वातावरण शांत होता हुआ प्रतीत हुआ।

(ग) 'हाँ मदर! तुम हँसी बिखेरती जो हो,' डॉक्टर ने अपने इस एक वाक्य के माध्यम से अपने समस्त अनुभव व्यक्त कर दिए।

(घ) क्रिस्ट हैल्ड रॉबर्ट नर्सिंग होम की एक नर्स थीं। उनकी जन्मभूमि जर्मनी थी।

(ड) हिटलर जर्मनी का तानाशाह था। उसने फ्रांस को पददलित किया था।

(च) मदर मार्गरिट के नाटे कद के कारण उन्हें गुड़िया की संज्ञा दी जा सकती थी।

(छ) सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड का तबादला धानी के भील सेवा केंद्र में हो गया था।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) मदर टेरेसा ने अपना जीवन रोगियों की सेवा में समर्पित कर दिया था। लेखक ने देखा कि वह हर रोगी की पीड़ा को कम करने के लिए उत्सुक थीं। उनके लिए सेवा ही उनका जीवन था। उनकी उपस्थिति से ही नर्सिंग होम का तनावपूर्ण वातावरण शांत हो जाता था। लेखक ने देखा कि उनके लिए देश, धर्म और जाति का कोई बंधन नहीं है। लेखक ने इस पाठ में मदर को एक ऐसी महिला के रूप में चित्रित किया है जो मानवता की सेवा में समर्पित है और रोगियों के जीवन में खुशी और आशा भर देती है।

(ख) सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड, 'रॉबर्ट नर्सिंग होम में' पाठ में एक प्रमुख महिला पात्र हैं। वह एक समर्पित नर्स हैं, जो मानव सेवा में लगी हुई हैं। सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड का जन्मस्थान जर्मनी है और वे भारत में रहकर रोगियों की सेवा कर रही हैं। सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड रोगियों की देखभाल में तत्पर रहती हैं। उन्हें जर्मन,

अंग्रेजी और हिंदी भाषाओं का ज्ञान है। वे रोगियों के प्रति सहानुभूति रखती हैं और उनकी भावनाओं को समझती हैं। उन्होंने मानव सेवा को अपना जीवन का लक्ष्य बना लिया है।

(ग) लेखक ने सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड से कहा, ''तुम्हारा देश महान है जो युद्ध के देवता हिटलर को भी जन्म दे सकता है और तुम्हारे जैसी सेवाशील बालिका को भी'' यह सुनकर वह गर्वित महसूस करने लगी।

(घ) मनुष्य-मनुष्य के बीच मनुष्य ने ही कितनी दीवारें खड़ी की हैं- ऊँची दीवारें, मजबूत फौलादी दीवारें, जाति वर्ग की दीवारें। कितनी मनहूस, कितनी नगण्य और कितनी अजेय दीवारें खड़ी कर दी हैं।

(ड) लेखक ने व्यक्तियों को अपनी विशिष्ट विशेषताओं से लोगों को अपना बनाते एवं अपार प्रसिद्धि प्राप्त करते देखा है। कुछ लोग अपने रूप-सौन्दर्य के द्वारा लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं, तो कुछ लोग जिनके पास अपार धन होता है, वे उसके बल पर प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं, जिनमें कोई विशिष्ट गुण होता है, जिसके द्वारा वे संसार में प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं।

(च) मदर मार्गरिट, 'रॉबर्ट नर्सिंग होम' में रहने वाली एक बुजुर्ग महिला नर्स हैं। लेखक ने उनके व्यक्तित्व को अत्यंत ऊर्जावान और सकारात्मक रूप में वर्णित किया है। उनकी हँसी को उसने निर्मल और धवल बताया है, जैसे मोतियों की बोरी खुल गई हो। लेखक उन्हें एक जादूगरनी कहता है, जो कष्ट में तड़पते रोगियों को भी ठीक कर देती हैं।

(छ) ऑपरेशन के लिए आने वाला व्यक्ति, एक अमीर व्यक्ति था, जो कि ऐशो-आराम में पला था। वह केवल आदेश करना जानता था। उसे कष्ट सहने की आदत नहीं थी। उसने बहुत व्याकुल होकर मदर से कहा 'मदर मर जाऊँगा।'

(ज) नर्स का कद बहुत छोटा था, लेकिन वह बहुत फुर्तीली थी। उसकी चाल में गजब की चुस्ती थी और व्यवहार में मस्ती थी। वह मरीजों की सेवा बहुत चाव से करती थीं। नर्स मरीजों के प्रति बहुत सहानुभूति रखती थी और उनकी देखभाल में पूरी तरह समर्पित थीं। वे विषय-वासना से रहित, लगाव रहित और बिना दबदबे के रोगियों की सेवा करती थीं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) रॉबर्ट नर्सिंग होम जाना लेखक के लिए एक यादगार अनुभव बन गया क्योंकि वहाँ उन्होंने मानवता और सेवा का उत्कृष्ट रूप देखा। लेखक कल तक जिनका अतिथि था, आज उनका परिचारक बन गया था, क्योंकि उनकी आतिथेया अचानक बीमार हो गई और लेखक को उन्हें रॉबर्ट नर्सिंग होम में भर्ती कराना पड़ा।

नर्सिंग होम में, लेखक ने देखा कि कैसे विभिन्न धर्मों और देशों के लोग एक-दूसरे के साथ प्रेम और सद्भाव से रहते हैं और एक-दूसरे की मदद करते हैं। लेखक ने देखा नर्स, विशेष रूप से मदर टेरेसा, मानवता की सेवा में अपना जीवन समर्पित कर रही हैं। नर्सिंग होम में, लेखक को जीवन जीने की कला का रहस्य और परोपकार का महत्त्व समझ में आया।

एक विशेष घटना, जहाँ मदर टेरेसा ने एक बीमार व्यक्ति के लिए प्रार्थना करने की बात कही, लेखक को बहुत प्रभावित करती है। लेखक ने यह भी देखा कि कैसे भाषा और संस्कृति की सीमाएँ मानवता के बंधन के सामने फीकी पड़ जाती हैं। इस अनुभव ने लेखक को मानवता, सेवा और प्रेम के महत्त्व को समझने में मदद की। इसलिए रॉबर्ट नर्सिंग होम जाना लेखक के लिए एक यादगार अनुभव था।

(ख) मदर टेरेसा का चरित्र-चित्रण:

निस्वार्थता :- मदर टेरेसा ने अपना जीवन दूसरों की सेवा में समर्पित कर दिया, बिना किसी स्वार्थ के उन्होंने गरीबों, बीमारों और असहाय लोगों की मदद के लिए दिन-रात काम किया।

दयालुता :- मदर की दयालुता और करुणा की कोई सीमा नहीं थी। उन्होंने हर व्यक्ति को सम्मान और प्रेम दिया, चाहे वह किसी भी जाति धर्म या वर्ग का हो।

दृढ़ संकल्प :- मदर टेरेसा ने कभी भी कठिन परिस्थितियों में भी हार नहीं मानी। वह मानवता के सेवा के लिए दृढ़ संकल्प से कभी नहीं हटीं।

मदर टेरेसा एक नि:स्वार्थ, दयालु और समर्पित महिला थीं, जिन्होंने अपना जीवन गरीबों और बीमारों की सेवा में समर्पित कर दिया। उन्होंने अपने जीवन और कार्यों से दुनिया को यह दिखाया कि प्रेम करुणा ही सच्ची शक्ति है।

(ग) सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड और मदर मागरिट दोनों ही रॉबर्ट नर्सिंग होम में रहने वाली और रोगियों की नि:स्वार्थ भाव से सेवा करने वाली नर्सें हैं। सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड जर्मनी की मूल निवासी हैं और भारत उनकी कर्मभूमि है। वे रोगियों की देखभाल करने के लिए सदैव तत्पर रहती हैं। उन्हें रोगियों से बहुत सहानुभूति है। वे उनकी भावनाओं को बहुत अच्छे से समझती हैं। वहीं मदर मागरिट एक नाटे कद की बुजुर्ग महिला नर्स हैं। वे अत्यंत ऊर्जावान हैं। उनकी हँसी कष्ट से व्याकुल रोगियों को तुरंत राहत प्रदान करती है। इसलिए लेखक उन्हें जादू की पुड़िया कहता है।

(घ) 'रॉबर्ट नर्सिंग हो' पाठ, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' द्वारा लिखा गया एक रेखाचित्र है, जो मानवता और सेवाभाव को दर्शाता है। प्रस्तुत लेख में लेखक ने इन्दौर के रॉबर्ट नर्सिंग होम की एक साधारण घटना को इतने मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। लेखक कल तक जिनका अतिथि था, आज उनका परिचारक बन गया था, क्योंकि उसकी आतिथेया अचानक बीमार हो गई और लेखक को उन्हें इन्दौर के रॉबर्ट नर्सिंग होम में भर्ती कराना पड़ा। नर्सिंग होम में काम करने वाली महिला नर्सों से होती है जो माँ के समान भावनाओं को अपने चेहरे एवं गतिविधियों में समाहित किए हुए हैं। माँ समान दिखने वाली वह नर्स कोई अन्य नहीं मदर टेरेसा थीं, जिन्होंने लेखक के मरीज के होठों पर हँसी ला दी। फ्रांस की रहने वाली मदर टेरेसा और जर्मनी की रहने वाली क्रिस्ट हैल्ड, दोनों के रूप, रस, ध्येय सब एक जैसे लगे लेखक को उनमें उसे कहीं भी असमानता नहीं दिखाई दी। इस दौरान लेखक को यह अहसास हुआ कि दोनों महिला नर्सें विरोधी देश की होने के बावजूद एक हैं। लेखक को मदर टेरेसा एवं क्रिस्ट हैल्ड के अनुभव से अनुभूत हुआ कि वास्तव में धर्म, जाति, राष्ट्र, वर्ग आदि को आधार बनाकर मनुष्य-मनुष्य के बीच भेदभाव करने वाले वास्तव में मनुष्य ही हैं।

लेखक कहना चाहता है कि रॉबर्ट नर्सिंग होम की नर्सें जिस आत्मीत्यता, ममता, स्नेह, सहानुभूति की भावना से रोगियों की सेवा कर रही हैं। वह सचमुच सभी के लिए अनुकरणीय है।

(ड) इस कथन के माध्यम से लेखक ने मदर टेरेसा और नवयुवती क्रिस्ट हैल्ड की भक्ति और सेवा भावना का वर्णन किया है। वह यह सोचता है कि ये दोनों महिलाएँ बिना किसी को जन्म दिए ही माँ के समान हैं। वे समाज की सेवा में लगी हुई हैं और पीड़ितों के जीवन में खुशी लाने का कार्य कर रही हैं। इस प्रकार, लेखक ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि सच्ची माँ का रूप केवल जन्म देने में नहीं बल्कि दूसरों के प्रति संवेदनशील और सेवा में भी होता है।

पाठ से आगे

- मनुष्य ने मनुष्य के बीच कई तरह की दीवारें खड़ी कर दी हैं, जिनमें मुख्य रूप से जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र, आर्थिक असमानता और राजनीतिक स्वार्थ शामिल हैं। इन दीवारों

को दूर करने के लिए, आपसी संवाद, समानता और सम्मान, शिक्षा और जागरूकता, अहिंसा और प्रेम, तथा भेदभाव का विरोध जैसे उपाय किए जा सकते हैं।

विविध

1. (क) × (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) × (ङ) ×
2. (क) उन्होंने रोगी के दोनों म्लान कपोल अपने चाँदनी-चर्चित हाथों से थपथपाए।
   (ख) मनुष्य-मनुष्य के बीच मनुष्य ने ही कितनी दीवारें खड़ी की हैं।
   (ग) क्रिस्ट हैल्ड के पिता जर्मनी में एक कॉलेज के प्रिसिंपल हैं।
   (घ) वह अक्सर हिंदी, अंग्रेजी, जर्मन भाषाओं के शब्द मिलाकर बोलती है।
   (ड) हँसी उनकी यों कि मोतियों की बोरी खुल पड़ी हो।
3. (क) विशिष्ट - विशेष - रमेश एक विशिष्ट अतिथि के रूप में वहाँ गया था।
   (ख) शिंकजा - पकड़, दबाव - शिकारी ने शेर को पकड़ने के लिए शिकंजा लगाया।
   (ग) प्रतिनिधि - वह व्यक्ति जो किसी दूसरे की ओर से कोई काम करने के लिए नियुक्त हो - राम मेले में अपने पिता के कारोबार का प्रतिनिधि बनकर गया।
   (घ) समर्पण - अर्पित करना - उन्होंने अपना जीवन मानव सेवा के लिए समर्पण कर दिया।
   (ड) सौरभ - सुगंध - उसने अपने मधुर व्यवहार के सौरभ से सबका मन प्रफुल्लित कर दिया।

व्याकरण बोध

1. (क) अतिथि, (ख) नगण्य
   (ग) असहनीय (घ) आतिथेया
   (ड) परिचारक
2.

	उपसर्ग	मूलशब्द
(क) अतिथि	अ	तिथि
(ख) परिचारक	परि	चारक
(ग) आघात	आ	घात
(घ) अनुरंजित	अनु	रंजित
(ड) अधिनायक	अधि	नायक

3. (क) अरूण - सूर्य, रवि
   (ख) अतिथि - मेहमान, आगंतुक
   (ग) सुता - बेटी, तनया
   (घ) कपोल - गाल, रूखसार
   (ड) दर्प - घमंड, अभिमान

रचनात्मक गतिविधियाँ

- **संकेत** - इस उत्तर के अन्तर्गत छात्र अपने माता-पिता, गुरु अथवा मित्र के विषय में लिख सकते हैं।
- **सरोजिनी नायडू** - भारत कोकिला सरोजनी नायडू सिर्फ स्वतंत्रता सेनानी ही नहीं, बल्कि बहुत अच्छी कवियत्री भी थीं। सरोजिनी नायडू ने खिलाफत आंदोलन की बागडोर संभालकर अंग्रेजों को भारत से निकालने में अहम योगदान दिया।
- **संकेत** - छात्र, रानी लक्ष्मीबाई, कल्पना चावला, गार्गी, सावित्री बाई फुले आदि के बारे में चार्ट तैयार कर सकते हैं।

21 पिता के नाम पत्र

मौखिक प्रश्न

(क) एक पुत्र अपने पिता को पत्र लिख रहा है।
(ख) प्रस्तुत कहानी के कहानीकार सुशांत सुप्रिय हैं।
(ग) पत्र का लेखक शहर में रहता है।
(घ) उपर्युक्त पाठ के अन्तर्गत लिखा गया पत्र, पत्र के व्यक्तिगत भेद के अन्तर्गत आता है।
(ड) पत्र लिखने वाले के दादा जलतरंग बजाया करते थे।

लिखित प्रश्न (अर्थ ग्रहण संबंधी)

(क) (i) बच्चा हलवाई की दुकान पर गरम-गरम जलेबियाँ और समोसे खा रहा था।

(ii) बच्चा रविवार को रामबाग में गुब्बारे उड़ाता है।

(iii) बच्चा गुब्बारों को उड़ता देखकर चहक रहा है।

(iv) बच्चे की खुशी में उसके पिता उसके साथ हैं।

(ख) (i) (ख) अपने बेटे को उसके परदादा के गाँव ले जाने की

(ii) (घ) ये सभी

(iii) (क) मछलियाँ

(iv) (ग) गाँव की बोली

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) पत्र का लेखक अपने पिता के प्रति अपना आभार प्रकट कर रहा है।

(ख) लेखक को अपने चालीसवें जन्म-दिन पर अपने पिता का पत्र मिला।

(ग) लेखक ने अपने पिता के पत्रों को अपना संबल कहा है।

(घ) पोता अपने पिता से अपने दादाजी का 'ई-मेल अकाउंट' पूछ रहा है। वह अपने दादाजी से इंटरनेट पर चैट करना चाहता है।

(ङ) नदी पर बाँध बनने के बाद गाँव जलमग्न हो गए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) लेखक को इस बात का गर्व है कि लेखक को उनके जैसा अच्छा पिता मिला, क्योंकि उसके पिता ने उसे संस्कारों की गहरी जड़ें दीं। जब वह बड़ा हुआ तो उसे पंख दिए। उन्होंने सदैव लेखक को सपने देखने और उन्हें पूरा करने के लिए प्रेरित किया।

(ख) लेखक रामबाग में गुब्बारे उड़ाता था, उन्हें उड़ते देखकर चहकता था। तितलियाँ पकड़ता था। आकाश में निकले इंद्रधनुष को देखकर किलकता था। पतंग उड़ाता, कंचे खेलता, जुगनुओं के पीछे भागता था। कबूतरों को दाना डालता था। हर फूल और कली को सहलाता। कुत्ते और बिल्ली के बच्चों को पुचकारता था।

(ग) लेखक कैंपस में सैर करके, छुट्टी वाले दिन बागवानी करके, पिता के साथ आलू, गोभी, गाजर, मूली, टमाटर और हरी मिर्च उगाते हुए बड़ा हुआ।

(घ) पोते को हिंदी में एक से सौ की गिनती गिनने में कठिनाई अनुभव होती है।

(ङ) बुरे लोग पेड़ काट देते हैं। जंगल उजाड़ देते हैं। नदी-नाले गंदे कर देते हैं। इनसानों और पशु-पक्षियों को मार डालते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) लेखक याद करता है कि उसके पिता ने बचपन में छोटी-छोटी खुशियाँ दीं। वह बचपन में हलवाई की दुकान पर गरम-गरम जलेबियाँ और समोसे खाता था। रविवार को रामबाग में गुब्बारे उड़ाता था। गुब्बारों को उड़ते देखकर चहकता था। तितलियाँ पकड़ता था। आकाश में निकले इंद्रधनुष को देखकर किलकता था। चिड़ियाघर में जीव-जंतु देखकर चहकता था। पतंगे उड़ाता, कंचे खेलता और जुगनुओं के पीछे भागता था। पिता के साथ कैंपस में सैर करने जाता था। कबूतरों को दाना डालता था। हर फूल और कली को सहलाता और कुत्ते-बिल्लियों के बच्चों को पुचकारता था। उनके साथ बागवानी करके, आलू, गोभी, गाजर, मूली, टमाटर और हरी मिर्च उगाकर बड़ा हुआ था। यह सब पल लेखक याद कर रहा है।

(ख) पोता नई जेनरेशन का लड़का है। उसे कम्प्यूटर गेम्स अच्छे लगते हैं। वह केवल टीवी देखने, मोबाइल फोन पर बात करने का शौकीन है। वह 'कार्टून चैनल' देखना पसंद करता है। उसे बर्गर, फिंगर-चिप्स और पिज्जा अच्छे लगते हैं। वह इम्पोर्टेड

चीजों का दीवाना है। उसे हिंदी में एक से सौ की गिनती कठिन लगती है। वह उन्नासी और नवासी को पहचानने में कठिनाई अनुभव करता है।

(ग) इस पाठ के माध्यम से लेखक ने यह संदेश और सीख निहित है कि प्रत्येक पीढ़ी का कर्त्तव्य है कि वह अगली पीढ़ी पर ध्यान दे साथ ही उसे अपने परिवेश में ढलने के पूरे-पूरे अवसर दे। उसे अच्छे संस्कार देने के साथ आवश्यकता होने पर उसका मार्गदर्शन भी करे। उसे विकास करने की छूट तो दे लेकिन सही-गलत की पहचान भी कराएँ। नई पीढ़ी के साथ मित्रवत व्यवहार रखें। इसी के साथ लेखक यह संदेश भी देना चाहता है कि प्रत्येक पीढ़ी की सामाजिक परिस्थितियाँ अलग होती हैं अत: पुरानी पीढ़ी को अपनी मान्यताएँ या तौर-तरीके नई पीढ़ी पर नहीं थोपें, साथ ही वह यह भी ध्यान रखे कि नई पीढ़ी कहीं भी गुमराह न हो जाए।

पाठ से आगे

- रोजाना की तरह आज भी संजीव शाम को ऑफिस से घर लौटा, उसके पिताजी बरामदे में कुर्सी पर बैठे आज भी उसे एकटक नजर से देख रहे थे। संजीव के एक हाथ में बैग था और दूसरा हाथ खाली था। संजीव वहीं बरामदे में उनके पास ही खाली कुर्सी पर बैठ गया और पूछा - पापा कैसे हो, सब ठीक है ना? पापा ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया हाँ, बेटा! मैं ठीक हूँ। संजीव की माँ का दो साल पहले ही देहांत हो चुका था तब से संजीव का यही क्रम था। जब शाम ऑफिस से संजीव लौटता तो पिताजी उसे यूँ ही बरामदे में रखी कुर्सी पर बैठे मिलते। ऐसा लगता जैसे वह संजीव की प्रतीक्षा कर रहे हों और संजीव से मिलकर बाहर घूमने चले जाते और वह अपने कामों में व्यस्त हो जाता। संजीव को ऐसा लगने लगा जैसे पिताजी उसके हाथों में कुछ देखते हैं, लेकिन क्या यह बात संजीव समझ नहीं पा रहा था।

  संजीव की एक बड़ी बहन सीमा थी। इस बार सीमा ने रक्षाबंधन पर एक दिन संजीव और अपने पिताजी के पास रुकने की योजना बनाई। वह रक्षाबंधन वाले दिन संजीव को राखी बाँधने आई। संजीव की पत्नी नेहा अपने दोनों बच्चों को लेकर दोपहर में अपने भाई को राखी बाँधने अपने मायके चली गई। घर पर केवल पिताजी संजीव और उसकी दीदी ही रह गये। पिताजी खाना खाकर जल्दी सोने चले गये। संजीव और उसकी दीदी देर रात तक बातें करते रहे।

  सीमा, संजीव को बचपन की बातें याद करके बताने लगी कि कैसे जब पिताजी शाम को अपने काम से वापस आते थे तो हम लोगों के खाने के लिए कुछ न कुछ जरूर लाते थे और हम दोनों दरवाजे पर बैठकर उनका बड़ी बेसब्री से इंतजार करते थे। घर में आते ही उनके हाथों को ललचाए नजरों से देखते थे और तुम तो उनके पैरों से लिपट जाते थे। कभी-कभी पिताजी खाने की चीज अपने बैग में छिपा लेते थे, तो हम दोनों मुँह लटकाकर बैठ जाते थे, तब पिताजी मुस्कुराते हुए बैग से खाने की चीज निकालते थे, जिसे देखकर हम दोनों भाई-बहनों के चेहरे खिल उठते थे। फिर मम्मी हम दोनों भाई-बहन को बराबर में बिठाकर बड़े प्यार से खिलाती थी। इधर सीमा बचपन की यादों को बता रही थी, उधर संजीव के दिमाग में पिताजी का उसके खाली हाथों में कुछ ढूँढ़ना समझ में आने लगा था।

  अपनी दीदी से बचपन की बातों को सुनते हुए अचानक संजीव को याद आ गया कि मम्मी के जाने के बाद घर में विशेष कुछ बनता नहीं था क्योंकि उसकी पत्नी कामकाजी थी और वह रसोई में कम समय दे पाती थी। जब तक मम्मी थी, तब तक पिताजी और उसे खाने पीने की विशेष चीजों की कमी नहीं रहती थी। ऐसा नहीं था कि नेहा का

पिताजी के साथ व्यवहार अच्छा नहीं था। वह उन्हें पिता के समान ही प्यार और सम्मान देती थी। पिता की मनोदशा समझ आते ही संजीव बैचेन हो उठा, कि वह कैसे यह नहीं समझ पाया कि बच्चे-बूढ़े समान होते हैं। माँ के जाने के बाद से मुझे और नेहा को पिताजी की छोटी-मोटी इच्छाओं के बारे में कुछ सोचने का मौका नहीं मिला। संजीव अपराध भाव से भर गया।

संजीव ने अपने मन की यह बात अपनी बड़ी बहन सीमा को बताई। यह सुनकर संजीव के साथ-साथ सीमा की आँख से भी आँसू बहने लगे। तब संजीव ने मन ही मन कुछ निश्चय किया। अगले दिन जब संजीव ऑफिस से लौटा, तब भी पिताजी बरामदे में ही बैठे हुए थे। लेकिन आज संजीव के एक हाथ में बैग और दूसरे हाथ में एक लिफाफा था। वह चलकर अपने पिताजी के पास पहुँचा और पास रखी दूसरी कुर्सी पर बैठकर वह लिफाफा अपने पिता की ओर बढ़ा दिया। तभी उसकी बड़ी बहन सीमा भी बाहर बरामदे में आ गई। पिताजी ने बड़ी उत्सुकता से लिफाफा खोला और जलेबी देखकर एक बाल सुलभ मुस्कुराहट उनके चेहरे पर फैल गई। उनके चेहरे की इस मुस्कुराहट को देखकर संजीव और सीमा भी मुस्कुरा उठे।

- पिता एक उम्मीद है एक आस है,
  परिवार की हिम्मत और विश्वास है,
  बाहर से सख्त और अंदर से नरम है,
  उसके मन में दबे कितने मरम हैं,
  पिता संघर्ष की आँधियों में हौसलों की दीवार है,
  परेशानियों से लड़ने की दो धारी तलवार है,
  बचपन में खुश करने वाला बिछौना है,
  पिता जिम्मेदारियों से लदी गाडी का सारथी है,
  सबको बराबर का हक दिलाता एक महारथी है,
  सपनों को पूरा करने में लगने वाली जान है,
  इसी से तो माँ और बच्चों की पहचान है,
  पिता जमीर है, पिता जागीर है,
  जिसके पास पिता है, वह अमीर सबसे बड़ा है,
  कहने को तो सब ऊपर वाला देता है,
  पर उसका एक रूप पिता का शरीर है।

विविध

1. (क) × (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ×
2. (क) रविवार को रामबाग में गुब्बारे उड़ा रहा है।
   (ख) वह अपने दादा से इंटरनेट पर चैट करना चाहता है।
   (ग) जलतरंग बजाता हुआ उनका मुसकुराता चेहरा मुझे आज भी याद है।
   (घ) बुरे लोग भूतों से ज्यादा खतरनाक होते हैं।
   (ङ) उसे भी अंतरात्मा की आवाज सुनना सिखाइएगा।
3. (क) सहेजकर - संभलकर - मैंने अपने पिताजी के पत्र सहेजकर रखे हैं।
   (ख) उत्साह - उमंग, हौसला - गाँव जाकर मैं उत्साह से भर जाता हूँ।
   (ग) धरोहर - अमानत - यह प्राचीन किला हमारी धरोहर है।
   (घ) जिज्ञासा - जानने की इच्छा - बच्चों में बहुत जिज्ञासा होती है।
   (ङ) अंतरात्मा की आवाज - विवेक या आत्म-चेतना की आवाज, जो सही और गलत का भेद बताती है - हमें हमेशा अपनी अंतरात्मा की आवाज पर ध्यान देना चाहिए।
4. जेनरेशन, कार्टून चैनल, टीवी, ई-मेल अकाउंट, इंटरनेट, डिफीकल्ट, कन्फ्यूज, इंपोर्टेड, बर्गर, फिंगर-चिप्स।

व्याकरण बोध

		उपसर्ग	मूलशब्द
1. –			
(क)	संबल	सं	बल
(ख)	अनकही	अन	कही
(ग)	अनछुए	अन	छुए
(घ)	परदादा	पर	दादा
(ड)	अंतरात्मा	अंत:	आत्मा

2. (क) कमजोर – बलवान
   (ख) छोटा – बड़ा
   (ग) गरम – ठण्डा
   (घ) दुखी – सुखी
   (ड) अधूरा – पूरा
   (च) बुरा – अच्छा

3. (क) चिट्ठी – चिट्ठियाँ
   (ख) खुशियाँ – खुशी
   (ग) जुगनुओं – जुगनू
   (घ) कंचा – कंचे
   (ड) मछली – मछलियाँ
   (च) पक्षी – पक्षियों
   (छ) पेड़ों – पेड़
   (ज) कहानी – कहानियाँ

रचनात्मक गतिविधियाँ

● मदन: (शहर से गाँव आने पर) पिताजी गाँव का वातावरण कितना शांत है। शहर में तो हर समय वाहनों का शोर और बस भागदौड़ वाला जीवन है।

पिता: हाँ बेटा! गाँव की शान्ति ही तो हमारी पहचान है। शहर में बस शोर-शराबा।

मदन: पर पिताजी, यहाँ सुविधाएँ भी तो कम हैं। न अच्छे स्कूल, न अस्पताल और न ही मनोरंजन के साधन हैं।

पिता: मानता हूँ बेटा, कि शहर में बहुत सुविधाएँ है, किन्तु गाँव की अपनी ही बात है। यहाँ का वातावरण शुद्ध है, हवा ताजी है और लोग सुख-दुख में एक-दूसरे के काम आते हैं।

मदन: यह तो है। पर शहर में पढ़ाई और नौकरी के अवसर ज्यादा हैं।

पिता: अवसर तो यहाँ भी हैं, बस देखने का नजरिया बदलना होगा। खेती-किसानी करके भी अच्छी जिंदगी जी जा सकती है।

मदन: लेकिन गाँव में विकास की गति बहुत धीमी है।

पिता: विकास तो हो रहा है, बेटा। धीरे-धीरे ही सही, पर हो रहा है। पहले सड़कें बनीं, फिर बिजली आई और अन्य कई काम हुए हैं।

मदन: आप ठीक कह रहे हैं, पिताजी! गाँव का अपना अलग ही आकर्षण है।

पिता: हाँ, गाँव की मिट्टी में जो सुकून है, वो कहीं और नहीं। अत: अब तुम भी शहर की भागम-भाग वाला जीवन छोड़कर गाँव में ही रहने का मन बनाओ।

मदन: कोशिश करूँगा पिताजी।

पिता: हाँ, कोशिश करो, क्योंकि गाँव तुम्हारी जड़ों से जुड़ा है।

● एक दिन मेरे पिताजी ने अपने पारिवारिक मित्र के घर जाने की योजना बनाई। उनका घर शहर से दूर मुर्शिराबाद के एक गाँव में था। अगले दिन हम सुबह जल्दी निकले और सुबह 11 बजे हम उनके गाँव पहुँच गये। वहाँ बहुत शांति और बहुत सारे पेड़ थे। रोहन के पिताजी और उनके जानने वाले लोगों ने हम सभी का स्वागत किया। वहाँ हमने ताजा नारियल पानी पिया। उनके एक रिश्तेदार ने हमारे लिये भोजन तैयार किया, हमने वहाँ फर्श पर बैठ कर खाना खाया। मैंने वहाँ गाय, भैंस का रँभाना, मुर्गियों की बाँग सुनी।

अगले दिन हम धान के खेत और सब्जियों के खेतों में गए। मैंने गाय, बकरी और भैसों को चारा खिलाया। मैंने वहाँ बहुत सारे पक्षियों

की अलग-अलग आवाजें सुनी। मैंने उनके खेत में आम, जामुन, अमरूद जैसे कई फल खाए।

मैं वहाँ जाकर बहुत प्रसन्न था क्योंकि मुझे वहाँ खेलने और घूमने के लिए बहुत स्थान मिला। अगले दिन जब हम लौट रहे थे, तब रोहन के पिता ने हमें बहुत सारे फल और सब्जियाँ दीं। मुझे गाँव जाकर बहुत अच्छा लगा।

- पिछली गर्मियों में, मैंने अपने दादा-दादी के साथ ग्रामीण इलाकों में उनके आरामदायक घर में एक शानदान सप्ताह बिताया। हर सुबह हम साथ में नाश्ता करते थे। मेरी दादी मुझे प्रतिदिन नए-नए पकवान बनाकर खिलाती थीं। उसके बाद, मैं अपने दादाजी के साथ उनके खेतों पर घूमने जाता था। वह मुझे खेती के विषय में बताते और अपने बचपन के किस्से सुनाते थे। उन्होंने मुझे बहुत से पक्षियों की आवाजें सुनाई। नहर में मैंने अपने दादाजी के साथ मछलियाँ भी पकड़ीं। रात को दादी मुझे मेरे पापा के बचपन के किस्से सुनाती थी। इन पलों ने मुझे उनके द्वारा बताये गये किस्से कहानियों से बहुत सारी अच्छी सीखें मिली। वहाँ रहकर मुझे अहसास हुआ कि परिवार के साथ जुड़ना और स्थायी यादें बनाना कितना मूल्यवान है।